اُلجھا ہے یا وَں یار کا اُرکھا ہے یا وَس یار کا اُرکھنِ دراز میں

علاً مركز الرشدالقادمي شارح تريزي، اولدراوين رول آف آنر

مكتبه لعليم وتربيت اسلامي لأجور

''الجھا ھے پاؤں یار کا ۔زلف دراز میں'' 18 2 19 8000 (16)

. ازرشحاتِ فكر

"علامه محمد ارشد القادرى"

اولڈ راوین، شارح ترمذی

مركز تعليم و تربيت اسلامى لا مور عزيز ناوَن بين بازارر چناناوَن شامرره لا مور

# فهرست مضامین

|          | The state of the s |      |
|----------|--|------|
| صفح نمبر | عثوان  | 水彩   |
| 20       | انشاب  | -1   |
| 21       | كوه مهاله شخصيت  | -2   |
| 23       | توج فرما يئ  | -3   |
| 25       | مزارِ فا يض الانوار  | -4   |
| 27       | حدِاعتدال  | -5   |
| 28       | ا نا ولا غيري  | -6 - |
| 28       | الظم قرآن  | -7   |
| 30       | كلمه يؤهايا  | -8   |
| 31       | - <u>2</u> 192029  | -9   |
| 32       | (Hero), LyT  | -10  |
| 32       | Sapatap  | -11  |
| 33       | اللم كي آواز   | -12  |
| 35       | اعدازتكلم  | -13  |
| 35       | غورفر ما نمين  | -14  |
| 36       | بدعت کابازاد سرگرم   | -15  |
| 37       | אַשַטען  | -16  |
|          |  |      |

# بُمله حقوق بحق مصنف محفوظ میں

نام كتاب " الجهام ياؤل ياركا زلف وراز مين"

مصتف : حضرت علامه مولانا محمد ارشد القادري رضوي

پروف ریزنگ : مولانامحمعثان قادری، صاحبزاده محمر عا کف قادری

مولا نامحرمظبرا قبال قادري

فأعلى بروف ريْدنك : مولانا محرصديق خان قادرى سيدرا شدعلى كيلاني

كپوزنگ : محرمين قادري

يرنفرز: احدطابراسلامك پبلي كيشنز

س اشاعت : ايريل 2009

تعداد : 1100 گياره سو

ملنے کا پیته: جامعداسلامیدرضوبیمرکز تعلیم وتربیت اسلامی رچنا ٹاؤن شاہدرہ لا ہور رابط نمبر: 042-7962152

| صغرنبر | عنوان                        | فبرثار |
|--------|------------------------------|--------|
| 54     | اند جرے میں نظرآئے           | -35    |
| 55     | تازودم بوجاي المنظمة         | -36    |
| 56     | اس وفت امت کامرض             | -37    |
| 57     | فيصله قارئمين برجيموزتا مول  | -38    |
| 57     | لوآپ اپن وام میں صیادآ گیا   | -39    |
| 58     | نقط نظر                      | -40    |
| 59     | كوريني                       | -41 -  |
| 59     | ايصال ثواب                   | -42    |
| 60     | titt f                       | -43    |
| 61     | كوورال كرف والاب             | -44    |
| 62     | تح ریی قلابازیاں             | -45    |
| 63     | انكورمز يدار تنف             | -46    |
| 63     | تبرك تقتيم                   | -47    |
| 64     | جيت کس کي بوگي               | -48    |
| 65     | مر الرك لكاني                | -49    |
| 66     | دم خمنیں رہا                 | -50    |
| 66     | حق وصدافت كاعلم بلندفر ماييخ | -51    |
| 67     | آپ کویاد ہوگا                | -52    |

| مؤنبر | عنوان .  | نبرغار |
|-------|--|--------|
| 38    | نفتره جرح  | -17    |
| 38    | الله تعالى كى جلالت كي شم                                  | -18    |
| 39    | كيول جنّاب والا  | -19    |
| 41    | دائنی سکون   | -20    |
| 42    | مردميدال   | -21    |
| 42    | ام الموسين سيده ميموندرضي الله تعالى عنها كے مزار پر حاضري | -22    |
| 42    | صداقت كاجنازه  | -23    |
| 43    | سيداحد شبيد صاحب فرماتي بين                                | -24    |
| 44    | مزارات اولياء  | -25    |
| 44    | غبار کی ہوانکل گئی   | -26    |
| 47    | شوروېنگامه   | -27    |
| 47    | سيداحم شهيدصاحب فرماتے بين                                 | -28    |
| 48    | کھانے کی تلاش میں سر گرداں                                 | -29    |
| 50    | اےجدہ امجدہ  | -30    |
| 51    | قبر پر ما گلتے نظر آتے ہیں                                 | -31    |
| 52    | توجه طلب چيز   | -32    |
| 53    | يو چھ سکتا ہوں   | -33    |
| .54   | سوچنے بچھنے کی صلاحیت                                      | -34    |

| صفختر | عثوان  | نبرغار |
|-------|--|--------|
| 80    | حصرت مجد دالف ثانى رصة الشعلية في قاضى جى كا باته يكوليا | -70    |
| 80    | دور کی کیول  | -71    |
| 81    | مزارات والح آنے والوں کو پہچانے ہیں                      | -72    |
| 83    | فورأ چنفی حاضر   | -73    |
| 83    | کیانظریائی ہے  | -74    |
| 84    | ا نو کھا طریق کار  | -75    |
| 85    | اس کا نماز میں کمی قرات                                  | -76    |
| 86    | عين نماز مين اعانت                                       | -77    |
| 87    | آپ کی بارگاہ میں استدعا                                  | -78    |
| 87    | ہم تک نظر نہیں ہیں                                       | -79    |
| 88    | سوااس کے کیا کھوں  | -80    |
| 89    | يس اس عار فانتجابل كے صدقے                               | -81    |
| 89    | لگاؤ فتو کی شرک  | -82    |
| 90    | آپ کوير کراؤل  | -83    |
| 91    | كار علاة   | -84    |
| 91    | نگ دهر نگ  | -85    |
| 92    | قاضى صاحب اورمجذوب                                       | -86    |

| صفختر | عثوان                              | تبرثار       |
|-------|------------------------------------|--------------|
| 68    | زبان کوتالالگ جائے گا              | -53          |
| 68    | شرک پارس (Shirk Parts)             | -54          |
| 69    | اس کر کوآگ لگ کی کر کے چراغ ہے     | -55          |
| 70    | بيك جنبشِ قلم                      | -56          |
| 70    | عزت ووقار                          | -57          |
| 71    | امير حزه صاحب رقسطرازين            | -58          |
| 72    | مولوی سيد محمطي شاه صاحب لکھتے ہيں | -59          |
| 73    | مېرىقىدىق                          | -60          |
| 73    | يدعا ثابت ندكر سكا                 | -61          |
| 75    | مجمع لوث ليا                       | -62          |
| 75    | صاحب صدرگرای قدر                   | -63          |
| 76    | زبرآلودتير                         | -64          |
| 76    | شورتو آپ نے بھی خوب مچایا ہے       | -65          |
| 77    | جومزاج ياريس آئے                   | -66          |
| 78    | كرامات المحديث                     | -67          |
| 78    | اس كتاب ك صفح فمبرا يرلكها ب       | -68          |
| 79    | مجد دالف ثاني رحمته الله عليه      | -69          |
|       |                                    | A CONTRACTOR |

| مغير | عنوان                      | تبرثار |
|------|----------------------------|--------|
| 104  | اكثر البام ہواكرتے تھے     | -104   |
| 105  | اس کی نظر سے نظر ملی       | -105   |
| 105  | ایک نظر دیکھا              | -106   |
| 106  | اوليا ءالله                | -107   |
| 107  | نظر ڈال کریے ہوش کر دیا    | -108   |
| 107  | وسعت نظري                  | -109   |
| 108  | ميالوچو                    | -110   |
| 108  | تشميرتك نظر كفي            | -111   |
| 110  | ميال ولمو پرعنايت          | -112   |
| 110  | ان شاءالله كامل شفاء وو كي | -113   |
| 111  | مطالعه قرمايية ول روش موگا | -114   |
| 112  | محصور ول كى خريد وفروخت    | -115   |
| 113  | القاكاايك جمله برداشت نبيس | -116   |
| 113  | را رياطل                   | -117   |
| 114  | ایک بار پرمطالد فرماین     | -118   |
| 114  | پرز دراعلان                | -119   |

| مؤتمر | عنوان                              | نبرغار |
|-------|------------------------------------|--------|
| 92    | يدطوني ركھتے ہيں                   | -87    |
| 93    | دل فرحال وشادال                    | -88    |
| 94    | تلاش كمالات                        | -89    |
| 95    | اندازدلبرانه                       | -90    |
| 95    | Bnb"                               | -91    |
| 96    | علم ماني الارحام                   | -92    |
| 97    | امام مجدنبوی عظیق                  | -93    |
| 97    | حافظه دروغ گوراحافظ نباشر          | -94    |
| 98    | ىج بتاؤل                           | -95    |
| 98    | جلال دين عرف جلُو                  | -96    |
| 99    | فرزندموا                           | -97    |
| 100   | نالائق ابيٹالينا بيتو تکھوک جا     | -98    |
| 100   | لائتي نفرت                         | -99    |
| 101   | منازل سلوک                         | -100   |
| 102   | مولا ناعبدالرحن لكصوى صاحب كانعارف | -101   |
| 102   | بيرطر يقت كى تلاش                  | -102   |
| 103   | آپ،ی کوزیب ہے                      | -103   |

| مؤنبر | عثوان                                  | نمبرثار |
|-------|--|---------|
| 126   | لودْ شيْرْنگ                           | -136    |
| 127   | مصائب میں کدھر کارخ کرناچاہیے          | -137    |
| 127   | ڈرلا <sup>ح</sup> ق ہوا                | -138    |
| 128   | بېي كھانة بى تنبدىل                    | -139    |
| 129   | گذم کی کہاں آئی                        | -140    |
| 129   | جومندے فکل گیا سوہو گیا                | -141    |
| 130   | و يكھنے بوتا ہے كيا                    | -142    |
| 131   | بائیس روپے سے ایک دمڑی بھی اوپر شہو کی | -143    |
| 131   | سامت وصدت کالای ش پروئی جائے .         | -144    |
| 132   | ضداحافظ ہم توجارے ہیں                  | -145    |
| 133   | "الجھاہے پاؤل بار کا زلف دراز میں"     | -146    |
| 134   | تفرقد زہر قاتل ہے                      | -147    |
| 135   | ریم کی کوئی متم ہے                     | -148    |
| 135   | آپ کے بزرگوں کا کہناہی کیا ہے          | -149    |
| 136   | آج كل دكانداريال زياده ين              | -150    |
| 136   | نوث ا                                  | -151    |
| 137   | سارامعاملها تدرون خانه                 | -152    |

| صفيتر | عثوان                                  | فبرغار |
|-------|--|--------|
| 115   | دعا ئىس التخائيس                       | -120   |
| 116   | فكر ونظر كاعلاج                        | -121   |
| 117   | تمام گناہوں سے توب                     | -122   |
| 117   | اس پر توجه کی تو بے ہوش ہو گیا         | -123   |
| 118   | توجك!                                  | -124   |
| 118   | ذ رااس توجه کی برکات ملاحظه فرما کیس   | -124A  |
| 118   | توجه سی یا بے ہوشی کا ٹیکہ (Injection) | -125   |
| 119   | لوز نا كنگ(Loose Talking)              | -126   |
| 120   | مدت كالبكرايل مين تحيك                 | -127   |
| 120   | خواجه نظام الدين اولياء رحمته الشعليه  | -128   |
| 121   | ستدوججت                                | -129   |
| 122   | البراتعلق                              | -130   |
| 123   | بورهمي بجينس                           | -131   |
| 123   | كيفيات قلبى                            | -132   |
| 124   | بينس كا بين                            | -133   |
| 125   | زبان دادب كے نقاضے فراموش              | -134   |
| 125   | زمین وآسان کے قلاب ملادیتا             | -135   |

| مغنر | عنوان                              | نبرغار |
|------|------------------------------------|--------|
| 149  | قبروح شر                           | -170   |
| 149  | حل وصدانت                          | -171   |
| 150  | راز و نیاز کی باتیں                | -172   |
| 151  | فيصله قارئين پرموتوف               | -173   |
| 151  | جرم کی پاداش                       | -174   |
| 152  | الىفوائد                           | -175   |
| 154  | كتاب رحمته اللعالمين كي عظمت       | -176   |
| 154  | . گھے مجت چاہے ہو                  | -177   |
| 155  | قريكازعب                           | -178   |
| 155  | كمال نظررسول الله علي              | -179   |
| 156  | ا قبال کہتے ہیں                    | -180   |
| 156  | ونیا بھر کے ممالک پر نظر مبارک ہے۔ | -181   |
| 156  | داغ صاف                            | -182   |
| 157  | يچا موتى                           | -183   |
| 158  | مديث قدى                           | -184   |
| 159  | لكصوكي حلي جاؤ                     | _      |
| 160  | ن کی روشنی میں ستاروں کا حساب      | -186   |

| مؤنبر | عثوال  | نبرخار |
|-------|--|--------|
| 137   | بيراز تفاراز                                     | -153   |
| 138   | نوائے وقت بن کر پوچھنا جا ہتا ہوں                | -154   |
| 138   | آپ جوفر مائيں                                    | -155   |
| 139   | بردگ دات کو لے                                   | -156   |
| 140   | بال رودُ لا بهور                                 | -157   |
| 141   | قاضى سليمان منصور بوري كي خانقاه كي طرف الثقات   | -158   |
| 142   | خانقاه میں کی قبر کے بارے استضار                 | -159   |
| 142   | صاحب قبرے جناب قاضى سليمان منصور پورى كى ملا قات | -160   |
| 143   | دو بی صورتین                                     | -161   |
| 143   | قاضی سلیمان صاحب کوصاحب قبر کی طرف سے دعوت       | -162   |
| 144   | پدری پوری کی، آئی، ڈی                            | -163   |
| 145   | ایک بارجمی ند طے                                 | -164   |
| 145   | صاحب تبرئيك وصالح آدى بين                        | -165   |
| 146   | مضبوط تعلقات                                     | -166   |
| 147   | صاحب قبر کی ہسٹری (History) بتادی                | -167   |
| 147   | حواس معطل  | -168   |
| 148   | ستم ظريفي  | -169   |

| مؤنير | عثوان   | فبرغار |
|-------|---|--------|
| 172   | بدعت كالمجعوت   | -204   |
| 173   | مقدقة اطلاع   | -205   |
| 174   | اظهار ما في الضمير  | -206   |
| 174   | مظلوم کی آه   | -207   |
| 175   | رُ الروكاياء  | -208   |
| 176   | (Shirk Proof) راک پروف  | -209   |
| 177   | ز بردست قا نون  | -210   |
| 177   | أعرة ارمالت   | -211   |
| 178   | (مر المشر كيين اور مجو پالي   | -212   |
| 178   | كالفتول بين اعلان   | -213   |
| 179   | 4 لكام كمون   | -214   |
| 180   | النبارى توحيداور ماراشرك  | -215   |
| 181   | المان | -216   |
| 182   | راوانعال المحال المحالة والمالة والمحالة  | -217   |
| 183   | عام لام بندى  | -218   |
| 183   | آپ کومجاہد مان کیں  | -219   |
| 184   | احاس فرمدداری سے سبکدوش کیوں  | -220   |

| -     | The state of the s |         |
|-------|--|---------|
| صخفير | عنوان  | أبرغار  |
| 161   | ناوری تیار مولانا کلصوی کا پھر جانے سے اتکار   | -187    |
| 162   | منظرعام  | -188    |
| 162   | تيراجاز  | 1. 0.00 |
| 163   | نظرِ دور بين   | -190    |
| 164   | آئنده مونيوا لے واقعات   | -191    |
| 164   | اس پرتاسف ہے   | -192    |
| 165   | دو جہاز وں کو پیش آنے والے حادثہ کی خبر  | -193    |
| 166   | مواز ندیش کیا کروں   | -194    |
| 166   | كسى كوكا نو ں كان خبر ند ہو  | -195    |
| 167   | مولا ناشاه احدنوراني رحمته الله عليه كى شفقت   | -196    |
| 167   | مولا ناعبدالرشيد قا درى رحمة الله عليه كي تربيت  | -197    |
| 168   | لیج زرِ نظرال یے یاکی سے من کیج  | -198    |
| 168   | باكل الى المحق   | -199    |
| 169   | أواب صديق حسن خان بجو پالي کي التجاء   | -200    |
| 170   | يبي هارامقصودها  | -201    |
| 171   | میرے دل کی صدا   | -202    |
| 171   | ممين انظارر بے گا  | -203    |

| صخير | عنوان                                    | 12/31 |
|------|--|-------|
| 197  | شدواه يالا شدو باكى ا                    | -236  |
| 198  | آخريدرازكيا ب                            | -237  |
| 198  | معامله طشت ازبام                         | -238  |
| 199  | دولت ِلا زوال                            | -239  |
| 200  | اظهارعقيدت                               | -240  |
| 200  | زبان وادب كے ضا بطے معطل                 | -241  |
| 201  | حال دل نا ي                              | -242  |
| 202  | مصائب وآلام كاعلاج                       | -243  |
| 203  | مصيبت كى پر بھى آسكتى ہے                 | -244  |
| 204  | يارسول الله علين كهنا تقاضاءا يمان ٢     | -245  |
| 205  | يناوني گرج                               | -246  |
| 205  | الكست فاش                                | _     |
| 206  | نداء بإرسول الله صلى الله عليه وآله وسلم | -248  |
| 207  | دلائل کی توست                            | -249  |
| 207  | اندازمجبت                                | -     |
| 208  | دالكراك (Rocket of Arguments)            |       |
| 208  | وَ کُنْ اَوْ مُنْ کُنْ                   | -252  |
| 209  | פוריביינג                                | -253  |

| مؤثير | عنوان                                      | نبرغار |
|-------|--|--------|
| 185   | سلا ب كارات روك ديا                        | -221   |
| 186   | مملدينيا                                   | -222   |
| 187   | غيرمقلدين كاناطقه بند                      | -223   |
| 188   | قاضىشۇكال مددېر قادرېي                     | -224   |
| 188   | نواب بھو پالی بڑا تلملائے                  | -225   |
| 190   | امام اعظم ابوحنيفه رضى الله عنه            | -226   |
| 191   | ظا ہر پچھاور باطن پچھ                      | -227   |
| 191   | لب کشائی فرمایئے                           | -228   |
| 192   | فجالت المحانا پڑی                          | -229   |
| 193   | شخ سنت بدرقاضی شو کال بدر                  | -230   |
| 193   | راحت جال                                   | -231   |
| 194   | كط لفظول بين طعن                           | -232   |
| 195   | ويرسول الله صلى الله عليه وآله وسلم كامنكا | -233   |
| 196   | دح کی بھیک                                 |        |
| 197   | نغات يحرب                                  | -235   |

| مغير | عثوان  | 1873 |
|------|--|------|
| 223  | كاش من جائے بيطر ذِفكر                       | -271 |
| 224  | شركول كى تعريف وتوصيف                        | -272 |
| 225  | عالم ما كان وما يكون                         | -273 |
| 225  | ایر عزه صاحب کے گرے گوائی                    |      |
| 230  | الدرون فاندكيا حال ب                         | -275 |
| 231  | ایکالله کی بارگاه یس مجده ریز                |      |
| 231  | 37 les                                       | -277 |
| 232  | الد مارا تدار تبايغ                          |      |
| 233  | المهلسك كمزى                                 | -279 |
| 234  | مركز"الدا واشت كردى كى علامت بن كرا مجرر باب |      |
| 234  | JINK   |      |
| 236  | w.h  | -281 |
| 237  | وسالدا واحديث بنام وعوت وارشاوم يدك          |      |

| عثوان                                       | نبرغار   |
|---|--|
| عبد مصطفاصلی الله علیه وآله وسلم            | -254   |
| شرک کی وادی                                 | -255   |
| قطعاز يبنيس ديتا                            | -256   |
| وسيله                                       | -257   |
| با نسری تو ئ گئی                            | -258   |
| آپ کی خواہش کے برعکس ہوا                    | -259   |
| زبان ہے یا کرائے کی موڑ سائگل (Rent A Bike) | -260   |
| ונצו  | -261   |
| آج لے اُن کی پناہ                           | -262   |
| نفرت کی مالا                                | -263   |
| تشفى قلب نصيب هو                            | -264   |
| صحافت کی ڈگری                               | -265   |
| پھولوں کے تخ                                | -266   |
| ساف صاف اثکار                               | -267   |
| يوحد کېيل يا شرک نواز                       | -268   |
| نقل ماؤ ف                                   | -269   |
| نا ندهی یا مهدی پنتظر                       | -270   |
|   | عبدِ مصطفی الله علیه و آله وسلم  قطعازیب نبیش دیتا  وسله  انسری ثوث گئ  آپ ی خوابمش کے برعکس ہوا  زبان ہے یا کرائے کی موٹر سائنگل (Rent A Bike)  درگزر  آن لے آن کی پناہ  درگزر  قضی قلب نصیب ہو  صحافت کی ڈگری  صحافت کی ڈگری  مان صاف انکار  مورکبیس یا شرک نواز  مان ماؤن |

# الله: مولانا محرمظهرا قبال قاوري رضوى مولانا محرمظهرا قبال قاوري رضوي مولانا محرمظهرا قبال قاوري رضوي

معرت علامه محرار شد القادري رضوي شارح تزيدي مدخله العالى الل سنت و الماس في المسلم الرتبة شخصيت بين -جو برميدان من استقامت كے بہار بين -ا ما ان رسول سلى الله عليه وآله وسلم بين به مسلك حن ابل سنت و جماعت ك الما واللراب يرمقاني نظر سے مخالفين كا تعاقب فرماتے ہيں۔ كونا كول مصروفيات الدار المدالي مي سائل كواس كي على بياس بجمائ بغير رخصت نبيس فرمات\_آپ المال المعالم المريز ب- محى آب جامعداسلاميدرضويدم كر تعليم وتربيت المال كالميرات كروارب يل- مجمى كالفين كے اعتراضات كے جوابات ميں معمول الله المحاش وسالمد سلى الله عليه وآله وسلم كرير وانول بيس عقائدكي پختلي الما المسال الماب كرد بي إلى مجمى دروي قرآن وحديث س ايمان كوجلا المراج إلى المحال الله المالاي الوجوانول بين انقلاب بريافر ماري بين بمحى الالالالمك كالال المرواري إن-الغرض كوئى ميدان ايمانيس جهال آب کی اور است ال السین ایس آپ کی نظریس و عظیم کمال ہے جو حالات یہ گہری نظر والله المساله وروش المينون كاحل بحى بيش كرتى بيراس كام كواوليت ا ال اس مسلك كرتمة يت حاصل مو يبي وه ورد تفاجس في آب كوشرح

### انتساب!

یس ان اوراق کو پیر طریقت، ربیر شریعت، واقعب رموز حقیقت، قطب العالم بی ان اوراق کو پیر طریقت، ربیر شریعت، واقعب رموز حقیقت، قطب العالم بی کامل، محقق اعظم، مدّ رس بے مثال، مفتر قرآن، محد شون علامه مولانا شان، امام المحتکلمین، جامع المعقول والمحقول، مرشدی، مولائی حضرت علامه مولانا ابو محمد بحمد عبدالرشید قادری رضوی رحمته الله تعالی علیه بانی جامعه خوشه مظهر الاسلام سمندری شریف کے نام کرنے کی سعادت حاصل کرتا ہوں جن کی نظر کیمیا گرنے جمھے جیسے ذرہ بے نام کومقام بخشا کہ میں احقاق حق اور ابطال باطل کی صلاحیت سے توازا

كرتبول افترز بع وثرف

خادم العلماء مرانط محدار شدالقادری رضوی 18 صغر المظفر سسمیاه 14 فروری <u>200</u>9ء بروز ہفتہ بعدظہر

# توجفر مائيا!

ایک عرصہ سے احباب مطالبہ کر رہے تھے کہ امیر حمزہ نے جو کتابیں اولیاء الله ك مزارات ير حاضري دين وان كي قبور ير كمر عديه موكر دعا ما تكنے اور الكي ار اور ان الوكون كو غيره لين كے خلاف لكسى بين اور ان لوكوں كومشرك قرار ديا ہے الله الله عرام كى بارگامول مين حاضري كوجائز ركها باور الل ايمان كوالله والول کی قبرول پر حاضری دینے کی ترغیب دلاتے ہیں۔ میں نے عرصہ ہواان کتابوں لویز سا تھااورا نکا ایک مختصر سَا جواب بھی لکھا تھا بس مصرو فیات تو تھیں ہی اس کے ملادہ وسائل کے نہ ہونے کی وجہ سے وہ زیورطبع سے آراستہ نہ ہوسکا اس سال 2001 ومضان المبارك ٢٣٦٩ ه مين مين حسب معمول حضرت دا تا سمنج بخش على ال الا الله الله الله عليه كى جامع معجد بين الوالول كے جوابات دے رہا تھا ميں اں کا ذکر کیا۔ تو فوراً جناب کا مران احد صاحب نے وعدہ کرلیا کہ میں اس کوطبع الروائ میں تعاون کیلئے تیار ہوں۔ میں نے ان سے بوچھا آپ کا تعارف تو کہنے کے ایس معزے مولانا ابوداؤ دمجہ صادق صاحب دامت برکاتہم العالیہ کا مرید ہول الله الوقي اورغيد كے بعد انہوں نے خووتشريف لا كر اس پمفلٹ'' الجھا ہے ان ارکازالف دراز مین ' کی طباعت کابند و بست کر دیا ہے انکاشکر گز ار ہوں اور دعا الكالله تعالى جناب كامران احمد قادرى صاحب كوبركات سے مالا مال فرمائے۔ آيان عادسيد الرسلين اليان

یں تمام اہل اسلام سے گزادش کروں گا کہ وہ سب ملکر اس امت کی است کی میں تمام اہل اسلام سے گزادش کروں گا کہ وہ سب ملکر اس امت کی پھرعظمت رفتہ میسر آئے۔واللہ اس امت

ترندی جیسی عظیم نعت عظی پر قلم کو حرکت دینے پر آمادہ کیا۔ پہلی جلد عنقریب زیورطبع سے آرات ہوکر احباب کے ہاتھوں میں ہوگی جے پڑھ کر ایک عظیم محفق کا احساس اجا گر ہوتا ے۔الل درد حضرات سے الیل ہے کہ وہ شربہ تر نذی کے دوران تکھی جانے والی کتاب "الجهاب پاؤل يار كا زلف درازيس"ليكر مطالعه فرمائيس-ادر عقائد فق پراعتراضات كرنے والوں كا انجام بھى ملاحظة فرمائيں تعليم وتربيت اسلامي اليے عظيم قائد كى قيادت ميں رتی کی منازل برق رفتاری سے طے کر رہی ہے۔ای پلیٹ فارم سے تغییر سورہ ایسف کا آغاز مرکز تعلیم و تربیت اسلامی جامعه اسلامیدرضویه عزیز ناؤن نزو گورنمنث ڈگری کالج برائے خواتین فیروز والدر چنا ٹاؤن شاہرر ولا ہور میں مور ند 16 می 2009ء بروز ہفتہ بعد ازنمازعشاء ہوگا۔ انبی اوصاف حمیدہ کیوجہ ہے مرکز تعلیم وتربیت اسلامی کوشاہدرہ میں مرکز اللسنت كى حيثيت حاصل ب\_تعليم وتربيت اسلامى نے عوام الل سنت كوحق و باطل نظريات میں فرق کرنے کاشعور دیا یمی خاصیت جامعہ اسلامیدرضوبید کی مقبولیت کا سبب ہے۔ عظیم محقق کے عظیم مشن میں تعاون جہاں آخرت میں نفع بخش عمل ہے۔ وہاں دنیا میں بھی سر بلندى اورسر فرازى كاسبب ب-الله تعالى جميس الني عظيم رببرك سابيعا طفت مستغيض مونے اور آپ کی تحریر کردہ کمابوں ، ی ڈیز ، ڈی وی ڈیز ، آڈیو، ویڈیو کیسٹیں بطور لنگر لیکراپنے دوستول ، عزیزوں ، رشتہ داروں کو تحفے میں دینے نیز جامعہ اسلامیہ رضوبیہ کی تقمیر وترتی کو سعادت عظیم بھتے ہوئے تن من دھن سے خد مات سرانجام دینے کی تو نتی عطافر مائے۔اور بمیں اپنے قائد کے افکار پر عمل بیرا رہتے ہوئے زندگی بسر کرنے کی معادت عطا فرمائے۔آبین

منجانب: اداكين مجلس شورى تعليم وتربيت اسلامي پاكستان

محمده و نصلي على رسوله الكريم اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بِسُمِ اللهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيمُ

1- آسانی جنت اور درباری جنم

-2 ئەجى وساى باد \_

3- شاہراہ بہشت

یں نے ان کتب کا مطالعہ کیا۔ ان کے مؤلف کا نام 'امیر حمزہ' ہے جنگے نام

السانہ '' مولا نا'' بھی آلکھا ہوا ہے ان کتابوں بیں کیا ہے؟ اندر کا ایک جنوں ہے جے الفاظ

السانہ بہنا کر ہر وقرطاس کر دیا گیا ہے جب اپنے جذبات واحساسات کومؤلف نے

السانہ کا نذر پر بھیراتو شایدوہ ہے چارے یہ بھول گئے کہ کوئی ان کا تعاقب بھی کرے گا

السانہ کا نذر پر بھیراتو شایدوہ ہے چارے یہ بھول گئے کہ کوئی ان کا تعاقب بھی کرے گا

السانہ کا نذر پر بھیراتو شایدوہ ہے چارت دیاگہ بھران کو اہل جن کے کہ کوئی ان کا تعاقب بھی کرے گا

السانہ کا ان موقت کو سرعام تار تار کرد ہے گا، پھران کو اہل جن کے سرامنے شرمندگی ہوگی،

السانہ کو اور قالم کو اعتدال پر شدر کھنے اور ذور قالم دکھاتے ہوئے جن کو وہ اپنا ہیرو بنا کر چیش کرد ہے کا سب سے مالی ہے سب سے مالی ہے سب سے مالی ہے سب سے مالی بناء پر کیا ہے یا جان ہو جھ کر میتو اللہ بی جانتا ہے بچھے جو پھھان کے اس کے اللہ بی جانتا ہے بچھے جو پھھان کا ان کے بھی انتا ہے بچھے جو پھھان کا ان کے بھی انتا ہے بچھے جو پھھان کا ان کا نظام کی بناء پر کیا ہے یا جان ہو جھ کر میتو اللہ بی جانتا ہے بچھے جو پھھان کا ان کا نظام کی بناء پر کیا ہے یا جان ہو جھ کر میتو اللہ بی جانتا ہے بچھے جو پھھان کا ان کا نظام کی بناء پر کیا ہے یا جان ہو جھ کر میتو اللہ بی جانتا ہے بچھے جو پھھان کا ان کا نظام کیا تھا ہے اس کو جھان کیا ان کے بھور نظام کی بناء پر کیا ہے یا جان ہو جھاکر میتو اللہ بی جانتا ہے بچھے جو پھھان کا ان کا نظام کیا گھان کا ان کا کیا گھان کیا گھان کے ان کا بھور نظام کیا گھان کا کھانے کا کھور کیا گھان کا کھانے کیا گھانے کا کھان کیا گھان کیا گھانے کیا گھانے کا کھور کیا گھانے کا کھانے کیا گھانے کیا گھانے کا کھانے کیا گھانے کیا گھانے کیا گھانے کیا گھانے کیا گھانے کیا گھانے کا کھانے کو کھان کے کھان کے کھور کے کھان کے کھان کے کھور کے کھور کیا گھانے کا کھور کیا گھانے کیا گھا

عزار فايض الانوار!

آگر کی مسلمان کمی بزرگ، اللہ تعالیٰ کے ولی کی قبر پر چلا جائے تو شرک! اگر کا مسلمان کمی کی قبر پر فاتحہ پڑھ ڈالے تو شرک! اگر کوئی مسلمان کمی ولی اللہ کے مزار کا مرض شرک نہیں ہے بلکہ اس امت کا مرض خود فرضی خود پرتی اور ہوں مال وزر ہاس مرض شرک نہیں ہے بلکہ اس امت کا مرض خود فرضی خود پرتی اور ہوں مال وزر ہاس مرض کا علاج صرف اور صرف عشق مصطفیٰ علیقی ہے اس دوائی سے نیدامت مکمل صحت یاب ہوسکتی ہے کہ اس کو اطاعت و محبت رسول الشمالی کے سمندر میں فرقاب کردیا جائے۔ بقول اقبال:

قوت عشق سے ہر بہت کو بالا کر دے دہر میں اسم محمد علی ہے اجالا کر دے

محمدارشدالقادری 13 کتوبر 2008ء

مفته بعدظير، جامعداسلاميدضوب

دے کر دلائل بنا کر حقائق سمجھا کرراہ حق پر گامزن کر دیا جائے یہی وقت کی ضرورت بھی ہے۔

### حد اعتدال:

میں پوری ذمدداری سے عرض کرتا ہوں کد میرائیس سالہ تر بہے اس امت کوآج بھی اگر پیارا درمحبت سے اللہ درسول (جل دعلاوسلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کے احکامات سنا کرصراط متنقیم کی طرف بلایاجائے تو ہرگز ہرگز ر دوند کریں کے بلکددور کرشامل زمر وحق ہوں کے بیدوہ طریق کارے جس ہے بڑے ہوئے سنور سکتے ہیں گمراہ راہ صداقت یا سکتے ہیں اگر اب بھی ال طريق كاركوافقيارندكيا كياتو آئندهآنے والى تعليى جمين الزام ديں كى كد مارے اكابركيے ناائل تھے جنہوں نے اُمت مسلمہ کور تی دینے کی بجائے تنزل کی اند حیری وادیوں میں دھکیل دیا میں ہر گزیجی نہیں جا ہتا ایے قلم کو کسی کے خلاف چلاؤں اور اپناوقت اس طرح ضائع کروں مكر جب كوئى دوسرا حداعتدال سے نكل جائے صدافت كا دائن چيوڑ دے ديانت كوخير آباد كہہ و حت گوئی کورخصت کر دے تو ان حالات میں مجھے پر لازم تھا میں احقائقِ حق اور ابطال بالل كرول تا كه فضاء مين جوتكدرآيا ہے وہ صاف ہوجائے گرد وغبار حبیث جائے اور مطلع بالكل والتح ہوجائے میں صمیم قلب ہے کہتا ہول کداس امت کا مرض شرک نہیں ہے بلکداس کا مرض خود غرضی ہے ،خود پرتی ہے اور ہوس مال وزر ہے جب تک مرض تشخیص شہو علاج ممکن خبیں جب مرض كى تشخيص بوجائة توعلاج نه صرف ممكن بلكه آسان بھى بوجاتا ہے اس امت كود دوا ا ہے جوخو غرضی خود پری اور ہوب مال وزر کا شانی نسخہ ہو مجھے ہیں معلوم اس دور میں صاحبان ملم كامزاج كيول اسقدركر واموكيا ب كهجو بنده بهي ان كي طرف متوجه مونا بي في و كيوكر سابقه راہ کی طرف پلٹ جاتا ہے بھی غور فرمایا آپ نے معاشرہ کے بگاڑ میں عوام بی کا قصور ہے یا رِ جَا كُرْتُم كَ لِي لِي شَرِكِ إِلْرُكُونَى كَى مسلّمان كى قبرى تعظيم كري قوشرك! الركوئي مسلّمان الله تعالى كے كى ولى كى قبر يرحاضر ہواورانكى قبركولائق تعظيم جانے توبيہ بھى شرك! اگر کوئی مسلمان کی صاحب مزاد ہے سوال کر ڈالے تو شرک! اگر کوئی مسلمان کی ولی اللہ ك مزار برحاضر بواورصاحب قبر ي حصول بركت جائية بي شرك! اگركوكي مسلمان سكى قبر والے كوزنده مان لے تو يہ بھى تھلم كھلاشرك! اگر كوئى كسى ولى الله كى قبر يرنيت وارادہ کر کے چلا جائے تو یہ بھی شرک! اگر کوئی مسلمان کسی قبر کو مزار فایض الانوار کہہ ڈالے تو شرک!ان کتب میں شرک شرک کی ایک گردان ہے جو بے وزن کرڈ الی گئی ہے۔ جوگردان بوزن مواسكى كيا ديثيت موتى ب-بيتو كوكى مابرفن بى بتاسكتا ب البعة اتنا تو ابتد الى طالب علم كو بھى ية ہوتا ہے بدوزن كردان ادر بدوزن بات بھى لائق النفات خبيس موتى لائق توجه صرف اورصرف وبي بات موتى ب جووزن دار مواور ب وزن بات الرُ كھوديتي ہوزن اى بات ميں پيدا ہوتا ہے جوشى برحقائق ہواوروہ باتيں جن كا حقائق بدوركا بحى تعلق ند موده دل تك يتزينا لودر كناركان كيرد ب تك أنييل كواره نبیں کرتے بیکبال کی دانشندی ہے کہ کی جسم کا ایک عضور خی ہوجائے تو اس حصے کا علاج كرنے كى بجائے اس كوب يارورد گار چوڙ ديا جائے اسے موت كے منديس دھيل ديا جائے اور اسے مردہ مان لیا جائے عظمندی کا تقاضابہ ہے کہ اُمت مسلّمہ میں وحدت پیدا كى جائے۔كىجىم كاده حصہ جو مجروح مواہاں كا كمال احتياط سے علاج كردايا جائے تا كدوه صحت باب بوجائ يوراجهم توانا بهوادرامور زندگى بطريق احسن سرانجام دے سكے بير امت ناتو مجھی مردہ تھی ندمردہ ہے اور ندمجھی مردہ ہوگی بلکہ قیام قیامت تک زندہ و تابندہ رے گی اس امت کا ایک ایک فرد قابل صدستائش ہاس اُمت کا ایک ایک فرد گوہر نایاب باس امت کاایک ایک فرد ذرمدار بضرورت صرف اتن ب کدان افراد کودعوت ا معبدالرحن ابن جوزی، امام ربانی مجدد الف تانی، علامه فصل حق خیر آبادی، علامه سراج احد سر جندی، شخ عبدالحق محدث و بلوی، حضرت شاه عبدالرجیم محدث و بلوی ، حضرت شاه عبدالعزیز محد ثد بلوی اور جعزت مولانا حاجی امداد الله مباجر کمی کاطرز عمل اینایا جائے۔

میں اصلی بات کی طرف آتا ہوں چونکہ میں نے امیر تمز وکی مؤلفات

1- آمانی جنت اور در باری جبنم

-2 ندنجى وساى بادے

3- شايراه بمشت

بنی پرصدافت کا بوری دیانت داری کے ساتھ مطالعہ کیا ادر بیجانے کی کوشش کی ان كتب بيں جو پچھاكھا گياوہ كس حد تك منى برصدانت ہاورتو پچھ كم نظر آيا مگرايك چيز بڑی واستے اور بے نقاب نظر آئی۔اور وہ ہے ہے وحری زبان وقلم کی بے لگامی بلکہ یوں لگتا ے کہ جو پکھی کھیا گیا۔ ہے وہ تعصب کی عینک لگا کر لکھا گیا ہے اگر سے عینک نہ گلی ہوتی تو ممکن ہے جن کی جانب راہ ملتی اور پھے تو احقا أن جن ہوتا مگر صرف ایک آئلھ ہے دیکھا گیا دوسری الكيكود يمضف مطلقاً بندركها كياس مين كيا حكمت بحى بيتوامير حمز وصاحب بى بتاسكتے و میں نے ابھی ذکر کیا تھا جو بندہ تاریخ سے واقف نہ ہووہ علمی پنتیم ہوتا ہے اس میں کوئی المنبين بيدلائل قطعيد سے ثابت ہے كد برصغيرياك منديين اسلام اولياء كرام نے پھيلايا بجن بيل حضرت على بن عثمان جوري ،ثم َ لا مورى ، المعروف بددا تا محنج بخش ،حضرت موليه معين الدين چنتي اجميري، حضرت خواجه قطب الدين . مختيار كاكي، حضرت بابا فريد الدين منج شكر ، حضرت خواجه رضى الدين محمر باقى بالله ،حضرت امام رباني مجدد الف ثاني ، علامه سراج احمد سر بهندی، حضرت شخ عبدالحق محدث و بلوی، علامه فضل حق خیر آبادی، شاه مرد الرجيم نخدث د بلوي ، حضرت شاه عبد العزيز مخدث د بلوي ، حضرت مولانا حاجي الداد الله

آب میں بھی کوئی کی داقع ہوگئ ہے آپ نے کیوں موقع دیا ہے لوگ آپ کا مزاح اڈا کیں اور
آپ کوامت میں فتند کا سبب سجھیں لوگوں میں نفاق پھیلا نا اور نفاق پیدا کرنا بیتو کوئی مشکل کا م
نہیں ہے ابھی دو جار مغلظات بکیں فتند کا بازاد گرم ہوجائے گالیکن بیرواقعی کمال ہے نفاق مٹانا
اور انفاق پیدا کرنا ففر توں کو مٹانا محبت کا چراخ روش کرنا فتند فساد کا درواز ہ بند کر کے محبت و پیار ک
راہ ہموار کرنا ممکن ہے میری بیریات سرمری نظر میں کی کونہ بھی پہند آئے مگر سینے میں دھو کئے
والا دل ضرور تصد بین کرے گاحت ہی ہے جوابھی نہ کور ہوا۔

### اناولاغيرى:

جھتے ہے جھٹیں آئی جولوگ تاریخ سے بھی واقنیت نیس رکھتے وہ کول چھلا نگ لگا کر میدان میں کود پڑتے ہیں اورا بھی سائس تک بھی معمول پڑمیں آئی اورفور المیام ولگادیے ہیں۔ انا ولا غیری بس میں ہوں اورکوئی نہیں

### I AM THE LAST

# تعلم قرآن

امام شافعی رضی اللہ عنہ فرمایا کرتے ہے جوادب عرب نظم قرآن یعنی تاریخ نے
آگاہ نہ ہوائے آن وحدیث کے بارے ہیں چھے کہنے سے اختر از کرنا چاہیے آپ فرمایا
کرتے ہے قرآن ہیں اوامرونو آھی ہیں مطلب سے ہے قرآن ہیں کہا گیا ہے 'نہ کرو' اور'نہ نہ کرو' کیوں آپ نیس کہا گیا ہے 'نہ کرو' اور'نہ نہ کرو' کیوں آپ فرماتے ہیں کہ ہرکوئی اس کی تفصیل نہیں جانتا یہی وجہ ہے کہ بڑے بڑے
انکہ فرمایا کرتے ہے قرآن پاک کی تغییر ہیں امام شافعی نے ہمیں راہ حق دکھائی۔ اس امت
کی اصلاح کرنے کیلئے انہی راہوں پر چلنا ہوگا جن راہوں پر بڑے بڑے علاء کرام اور
کی اصلاح کرنے کیلئے انہی راہوں پر چلنا ہوگا جن راہوں پر بڑے بڑے علاء کرام اور
کو شین چاہتے۔ اس سلسلے ہیں حضرت امام غوالی ،حضرت امام فخر اللہ بین رازی ،حضرت

سیداحمد شہید صاحب کی سیرت پر رقم کی گئی ہے لیجئے آپ بھی اس کا مطالعہ فر ما کیں تا کہ آپ کے علم میں خاطر خواہ اضافہ ہو پیشِ خدمت ہے۔

### : - L 192 US 2015

انہیں امیر تمزہ صاحب نے پھیلوگوں کو اپناہیرو بنا کر پیش کیا ہے۔ جن میں ایک ام سیداحمد شہید صاحب کا بھی ہے۔ میں اس وقت انہی صاحب کو پیش کر رہا ہوں تا کہ امیر تمزہ صاحب فور فر مالیں جن کو انہوں نے اپنالیڈر، رہنمااور قاکدور ہبر بنا کر پیش کیا ہے جنگو اپنا مقتداء مانا ہے ان کا ممل مبارک کیا ہے میں نے فور وخوض کرنا شروع کیا تو ایک مثلو اپنا مقتداء مانا ہے ان کا ممل مبارک کیا ہے میں نے فور وخوض کرنا شروع کیا تو ایک کتا ہے جائے ہیں ہے گئی ہے کتاب فاری زبان میں کھی گئی ہے کتاب فاری زبان میں کھی گئی ہے اس کے مؤلف کا نام' مولوی سید مجمعی شاہ ہے' جوسید احمد شہید کے بھا نے جیں۔ مؤلف کی بابت سرورتی پر لکھا ہے۔

"ازتضیت جناب فضیات آب کا شف رموزخفی وجلی علای فیهای جناب مولوی سید تعظی صاحب" تسخیل جناب مولوی سید تعظی صاحب" تسخیل علی سید مسلمه الله العلی و بادک الله فی تصافیف سید تعظی صاحب و التجاب و الصبی" میں عبارت کوقار نین کیلئے آسان کردیتا ہوں تا کرتہ تیم میں آسانی ہو" یقصنیف جناب فضیلت آب رموزخفی وجلی کوآشکار کرنے والے بہت براے عالم اور عقل وقیم کے بہلخ جناب مولوی سید محمد علی شاہ صاحب کی ہے جنگا تخلص علی ہے۔اللہ العال انکوسلامتی، بلندی اور برکت عطافر مائے اور ان کی تصانیف کوتمام بردگوں جوانوں اور اللہ کے لئے مفید بنائے"۔

ال کتاب کے سرورق پر میہ بھی تحریر ہے۔ '' کتاب فیضمآب درز کر حفزت مولانا سیدا حمدصا حب قدس سرہ سرہ پھمہ' مهاجر کی اورامام احمد رضاخال قادری کے تام سرفیرست بیں (رحمتداللہ تعالی اجمعین) کلمہ پڑھایا:

جرت کی بات ہے اگر کو گی شخص ان حضرات کے مقام و مرتبہ ہے بھی از اگر ہموتو کیے ممکن ہے وہ ان حضرات پر تنقید کا بازار گرم کرے اگر نہیں یفین آتا تو اپنے باپ دادا کی فہرست کو دیکھیں تو ضرور پہتے چل جائے گا کہ ان کو کس نہ کسی اللہ کے ولی نے کلمہ پڑھایا ہوگا اب جنہوں نہ تھ جال جائے گا کہ ان کو کسی نہ کسی اللہ کے ولی نے کلمہ پڑھایا ہوگا اب جنہوں نے کلمہ پڑھا کر شرک سے بچایا بتوں کی بوجا پاٹ کرنے سے نجات ولا گی اور ایک خالق و مالک اللہ وحدہ لاشریک کی عبادت کا درس دیا کیا ایسے محسنوں کے لئے ایسے بنی جذبات ہونے چاہیے جن کا اظہار مندرجہ بالا کتب میں کیا گیا ہے جو بچھ نہ کورو کتا بول میں لکھا گیا ہے جذباتی بھولا ہے حذباتی بھولا ہے حقیقت سے اس کا کوئی تعلق نہیں ۔ انشاء اللہ میں ابھی ٹابت کر دکھاؤں گا جو جو الزام ہمارے اور تعلق نہیں ۔ انشاء اللہ میں ابھی ٹابت کر دکھاؤں گا جو جو الزام ہمارے اور مارے اور ان کا مارے ان نام الزامات سے میر ہے۔

قیامت خیز ہے افسانۂ پر درد وغم میرا نہ کھلواؤ زبان میری نہ اُٹھواؤ قلم میرا آ یے اب بین آپ کو آپ کے گھر کا پچھے حال سناؤں اگر جق وصدافت ابھی دنیا بیں موجود ہے اور دیانت کا جنازہ نہیں اُکلاغور فرما ہے آپ نے جوالزامات ہم گدایاب دیاولیاء پر چسپال فرمائے ہیں کہیں آپ کا پنادامن تو ان میں نہیں الجھا ہوا آپ کی اپنی کتاب جو آپ کے گھر کی مؤلفہ ہے اور اس کا نام مخزن احمدے ہے جناب

سرمدی میں نے بغیر کی تبدیلی کے حوالہ جوں کا تو لفل کردیا ہے۔ جومولانا سیداحمرصاحب ك بار يسين رقم كيا كيا ب-اس عبارت كايك الفظ يرغور فرماية آب كوخود بخود معلوم ہو جائے گا آپ کے اپنے گھر کے بزرگوں کے بارے میں کیا جذبات ہیں اور دوسرول کیلئے آپ کے جذبات کیے ہیں اگر ذکر آپ کاسے برزگوں کا ہوتوان کو برے آرام \_ الغيضمآب اليفل \_ جربودا اسر چشمه فيض سردى ا\_جس كافيض جيشه جيشه جاری رہے۔ واہ واہ کیابات ہاہوں کیلئے ایسازم گوشدایی عقیدت کہ عقیدت کا سرجھوم جائے ایسا بیار کہ بیار بھی اس پرناز کرے اور دوسرے بزرگول کیلئے وہ زبان کی تختی کہ پڑھ کر ول تحبرا جائے حق پری اگرایی ہی ہوتی ہے تو آپ کومبارک ہمارے ہاں تو حق اس کو کہتے الى جس ميں اپنے پرائے كى تميز كئے بغير تھم لكاياجائے آپ نے جوائداز اختيار فرمايادہ آپ كو مبارک ہو گراس سے اہل حق کو یقینا اتفاق نہیں ہے۔آپ کا قلم اپنے انداز میں چلا اور نامعلوم کیا کیالکھتا چلا گیااوراس لکھےنے کس کس کاول مجروح کیا خیر بیتواس کواحساس ہوتا ہے جودل جن شناس رکھتا ہواور جودل جن شناس سے بریا ند ہواس کوہم کیا کہد سکتے ہیں خداہی ملكة حق شناى عطاكر ، ورندآب في تواس كاجنازه فكال كرر كدويا بآب خود و كيديس کی شخصیت کی بات تو در کنار ہے جس کتاب میں آپ کے ہیرہ (Hero) کا ذکر ہووہ كتاب بى أيضما بجوجائ اورجن كاذكر جوده صاحب الله الله چشم يرفيض مريدى آپ بی اپنی اداؤل پہ غور کیجئے حضور ہم بکھ وفن کریں کے تو شکایت ہوگی

قلم كي آواز:

آپ تو ہڑے صاحب کمال معلوم ہوتے ہیں جب چاہیں اہل اسلام کودین

فيف سرمدى"-

### آپ کے ہیرو(Hero):

جناب امیر حمزه صاحب بیروی برزگ ہیں جنگو آپ نے بطور ہیروپیش فرمایا ہادرائلی مدحت بیس رطب اللسان ہوئے ہیں۔ چونکہ آپ کی کتا ہیں۔ 'شاہراہ بہشت' آسانی جنت اور درباری جہنم، مذہبی وسیاسی باوے۔ ان کے موضوعات ہی مزارات بزرگان دین ، انکی بارگا ہوں میں صاضری ہے۔ وہاں دعا مانگنا اور وہاں سے ترک لینا ، ان اعمال کو کھلے فظوں میں شرک و کفر نے تعبیر کیا گیا ہے۔

جس قدر بھی آپی زبان اور قلم بیس زور تھا وہ سب صرف کر دیا گیا ہے بیس چونکہ
انتجادِ ہملت کا دائی ہوں بیس نہیں چاہتا امت مزید کلڑے کلڑے ہوجائے اور کا فرالگ
الگ کر کے تھوڑ نے تھوڑ ہے بچھ کر سب کوشتم کر دیں اور بہتا ہی اجتما کی طور پر مسلما نوں ک
ہو۔ بچھے نہیں معلوم آپ نے کس زادیے سے لوگوں کا جائز ولیا ہے اور ان کی اصلاح کا جو
طریق کار اپنایا ہے وہ کون ی حکمت و دانائی کی صنف مبادک ہے بہر صال بیا ہے ہی بہتر
جانے ہیں لیکن میں آو صرف اتنا ہی عرض کروں گا۔ جو زبان آپ نے استعمال فرمائی ہے
اس سے سوگنازیادہ تخت زبان استعمال کرنا بچھے آتی ہے گرکیا مجال جو ہیں اپنی زبان اور قلم کو
راہ جن سے بہتنے دوں۔ اللہ تعمال میری زبان اور قلم کی حفاظت فرمائے وہی میر امددگار ہے
راہ جن سے بہتنے دوں۔ اللہ تعمال کرنا بچھے آتی ہے گرکیا مجال جو ہیں اپنی زبان اور قلم کو
وہی میرا کارساز ہے ، وہی میر امشکل کشا ہے۔ اگر مخز ن احمدی کے الفاظ ذبین سے نکل گئے
ہیں آو تاز وفرما ہے۔

100 / at 100

كتأب فيفق بآب درذكر حضرت مولاناسيداحمد صاحب قدس مز ومر چشمه فيفن

وایمال سے خارج کریں جب جا ہیں ان کوشرک و بدعت کے گہرے کھڈ میں ڈال ویں اور جب چاہیں ان کوراہ حق سے کوسول دور کر دیں اور وہ وہ انداز اپنا تیں کہ پڑھنے والا سوچتا ہی رہ جائے یا اللہ سیکون لوگ ہیں جو اس فقد رشقی ہو گئے ہیں کہ کلمہ پڑھنے والوں کوسنت پر عمل کرنے والوں کو بیک جنوش قلم مشرک قر اردے رہے ہیں۔ بيسراسرزياد تى - إ ب كقلم في حق وصدافت كاخون كرديا ب- يس ضروراس خون ناحق پرصدائے احتیاج بلند کروں گا۔ میں تو آج کل شرح تر ندی شریف پر کام كردبا مول دوسر علمام مشاغل سے ايك طرف يا امول ميں في آج كل درى و نقار پر کو بھی مؤخر کر رکھا ہے۔ مگر آپ کی خدمت میں قلم لیئے حاضر ہول اور اس ارادے سے شاید آپ کی فہم مبارک اور قلب اطہر تک میرے قلم کی آواز بھنے جائے اور آپ اپناز او په زگاه بدل دیں جولوگ قابل رحم ہوں ان پر اعتر اضات کی بوچھاڑ نبیس کیا كرتة ان كولائق ترحم خيال كرك ان كى اصلاح نرم، كسية اور شُكفته الفاظ ميس كيا کرتے ہیں تا کہ حق بین ہواور باطل سرنگوں ہو۔ واللہ جھے آپ کا بیر جارحانہ انداز قطعا پندنیس آیا اگر آپ مجی زحت فرمائیس قومیری کسی نشست میں بن بتائے آکرین لیں بچے دیکے لیں میں شرک کارد کس فقد رز وروارطریقے سے کر رہا ہوں اور تو حید باری تعالیٰ کو کس فقد روامائل قاہرہ سے اللہ تعالیٰ کے بندوں کے داوں تک پہنچانے بلکہ رائخ كرنے كى كوشش كرر ہا ہوں۔ ميں (راقم الحروف) حضرت على بن عثمان جويرى رحمته الله عليه كى جامع مسجد ميں كھڑا ہوكر كہتا ہوں كہ غير اللہ كو بحدہ حرام ہے۔خواہ وہ قبركى

الله تعالى ك ولى كى بورخواه وه قبركى صحابى رسول ينطيق كى بورخواه وه قبركى نبى ورسول

کی ہواورخواہ وہ قبرانوررسول الشیاف ہی کی کیوں نہ ہواس کو بھی بجدہ کر نا حرام ہے۔

مجھے نہیں معلوم اصلاح احوال میں اور قوم کی گرتی ہوئی صورت کو سنجالنے میں آپ والا

الداز کیونکر موثر ہوگا۔اس طرح آپ ایک فرقہ بیس محدود ہوکر رہ جا کیں گے دوسرے
اوگ آپ کی طرف متوجہ نہیں ہونگے۔ کی فرد کو صلقہ اسلام بیں داخل کرنا ہوا مشکل کا م
ہاور نکال باہر کرنا ایک جنیش لب ہے بیقوم قابل رحم ہے اس پر رحم کیجئے اس کو مجتمع
کرنے کی سمی فرمائے بھیرنے کی کوشش نہ فرمائے درندآ پ اس امت کے صلح شار
شہیں ہونگے۔ کہیں آپ کا شار مضدین بیں نہ ہوجائے۔اس طرف بھی خور کر لیجئے گا
بیں ہونت آگاہ کررہا ہوں۔

اندازِتُكُم:

میں اگر جذباتی انسان ہوتا تو میراانداز بھی آپ جیسا ہوتا ، دیکی لیس میں نے قطعاً آپ والا انداز نہیں اپنایا آئندہ بھی جو پچھآپ کی خدمت عالیہ بیس چیش کروں گا وہ بھی فہایت متانت کے ساتھ ہوگا۔ تا کہ آپ کوایک نیاائداز تکلم ملے ایک نیاانداز تحریم میسر ہوں اور آپ کومعلوم ہوجائے آپ کے اپنائے ہوئے انداز سے پچھ بہتر ہوسکتا ہے۔اللہ تعالی کا ارشادگرای ہے:

''فَوْق کُلِّ ذِیْ عِلْمِ عَلِیْم'' (سورۃ یوسف:76) ''ہر علم والے سے اوپر ایک علم والا ہے''۔ مزارات اولیاءاللہ فی مخالفت کرتے کرتے امیر حمزہ صاحب آپ اتنادور ملک گئے کہ آپ کو اپنا مرنا بھی یاد تک نہیں رہا۔ میں اپنے پلنے سے کوئی ہات نہیں گہتا کل گئے کہ آپ کو اپنا مرنا بھی یاد تک نہیں رہا۔ میں اپنے پلنے سے کوئی ہات نہیں گہتا کل آپ کے بزرگ سیدا حمرشہید صاحب کو ٹیش کرتا ہوں۔

الورفر ما ئين:

جائے بیاتو اپنے برزرگ ہیں بیاتو راوحق میں سندونجت ہیں اگر بیدن کی بجائے رات کو بھی مزارمبارک پر حاضری دیں تو بالکل درست انکوتو کچھنیں کہا جاسکتا نا اس لئے کہان کا ہر عمل موافق سنت موتاب بال اكريكي عمل كوكي اوركر ، وه محد ارشد القادري مويا محمد عثان تادری نورا فتوی تیار ملے گا در ہوگا اتناصاف شفاف کیشرک سے فیچکو کی درجہ ہی ند ہوگا جوعطا کیا جائے اور پھرز وردے دے کر کہا جائے گا ایسا کرنا دین اسلام کے سراسرخلاف بابآب، يوج بياريج آب، وشين اله كاي إلى الد موثى السبب وكه صبطر يس آ گیا ہے۔آ ب تو مزارات کی حاضری کوشرک و بدعت سے تعبیر کرتے ہیں اور پھر جھٹ ے جہنم کا ڈراواد یکر کردوزخی ثابت کرنے کی عی ال حاصل کرتے ہیں اب آپ کاقلم کیے ملے گالگا تو يوں بے ملنے كى بجائے جم جائے گا سابى سوكھ جائے گى آپ كاقلم چلنے سے صاف صاف انکار کردے گالکھ تو خود کھے نہ کیس کے الزام قلم دکاغذیر آئے گا، چلئے جومزاج یار میں آئے مگرا تناتو مان کیجئے نا کہ آپ کے قلم نے نظمی ہوئی ہے جلد بازی میں الکھنا کہ چھتھا لکھے کچھ کیا آ ب اگرنہ بھی مانیں تو ہر پڑھنے والا تو مان ہی لے گا کدامیر حمز ہے قلم نے جھو کر کھائی ہے در نداہل من طعند دیں گے کہ تر ریوں بھی ہوتا اور محررہ بوں بھی ہوتی ہے۔ التی سمجھ کسی کو بھی ایسی خدا نہ وے دے آدی کوموت پر سے بر ادا نہ دے

### يجان ليا:

یہ وہی سید احمد شہید ہیں جن کوآپ نے ہیرو بنا کر پیش کیا تھا۔آپ تو فر ماتے ہیں مزارات پر جانا شرک، وہاں دعا مانگنا شرک، وہاں سے تبرک لینا شرک، وہاں ہے کوئی چیز طلب کرنا شرک، وہاں جانے کا قصد کرنا شرک، وہاں حاضری وینا یہ بی آپ کے ہزرگ ہیں نا، یہ آپ بی کے ہیرہ ہیں نا، بس پہچا نیں اورغور فرما ئیں دیکھیں وہ کیا کرتے ہیں اور آپ کیا کہتے ہیں بیصرف اس لئے کر رہا ہوں کہ آپ کوآ مینیدد کھانا ضروری تھا۔

ال وقت مخز ن احمدي مير عامنے بال ميل لكھا ب:

" تنكه آن روز بي طعام نخور د وبودم" ( مخزن احمدی) و المانو المانو المانو المانو المستر معلی جناب ميمونه عليما و على بعلها الصلوق والسلام من الله الملك العلام رسيديم از الفاقات عجيبه آئكه آن روز بي طعام نخور د وبودم" ( مخزن احمدی 99)

''نصف شب کے قریب ہم مقام سرف پر پہنچے جہاں ام المومنین سیدہ میمونہ ان پر اور ان کے شوہر پر صلوٰ ق دسلام اللہ ملک العلام کی جانب ہے، کا مزار فایض الانوار ہے بیاتھا قات مجیبہ سے تھا کہ اس روز ہم نے کھانا نہ کھایا تھا''۔

# بدعت كاباز ارسر كرم:

امید ہے کہ آپ نے خورے پڑھلیا ہوگا۔کیسا کمال ہے اپنے گھر کے بزرگوں
کا۔دہ سب پچھ جو دوسروں کے لئے شرک پخبراا پنے لئے سب جائز تو حید کے بین مطابق
نہ عقید سے بیس فرابی نہ کمل میں کوتائی کاباعث نظاہر ہے اگر بیٹمل ہم کرتے تو ایک طوفان
بر پاکر دیاجا تا اور بڑے زور دار طریقے سے اعلان کیاجا تا کہ دیجھولوگو یہ کیا شرک و بدعت کا
باز ارگرم کیا جا رہا ہے کہ دائت کے اند میر سے میں وہ بھی آدھی رائت کو مزار پر حاضری دی جا
رئی ہے بیتو تھلم کھلا شرک ہے اللہ تعالیٰ کو چھوڑ کر قبر کی طرف رجوع ہائے کہ تا ہوا ستم ہے
کیسی جہالت ہے کیسی بلا ٹوٹی ہے ان لوگوں پر مگر شاہ جی کے عمل پر مکمل خاموشی ہو بھی
کیوں نا یہاں کوئی غیر تھوڑ ا ہے جو بغیر سو ہے سمجھے زبان ہلا دی جائے قلم کو ترک دے دیا

شرک وہاں زیارت کو جانا شرک، گویا شرک، شرک کی ایک مشین آپ نے چلار کھی ہے جور و کے نبیس رکتی۔

کیوں جناب والا اب آپ نے پیچان لیا بیشاہ صاحب آپ ہی کے ہزرگ بین آپ ہی کے ہزرگ بین آپ ہی کے ہزرگ بین آپ ہی کے مرک تاج بین بیم میدان کا رزاد کے شہوار بھی بین بیراہ حق کے شہید بھی بین اور آئندہ آنے والی نسلوں کے دہبر ورہنما بھی ان کا تو کوئی عمل غلط نہیں ہو سکتا ہے جو کریں عین قر آن وحدیث کے مطابق ہوگا اس لئے کہ بیآ پ کے ہیرو بین آپ کہ امام د پایشوا ہیں۔ نفتر و جرح :

آپ کی زبان وقلم کی زدسے بڑے بڑے اولیاء کرام بھی محفوظ نہیں رہے

آپ نے ساراز ورمزارات کے خلاف صرف کیا ہے بھی دھڑت خواجہ فریدالدین گئے

شکر کے مزار پر تنقید بھی دھڑت بہاؤالدین ذکر یا ملکانی کے مزار پر اعتراضات بھی

حضرت شاہر کن عالم مانا آئی کے مزار پر نفقر وجرح کا بازارگرم پاکتان بھرکے بلکہ پوری

دنیا کے اولیاء کرام کے مزارات پر وہ وہ رنگ بدل بدل کر زبان وقلم چلایا کہ خوف خدا

نام کی کوئی چیز دور دور تک نظر نہیں آتی بھی مزاح کا وہ عالم کداگر غیر مسلم بھی ایسا کرنا

چاہتا تو ہرگز نہ کر پاتا اسکویہ جرآت نہ ہوتی گرآپ تو بڑے بہادر نظلے جوان بڑے

بڑے بزرگوں کو اپنا ہے تکلف سیسے بیٹھے نیجا للہ کے حوالے۔

دل کے پھیپولے جل اٹھے سینے کے داغ ہے اس گھر کو آگ لگ گئی گھر کے چراغ ہے

الله تعالى كى جلالت كى تتم:

كم ازكم ميرى بجه عقويه بات بالاب آخراس فدراوليا ،كرام كم مزارات ير

تقید کیوں؟ اوراگر بیسب کچھول کی اتفاہ گہرائیوں ہے کہا جار باتھااور لکھا تھا تو پھراس السيخ بيكان كي تميز كيول الرجرم دونول جكدايك وونوجوهم برائير لكدوى اين يرجمي لكنا تقاضاً ديانت إورا كرايها ندكيا جائة و محركيا موكا آف والي سل بدوياني كاطعند دے گی مراس کی آپ کو کیا پرواہ آپ کوتو اپنا ایک خاص مقصد پورا کرنا ہے جو صرف اور صرف اولیاء کرام کی مخالفت کر کے بی حاصل ہو سکتا ہے اور وہ کیا ہے؟ جہاں ہے آپ کو مالى الداولتى بوبال يريكى يحدروكها ياجائة ملى ورند بند ، وجائے گى اور اگرريال اور والرآنابند موسك توندآب عمركز قائم موسك نداسلحدآك كاندكاريال موسك ورندى آنے جانے میں جہازوں کے کمٹ ال سکیس کے آخراتی ساری مراعات ترک کر کے صرف اولیا ءالله کی عزت کیول کی جائے مگر ہم الله تعالی کی جلالت کی شم اٹھا کر کہتے ہیں ہم ان تمام مراعات برلعنت مصبحة بين جوحفزات اولياء كرام كى مخالفت كر مح ميسرة كي بهمان كواپنامحس جانة بين اورجم برگزمحس كش نبين موسكة مكرآپ جوچا ب\_آپ كاحسن كرشمد سازكر ، بين نے ابھى آپ كے بيرو، آپ كے ليڈر، آپ كے رہنما اوربرچشمہ فیض سرمدی جناب سیداحد شہیدصاحب کاعمل آپ کے سامنے رکھا ہے اگرؤہن سے از گیا ہوتوایک بار پھرتاز ہفر مائے۔

''نصف شب کے قریب ہم مقام سرف پر پہنچے جہاں ام المؤمنین سیدہ میمونہ رضی اللّه عنصا کا مزار فایض الانوار ہے بیا تفا قات مجیبہ ہے تھا کہ اس روز ہم نے کھانا نہ کھایا تھا'' ( محزن احمد ہے 99 )

كيول جناب والا:

اللدتعالى بھى بوا كارساز باس نے آپ كے دادا جان كو پہنچاديا ناحضرت ام

# دائمي سكون:

آپ کی ہوا کو بھی خبرنہ تھی ،کوئی ہماری بھی خال و تلاثی لے لے گا۔اور بول ہمارے اندرونی راز فاش کر دے گا۔ گرچہ نشتر لگنے ہے در د ہوتا ہے مگرتمام فاسد ماد ہ زائل ہو جاتا ہے۔اور آئندہ کیلئے مستقل آرام آجاتا ہے سکون مل جاتا ہے۔عقل مند کی نظر نشتر پڑئیں بلکہ مریض کو دائی سکون ملنے پر ہوتی ہے۔

آپ کوایک غلط بنی تھی کہ میں نے جس طرح قلم چلایا ہے وہ بڑا مؤثر ہوگا
اور لوگ میرے پھیلائے ہوئے چال میں بڑی سادگی کے ساتھ جلداز جلد سے نے چلے
جا کیں گے مگر شاید آپ کو بیا نداز و تک ندتھا کہ آپ نے جو جال بننے میں سمال ہاسال
صرف کر دیئے وہ چند لمحوں کی مار ہے جب شخفین کی تینچی پھرے گی تو سب تار تار ہو
جائے گا اس کا حلیہ تک باتی ندر ہے گا سوالحمد للہ ہم نے شفستہ زبان کے ساتھ آپ
جائے گا اس کا حلیہ تک باتی ندر ہے گا سوالحمد للہ ہم نے شفستہ زبان کے ساتھ آپ
کے بنے ہوئے جال کا وہ حشر کر دیا ہے کہ اس کوکوئی جال ماننے کو بھی تیار ند ہوگا آپ
کے سادے تانے بانے جو آپ نے اولیاء کرام کے مزارات کے خلاف بنے شے ہم
نے سب نیامنیا کردیئے ہیں۔

امید کرنا ہوں میری اس تحریر کے بعد سکون رہے گا۔آپ آئندہ جب قلم چلا کیں گے تو سوج سمجھ کر چلائیں گے۔ نیز اب آپ کے قلم میں وہ جو ہر پیدا ہوگا جو حق نما ہوگا۔ آپ کوبھی شاید اللہ تعالیٰ حق کی طرف مائل کر ہی دے کوئی بردی ہات نہیں وہ بڑا کریم ہے اور اپنے حبیب کریم صلی اللہ علیہ وسلم کا نصد ت وہ پچھ عطا کر دیتا ہے جو بندے کے وہم و گمان میں بھی نہیں ہوتا۔ المونين ميمونه رضى الله تعالى عنها كے مزار فايض الانوار پرآپ كے ايك نقطه نظر كي تو لغي گھر ے ہولی اور ابھی آ گے آ گے دیکھے ہوتا ہے کیا، جس مل کوآپ نے کھالفظوں میں شرک تعبيركيا إودى عمل آپ كے بيروكرد ب إين اب ان يركيا تكم ملك كا دوتو آپ بى بہتر جانتے ہیں ہم نے تو صرف آپ کو بتایا ہے کہ آپ کے اپنے گھر میں کیا کیا ہور ہا ہے اور میں نے بوری کوشش کی ہے کہ کمال دیانت کے ساتھ آپ کی قریروں کا جائز ولوں اور آپ کے سامنے کسی ایسی شخصیت کونییں کیا جس کوآپ الزام دیکر داو فراد اختیار کریں بلکہ ان کو آپ کی ضدمت عالیہ میں لا یا ہوں جن کوآپ لا کھ کوشش کر کے ہاتھ یاؤں ماز کر بھی اپنے ے جدانہیں کر سکتے۔ نامعلوم آپ نے مزارات اولیاء پراس قدر چڑھائی کیوں کرڈالی اور اگران كے مزارات مقدمه يرحاضري دينا اتنابوا كناه اور نا قابل معافى جرم ففا تؤ پھرآپ نے پہلے اسے گھر کی خبر لی ہوتی تا کہ آپ کو آنے والی مصیبت کا سامناند کر تا پر تا۔اب جب جاری تحریری ابل علم اور صاحبان عقل و دانش کی آنکھوں کے سامنے آئیں گی تو وہ آپ کی تر روں کو بالائے طاق رکھیں گے اور بول بکار اٹھیں کے بیفاط لکھا ہے بالکل غلط ے۔اس لئے کداگر سبیح ہوتاتو کم از کم آپ کے بزرگ تو اس غلطی میں جتلانہ ہوتے آگرآپ بیفر مائیس که وه تو مجاهد نی سبیل ملنه بین عالم دین بین،آل رسول (صلی الله علیه وسلم) ہیں شہید ہیں قو شاید آ چکو یا فہیں کہ آپ نے کئی شہیدوں پر بھر پور تقید کی ہے بلکان کامزاح تک اڑانے کی پوری عی کی ہے۔اب تو آپ بھی کیایادکریں مے کسی نے آپ پر گرفت کی می پرآب بول گویا ہوں گے:

> کس طرح فریاد کرتے ہیں بتاد و پورا قاعد ہ اے ایپر ان چمن میں نوگر فتاروں میں ہوں

پھورتے ان ای پھر نے کی طاقت رکھتے ہیں وہ پھار کے قوبی ہیں۔ لبذاوہاں جانے کی ضرورت نہیں شصرف سے کہ قبروں پر حاضری نہیں ویتی جاہے بلکہ وہاں جانے کوآپ نے شرک نے تعبیر کیا ہے۔ اگر معاملہ واقعی ایسا نازک تھا تو پھر کم از کم آپ کے گھر میں تو اس کی ٹاز کی کا پورا پورا لحاظ رہنا جا ہے تھا گر نہیں رہا آخر کیوں؟ اس کا جواب شاید قیام قیامت تک بھی آپ سے ندبن پائے اتا تو میں ضرور عرض كرول كاآپ نے بياقدام بغير سوچ تھے اٹھايا ہے اور بيآپ كو بہت مبنگا پڑے گا۔ ليج مطالعه فرماية اور اگر صدافت كا جنازه اجمى نبيس أكلاً، ديان جهان فانى سے رخصت نہیں ہوئی ،نور ہدایت ابھی چک رہا ہے اورشرافت ابھی باقی ہے تو اب دوہی صورتیں ہیں یا تو سیدصاحب کوانے رہنماؤں کی صف سے خارج فرمائے اور اپنا وامن پاک يجيئ يا پحران پر بھي شرك كافتوى داغ ديجے تاكة پى جوانمر دى يين ہو اورآپ کی تحقیق پایہ شبوت کو پہنچے اور آپ قرار واقعی محقق مظہریں۔ آپ نے موضوع تو ا بن بند كاچنا مرآب بي بعول كئ كدجب آپى اس لول تنكرى تحقيق كا حال كلا كا تو اہل دانش شکوہ کریں گے اہل قلم تاسف کا اظہار کریں گے اور اہل حق خون کے آنسو بہائیں گے اور آپ کے لیے کیا پڑے گا ....؟ میں کچھنیں کہتا ہے تو فیصلہ قار کمین ہی کریں گے آپ کی خدمت عالیہ میں تو صرف ا تناہی عرض کروں گا کہ آپ کے ہیرو کیا

# سداحدشهدصاحب فرماتے ہیں:

''برائے زیارت در حجو ۂ مقدّسہ رفتم''( عزن احمد) 99) '' میں حضرت ام المونین سیدہ میمونہ رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہا کے ججرۂ مقدسہ کی جوجوالزامات آپ نے مزارات پر حاضری دینے والوں پر لگائے ہیں،ان
کی زویس لا لا کران کوشرک شرک کی صلوا تیں سنائی ہیں جو جو فتوے ان پر صادر
فرمائے ہیں۔ دیانت کا نقاضا یکی ہے وہی فتوے وہی احکام وہی بزالی نزالی ہا تیں جو
دوسروں کیلئے کی ہیں اب وقت آیا ہے اپنے گھر کے بزرگوں کو بھی وہی تخذ عنایت
فرما تیں تب ہم بھی آپ کوم دِمیدال جا نیں،آپ کے قلم کوت گوما نیں۔ گرایا کیوگر
ہوگا۔ چلوآپ جا نیں آپ کا کام گر ہم تو آپ کو پھڑ ہاز کہیں گے آپ کو یا دہوگا آپ
نے کیا کیا شور مچایا تھا مزارات پر حاضری دینے والوں کے خلاف کیا کیا صلوا تیں
سنائی تھیں مزارات پر حاضر ہو کر سوال کرنے والوں گواور کیے نازیباالفاظ ہے متصف
فرمایا تھان لوگوں کو جومزارات اولیاء اللہ پر حاضری دیتے ہیں۔اب اپنے لیڈر،اپنے
مزرمایا نے رہبر، اپنے اُن خلیفۃ اللہ ہالیتین کو بھی ملاحظہ فرما کیں وہ کی۔
ہیرو (Hero) اپنے رہبر، اپنے اُن خلیفۃ اللہ ہالیتین کو بھی ملاحظہ فرما کیں وہ کی۔
اندازے ام المؤمنین سیرہ میموندرضی اللہ تعالی عنہما کی قبر پر حاضر ہوتے ہیں۔

ام المؤمنين سيده ميموندرضي الله تعالى عنها كمزار پر ماضرى:

آیئے ملاحظ فرمائے آپ کے ہیرہ جناب سیداحد شہیدصاحب کیا فرماتے
ہیںا در کہاں حاضر ہیں۔ ذراغورے مطالعہ فرمائے شاید دل کی گہرائی تک پہنچے
دل سے جو بات نگلتی ہے اثر رکھتی ہے
پر نہیں طاقت پرواز گر رکھتی ہے

صداقت كاجنازه:

آپاة فرماتے میں قبرول والے مو مجے معاملہ فتم ہوااب وہ نہیں سنتے نہیں

زيارت كوحاضر بهوا"\_

#### مزارات اولياء:

کیوں جناب یکی وہ شرک تھا نا جس کو آپ نے حضرت دا تا تیج بخش رحمة اللہ علیہ کی قبرانور پر حاضری دینے والوں کے کھاتے میں ڈ الاتھا، یکی وہ شرک ہے ناجو آپ نے حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیر کی رحمة اللہ علیہ کے ججر قامقد سہ کی زیارت کرنے والوں کیلئے ثابت فر مایا تھا۔ یکی ہے ناوہ خلاف قر آن وحدیث عقیدہ و میل جو آپ نے مزارات اولیاء اللہ کی زیارت کو جانیوالوں کے پلے ڈ الا تھا اور پھر شرک جیسانا تا ہل محانی جرم النے سرتھوپ دیا تھا۔

# غبارے کی ہوا تکل گئی:

اگرآپ مختد اور در باری جہنم "" نہ بی وسیاسی باوے "اور" شاہراہ بہشت " میں ہواں تو آپ نے بردی بردھکیں ماری جینم "" نہ بی وسیاسی باوے "اور" شاہراہ بہشت " میں ہواں تو آپ نے بردی بردھکیں ماری جین گویا کوئی معرکہ سرکرلیا ہوجیے کی مخالف اسلام کو بطور فخر بیان کر رہے ہوں ویسے غبارہ آپ نے خوب بھلایا تھا مگر ہوا یوں کہ بھو لئے بی اس کی ساری ہوانگل گئی اور ساتھ ایک زور خوب بھلایا تھا مگر ہوا یوں کہ بھو لئے بی اس کی ساری ہوانگل گئی اور ساتھ ایک زور داردھا کہ بھی ہواجس کی وجہ ہے آپ کے غبارے کی ہوا نگلے کا اعلان بھی ہوگیا ، اب رادھا کہ بھی ہواجس کی وجہ ہے آپ کے غبارے کی ہوا نگلے کا اعلان بھی ہوگیا ، اب تا ہوا تھے دور دلائل کدھر گئے جو آپ نے مزرات اولیاء ، پر حاضری دینے والوں کے بتا ہے وہ دلائل کدھر گئے جو آپ نے مزرات اولیاء ، پر حاضری دینے والوں کے بتا ہے وہ دلائل کدھر گئے جو آپ نے مزرات اولیاء ، بہہ گیا نہ پانی معاملہ ہوگیا نا خلاف قائم کیے تھے ہوگئے ناہا منشوراً اڑگئی نہ خاک ، بہہ گیا نہ پانی معاملہ ہوگیا نا شونڈا ، اللہ کا لاکھ شکر ہے کہ معاملہ تو شونڈا ہوگیا ای میں خبر ہے ای میں ہوائی ہوگیا نا کی میں خبر ہے ای میں ہولی کے شونڈا ، اللہ کا لاکھ شکر ہے کہ معاملہ تو شونڈا ہوگیا ای میں خبر ہے ای میں ہول کی ہول کے خوالی ہوگیا نا کی میں جبر ہے ای میں ہولی ہولی کے شونڈا ، اللہ کا لاکھ شکر ہے کہ معاملہ تو شونڈا ہوگیا ای میں خبر ہے ای میں ہول کی ہول کی ہول کے خوالی کی معاملہ تو شونڈا ہوگیا ای میں خبر ہے ای میں ہولی ہولی کے خوالی کی ہول کولئی ہولی کی میں خبر ہے ای میں ہولی کے سے میں ہولی کی کولئی کولئی ہولی کی معاملہ تو شونڈا ہوگیا ای میں خبر ہے ای میں ہولی کی کولئی کولئی

و بے اب تو آپ کو بھی مان ہی جانا جا ہے جس جرم کی پاداش میں آپ ہم پر برستے رہے ہمیں صلواتیں ساتے رہے ہیں شرک، بدعت ، گمراہی، جہالت، بے ادبی اور نامعلوم کیا کیا، نا کردہ گناہ ہمارے کھاتے میں ڈالتے رہے ہیں وہ جرم بعینہ آپ کے گریس بھی ہوتارہاہ اورآ کے بزرگوں کوای جرم میں جتلا ہم نے دکھا دیا ہے اور حوالہ بھی آپ کے گھر کا ہے ابھی تو صرف آ کے ایک بزرگ کو آپ کے ایک رہبر کو ،آپ ك ايك ليدركو ميل فرآ كى خدمت ميل پيش كيا ب، آ كرآ كرو كھے ہوتا بكيا؟ اگر مزارات صحابة وراولياء پر حاضرى شرك ب اور قبورى عقيده باطل بو اباس پر قائم رہے گافرار نہ وجائے گااور ہاں اگر آپ راوِفرار اختیار بھی کرنا جاہیں گے تو لوگ ہرگز آ پکوفرار نہ ہونے دیں گے وہ صاف صاف کہیں گے، اور آپ سے بانگ ؤبل سوال کریں مے جو جرم آپ نے ہمارے کھاتے میں ڈال کر ہمیں جہنم رسید کرنے کی سعیٰ الا حاصل فر مائی تھی وہی جرم آ کیے اپنے وامن سے بھی برآ مد ہو گیا ،آپ کہے کیا کہتے ہیں لگائے فتوی، کیجے وہی زبان استعمال جو ہمارے لیے کی تھی ، یہ جرم تو آپ کے گھر میں بھی ہوتا رہا ہے ہے کوئی دیانت نہیں ، دوسرا جرم کرے تو تھم لگاؤ، سزائیں سناؤ، دوھایاں دو، ڈھنڈورا چیٹو، شور بچاؤ، شرک ،شرک کی رہ لگاؤا گراہے گھریں یکی سب چھے ہوجائے تو نہ شور ، نہ ہنگامہ، نہ شرک ، نہ بدعت بلکہ بالكل خاموشى آخر كيون؟ لكاؤ فتوى تا كەصدانت ظاہر مو،اب آپ چي بى رمين گ گویا موت معنوی طاری ہوگئ ہے، سوچتے ہو تکے بیکیا ہو گیا ہے ہمیں کیا معلوم تھا یوں بھی ہوجائے گا ہم نے تو بڑے زور دار طریقے سے گرفت کی تھی اور کئی نوجوان ہارے جال میں آ کھنے تھے اب کیا کریں کدھر جائیں کیا جواب دیں کیا رنگ ا پنا میں جو ہمارا بھرم رہ جائے لگاؤفتو ی تا کے صدافت ظاہر ہو،اب تو آپ کو جی نہیں

ر منا جا ہے بلکے کل کر بولنا جا ہے گر ایسا ہو گانہیں ، کہال کئیں اب وہ برنظیس جوزور زورے ماری جاری تھیں عوام الناس کو پوری طرح باور کرانے کی کوشش کی جارہی تھی كه حفزت على بن عثمان جوري المعروف بدوا تاحيخ بخش، حفزت سلطان بابهو، حفزت امام ربانی مجدد الف ثانی ، ﷺ احمد سر ہندی ، حضرت خواجہ رضی الدین محمد باقی باللہ ، حضرت خواجه معین الدین چشتی اجمیری ،حضرت بهاؤالدین ذکریا ملتانی ،حضرت بابا فریدالدین کنج شکر، رحمته الله علیم اجمعین اور دیگر بزرگان دین کے مزارت پر حاضری دینا شرک ہے آپ نے شرک کی وہ چکی چلائی ہے کہ اسکی گھاں گھاں میں آپ کی اپنی آواز مجمی صاف سنائی نہ دی اور اس ٹیم بے ہوشی کے عالم میں صفحوں پر صفحے سیاہ كرتے چلے كئے اورائے تاكيں يہ جھتے رہے كہ يس برا فكركار موں يس برا افكار موں میں تو بہت بری چیز ہوں جی بال ایسے بی ہوتا ہے جب ضابطہ بھی خود بی بنایا جائے اور منصبط بھی خود ہی کیا جائے تو پھر کب ہوش رہتا ہے میں نے کیا کیا ، کیا کہا اور کب کیا کہاں کیااور کیا کیا، بیسب تو ای بندے کو یا در ہتا ہے جو پُرسکون ماحول بیس ہواور حق وصداقت كا دامن تقامے ہوئے ہواور جب دامن حق وصداقت ہى چھوڑ ديا جائے تو پھر كب ہوش رہتى ہے۔

اور ہوش میں جو نہ ہو وہ کیا نہ کرے

### شوروبنگامه:

امیر حمزہ صاحب آپ نے اپنی کتابوں'' آسانی جنت اور در باری جہنم'' '' نذہبی و سیاسی باوے'' اور'' شاہراہ بہشت' میں بڑا شور مچایا تھا شرک ہو گیا ، شرک ہو گیا ،شرک ہو گیا جب آپ نے اپنے دعوٰ کے دولائل کے جہاں میں اتارا

تو شرک ، شرک ، شرک کی رٹ پر جو دلیل قائم فر مائی و ہتھی در باروں ، مزاروں اور قبروں پر حاضری جس کوآپ نے قبوری عقید وقر اردیا اور اس کوصر تک الفاظ میں شرک سے تعبیر کیا اور ذرا برابر پرواہ اس بات کی نہ کی کداس وفت امتِ مسلّمہ کو مشرک قرار دینا کمال نہیں اس امت کی اصلاح کرنا اور اس کوجہنم ہے بیانا کمال ہے۔جس زور دارطریقے ہے آپ نے صدا بلند کی ہر سننے والا بی محسوس کر رہا تھا شایدیہ آ وا زحق نما ہے مگر جب بغور جائز ہ لیا گیا تو پتا چلا کہ بیصدا خلا ف عقل ہی خبیں بلکہ خلاف خاں ہ بھی ہے۔اور خاں ہ تلاشی لی گئی تو اس صدا کا جناز ہ نکل حمیا اور دل نے تھک کر کے گوائی دی کہ بیرسب جھوٹ ہے جو سنا گیا آسانی جنت اور ورباری جہنم میں آخر یکی شور و بنگامہ بریا کیا ہے تا، بار بار وعوت وی ہے او گوحق کی طرف آؤ۔ درباری حاضری تھوڑ دو، اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں حاضر ہو جاؤ۔ واہ کیا حسن عمل کی دعوت ہے۔ جن کوآپ نے موحد ، تو حید کے علمبر دار بنا کر پیش فر مایا تھا۔ وہ خوداس جرم میں جتلایائے گئے جس کا آپ روفر مار ہے تھے۔اور گواہی بھی آپ کے اپنے گھرے ل گئی لیجئے ایک بار پھر تاز و فرمایئے اپنے بزرگوں کاعمل

# سيداحدشهيدصاحب فرماتے بين:

''بطلب نان پیش ہر کس دریدم و بمطلب نرسیدم بنا چار برائے زیارت در ججرہ مقدسہ رفتم''۔(مخزن احمدی 99)

میں نے ادھرادھر بہت کوشش کی مگر کھا نا نہ ملا چارونا چار بغرض زیارت ججرہ مقد سے سیدہ میموندرضی اللہ تعالی عنہا پر حاضر ہوا''۔ جهالت ،شرک و بدعت ہے تو آخر شاہ جی کو بیرقاعدہ کلیہ مشخصر نہ تھا ، ان کی قوت حافظہ انتهائی کمزور تھی جوسب کچھ بحول بھال گئے اور جھٹ کر کے حضرت ام المونین سید میموندرضی الندعنها کے مزارشریف پر حاضر ہو گئے ،آپ کے بیان کردہ ضابطے کا کیا جنازہ نکالا شاہ صاحب نے اور آپ نے جو بو مکیس ماری تھیں ان پر کیا کوہ قیامت تو ژاسیدصاحب نے آ پکوکہیں کا نہ چھوڑا لگتانہیں آپکویہ سب پھے آپ کے عقیدے کے مطابق شرک ہے تو اٹھائے قلم اور روفر مائے اس شرک عظیم کا اور بھی جو ال راہ میں حائل ہوا اسکو بھی رائے ہے پرے کر دیجے بلکہ راستہ صاف کر دیجے تا کہ آئندہ مسافر بڑی آسانی کے ساتھ منزل مقصود تک پہنچ سکیں اور انکوؤرہ برابر دقت نه بوءاب اگروه ی الفاظ استعال موں، وہی انداز تکلم ہو، وہی طریق جارحیت ہو، وہی بلندوبانگ دعوٰ ہے ہوں تو مزہ آجائے مگراب تو آپ ایسے خاموش ہوں گے جیسے جال تن سے جدا ہے، سائس کی آ مدور فت منقطع ہوگئ ہے اس کیے کداب کوئی غیرتھوڑا حاضر جرة مقد سه بلكه اس بيرويل اس د بيرين ان اف ليدريل اس موحد ہیں بیہ جو کریں سب درست اور دوسرے جو کریں وہ سب غلط دونوں جگہ نہ الفاظ ایک جے،نہ بی طرز فکرایک جیسا، ندانوی ایک جیسا، ندگر جنے برسنے کا انداز ایک جیسا،لگتا ہے بدکوئی حکمت ہے جو صرف آپ سجھتے ہیں دوسراکوئی اسکاعشر عشیر بھی نہیں جان سكنا،اگربات يهال تك بن موتى توشايدآپ دهوني پئكاماركرن كانت مگرمعامله كچهاور مجھی تھین نوعیت کا ہے، لیجئے اپنے دھڑ کتے دل پر ہاتھ رکھنے اور اسکوتسلی و بیجئے اور حق سننے کی ہمت پیدا کیجے تا کہ آ پکو بھی تن گوئی کی دولت نصیب ہو،آپ موحد ہیں آپ توسمى كى كوئى رعايت نبيس فرمات ،آپ سرف الله تعالى كوراضى كرنا جا بيت بيل ،آپ کو کیا غرض کسی کی ذات بات یا جماعتی تعلق سے لیجئے آ تکھیں کھو لیے اور دن کی روشنی

## کھانے کی تلاش میں سرگرداں:

شاہ جی اوّل تو اپنے طور پر کھانے کی تلاش میں سرگر داں رہے لیکن جب انہیں کھانا ملنے کی کو کی امید نہ رہی تو حضرت ام االمومنین سیدہ میمونہ رضی الله عنها کے جرہ مقدمہ یر حاضری دینے کے لیے کشال کشال علے آے" شاہراہ بہشت" "ننور سای باوے" اور" آسانی جنت درباری جہم''ان کتابوں میں جو کچھ مرقوم ہے وہ سب مزارات ہی کی مخالفت ہے بار بارقبوری عقیدہ کہہ کہد کررد بالغ کیا گیا اور بوں معلوم ہوتا ہے جیسے قبروں سے کوئی خاص متم کا بیر ہے مزہ تو جب ہے کہ آپ بھی قبروں پر نہ جا کیں بلکہ مر جانے والوں کو بھی پاس ہی رکھ لیس ظاہر ہے میرایہ جملہ بُر اتو لگے گا مگرا تناسخت تو نہیں ہے جتنا بخت آپ نے لکھا ہے ،خوف خدا بھی کی چیز کا نام ہے وہ اگر تھوڑ ا سائھی ہوتا تو قلم یوں بے لگام تو نہ چاتا بلکہ پچھ تو خیال ہوتا امت مسلمہ میں افتراق پیرا کرنا تو کوئی کمال نہیں کمال تو یہ ہے کہ اس امت کے افراو کی اصلاح کر کے انکوراہ حق پر گامزن کردیا جائے ،گر جوروش آپ نے اپنائی ہے وہ نہ تو تقاضاء دیانت ہے ، نہ ہی شرافت اسکی اجازت ویتی ہے ، نہ حقائق ایں طرف ماکل ہیں نہ اس دور میں بیطریق اسلام ہے ،اب تو بیہ سوال کرنے میں حق بجانب ہوں نا کہ آخر سید احمد شہید صاحب ، مزار فایفن الاانوار پر کیا لینے گئے تھے؟ انہیں سیدہ میموندام اُلمومنین کی وفات یا د نہ تھی ا گرتھی تو پھروہاں کیوں کے جب آپ بیرقاعدہ بیان کرتے ہیں کہ مرجانے والے م گئے اور اب ان سے کی طرح کی کوئی امید وابستہ کرنا سراس

میں مطالعہ فرمائے ان شاء اللہ حق واضح ہوجائے گاسید احمد شہید صاحب فرماتے ہیں اور انکا پہ فرمانے اس کے فرد ویک کس درج ہیں ہے وہ تو ہمیں معلوم ہی ہے کہ آپ کے فرد یک تو سید صاحب حق کو ہیں جن پرست ہیں حق کی خاطر جہاد کرتے رہے ہیں ہی کا راہ میں جان دے دی تھی ، اور مرتبہ شہادت پر فائز ہوئے ہیں وہ خلیفة اللہ بالیقین کی راہ میں جان دے دی تھی ، اور مرتبہ شہادت پر فائز ہوئے ہیں وہ خلیفة اللہ بالیقین کی راہ میں جان دے دی تھی ، اور مرتبہ شہادت پر فائز ہوئے ہیں وہ خلیفة اللہ بالیقین ہیں۔

#### اے جدہ انجدہ:

'' و پیش ترمتِ شریفه گدایانه ندا کرده گفتم کهائے جدد امجده من مهمان شامستم چیز خوردنی،عطافر ما''۔ (مخزن احمر، 99)

"سیداحمرشہیدصاحب ام المومین سید و میموندر ضی الله عنها کی قبر شریف کے پاس بلکہ قبر انور کے سامنے کھڑے ہو کر گدا ہانہ ندا کرتے ہیں اے میری جدد امجد و بعنی اے میری دادی جان میں آپکا مہمان ہوں کھانے کو پچھے عنایت فرما ہے"۔

کول امیر تمزہ صاحب بیر عبارت جناب والا کی نظر سے نہ گزاری بھی بید انداز
گدایا نہ آ کچویاد نہ تھا جوآپ نے آ تکھیں بند کر کے قبوری عقیدہ کوری عقیدہ کی رہ لگا کی اور آ تکھیں نیم کھی تھیں کہ قبوری عقید کوشرک سے موسوم کردیا اور پھروہ وہ جملے ،
کے کہ پڑھنے والا ورطہ جرت میں پڑجا تا ہے اب تو آپ کو ہوش آئی گیا ہوگا اب تو
آپ بڑی سرعت سے اس عمل پرشرک کا فٹوی صادر فرما کیں گے ، آخر آپ موحد ہیں
میں برست جیں آپ تو صرف اللہ تعالی ہی سے ڈرتے ہیں کیا مجال جو غیر اللہ سے ذرا
میں خوف کھا کیں وہ تو آپ کے خمیر میں ہی نہیں ہے ہم بھی امید کرتے ہیں آپکا قلم حق و
صدات کے تمام تقاضوں کو پورا کرے گا اور پوری تو انائی کے ساتھ اور پوری غیرت

و پی کے ساتھ آپ سیداحمرصاحب کے ساتھ بھی وہی سلوک فرما کیں سمے جودوسرے مسلمانوں نفر مایا ہے کھولیے زبان مبارک اٹھائے تلم انور اور صفحات قرطاس پر مجھیرے اپنے نظریات وعقا کدتا کہ ساری دنیا آپ کاحل من سکے پڑھ سکے اورمحسوس كر سكاب آپ اندر بيش كرروئيس كة نوبهائيس مح بائ شاه جي آپ في بيكيا كرديا آپ كيول كي محي قبرانورسيره ميمونه پرآخر جم سےمشوره كرليا ہوتا جميل پوچھ لیا ہوتا ہمارے یلے تو بھر بنے نہ دیا آپ نے ہم جمکوشرک کہتے تھے آپ نے وہ سب پچھ کرد کھایا ،آخراب ہم کدھر جا کیں۔ پچھ بھی نہیں صرف آپ شاہ جی کواپنی جماعت سے خارج کردیں اور کہددیں کہ ہمارے نہیں، ہیں بس اتنی ی بات ہے آپ ایسے سے بیں کدا نکار کرسکیں گے نداقر ار، اقر ار کریں تو مجرم؟ انکار کریں تو بجرم بس فیصلہ گھر میں بیش کر ہی کینے گا کیا کرنا ہے ہم نے آ پکوآ مینہ وکھا ویا ہے اور آ مینہ بھی بھی خیانت نہیں کر تاجیسی شکل ہوگی بالکل و یسی ہی دکھائے گا تبدیلی نہیں آنے وتیا، ہم نے جو آئینہ دکھایا تو برا مان گئے

# قرر ما لكت نظرات إن:

میں اور پھے نہیں کہتا ،صرف اللہ تعالی کے مبارک نام کا واسطہ دیگر عرض کرتا ہوں ، جنکوآپ نے اپنا ہیرو(Hero) اور اپنا لیڈر (Leader) تشلیم کیا ہے ، اور الکے قصیدے پڑھتے پڑھتے آپکا گلا خشک ہوا جاتا ہے ، جنگی مدحت کرتے کرتے آپکی زبان نہیں تھکتی جنگی تحریف میں آپکا تلم دوڑا جاتا ہے کہیں رکنے کا نام تک نہیں لیتا ، جنگو آپ موحد شرک سے پاک ، کھن العقیدہ ، حسن العمل ، لیڈر ، رہنما ، ، اور نجانے کن کن القابات سے نواز تے ہیں اب تو و و بھی قبر پر مانگتے نظر آتے ہیں ، اور یوں بات کرتے چیز خوردنی عنایت فرما" (مخزن احمد ی 99)

"سید احمد شهید صاحب قبر اثور کے بالکل سامنے کھڑے ہوکر عرض کرتے ہیں کہ یا

جدہ امجدہ لینی اے دادی جان میں آپ کا مہمان ہوں پھی کھائے کو دیجئے"۔

اللہ کیوں جناب امیر حمزہ صاحب قبوری عقیدہ کیساہے؟

شرک ہے نا۔

شرک ہے یانا۔

ا تبروالوں ہے کھانے کو پچھ مانگنا کیسا ہے؟ شرک ہے یا نا۔

يو چوسکتا مول:

بیں پر کو بھی نہیں کہتا گر ایک بات ہو چوسکتا ہوں اجازت ہے جو پر کھے میں نے او پر تحریر کیا ہے۔ وہ سب پر کھ آپ کے گھر کے بزرگ کرتے رہے ہیں یانہیں جواب یقیتاً ہاں میں ہے۔

"کتے ہے"

اگر بیسب کھاآپ کے بردگ کرتے رہے ہیں تو آپ ایسا کرنے والوں کو مشرک تھمرا کتے ہیں؟ جواب صرف آپ سے درکار ہے درخار کین تو یقین کر چکے جو جرم آپ نے دوسروں کے سرتھو پا تھا۔ وہی جرم آپ کے بردگ آپ کے جیرو ایں، جیسے زندوں سے کی جاتی ہے آپ تو فرماتے کہ قبروں والے بے خبر ہیں ہمیں سنتے ہمیں جانے ہمیں پکھ دیتے تو آخر یہ کیا ہے؟ کیوں ندا ء کی جاری ہے کیوں دادی جان سے روٹی مانگی جاری ہے

WHAT IS THE RESON OF THIS MATTER ?

WHAT IS THE COUSE OF THIS MATTER ?

IS IT YOUR FAITH? IS IT YOUR RELIGION?

IS IT THE FACT? WHAT IS YOUR ANSWER ?

YES OR NO

توجه طلب چيز:

من کیا قبر کے سامنے کھڑے ہو کر گدایا نہ نداء کرنا آپ کے ند ہب میں شرک نہیں؟ اللہ کیا قبر انور پر حاضر ہو کرصاحب قبر سے گفتگو کرنا بیشرک کے زمرے میں نہیں آتا؟

جیئے کیا قبروالوں کو' یا'' کے صیغہ سے نداء کرنا اور ان کو اپنارشنہ یا دولا نابیشرک نہیں؟ جیئے کیا صاحب قبر کو اپناتعلق رشتہ یا دولا کر یوں عرض کرنا اے جدہ امجدہ میں صرف آپ کا پوتا ہی نہیں بلکہ آپ کا مہمان بھی ہوں شرک نہیں؟

الله کیا قبروالوں سے کھانے پینے کی کوئی چیز طلب کرنا شرک تو نہیں؟ موال کا جواب ہاں یا ناں میں آنا جاہے۔

اگر ذہن سے اتر گیا ہوتو میں سیداحد شہید صاحب کے الفاظ ایک بار پھرآپ کو یا دکروا دیتا ہوں۔مطالعہ فرمائے:

" بیش تربت شریف گدایانه نداء کرده گفتم که اے جده امجده من مهمان شاستم

(Hero) اورآپ کے لیڈر (Leader) مجاہد فی سبیل اللہ بھی کررہے ہیں۔ تو فتویٰ بھی جدا جدانہیں ہونا چاہیے۔ فتویٰ دونوں جگدایک ہونا چاہیے کہ جرم دونوں جگدایک ہے۔

# سوچة بمجهة كا صلاحيت:

اگرآپ میں سوچنے بیجھنے کی صلاحیت ہے تو پھر غور فر مائے آپ کے قلم سے جلدی میں کیا پھی صادر ہوگیا۔ بیجھے یوں لگتا ہے جیسے آپ لکھنے وقت ہوش میں نہ سے ۔ اگر باہوش ہوتے تو اپنے گھر کے ہزرگوں کی کتابیں تو پوری طرح نظر سے گذاری ہوتیں۔ میں تو صرف اتناعرض کروں گا صحافی ہونے کا اقتصالگ چیز ہے اور صحافی ہونا دوسری چیز ، کہاں صحافت اور کہاں آپ کی مساعی مبار کہ دونوں میں زمین و آسان کا فرق ہے۔ ابھی تو میں نے ایک حوالہ پیش کیا ہے آگے آگے دیکھیں ہوتا ہے آسان کا فرق ہے۔ ابھی تو میں نے ایک حوالہ پیش کیا ہے آگے آگے دیکھیں ہوتا ہے

# اندهرے میں نظرائے:

آپ تو اپنی مؤلفات میں بار باراعلان کر چکے ہیں۔ تبوری عقیدہ شرک ہے قبر والوں سے مانگنا شرک ہوں کو کیا عطا کر ہے جوخود ہی مرگیا ہو۔ شاید تھوڑی دیر کے بعد بیس آپ کے گھر کے بزرگوں سے کرامات کا صدور بھی ذکر کروں گا۔

پھر تو آپ کی آئیسیں پوری طرح کھل جا ئیں گی۔ اور عین ممکن ہے کہ آپ کو اند جرے میں اند جرے میں بھی نظر آنے لگے گا یہ بھی کرامت ہی ہوگی اگر آپ کو کواند جرے میں نظر آنے لگے گا یہ بھی کرامت ہی ہوگی اگر آپ کو کواند جرے میں نظر آنے لگے گا یہ بھی کرامت ہی خان ہ کا ہوگا۔ لگتا ہے آپ ایپ مضابین نیم ہے ہوئی کے عالم میں لکھ گئے ہیں اور ہوش میں جو نہ ہووہ کیا نہ کرے اگر

آپ ہوش میں ہوتے تو آپ کواپنے ہزرگ سیداحم شہیدصاحب کی حیات مبار کداور
ان کا عمل مبارک بھی یا د ہوتا۔ اگر یا د ہوتا تو آپ ان کواپنالیڈر خدا پرست ، شرک سے
کوسوں دور ، مجاہد فی سبیل اللہ کیسے کہتے۔ اگر آپ کو پہتے ہوتا کہ آپ کے بزرگ بھی اسی
لائن میں گے نظر آتے ہیں تو روگ تحریر جدا گانہ وتا۔

آپ تو در باری حاضری کوجہنم نے تعیر کرتے ہیں۔
 آپ تو تبوری حاضری کوشرک کہتے ہیں۔

#### تازه دم بوجائے:

آ کیے بزرگ تو حاضری ہے آ گے نکل کر گداگری کرنے پرآ گئے ہیں اگر آپ کے حافظ ہے از گیا ہوتو عرض کرتا ہوں لیجئے تازہ دم ہوجا ہے تا کہ اچھی طرح ذہن لئیں ہوجائے۔

جناب سیداحمد شہید صاحب حضرت سید تنامیموند رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی بارگاہ میں عرض کرتے ہیں:

'' پیش تربت شریفه گدایا نه ندا کرده گفتم کداے جده امجده من مهمان شابستم چیزی خورد نی عطافر ما'' (مخزن احمد ی 99)

'' قبرشریف کے سامنے گدایا نہ ندا کرتے ہوئے کہتے ہیں یا جدہ امجدہ میں آپ کا مہمان ہوں کھانے کو پکھ عطافر ماد ہیجئے''۔

اگر اگر بر حاضری شرک ہے تو آپ کے امام و پیشوانے وی

اگر قبر پر جا کر کھڑ ہے ہونا شرک ہے تو شاہ صاحب قبر پر حاضر کھڑ ہے ہیں وہ بھی بطور مہمان۔

اگر قبر کو مزار شریف کہنا شرک ہے تو آپ کے ہیرو (HERO) مزار

کرنا جا ہیے جوامت کا مرض ہی نہیں اس کا علاج کیا۔آپ پہلے خو داپناعلاج کروا کیں جب آپ صحت باب ہو جا کیں گے تو پھر دوسروں کے امراض کا علاج کرنے کی سعی فرما ہے گا۔

### مشوروديا بآ پكوده بهى مفت

## فيصله قارئين يرجيور تا مول:

لگتا ہے کہ آپ نے قلم کوجلد بازی میں بے لگام چھوڑ دیا تھا اب پتا چلے گا کہ کون

گتنے پانی میں ہے آپ پرتو ایک جنوں طاری تھا اس میں آپ نے نامعلوم کیا کیا لکھ
ڈالا غالبًا یہ ہوا کہ آپ نے کسی سے مشورہ بھی نہیں لیانیا آپ کو کوئی مشورہ دینے کی
پوزیشن (POSITION) میں بی نہیں تھا بہرنوع کچھ بھی تھا آپ نے بغیر سوچ
سمجھے حضرات اولیا اکرام کی خدمت دین کا اٹکار کردیا اور وہ بھی کھلے فظوں میں:

### لوآب اين دام مين صيادآ كيا:

چلے جو پچھ بھی ہوا سو ہوا تھوڑی دیر ہے تھی ہم نے آپ کومطلع کر دیا ہے بھی کیا
ہوتا ہے آگرآپ کے گھر کا معالمہ یبال تک بھی رہتا تو شاید آپ کوئی نہ کوئی راہ نکال
ہی لیتے مگر معالمہ آپ کی دسترس ہے بہت آ کے نکل چکا ہے آپ کے بھا گئے کے تمام
راستے بند ہیں۔ بلکہ آپ نے خودہی ایک ایک کر کے تمام دروازے بند کردیے ہیں۔
اللہ کی جلالت کی ہم ہم آپ کی خال ہ تلاثی نہ لیتے نہ طشت از ہام کرتے اور نہ ہی
آپ کے برزرگوں کو اس طرح لا کرمیدان میں کھڑا کرتے اگر آپ نے حضرات اولیا
اگرام حضرت وا تا گئے بخش علی ہجوری ، حضرت بابا فریدالدین عن شکر، حضرت خواجہ
حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت بابا فریدالدین عن شکر، حضرت خواجہ

شریف اور قبرشریف بھی کہدرہ ہیں۔ اگر قبر والوں سے پھے عرض کرنا شرک ہے تو وہ بھی آپ کے لیڈر (LEADER) ہے آپ کے دہبردا ہنما سے برزدہورہا ہے۔ اگر قبر الله اور کرنا '' کی صف سے میں میش سے تھی تھی ہے۔

اگر والوں کو 'یا' کے مینے سے ندا کرنا شرک ہے تو وہ بھی آپ کے اہام کر رہے ہیں۔

اگر بیر عقیدہ رکھنا شرک ہے کہ قبر والے جانے پیچانے ہیں تو آپ کے ہیر و مجاہد فی سمیل اللہ اعلان کر رہے ہیں قبر والے جانے ہیں پیچانے ہیں تبی تو عرض کرتے ہیں چیز خور دنی عطافر ہا۔

### ال وقت امت كامرض:

نامعلوم آپ نے کس بند کمرے ہیں بیٹے کر تلم کو جنبی دی کھے لا والا کاش آپ نے کہ تام کو گھے والا کاش آپ نے تاریخ اتوام عالم کا مطالعہ کیا ہوتا کاش آپ کی ذی شعور آ دی کی صبت ہیں رہ ہوتے جو آ ہوا کی اماعت کا مرض تشخیص کر کے بتا تا اور پھر ائ مرض کا علاج بھی جو یہ کرتا نہ تو آپ کو اس امت کا مرض شخیص کر کے بتا تا اور پھر ائ مرض کا علاج بھی تبحویز کرتا نہ تو آپ کو اس امت کا مرض سجھ آیا اور نہ ہی اس کے علاج کا بتا چلا اب شرخو دہی خو دہی خود دی خود کی شخیص کئے بغیر دواد ہے دے آپ خود دی خود دی خود دی خود دی خود ہی خود کی باہر ڈاکٹر اس کو آپ کتا برا اعظل مند کہیں گے آخر خود دی خور سیجئے ہم کیا عرض کریں آپ کو نہ مرض امت کا بتا نہ علاج ملت کی خرم آخر آپ کا کیا گیا جائے ۔ آپ کو کسی باہر ڈاکٹر سے اپنا علاج کروانا چاہیے کہ آپ خود بیار ہیں اور بیار بیاری ہیں کی دوسرے کا کیا سے اپنا علاج کرے جب تک خود صحت مند نہ ہو جائے ۔ سنے اس امت کا مرض شرک نہیں علاج کا سامت کا مرض شرک خود می مار فرد پرتی اور ہوں مال دزر ہے اس مرض کا علاج سے اس امت کا مرض خود خوضی ہے ،خود پرتی اور ہوں مال دزر ہے اس مرض کا علاج

### كور بني:

''وہیں کھڑے کھڑے ام المؤمنین حضرت میمونہ رضی اللہ عنہا کی خدمت اقدس میں سلام عرض کیا، سورۃ فاتحہ پڑھی، سورۃ اخلاص کی تلاوت کی تا کہ سیدہ کیا۔ روح پُرفتوح کوثواب پہنچایا جائے''۔

# ايصال ثواب:

ہم اگر فاتحہ پڑھیں،اگر ہم سورہ اخلاص'' قل ہواللہ احدالے'' خلاوت کرلیں تو فورا شرک و بدعت کی نہ ختم ہونے والی گردان شروع کردی جاتی ہے وہ بھی بے وزن ۔آپ آنکھیں کھول کردن کی روشنی میں مطالعہ فرما کیں جس کوآپ نے نامقبول عمل قرار دیا تھا اور اس کی مخالفت کو اپنے اوپر لازم جانا تھا اور اس کی تردید میں قلم کو بے لگام کر بها الدین زکریا ملتانی ، حضرت علاؤ الدین صابر کلیری حضرت امام ربانی مجدد الف ځانی ، حضرت امام احمد رضا خال قادری محدث بریلوی اور دیگر بزرگان وین رحمته الله علیجم اجمعین کواپنی تحریرول مین موردالزام ندگخیر ایا بوتا:

الجھاہے پاؤل یار کازلف دراز میں لوآپ اپنے دام میں صیاد آگیا

### نقط نظر:

آپ نے بار بارا پن تحریروں میں فرمایا ہے، فاتحہ ختم ٹابت نہیں جناب آپ ہم سے کیا پوچھتے ہیں آپ اپنے ہی اکابر سے پوچھئے۔ اگر آپ کواپنے گھرے اس کی شہادت مل جائے تو وہ زیادہ اہم ہوگی بجائے اس

کے کہ ہم آپ کو کوئی دلیل پیش کریں یا شہادت دیں۔ بین پورے زور سے کہوں گا آپ جس نقطہ نظر کو لے کر لگلے تھے وہ چونکہ سرے سے ہی کمزور تھا اس لئے آپ باوجود کہ مینکلزوں صفحات سیاہ کر چکے اپنے نقطہ نظر کو ثابت کرنے بین ناکا م رہے ہیں اور آئندہ قیام قیامت تک آپ اس نقطہ نظر کو کی بھی زاویے سے ثابت نہ کرسکیں اور آئندہ قیام قیامت تک آپ اس نقطہ نظر کو کی بھی زاویے سے ثابت نہ کرسکیں گے۔ میں نے کوئی کمبی چوڑی ابحاث نہیں چھیڑیں بلکہ سیدھا سیدھا مؤقف آپ کے میروکو آپ خدمت عالیہ میں چیش کیا ہے اور جب ضرورت دلیل کی پڑی تو آپ کے ہیروکو آپ خدمت مقد سہ میں لا کھڑا گیا تا کہ آپ نے نظنے کی کوشش بھی کریں تو نے کر دکل نہ سے سے میں مقد سہ میں لا کھڑا گیا تا کہ آپ نے نظنے کی کوشش بھی کریں تو نے کر دکل نہ سکیر ہیں۔

دیا تھا اور اپنے جذبات کو صدودِ اوب ہے بھی آزاد کر دیا تھا وہ انداز اپنایا تھا کہ گو یا اس جہال ہیں اب آپ ہی کاران ہے دوسرا کوئی آپ کی تحریروں کو تقید کا نشانہ بنا ہی تیس ملکا تو یا در کھنا چاہیے تھا اب بھی اس دنیا ہیں حق قائم ہے ، صدافت موجود ہے ، دیا نت کی جان ہیں جان ہے۔ آپ لا کھ کوشش کریں کہ جرف آپ ہی کا نقطہ نظر ساری است مان لے تو یہ بھی بھی ممکن ٹیس ہے۔ دوسروں کو تو آپ تب قائل کر سکتے تھا گر آپ کے اپنے گھر ہیں وہ تمام اعمال بھی شہوئے ہوتے ہم نے تو آپ کی خدمت آپ میں آپ کے اپنے داور آپ کے ضلیفۃ اللہ بالیقین کو پیش کر دیا ہے وہ بھی میں آپ کے اپنے داور آپ کے ضلیفۃ اللہ بالیقین کو پیش کر دیا ہے وہ بھی مورہ اخلاص پڑھ کر ایصال ثو اب کرتے ہیں اور ابھی فاتحہ پڑھے کے قائل ہیں وہ بھی سورہ اخلاص پڑھ کر ایصال ثو اب کرتے ہیں اور ابھی فاتحہ پڑھے کے قائل ہیں وہ بھی سورہ اخلاص پڑھ کر ایصال ثو اب کرتے ہیں اور ابھی ابھی محرب ایصال ثو اب کرتے ہیں اور ابھی

کیوں جناب اب تو ہم آپ سے سوال کرنے کے حقدار ہیں نا اگر آپ کے بردگ قبرانور پر حاضری دیں۔

اگرآپ کے ہزرگ قبر منور پرسلام عرض کریں اگرآپ کے ہزرگ قبر پر فاتحہ خوانی کریں اور ان کو ایصال تو اب کریں تو یہ بالکل درست اور یہی وین والیمان اور اگریم عمل دوسرے کریں تو بلا روک ٹوک بدعت، گراہی شرک اور خلاف اسلام آخرید دور کی کیوں؟

دورگی چھوڑ دے یک رنگ ہو جا سرام موم ہو یا سنگ ہو جا

:ははけどくか

ت ن عن زه وشور ع حضرات اوليا اكرام عليم الرضوان پرشرك كا تانايئا

تھا۔وہ آپ کے گھر کے بزرگ نے تار تار کر دیا آپ نے مخزن احمدی کا مطالعہ نہیں فرمایا تھا اگرا یک نظر بھی اے دیکھا ہوتا تو ضرور شادصا حب سے منہ پھیر لیتے اوران کو ای صف میں لاکر کھڑ اکر تے جہاں دوسروں کو کیا۔

چلئے مان لیتے ہیں کہ آپ کوان کے بارے ہیں معلومات نہ تھیں اور آپ نے لا علمی ہیں سید صاحب کواپنے ہیرو کے طور پر پیش کر دیا۔ اب علم ہو جانے کے بعد تو اظہار براًت ضروری ہے نا۔ وہ سیجئے اس کے بغیر چارہ ہی نہیں اب آپ شرک کی زد سے جبی نی سیح سے جبی نے سیح ساف صاف اعلان کریں کہ وہ ہمارے بزرگ نہیں ہیں اور ان کیلئے بھی وہ بی زبان استعمال کریں جو دوسروں کے لئے کی ہے پھر تو پچھ پتا چلے کہ آپ حق کوئی اور ہے باکی کے اہل ہیں۔

بیاتو آپ کی مجھ مبارک میں آبی گیا ہوگا کہ سیداحمد شہید صاحب آپ کے ہادی و
مرشد، خلیفۃ الله بالیقین سیف المحند ۔ فاتحہ کے بھی قائل ہیں ایصال تو اب کو بھی
مانتے ہیں قبروالوں کو زندہ بھی تسلیم کرتے ہیں۔ اور بیاتی مانتے ہیں کہ وہ من لیتے ہیں
اور سننے کے بعد آنے والوں کو پہچان بھی لیتے ہیں۔ وہ یہ بھی عقیدہ رکھتے ہیں قبروالے
مانکنے پر بھی عطا کرتے ہیں اب صرف انتا باتی ہے قبروالے جوعطا کرتے ہیں وہ نظر
مانکنے پر بھی عطا کرتے ہیں اب صرف انتا باتی ہے قبروالے جوعطا کرتے ہیں وہ نظر

كوورال كرف والاع:

ذرادل کوتھام لیجئے آپ کیعقیدہ پر کو وگرال گرنے والا ہے جو پکھ زیراین آیا چور چور ہوجائے گا آپ کے عقیدے کا گل لگا ہے زمین ہوں ہونے ،عقل و دائش کومضبوطی سے تھام رکھے کہیں چلتی نہ ہے اب تو ذہنی طور پر آپ سننے کے لائق ہو ہی گئے

ہوں گے۔ تو پھری لیج آپ جیران نہ ہوں میں نے ایک لفظ بھی پلے سے نہیں لگایا بلکدای طرح نقل کررہا ہوں جس طرح آپ کے بزرگ فرماتے ہیں جیسے ان کو قبر سے فیض طا ہے۔ اب یہ فیصلہ بھی آپ نے اپ نہی گھر میں بیٹھ کر کرنا ہے کہ آپ کے ہادی ومرشد خلیفۃ اللہ بالیقین کے بولتے ہیں یا جھوٹی کہانی سناتے ہیں۔ بہر حال من پہری ومرشد خلیفۃ اللہ بالیقین کے بولتے ہیں یا جھوٹی کہانی سناتے ہیں۔ بہر حال من

''انگاه نشسته سر بر قبرش نهاده بودم از رزاق مطلق و دانائے برحق دوخوشه انگورتازه برستم افتاد وطرفه رژآن که آن ایام سر مابود و نیچ جاانگورتازه میسر نبود' (مخزن احری 99) ''ام المؤمنین سیده میموندرضی الله تعالی عنها کی قبر انور پر سرر که دیاای وقت رزاق مطلق اور دانائے برحق نے دوتازہ انگور کے مجھے میرے ہاتھ میں دے دیے ۔ طرفه ر بید کہ وہ موسم سر ما تھا اور اس وقت انگورتازہ میسر نہ تھے''۔

# تحريرى قلابازيان:

ایمان سے کہیے، قبر پر حاضری باعث عطا ہوئی کہنیں، آپ تو اس کو''قبوری عقیدہ'' کہتے ہیں اور باطل عقیدہ قرار دیتے ہیں اب تو آپ کے ہیرہ بھی قبر شریف پر ہیں۔ بلکہ مزار فایفن الانوار پر حاضر ہیں نہ صرف حاضر ہیں اپنی دادی جان حضر سالمومنین سیدہ میمونہ رضی اللہ تعالی عنها کی قبر منور پر سربھی رکھدیا ہے۔ آپ کی وہ بر حکیس، آپکا وہ جار حاضر این کار، آپ کی وہ پھبتیاں، آپ کی وہ مزاح اندازیاں، آپ کی وہ قابازیاں آپ کی تحریکا وہ ربھی سید سید مزارات اولیاء پر جانا شرک اور آپ کیا ہے ہمارا قبروں پر حاضری دینا ہمارا صرف مزارات اولیاء پر جانا شرک اور آپ کے داواجان کا مزار پر جانا، وہاں جا کر ہیٹھ جانا، گدایانہ نداء کرنا، منگا بن کر ما تکنے لگ

جانا، نصرف دست سوال دراز کرنا بلکه اپناسر بھی قبرا تور پردکھ دینا اور پھر وہاں ہے دو
تاز وانگوروں کے سیجھ کل جانا ہیں ہیں ہے اس کواب آپ کس زمرے ہیں رکھیں مجے
اس کواب کونساعمل قرار دیں۔ کیااس کو قبوری عقیدہ کہیں مجے؟ کیااس کومٹر کانہ طرز
عمل قرار دیں مجے؟ کیااس کو قبر سے مانگنا قرار دیں مجے کیااس کوراہ حق سے علیحدگ
قرار دیں یانہیں بس فیصلہ آپ خود کریں اور قار کین نے تو فیصلہ دے دیا کہ جو پھھ ایر
قرار دیں یانہیں بس فیصلہ آپ خود کریں اور قار کین نے تو فیصلہ دے دیا کہ جو پھھ ایر
عزہ صاحب نے اپنی کتابوں 'نہ نہی وسیای باوے' آسانی جنت اور در باری جہنم' '
اور' شاہراہ بہشت' میں لکھا ہے سب غلط ہے وہ حقیقت سے بہت دور ہے اس کو
مرامر جہل اور بدیا تتی پر بی محمول کرنا جا ہے۔
مرامر جہل اور بدیا تتی پر بی محمول کرنا جا ہے۔

## الكورمز عدار تفي:

شاہ جی جب ججرہ مقدسہ ہے وہ تازہ تازہ انگوروں کے دوخوشے لے کر باہر تشریف لائے تو بیان کرتے ہیں وہ انگور بڑے ہی مزے دار مجھے شاید بھی پہلے اس طرح کے انگورانہوں نے تناول ہی نہ فرمائے تھے نہ صرف سے کہ خود تناول فرمائے بلکہ ایک ایک داندان کوبھی عطافر مایا جو باہر موجود تھے۔

# تركتقيم:

آپ ہی بتا کیں ہے جو دو تازہ خوشے انگور کے ملے تصان کوشرک کہیں ہے یا پھے
ادر اگر بیہ تیمرک ہے تو پھر آپ نے جو نخالفت تمرک کی کی ہے وہ کس زمرے میں
جانگئی اور جو تقسیم تمرک ہواوہ کیا تھا۔لگتا ہے آپ کواپٹی کی ہوئی بات یاد تک نہیں رہتی
ورنہ ہیدورخی کیوں ہوتی۔ میں چا ہوں گا آپ اپنے دادا جان کی اپنی بات پڑھ لیں تا
کر تو ت ایمان تازہ ہوجائے لیجئے حاضر ہے وہ عبارت جو نخز ن احمدی میں ہے:

"از جمرہ بیرون شدم ویک یک دانہ بہریک تقیم کردم" (مخزن احمد 900) "جب بیل جمرہ شریف سے ہا ہرآیا تو جولوگ ہا ہر موجود تضان بیں سے ہرایک کو ایک ایک داندانگور تازہ کا تقیم کیا"۔

# جيت كس كى بوكى:

اس میدان بین اگر جیت شاہ جی کی ہوگئ تو آپ تو اپنا سامنہ کے کررہ جا کیں گے نا کی جو آپکو ہزیت شاہ جی کی ہوگئ تو آپ تو اپنا سامنہ کے کر سوائی نہ ہو عقل مند بندہ وہی ہوتا ہے جو کل کی سوپے آپکو بھی ہم سیح مشورہ دیتے ہیں آج ہی مؤقف تبدیل کر کے سیدالسادات صاحب کے ہم نوابن جاہے ورنہ سیدالسادات صاحب کی ہم نوابن جاہے کری طرف بلارہے ہیں اس میں آپ کا فائدہ ہوگا اگر اس کے خلاف کریں گے تو فائدے کی بجائے الٹا نقصان ہوگا۔اولاً سیدصاحب کا تبرک حاصل کرنا

ٹانیا اس کو حاضرین میں تقتیم کرنا وہ بھی اس قدرا حتیاط کے ساتھ کہ کوئی محروم ندرہ جائے اس لئے ایک ایک داند کر کے دیتے رہے جو آئے سوفین پائے تبرک کھائے اور عیش دنیا و آخرت کا حقدار بن جائے اگر شاہ جی کا تبرک لینا اور پھر تقتیم کرنا ذہن ے اتر گیا ہے تو تاز وفر مالیجئے تا کہ سکون قلب میسر آئے۔

''از جره بیرون شدم و یک یک داند ہریک تنقیم ، کردم'' (مخزن احمہ ہو) ۔ '' میں مجره شریف سے باہر آیا تو ہر کی کوان انگوروں سے ایک ایک دانہ تقیم کیا''۔ اب بتا ہے تیمرک کے بارے میں کیارائے ہے؟ چلئے یکدم سے جواب نہیں بن پار ہا تو پچھاتو قف فرما لیجئے تا کہ جواب متحضر ہوجائے جب یاد آ جائے تب جواب دب دیجے گا مگر جواب دینا ضرور۔

# علم شرك لكائي:

ہم بھی تو یہ پوچنے کا حق رکھتے ہیں نا، تبرک لینا کیا ہے؟ اے حاصل کر کے ،خود
تناول کرنا کیا ہے؟ وہی تبرک جو مزارِ فائین الانوارے طا ہے اسکوآ گے تقتیم کرنا وہ
بھی دانہ دانہ کر کے کیا ہے؟ بی تو سب پھیآپ کی کتب میں شرک، بدعت ادر گراہی
ہے۔ اگر یہ دافعی شرک ہے، بدعت ہے، اور گراہی ہے تو اب سیدالسادات امام
المجاہدین، خلیفۃ اللہ بالیقین پر کیا تھم لگے گا؟ لگا ہے ناوہی تھم جوآپ کی کتب میں لگایا
گیا ہے۔ اگرآپ کے ہاں آج بھی صدافت نام کی کوئی چیز موجود ہے، دیانت نام کی
کوئی خوبی حاضر ہے اور شرافت نام کی کوئی شے آپ کے ہاں اب تک زندہ ہے تو وہی
تھم سیدصا حب پر لگا ہے جودوس ہے مسلما نوں پر لگایا تھا۔

عقیدہ ہے ہیہ سب شرک ہے، گراہی ہے ،بدعت ہے، میں نے آپکے ہیرو (Hero) آپکے لیڈر (Leader) آپکے امام المجاہدین جناب سید احمد شہید صاحب کو مزار پر جاتے دکھایا ہے وہاں جا گرگدایا نہ نداکرتے ہوئے دکھایا ہے اور پھر کہ کہا ہیں بلکہ اپنارشتہ بھی جتاتے ہوئے نظر آتے ہیں اگر ہیسب پھر کرنا شرک ہے تو اب علم آپ اس سب کے کہ حق وصد افت اب علم بلند فرما ہے آپ ماشاء اللہ حق گوئی ہے کام لیس موال کا جواب ہاں یا ناں میں آنا حاس جا ہے!

# آپ کویاد موگا:

اگر ذہن سے اتر گیا ہوتو میں سیداحمہ شہید صاحب کے الفاظ ایک بار پھر آپکو یا د کروا دیتا ہوں لیجئے مطالعہ فرمائے ۔ پیش تربت شریفہ گدایا نہ ندا کر دہ گفتم کہ اے جدہ امجدہ من مہمان ثبا ہستم چیز خور دنی عطافر ما۔ (مخزن احمہ ے ۹۹)

سیداحد شہید صاحب ام المونین حضرت میموند رضی الله عنها کی قبر انور کے بالکل سامنے کھڑے ہوکر عرض کرتے ہیں۔

"یا جدہ امجدہ لین اے دادی جان میں آپ کا مہمان ہوں کچھ کھانے کو دیجے"۔
بتائے کہ بیا نداز مبارک کیسا ہے؟ آپ کوتو بہت پندآیا ہوگا اس لئے کہ بیسب
کچھ آپکے بزرگ ،آپکے رہبر ،آپکے کے لیڈر (Leader) آپکے
مصلح (Reformer) سے سرز د ہور ہا ہے اب نہ الم کوترک ہوگا نہ زبان مبارک ہی
حرکت میں آئے گی نہ صدافت کا نعرہ بلند ہوگا نہ بدعت کی مشین چلے گی نہ گراہی کا
ہازارگرم ہوگا نہ شرک والا ہیوی بلڈوزر چلے گا اب تو ہی خاموثی ہی ہوگی اور یوں گے

# وم فرنيس ربا:

جھے معلوم ہے اب آپ چپ سادھ لیں گے کوئی جواب نددیں گے اب قلم حرکت میں آنے کی بجائے آپی جیب میں گھس جائے گا شاید آپ بیہ کہہ کر ٹال دینے کی کوشش کریں قلم خراب ہو گیا ہے سیابی نہیں ہے اگر قلم خراب ہے تو ہم نیا حاضر کرنے کوتیار ہیں اگر سیابی ختم ہے تو نئی ہوتل مجم پہنچانے کیلئے ساتی ہو تھے بس اب جواب ضرور آنا چاہیے ورندا مل علم طعند دیں گے کدا میر حمز ہ صاحب میں صدافت کا مظاہر د کرنے کا دم خم نہیں رہا۔

> کشتی بھی نہیں بدل، دریا بھی نہیں بدلا اور ڈو ہے والوں کا جذبہ بھی نہیں بدلا ہے شوق سفرایسا اک عمرے یاروں نے منزل بھی نہیں یائی رستہ بھی نہیں بدلا

# حق وصدافت كاعلم بلندفر مايي:

امیر حمزہ صاحب جب آپ نے مضابین لکھنے کا ارادہ کیا تھا تو کسی صاحب علم وہن سے مشورہ نہیں کیا ورنہ قلم یوں بے احتیاطی سے تو نہ چانا جس طرح چلایا گیا ہے اور آج جو پھھ آپ پر بیت رہی ہے وہ تو نہ بیتی گر کیا کیا جائے قصور تو آپ کا اپناہی ہے نا جم نے کب آپ کودعوت دی تھی کہ اس طرح قلہ کاری فرما کیں تو ہم آپی قلمی کاوش پر ابی پھیریں فرما ہے اب بھی وہی رکٹ گلے گی قبر پر حاضری دینا، مزارات پر حاضری پانی پھیریں فرما ہے اب بھی وہی رکٹ کا گی گر پر حاضری دینا، مزارات پر حاضری کیا گئا اور کہنے جانا، وہاں جا کرمنگوں کی طرح سوال کرنا۔ اہل قبور سے پچھ طلب کرنا ہا نگنا اور ایکی جو رکٹ کیا اور پیچا نے ہیں ہے قوری

گاگویاآپ کے گھریس انسان نام کی کوئی چیزموجود ہی نہیں ہے۔ زبان کوتا لالگ جائے گا:

دومروں پراعتراض کرنا، انکی پگڑی اچھالنا، ان کوعروج وزول کی سناسنا کر ا پی جانب ماکل کرنا، ان پر الزامات عائد کرنا، انکو بدعتی کبنا، انکو گراه کبنا، انکومشرک تک کہتے ہوئے نہ شرمانا مگر اپنے گھر کی خبر نہ لینا اگر وہ سب پچھ اپنے گھر میں ہوجائے جسکوخود بدعت ، گمراہی اورشرک قرار دیا تھا تو اب زبان کوتالا لگ جائے آخر کیوں؟ اب بھی جوانمر دی کامظاہرہ کرنا جا ہے ای تیزی کے ساتھ بلاتا کل گھڑ ا گھڑیا فتوی ..... برک صادر کرنا جا ہے مگر الیا ہوگا بہیں مجھے معلوم ہے میرا تمیں سالہ جربہ ہے اس متم کے لوگ جملہ تو برا بڑھ پڑھ کر کرتے ہیں اور اگر جوالی كارروائي بهى اى طرز پر ہوجائة پرايى شند پرتى ہے كەسال باسال بلكى ى حركت بھی پیدائہیں ہوتی بلکہ نیم مردہ کی ہی کیفیت ہوجاتی ہے جواب آنا تو در کناراندر بیشر کر روتے ہیں اور آبیں بھرتے ہیں بائے کس کوچھٹرلیا کاش ایسانہ بی کیا ہوتا فور کرلیس یں نے آ کے صرف ایک بزرگ کوآ کی خدمت اقدی یں پیش کیا ہاور وہ تمام سازوسامان الحكساته دكھايا ہے جسكوآپ بدعت كمرابى اورشرك كے پرزے قرار دے چکے ہیں اور وہ سب پرزے پوری طرح حرکت میں نظرآئے ہیں۔

شرك يارش (Shirk Parts ):

اس کلیے سے لازم آتا ہے کہ دوشین چل ہے اور پورے زورے چلتی ہوئی اپنا کام کیے جارہی ہے اب جناب جب کل وہ پرزے جنکو آپ نے شرک پارٹس قرار دیا تھا آپ کے گھرے برآمد ہو نگے تو یہ مشین بھی آپ ہی کے گھر نصب (Fit) ہوگی اور

اں کا کام بھی آپے اندر ہی ہورہا ہوگا۔افسوس ہوا ہے آپ نے بغیر سو سے سمجھے قلم چلایا ہے ہم پر وہ الزامات لگائے ہیں جو پکھ وزن نہیں رکھتے اگر آپ کی ہات وزن دار ہوتی تو ضرور پکھ توجہ طلب ہوتی مگر وہ ہے ہی بے وزن اپنا حال بیہے کہ دوسر دوں پر چڑھائی اور گھرکی خبر نہیں۔

> ہم آہ بھی کرتے ہیں تو ہوجاتے ہیں بدنام وہ قل بھی کرتے ہیں تو چر چانیس ہوتا

# ال كركة ك لك في كرك جاغ :

امیر حمزہ صاحب نے درباروں پر حاضری دینے دالوں ، مزارات پر جانے دالوں کو تنہیں کرتا ہوں کو تنہیں کرتا ہوں کو تنہیں کرتا ہوں کہ اللہ کیلئے ان کے درباروں پر جانے سے رک جاؤں اپنا ایمان مال اور عزت بچالؤ'۔ ( فرجی دسیاسی باوے ۲۳ )

یں بھی اللہ تعالیٰ کی وصدائیت کا داسطہ دے کر پوچھتا ہوں کیا دائتی دربار پرجانے
سے قبر پر حاضری دینے سے مزار پر چلے جانے سے ایمان ، مال اور عزت تیوں خطرے میں پڑجائے ہیں انکو بچانے کا داحد طریقہ بیہ کہ مزادات پر درباروں پر قبروں پر نہ جایا جائے درنہ ایمان ضائع ، مال متباہ اورعزت بربادہ اللہ ایک جو دفت آپ ہوش دحواس سے کوسوں دور جا پچکے بربادہ اللہ ایک جو دوت آپ ہوش دحواس سے کوسوں دور جا پچکے سے دردوردور دردرتک حواس خسم کی حاضری نظر نیس آئی اگر آپ ہوش دحواس میں ہوتے تھے اور دوردوردور تک حواس خسم کی حاضری نظر نیس آئی اگر آپ ہوش دحواس میں ہوتے اور ایل کھی نہ کھے بلکہ اگر کھنے کے بعد مرحلہ اٹھ دی بھی ہوش آجاتا تو اس منظر یے کوؤر آبدل دیے الفاظ میں بکدم تبدیلی کرتے مگر ایسا ہوائیس اور جھے تو یوں لگا

ے کداب تک بھی آپ ہوش میں نہیں ہیں۔ بیک جنبیش قالم:

اگرجم درباروں مزاروں پر چلے جائیں تو ایمان ، مال اور عزت نینوں ذاکل اور اگر سیدا حمد شہید صاحب چلے جائیں تو ایمان بھی سلامت ، مال بھی بدستو ار اور عزت بھی قائم آخر وہ کونسا قاعدہ ہے آپ کے بزرگ مزارات پر جائیں تو سب پھے سلامت نہ ایمان صافع نہ مال برباد ، نہ عزت پرحرف اور جم جائیں تو سب پھے بیکے جنبش قلم تباہ و بیمان صافع نہ مال برباد ، نہ عزت پرحرف اور جم جائیں تو سب پھے بیکے جنبش قلم تباہ و برباد کیا دیانت کا نقاضا پہنیں دربار پر جانے والا اپنا ہویا پرایا جو تھم کی پرائے پر گلے وہ کی ایمان ہوتا تو واقعی صدافت تھی گر ایسا نہیں ہوا ہم درباروں پر جائیں تو ایمان ، مال اور عزت سب لٹ جائیں پھے باتی نہ بچے اور اگر آپ کے جائیں تو ایمان ، مال برباد نہ ہی عزت پر برگ سیدا حمد شہید صاحب چلے جائیں تو نہ ایمان کو خطر د ، نہ مال برباد نہ ہی عزت پر برگ سیدا حمد شہید صاحب جلے جائیں تو نہ ایمان کو خطر د ، نہ مال برباد نہ ہی عزت پر کوئی حرف سب بدستور قائم سجان اللہ کیا تا عدہ کلیہ ہے۔

#### المنت ووقار:

خود جومرضی کروسب جائز دوسرے ذرا آپ کے مزاج کے ظان کریں تو فتویٰ تیار وہ بھی ایمان، مال اور عزت کے زائل ہونے کا اور سید صاحب چلے جا کیں تو ویسے ہی صاحب عزت ووقار جس طرح پہلے تھے ندائلی سیادت میں فرق آئے ندا تکا بزرگ ہونا متاثر ہوند اٹلی قیادت پر کوئی شک، وہ سید الساوات بھی رہیں ، امام المجاہدین بھی رہیں اور ضلیفۃ اللہ بالیقین بھی بیدور نگی آپ ہی کومبارک ہو جمیں ہمارا سیدھاسادھاسچائی عقیدہ مبارک۔

اتی نہ بڑھا پاک داماں کی حکایت

دائن کو ذرا دیکھ ذرا بند قبا دیکھ

اگریفین نہیں آتا تو دکھاؤں آپکے لیڈر کو مزار فائین الانوار پر حاضر ، مانگنا ہوا ، لیجئے مطالعہ فرمایئے تا کہ آپ تازہ دم ہو جائیں اور آئندہ بزرگوں کے مزارات پر اعتراضات کرنے سے قبل اپنا دائمن ضرور دیکھیں تا کہ قلم احتیاط سے چلے۔ ملاحظہ فرمائے۔

سيدالسادات جناب سيراحد شهيدصاحب فرمات بين:

''میں نے ادھرادھر بوی کوشش کی کہ کھانے کو پچھٹل جائے مگر ندملا چارونا چار میں برائے زیارت جحرۂ مقدسہ حاضر ہوا''۔ (محزن احمدی۲۹)

یباں تک تو حاضری در بارکا معاملہ تھا، اس کے بعد امیر حمز ہ صاحب نے مزار ودر بار کے تیم کار در بارک تیم کا در بردی جوانمر دی کا مظاہرہ فرمایا لیجئے مطالعہ فرمایے کلھتے ہیں۔

## امير جزه صاحب رقمطرازين:

قار ئین کرام! افطاری کا وقت ہوا چاہتا ہے اس دربار سے غیر اللہ کی نیاز وں کا کھانا کیا۔ پانی چینے کو بھی ول نہیں چاہا ہم نے '' ون' کے درخت و کھے، ان کا سفید ساہ کھانا کیا۔ پانی چینے کو بھی ول نہیں چاہا ہم نے '' ون' کے درخت و کھے، ان کا سفید ساہ کھل جے پنجا بی میں '' پیلو' کہتے ہیں انہی سے روز وافطار کیا اور غیر اللہ کی درباری نذرو نیاز سے بچالیا''۔ (نہ ہی وسیاسی باوے ۲۳۳) امیر حمز و صاحب آپ نے دربار کی نذرو نیاز کی بجائے '' پیلو' سے روز وافطار کر کے امیر حمز و صاحب آپ نے دربار کی نذرو نیاز کی بجائے '' پیلو' سے روز وافطار کر کے بوری ہی جوانم روی کا مظاہرہ کیا۔ پھر آپ نے اپنے عمل کوبطور تفاخر بیان کیا۔ آپ نے لؤ کمال ہی کردیا کہ قبر کے قرب میں جو پچھ میسر تھا چھوڑ دیا۔

### مرتقدين:

کیوں جناب جس درباری نذرونیاز ہے آپ بالکل محفوظ رہے اور اپ شکم کو بھی اللہ کی تو نیق ہے بچالیا آپے ہیروکو کیا ہو گیا وہ ندخود نی سے اور نددوسروں کو بچایا بلکہ خود بھی کھایا دوسروں کو بچایا بلکہ خود بھی کھایا دوسروں کو بھی کھلایا فیصلہ آپ پر ہی چھوڑتا ہوں جس کو آپ نے جائز نہ جانا ای کو آپ کے رہبر نے ، آپ کے امام المجاہدین نے اور آپ کے خلیفۃ اللہ بالتان کو آپ کے رہبر نے ، آپ کے امام المجاہدین نے اور آپ کے خلیفۃ اللہ بالتقیین نے جائز قرار دیا بلکہ خود تناول کر کے اس کے جواز پر مہر تقد ایق جے فرمائی اب آپ فرمائے میٹل کیا تھا۔

خدالتی کہے گا۔ نوئی دیا نتداری ہے دیجے گاور ندائی علم شکوہ کریں گے اور اہل حق شکایت کریں گے اور اہل حق شکایت کریں گے امیر حمزہ صاحب دیانت کی وادی ہے بہت دور نکل گئے ہیں انہیں یا تو دیانت نام کا کوئی سبق اسا تذہ نے پڑھا یا بی نہیں یا پڑھ کر بھول گئے ہیں۔ شرافت نام کی کوئی گردان انکوآتی بی نہیں یا پھریے گردان یاد کر کے بھلا دی ہے۔ علی کمال نام کا کوئی حصدا تکومیسر ہی نہیں آیا یا پھر آنے کے بعداس سے دامن کو خالی کر علی کمال نام کا کوئی حصدا تکومیسر ہی نہیں آیا یا پھر آنے کے بعداس سے دامن کو خالی کر لیا ہے۔ اگر مطالعہ کو دسعت دی ہوتی اور پکھ وقت تکال کرا ہے تی ہزرگوں کی سیرت کو پڑھا ہوتا تو کم از کم بیا نداز تحریرتو نہ ہوتا جو ''غربی وسیای باد ہے'' ''شا ہراہ بہشت کو پڑھا ہوتا تو کم از کم بیا نداز تحریرتو نہ ہوتا جو ''غربی وسیای باد ہے'' ''شا ہراہ بہشت اور در باری چہنم'' میں ہے۔

#### مدعا ثابت نه کرکا:

آپ کی کتابوں کے مطالعہ کے دوران غصر تو بہت آتا تھا مگر میں نے آپوللی پیٹیم سے کہ کا پوللی پیٹیم سے کرآپ کی زبان میں جواب دینا مناسب نہ جانا البذامیں نے اپنی ساری بات اپنی ای زبان میں کی ہے درند طنز و مزاح نام کی وادی سے میرا بردا گہر اتعلق رہا ہے میں این میں کی ہے درند طنز و مزاح نام کی وادی سے میرا بردا گہر اتعلق رہا ہے میں

آپ کے رہبرآ کیے ہیرہ (Hero) نے تو نہ صرف قبر کے قرب سے کھایا بلکہ صاحب قبر سے گھایا بلکہ صاحب قبر سے گھایا ہاکہ اعدہ ما تگا اور قبر سے دو تازہ تازہ خوش انگور کیبر آ الد بھی ہو گئے اور شاہ تی نے بڑے مزے سے تناول فربائے نہ صرف سے کہ خود ہی تناول کیے بلکہ بابرنگل کر حجرہ مقد سے اپنے ساتھیوں میں بھی تقیم کیے اگر چدا یک ایک دانہ ہی انکے صے میں آیا گر محروم کی کو نہ رکھا۔ سید السادات ، واقف رموز خفی و جلی، امام المجاہدین اور خلیفۃ اللہ بالیقین تو در بار سے نذرہ نیاز شرف لیتے ہیں بلکہ سائل بن کر المجاہدین اور دو سروں کو کھلاتے ہیں اور طفے پر خوب خوشی مناتے ہیں خود کھاتے ہیں اور دوسروں کو کھلاتے ہیں گرآپ تو اپنے لیڈر کو بھی چیچے چھوڑ گئے لیج کھاتے ہیں اور دوسروں کو کھلاتے ہیں گرآپ تو اپنے لیڈر کو بھی چیچے چھوڑ گئے لیج

# مواوى سيد محمعلى شاه صاحب لكهة بين:

"ويك يك وانه بهريك تقتيم كردم"

#### مجمع لوث ليا:

مجراحا تك رخ بدل كربكه بنز ابدل كركبنے ككے:

صاحب صدر ابیں بیاسناد ، بیڈ گریاں کیر مختلف دفاتر بیں گیا مختلف آفیسرز کے
پاس گیا، کی دولت مندول کی خدمت عالیہ بیں حاضری دی گر جھے کو کہیں تو کری نہ فی
لہذااب وہ صاحب اسٹی پرین پا ہو کر ہولے بیر ہی میٹرک کی سنداور اسکے گلڑ ہے گلڑ ہے
کردیا ای طرح ایف اے اور بی اے کی اسنادوڈ گری کے ساتھ بھی کیا بیسال دیکھ
کر بورا حال اس کی جمایت بیس تالیاں بجانے لگا سارا جُمع اس نے لوٹ لیا حتی کہ جُمز
نے بھی اس کے حق بیس تالی بجاڈ الی ۔ لگتا یوں تھا کہ اس کے بعد کوئی کتنا زور صرف
کرے اسکوکاٹ بیس سکتا بیاؤ کا فرسٹیو زیشن تو یقینا لے جائے گا۔ بہر حال اسکے بعد
میری باری آئی ۔ بیس نے اسٹیج پر آتے ہی یوں آغاز کیا۔ وہ صاحب ابھی واپس اپنی فرشست کی طرف جارہے تھے بیس نے کہا۔

گیا دور سرمایی داری گیا تماشا دکھا کر مداری گیا

بس پھر کیا تھا،ساراہال دوبارہ تالیوں ہے گونج اٹھاایک نیا ولولہ، ایک نیا جوش پیدا ہوا۔ میں نے بھی بڑی متانت اور تیزی کے ساتھ تو اعدمباحثہ کے تین مطابق گرج وار آواز میں کہا۔

# صاحب صدرگرای قدر:

اگرطیع نازک په گرال نه گزرے تو عرض کروں گا خود اٹھ کر یہاں تک تشریف لائیں اور آ کرمشاہدہ فرما کیں اگر توبیا ساداور ڈگریاں جوآپ کے سامنے پرزہ پرزہ ک جب جی می لا ہور میں پڑھتا تھا تو (DEBATES) کیلئے پورے پاکستان میں جاتا تھا مختلف کالمجز، یو نیورسٹیز، اور دیگر انسٹیٹیوٹس میں اپنی بات کہنے کا موقع ملا اکثر ہی فرسٹ (First) انعام جیت لاتا تھا۔خصوصاً پنجالی میں جومزہ آتا تھا وہ اردو میں انگریزی میں نہیں آتا تھا۔

ای قرارداد کے حق میں اور خالفت میں مقررین (DEBATER)دلائل دے در ہے تھے۔ اس قرار دادکی حمایت میں جھے سے پہلے ایک نوجوان تشریف لائے اور آپ کی طرح بردا شور مجایا اور یوں لگتا تھا یہ لاکا فرسٹ پوزیشن ( First آپ کی طرح بردا شور مجایا اور یوں لگتا تھا یہ لاکا فرسٹ پوزیشن ( Position ) لے جائے گا۔ جسے ہی اپنے پر آیا آتے ہی چیخ چیخ کر کہنا شروع کر دیا علم کی کوئی ضرورت نہیں اگراعلیٰ زندگی گزارتی ہے۔

تواس کیلئے دولت چاہیے ہی دولت! دلائل دیتے ہوئے وہ صاحب اچا تک ایک عجیب وغریب طرز اختیار کرتے ہیں ایک فائل کھول لیتے ہیں اور پھر یوں گویا ہوتے ہیں۔صاحب صدر! میں کیا کروں اس تعلیم کو میں کیا کروں اس علم کوجنگی بدولت میں اپنا اور اپنے مال باپ کا پیٹے نہیں پال سکتا بیاری میں ان کا علاج نہیں کروا سکتا ان کو گری سردی ہے بچانے کے لئے کپڑوں کا انتظام نہیں کر سکتا۔

می ہیں اصلی ہیں تو بین اپنا مؤ قف بدل لیتا ہوں ہیں بھی یہی نعرہ بلند کرتا ہوں کہ

'اعلی زندگی کیلے علم بین دولت کی ضرورت ہے''اوراگریہ سب اسناواصلی ہونے ک

بجائے اٹنی فوٹو کا بیاں ہیں تو جھے یہ کہنے کی اجازت دہیجے کہ اندرونِ خاں،

میرے (DEBATER) بھائی بھی تشکیم کرتے ہیں کہ اعلیٰ زندگی کیلئے دولت نمیں علم کی ضرورت ہے اور گھن انعام جیتنے کیلئے ڈرامہ بازی کرکے گئے ہیں ورندولِ

ناتواں توان کا بھی قائل ہے کہ اعلیٰ زندگی علم کی بدولت ہی نصیب ہوتی ہے نہ کہ دولت

زيرآلود تر:

جب اسنادد یکھی گئیں جو پرزے پرزے کردی گئی تھیں اور ایساما حول کا کی ہال کا بنا
دیا گیا تھا کہ ایک جنوں نظر آتا تھا اور میرے مدِ مقابل کی کامیابی بیٹنی نظر آرہی تھی۔
تو فوراندی ماحول بدل گیا اسناد کی فوٹو کا پی پھٹی ہوئی دیکھ کرسار اہال پکارا ٹھا تقریر تو زور
دارتھی مگر حقا گئی ہے کوسوں دور لہذا سب نے کہا اعلیٰ زندگی کیلئے دولت نہیں علم کی
ضرورت ہے ہم نے وہ مباحثہ جیت لیا بلکہ میرے ساتھ جو دوسرے
ضرورت ہے ہم نے وہ مباحثہ جیت لیا بلکہ میرے ساتھ جو دوسرے
مضرورت ہے ہم نے وہ مباحثہ جیت کیا بلکہ میرے ساتھ جو دوسرے
مضرورت ہے ہم نے وہ مباحثہ جیت کیا بلکہ میرے ساتھ جو دوسرے
مشرورت ہے ہم نے وہ مباحثہ جیت کیا بلکہ میرے ساتھ جو دوسرے
مشرورت ہے ہم نے وہ مباحثہ جیت کیا امریکہ بین مقیم ہیں اور دہاں کے
مشرورت کے گئے تو ٹرانی بھی گور نمنٹ کا کی لا ہور ہی کے جے ہیں آئی جو کہ ایک معینہ
میر جع کئے گئے تو ٹرانی بھی گور نمنٹ کا کی لا ہور ہی کے جے ہیں آئی جو کہ ایک معینہ
میر سے سے گئے گئے ٹو ٹرانی بھی گور نمنٹ کا کی لا ہور ہی کے جے ہیں آئی جو کہ ایک معینہ
میر سے سے میں آئی جو کہ ایک معینہ

شوراتو آپ نے بھی خوب مجایا ہے:

امرحزہ صاحب آ پکوکی مولوی صاحب نے ہاتھ تبین ڈالا بلکہ ایک اولڈراوین

نے آپی نہایت متانت سے خبر لی ہے اگر صحافی ہی بننے کا شوق ہے تو ضرور ایکے گاگر
دیا نتدار صحافی ایک فرقہ کی نمائندگی پوری امت کی فمائندگی نہیں ہوتی اپنے خول سے
ہاہر تشریف لا سے اور اپنے علاوہ اردگرد کی دنیا کا جائزہ لیجئے انشاء اللہ حقیقت حال
واضح ہوجائے گی۔شور تو آپ نے بھی خوب بچایا ہے شرک ہوگیا شرک ہوگیا گرجب
ہم نے آپ کے شرک کا جائزہ لیا تو آپیا اپنے گھر میں بھی ہوتا نظر آیا۔ جس جم پر
آپ نے مسلما نوں پر زہر آلود تیر برسائے اور جہاں آئے وہاں پوست فرمائے لیکن
ہوایوں کہ وہ سب تیرلوث کر آپ ہی کی جانب آئے اب لا کھ بھا گئے کی کوشش کریں،
ہوایوں کہ وہ سب تیرلوث کر آپ ہی کی جانب آئے اب لا کھ بھا گئے کی کوشش کریں،
تاویلیں پیش کریں ۔ لیکن آپ بھا گئیس سکتے کہ جناب سیدا حمد شہید صاحب کو آپ
تاویلیں پیش کریں ۔ لیکن آپ بھا گئیس سکتے اور اگر آپ یہ ہمت فرما کیں گئو ہم آپ کو داددیں
گے اور آپ کو صحافی مان لیس گے اور اعلان کریں گے کہ امیر حمز وصاحب ایک دیا نترار
صحافی ہیں دیکھتے ہوتا ہے کیا۔

### そがらりにかりる:

میں دل کی اتفاہ گہرائیوں ہے آپ کوخراج تحسین پیش کروں گا اگر آپ اپ گھر
کی بھی اصلاح فرما کیں گے اور اگر آپ نے آ کیں، با کیں، شاکیں کر دیا اوران ب
بنٹ شدے کر کے دا کیں با کیں ہونے کی کوشش کی تو ہم بھی آپ کی ناکہ بندی کریں
گے اور آپ کو بتا دیں گے کہ آپ کا نقطہ نظر درست نہیں ہے چند جاہل فتم کے لوگوں کے اور آپ کو بتا دیں گے کہ آپ کا نقطہ نظر درست نہیں ہے چند جاہل فتم کے لوگوں کے عمل کو دیکھ کر اللہ تعالی کے جلیل القدر اولیاء پراعتر اضات کرنا کوئی مناسب اقدام معلوم نہیں ہوتا۔ اگر آپ نے صرف کا پیراور ایسے دوسرے مقابات کومؤرد الزام معلوم نہیں ہوتا۔ اگر آپ نے صرف کا پریراور ایسے دوسرے مقابات کومؤرد الزام کھم رائے ہوتا تو شاید ہیں کہی بھی قلم پکڑ کر آپ کوراہ دکھانے نہ پیٹھتا مگر افسوس ہوا کہ

آپ نے مسلمہ بزرگوں، حضرت علی بن عثان جویری، ثم لا ہوری المعروف بدواتا عجم بخش ، حضرت خواجہ میں عثان جویری، ثم لا ہوری المعروف بدواتا عجم بخش ، حضرت امام ربانی خواجہ مابا فریدالدین مجمئز شکر، حضرت شاہ بہا والدین زکریا ملتانی ، حضرت شاہ رکن عالم ملتانی ، حضرت امام ربانی مجھ پر لازم تھا ربانی مجھ پر لازم تھا بہا آپ کی مرضی ہے حق کوشلیم کریں اور بزرگان بیس آپ کو آئینہ وکھا وی اب آپ کی مرضی ہے حق کوشلیم کریں اور بزرگان وی کی مرضی ہے حق کوشلیم کریں اور بزرگان وی کی کریں اور بزرگان دیں گی عزت و تشکریم کرے اپنی و نیا و آخریت سنوار لیس یا اپنے غلط ملط مؤقف پر قائم رو کراپی دنیا و آخریت برباد کرلیں جومزاج یار بیس آ ہے۔

#### كرامات المحديث:

جب میں امیر حمزہ صاحب کی کتب کا مطالعہ کر رہا تھا ، جھے پڑھ پڑھ کر نہایت
افسوں ہوتا تھا کہ کس طرح بے دردی کے ساتھ بڑے بڑے اولیا واللہ پرطنزیں کی گئی
ہے۔ میں چاہتا تھا اس طرز کا کوئی
معاملہ ان کے اپنے گھر کا ہو جوان کوخوب متاثر کرے اور ہمارے لیے مؤید ٹابت ہو
چنا نچا نہی امیر حمزہ صاحب کے گھر کی کتاب ہاتھ لگ گئی جس کا نام ہے '' کراہاتِ
وہا نچا نہی امیر حمزہ صاحب کے گھر کی کتاب ہاتھ لگ گئی جس کا نام ہے '' کراہاتِ
المحدیث' جو پچھاک کتاب کے سرورق پرلکھا ہے وہ بیہ ہے۔ کراہاتِ المحدیث،
مؤلفہ مولانا عبد المجید صاحب خادم سوہدروی ، شاگرد، مولانا مجمد ابراہیم صاحب میر
سیالکوئی ، ناشر اسلامی کتب خال ہ سیالکوٹ:

# ال كتاب ك صفح فبرا يراكها ب:

"ال مضمون میں ہے پہلے بزرگوں کا تذکرہ نہیں کروں گا بلکہ دور و حاضرہ کے الجحدیث حضرات کا ممونہ پیش کروں گا جن میں سے اکثر کو آپ جانتے اور پہچانتے

إلى اورصاحب كرامت بحى تف"ر (كرامات المحديث)

یں اور میں سب راست سے اور کر میں اگر آپ کے بزرگوں سے کرامات فور فرما کیں ان جملوں پر پھر فیصلہ کریں اگر آپ کے بزرگوں سے کرامات کا صدور ہوتو وہ بالکل درست و سے اور اگر دوسر ہے بزرگوں بلکہ مسلمہ حضرات اولیا ما کہ ام ہے انہیں کرامات کا صدور مان لیا جائے تو آپ کو بل پڑنے لگا ہے اور آپ تی وات ہوتا ان پر پھبتیاں کتے ہیں جہاز میں بیٹے کر اس کھا کے ان کا فداق اڑاتے ہوئے ان پر پھبتیاں کتے ہیں جہاز میں بیٹے کر اسٹ کا ہمسفر ہے تخاطب کرتے ہوئے فرق عاوت و کرامات کا ہمسٹر کرتے ہیں اور ذرا اسٹ ہمسفر سے تخاطب کرتے ہوئے ترق عاوت و کرامات کا ہمسٹر کرتے ہیں اور ذرا ہمسفر ہے ہیں اور کرامات کا ہمسٹر کے بارے میں کہہ کہ ہمسفر ہے ہیں اور کن لوگوں کے بارے میں کہہ مرارات پر آپ کے اکابر حاضری دیتے رہے ہیں اور ان کو زندہ مانے رہے ہیں ان کے فیض پانے جاتے رہے ہیں اور آپ کے ایک برزگ سر ہند تک امام ربانی مجد و الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کے مزار کی زیارت کو گئے تھے۔ لیجئے مطالعہ فرما ہے تا کہ ول

# مجدوالف ثاني رحمته الله عليه:

"صوفی حبیب الرحمٰن صاحب کابیان ہے کو اواء میں جب حفرت ضیاء معصوم صاحب مرشد حبیب اللہ خال شاہ کا بل بٹیالہ تشریف لائے تو انہوں نے سر ہند جانے کیلئے قاضی جی کواپنے ساتھ لیا حضرت ضیاء معصوم جب روضہ حضرت مجد دالف ٹانی پر مراقبہ کیلئے بیٹھے تو قاضی جی نے دل میں کہا کہ شایدان برزرگوں نے آپس میں کوئی راز کی بات کہنی ہوان سے الگ ہوجانا چاہے۔ ابھی اپنے بی میں بی خیال لے کرا شھے بی سے کہ حضرت مجد دالف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ نے آپ کو ہاتھ سے پکڑ لیا اور فر مایا کہ

سلیمان بنیٹے رہوہم کوئی بات تجھ سے راز میں نہیں رکھنا چاہتے ،صوفی صاحب کا بیان بے کہ قاضی صاحب کا بیان بے کہ قاضی صاحب نے بعض دوستوں سے ذکر کیا اور فر مایا ، کہ بیدواقعہ مراقبہ یا مکاشفہ کا نہیں بلکہ بیداری کا ہے''۔ (کرامات المحدیث 19)

حفرت مجد والف افي رحمة الله عليه في قاضى جي كام ته پكرايا

بھے اچھے الجھی طرح یاد ہے آپ نے جب مزارات اولیاء اللہ پراعتراضات کی بارش شروع کی ہوئی تھی اس وقت آپ یقینا ہوش وحواس کھو بیٹھے تھے آپ نے حضرت اہام ر بانی مجد والف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ کو بھی اپنے قلم کی ز د میں لانے کی بھر پورکوشش کی تھی اوراب خودی خور کریں اگر جم مزارمجۃ والف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ پر حاضری دیں تو شرک کا فتو کی آپ کی پٹاری میں تیار ماتا ہے اور اگر ہم اولیاء کرام صاحبانِ مزارات کو زندہ مان لیس تو آپ آگ بگولہ ہو جاتے ہیں۔

دور فی کیوں؟

آپ دیکھیں اور یقین کی آگھ ہے دیکھیں جب حضرت معصوم صاحب سر ہند شریف جانے گئے ہیں تو قاضی سلیمان صاحب کو بھی ہمراہ لے لیتے ہیں اور جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب چپ چاپ ان کے ساتھ سر ہند شریف چلے جاتے ہیں اور دونوں حضرت امام رہائی مجد دالف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ کے مزار شریف پر حاضر ہوجاتے ہیں نہصرف حاضر ہوتے ہیں بلکہ ضیاء معصوم صاحب تو حضرت مجد دالف ٹانی کے دوفر مراک پر مراقبہ کھی فرماتے ہیں اس ساری صورت حال کود کھے کر قاضی سلیمان کے دل میں بید خیال آتا ہے کہ شایدان بزرگوں ، حضرت مجد دالف ٹانی رحمۃ اللہ معلیمان کے دل میں بید خیال آتا ہے کہ شایدان بزرگوں ، حضرت مجد دالف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ اللہ علیہ اور ضیاء معصوم صاحب نے کوئی رازگی بات آپس میں کہنی ہوان سے الگ ہو

جانا چاہیا اب میں صرف اتنا ہو چھنا چاہتا ہوں۔ اگر مرنے والے سنتے نہیں ، و کیھتے میں ، و کیھتے ہیں ، کوئی بات کرنے پر قادر نہیں تو بیساری گفتگو آخر کس زمرے میں آتی ہے۔ جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب جو آپ کے یقیناً بزرگ ہیں اور آپ ان حضرات کواپنے اکا ہرین میں شارفر ماتے ہیں جناب قاضی صاحب مزار مجد والف ثانی مصرات کواپنے اکا ہرین میں شارفر ماتے ہیں جناب قاضی صاحب مزار مجد والف ثانی پر حاضری دیں تو عقید کا تو حید میں کوئی فرق نہیں آتا و و کیے مؤ حداور اللہ والے اور اگر ہم حاضری دیں تو مشرک کا فرید و رنگی کیوں ہے۔

امیر حمزہ صاحب، کرامات المجدیث کی مندرجہ بالاعبارت بغور مطالعہ فرما کیں آپ خود محسوں کریں گے کہ اس عبارت سے درج ذیل باتیں دواور دو چار کی طرح بیّن ہوتی ہیں۔

# مزارات والے آنے والوں کو پیچانے ہیں:

- ا تپ کے رہبر اور مسلمہ عالم جناب قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب نے جناب ضیاء معصوم کی معتب میں حضرت امام ربانی مجدّ والف ثانی رحمۃ الله علیہ کے مزاد شریف روضۃ انور پر حاضری دی۔
- ۴) جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب اور جناب ضیاء معصوم صاحب جب امام ربانی مجد والف ثانی رحمة الله علیه کے مزار پر حاضر ہوتے ہیں تو ضیاء معصوم صاحب وہاں مراقبہ فرماتے ہیں اور قاضی صاحب کے ساتھ ہی ہیٹھے ہوتے ہیں۔آپ کیا فرماتے ہیں اپنے بزرگوں کے بارے ہیں۔
- ۲) قاضی صاحب کے دل میں بیرخیال پیدا ہوتا ہاں بزرگوں نے آپس میں کوئی

ك قائل ين وللدالحد

اگرائجی بھی یقین نہیں آیا توایک بار پھر قاضی صاحب اور ضیامعصوم کا واقعہ کرامات المحدیث میں مطالعہ فر مالیں ان شاءاللہ خوب تسلی ہوگی۔

# فوراً چشی حاضر:

مولانا عبد المجید صاحب خادم سوہدردی شاگردمولانا محد ابراہیم صاحب میر سیالکوٹی، کرامات مولانا عبداللہ صاحب غزنوی کے عنوان سے رقم طراز ہیں۔آپ مجھی مطالعہ فرمائیں:

كيانظرياني ب:

اگراس طرح كاكوئى واقعه بهارے علاء بيان كريں تو آپ كاقلم فوراً حركت ميں آتا

راز کی بات کہنی ہوگی ظاہر ہے یہ خیال خلاف عقیدہ تو نہ تھا بلکہ عقیدہ قاضی صاحب کا یہ معلوم ہوتا ہے کہ وہ امام ربانی مجد والف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ کو مرنے کے بعد بھی زندہ ہی مانے ہیں تبھی تو فرماتے ہین ان ہزرگوں نے کوئی راز کی بات آپس میں کہنی ہوگی پھر بیصاف صاف معلوم ہور ہاہے کہ آنے والوں کو مام ربانی مجد والف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ جانے بھی ہیں پہچانے بھی ہیں۔

سے بیال تو قاضی صاحب کے دل میں آیا تھا لیکن ہوا کیا ابھی وہ اٹھے ہی تھے کہ
ان ہزرگوں سے الگ ہوجا ئیں تا کہ وہ آپس میں رازی بات کر لیس تو بقول
قاضی صاحب حضرت مجة والف ٹائی نے آپ کو ہاتھ سے پکڑ لیا اور فرمایا
سلیمان بیٹے رہوہم کوئی بات تم سے راز میں نہیں رکھنا چاہتے۔ ہاتھ پکڑ لینا اور
پھر فرمانا سلیمان بیٹے رہو۔ یہ باخبر ہونے کی علامت ہے یا بہ خبری کی ، یہ زندہ
ہونے کی دلیل ہے یامردہ اور بالکل بے اختیار ہونے کی۔

۵) صونی صاحب ای امری بھی صراحت فرماتے ہیں قاضی صاحب نے اپنے دوستوں ہیں ذکر کیا کہ بیرسب پچھ بیداری ہیں ہوا۔ یعنی حضرت امام ربانی مجد دالف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ نے بالکل زندوں ہیں ہوا۔ یعنی حضرت امام ربانی مجد دالف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ نے بالکل زندوں کی طرح قاضی صاحب کا ہاتھ پکڑا، با تیس کی اور بیمعاملہ محض مراقبہ کا نہیں بلکہ بیداری کا ہے اب خود فیصلہ کریں کہ حق پر کون ہے آپ یا مزارات اولیاء اللہ پر صاضری دینے والے۔ اب تو آپ کے گھر سے ٹابت ہو گیا کہ وہی لوگ حق پر عاضری دینے والے۔ اب تو آپ کے گھر سے ٹابت ہو گیا کہ وہی لوگ حق پر بیں جومزارات اولیاء اللہ پر حاضری دیتے ہیں ان کوزیرہ سیجھتے ہیں اور ان کی مدد

ہاور نامعلوم کیا کیا لکھتا جاتا ہے آپ نے مولا ناعبداللہ کا کمال مطالعہ فر مایا، خود
موچیں اگر بیرسب پچھ آپ کے گھر کے بزرگوں کیلئے درست ہے، جائز ہے، تو پچر
دوسرے بزرگوں کومؤرد الزام کیوں تھی براتے ہیں خدا کا خوف کریں اللہ تعالیٰ سے
فرریں ورنداس کی لاکھی بروی ہے آ واز ہے جب وہ بری ہے تو برس ہی جاتی ہے۔ آپ
کے بزرگ تو ماشاء اللہ دفتری فائلوں سے چھیاں تلاش کر کے چھم زون ہیں لے
آتے ہیں۔ کیا نظر پائی ہے آپ کے اکابر نے اور کیا اختیارات ہیں کہیں دور دراز
ہیٹھے ہوئے ہیں ایک معتقد کے خلاف جس چھی کی بنا پر مقدمہ چلنا تھاوہ چھی ہی فائل
سے فائب کردی جب وہ افسر جس نے نہ کورہ صاحب کے خلاف مقدمہ درج کروایا
ان سے جب اس چھی کے بارے اصرار کیا گیا کہ وہ لاؤ تو بیش نہ کر سکا وہ بیچارہ پیش
ان سے جب اس چھی کے بارے اصرار کیا گیا کہ وہ لاؤ تو بیش نہ کر سکا وہ بیچارہ پیش
سے کرتا وہ تو مولا ناعبد اللہ صاحب المحدیث کمال احتیاط سے نکال کر لے گئے تھے
اور پچر جلاد سے کا حکم صادر فر مادیا تھا۔ نہ رہے گیائس نہ ہے گی بانسری۔

# انو كهاطريق كار:

آپاں جملے پرغور فرما کیں، جوایک مصیبت زوہ عرض کرتا ہے اور پھراس حالِ زار پرایک اہلحدیث بزرگ کا طرزعمل ملاحظہ کریں وہ کس انداز سے پیش آتے ہیں کیے مدوکرتے ہیں وہ انو کھا طریق کاربھی نظر میں رکھے۔ مولا نا غلام بنی الز بانی بیان کرتے ہیں:

''ایک شخص مولانا غرنوی کی خدمت عالیہ میں عرض کرتا ہے''خدا کیلئے دعا سیجئے اور مجھاس مصیبت سے بچاہیے''۔

امیر تمزه صاحب آپ تو اس طرح کے طرز بیان کو شرک و بدعت اور اس فتم کی طرز

مسل کوقائل ذمت کہتے ہیں اور اب اگر کمی بزرگ کے پاس کمی ولی اللہ کے پاس اپنی مصیبت لے کر جانا اور ان ہے وعا کروانا واقعی شرک ہے تو اب تامل کیوں بےروک فوک رگا ہے فتو کل شرک تا کہ حق صدافت اوا ہواور ہم بھی آپ کو واد تحسین ویں مگر اب تو قیا مت تک کیلئے آپ چپ رہیں گے نہ زبان کھلے گی نہ قلم حرکت ہیں آگے گانہ صفحات قرطاس پرسیاہی بھرے گی۔

# صح كى تمازيس لمي قرأت:

مولانا عبد الجيرصاحب خادم سومدروى، كرامات قاضى محمرسليمان صاحب منصور پورى كے عنوان كے ماتحت لكھتے ہيں مطالعہ سيجئے اور لطف پاسيئے۔

فے مقتذی کی عین نماز میں اعانت فرمائی۔

آپ کی بارگاہ میں استدعا:

بتائے دور کی ہمارے ہاں ہے یا آپ کے ہاں، میں نے پلے سے کوئی بات نہیں کہی جو پھے آپ کے بتان کی بات نہیں کہی جو پھے آپ کے بزرگوں نے لکھا ہے اسے آپ کی کتابوں سے نکال کر آپ کی خدمت عالیہ میں چیش کر دیا ہے۔ مزید آپ کی ان عقیدت بحری با توں کوفقل کرنے کے بعد میں نے آپ کی طرح رف لینگو کی (Rough Language) بھی استعال نہیں کی بلکہ نہایت متانت سے آپ کی بارگاہ میں صرف استدعا کی ہے فیصلہ پھر آپ پراور قار کین پر چھوڑتا ہوں۔

بیا گرصرف ایک بار کا واقعہ ہوتا تو اس کو اتفاق کہا جا سکتا تھا گر ایسانہیں بیتو کئی مرتبہ ہوا کہ جیسے ہی مولوی حسین احمہ تا جرکتب پٹیالہ کی کمر میں دردشر وع ہوتا و یسے ہی قاضی جی قر اُت کو تحقر کر دیتے اورا خصار سے کا م لے کرسلام پھیر دیتے اب اگر آپ کہ کیس کہ بیتو تحض انفاق تھا تو میں عرض کروں گا ذراغور سے ان جملوں پر نظر کریں اور پہنے بیش میں دفت ہورہی ہوتو بے شک عینک لگا لیجئے گر پڑھیے گا ضرور لیجئے بیش خدمت ہے مطالعہ فرما ہے:

''قریباً قریباً آٹھ مرتبہ میں نے آزمایا حالانکہ میں جماعت کے ساتھ بعد میں شریک ہوتا تھااور قاضی جی کومیری آمد کاعلم نہ ہوتا تھااس سے میں نے یقین کرلیا کہ آپ صاحب کشف ہیں''۔ (کرامات الجحدیث ایل)

ام تك نظرتيس بين:

آپ كى بزرگول كان كمالات كوپڑھ پڑھكر ميرادل باغ باغ مور باہے يل واه داه

بیں نے آزمایا، حالاتکہ میں جماعت کے ساتھ بعد میں شریک ہوتا تھا، اور قاضی جی کو میری آمد کا کوئی علم نہ ہوتا تھا، اس سے میں نے یقین کرلیا کہ آپ صاحب کشف ہیں''۔ (کرامات المحدیث ۲۰-۱۰)

فين تمازيس اعانت:

کیوں جناب عبارت فورے پڑھ لی؟ مولوی حسین احمد صاحب کی کمر میں دردتھا دو نماز ہاجماعت اداکر نے سے قاصر تھے ایک دن وہ جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کی مسجد میں چلے گئے۔ وہ سورہ العمران پڑھ رہے تھے انہوں نے دورکوع پڑھے تھے کہ ان مولوی حسین احمد کی کمر میں دردشروع ہوگیا، انہوں نے ارادہ کیا کہ نماز چھوڑ دوں اب اگلا جملہ ایک ہار پھر فور سے پڑھیں:

"معاً قاضی جی نے اللہ اکبر کہا اور رکوع چلے گئے پھر دوسری رکعت میں بھی مختقر قیام کیااور سلام پھیردیا"۔ ( کرامات المحدیث ۲۱)

اگرہم بیعقیدہ رکھیں کہ دل کی بات حضور غوث اعظم شیخ سیدعبد القاور جیلائی جان لیتے ہیں و فوراً بلاسو ہے سمجھے ہم ہے اس کی وضاحت پوچھے بغیر ہی شورو ہنگا مہ شروع کردیا عاتا ہے اور چیخ بیخ کرکہا جاتا ہے تو بہ تو بہ شرک شرک اور اس کے لئے شرک نی اعلم کا باب تک قائم کرنے سے در بیخ نہیں کیا جاتا اور اب کیا خیال ہے دگا ہے تھم شرک سیجھے حق دیا نت اوا، مرکیا مجال جواب امیر حمزہ صاحب کا قلم حرکت ہیں آئے، بلک اب تو چپ چاپ بیٹھے رہیں گے نہ ہاں ، نہ نال کیونکہ اب معاملہ اپنے برزرگوں کا بلک اب تو چپ چاپ بیٹھے رہیں گے نہ ہاں ، نہ نال کیونکہ اب معاملہ اپنے برزرگوں کا ہاب معاملہ تو حید پرستوں کا ہے اب معاملہ المحدیث علماء وعوام کا ہے ۔ اب کوئی نی ہمارے حضرت برزا کہدر ہا ہے کسی این عالم دین یاصونی برزگ کے بارے ہیں کہ ہمارے حضرت برزا کہدر ہا ہے کسی ایک عالم دین یاصونی برزگ کے بارے ہیں کہ ہمارے حضرت

کر کے آپ کو داد تحسین دے رہا ہوں ہونا بھی یہی چاہے اگر کمی کو کوئی کمال ملے تو حد کرنے کی بجائے خوش ہونا چاہیے ہم آپ کی طرح تنگ نظر نہیں ہیں قلم لے کر آپ کے ہزرگوں کا نداق اڑانے لگ جا کیں ان پر پھیتیاں کسیں، انکوخواہ مخواہ میدان شرک کے ہزرگوں کا نداق اڑانے لگ جا کیں ان پر پھیتیاں کسیں، انکوخواہ مخواہ میدان شرک کے ہزرگوں کا ندائل کی کوشش کریں۔ بیاتو آپ ہی کوزیب ہے اور کسی نے خوب کہا ہے۔

النی سمجھ کی کو بھی الی خدا نہ دے دے دے آدی کو موت پر سے بدادا نہ دے

سوااس کے کیا کہوں:

حضرت مولانا ابومجر عبدالرشيد قادری ،حضرت مولانا شاہ احمد نورانی ،حضرت مولانا عبدالقيوم ہزار وی اور حضرت مولانا مفتی مجمد عبد انکيم شرف قادری رحمة الشعلیم صاحب کشف مخصے اور دل کا حال معلوم کر ليتے مخصاتو فوراً اس نظر بے کوشرک قرار دے دیا جاتا ہے اور اینے گھر میں بطور کشف میرسب نا صرف جائز بلکہ مدحت میں شار ہوتا ہے سوااس کے اور کیا کہوں۔

### يساس عارفان تجائل كصدقة:

آپ کے بزرگ آخر آپ کے اپنے ہیں ان کے لئے تو وہ زبان استعال نہیں کی جا
علی نا جو دوسروں کیلیے کی جاتی ہے اپنائیت بھی تو کوئی چیز ہے اس کا تو کھاظ رکھنا ہی پڑتا
ہے اگرا تنا کھاظ بھی اپنوں کا ندر کھا جائے تو پھر لوگ بوفائی کا طعند دیں گے تو ان کو کیا
مند دکھا کیں گے بات تو بالکل درست ہے گر آپ تو حق پرست ہیں آپ کو کیا غرض
کوئی اپنا ہے یا پرایا آپ نے تو صرف اتنا دیکھنا ہے صدافت کیا ہے ، دیانت کا نقاضا

' و خخرا شھے گانہ کلواران سے بیاز ومیرے آزمائے ہوئے ہیں''۔

#### لكادُ فتوى شرك:

اگر ہم بھی کشف کی بات کریں بلکہ بڑے بڑے بزرگوں سے اگر مکاشفہ، مراقبہ اور کشف کا صدور ہواوراس کا ذکر صح کے اور مضبوط دلائل سے بھی کیا جائے تو آپ طنزو مزاح پر آ جاتے ہیں بلکہ نامعلوم کہاں کہاں سے الفاظ کا تا نا بانا بن لاتے ہیں جو پڑھنے والوں کو ہننے پر مجبود کردیتا ہے آپ کوتو کسی پڑھ وراسے ہیں کام کرنے کی کوشش کرنی جا ہے آپ ویشنے کرنے کی کوشش کرنی جا ہے آپ ویشنے کرنے کی کوشش کرنی جا ہے آپ ویشنے کرنے کی کوشش

#### كير علاؤ:

'' قاضی عبدالرحمٰن صاحب پٹیالوی کا بیان ہے کہ نابھہ بیں ایک متا نہ فقیرتھا، جو
بالکل نگ دھڑ نگ رہتا تھا اور مجذوب تھا کی نے قاضی صاحب ہے اس کا ذکر کیا،
آپ نے اے ملنے کا ارادہ کیا اور فرمایا کہ کل چلیں گے اور اس کے لئے کھا نا بھی لے
جا کیں گے چٹا خچہ جب آپ گئے اور ابھی اشیش سے اُتر ہے ہی تنے کہ اس نے کہنا
شروع کیا کپڑے لو اُک کپڑے لاؤ ایک بزرگ آرہا ہے اور جھے اس سے حیا آتی ہے
شروع کیا کپڑے لو اُک کپڑے لاؤ ایک بزرگ آرہا ہے اور جھے اس سے حیا آتی ہے
خیا نچہ قاضی جی کے پہنچنے سے پہلے ہی اس نے کپڑ ااوڑ ھالیا، جب آپ پہنچ ، تو نہایت
سلوک اور علم کی با تیں کرتارہا، کھا نا بھی کھا یا اور
کہا کہ جو آج کھانے کا عزہ آیا ہے عمر بھر بھی نہیں آیا پھر جب آپ تشریف لے گئے تو
کہا کہ جو آج کھانے کا عزہ آیا ہے عمر بھر بھی نہیں آیا پھر جب آپ تشریف لے گئے تو
اس نے کپڑے اتار چیکے اور ای طرح دیوا نہ ہو گیا''۔ (کراہات الجدیث ب

#### نىك دھر نگ:

امیر حمزہ صاحب! آپ نے اپنے ایک عظیم سپوت بہت بڑے اہل حدیث عالم کے کمالات میں ہے ایک کمالات میں ہے ایک کمال مطالعہ فرمایا لیا نابھہ کے ایک متانہ فقیر کا حال اپنی آتھوں سے اپنی کتاب''کرامات المحدیث' میں ملاحظہ فرمالیا۔ آپ کو یا دہوگا آپ نے حضرت علی بن عثمان جو یک المعروف بدوا تا گئے بخش رحمۃ اللہ علیہ کے مزار شریف کے باہر متانوں ملکئوں کا قلابازیاں لگالگا کرالفاظ کی ترتبین بدل بدل کرخوب نداق کے باہر متانوں ملکئوں کا قلابازیاں لگالگا کرالفاظ کی ترتبین بدل بدل کرخوب نداق اڑایا ہے بلکہ آپ نے تو اپنے ایک دوست کا ذکر بھی کیا ہے جوان نگ دھڑ نگ لوگوں ہے نئی قلا تھا اور وہ راہ راست پرآگیا تھا آپ کے نزویک تو نگ دھڑ نگ مست ملنگ قابل طعن لوگ ہوتے ہیں تبی تو آپ نے بلاروک ٹوک ان کا نداق اڑایا ہے۔

کرتے ہیں اب تو کوئی پئتر ابد لنے کی ضرورت نہیں کوئی الفاظ کا ہیر پھیر نہیں کر ناپڑے گا بلکہ ڈائر یک پھلے کھلافتوئی شرک داغ دینا چاہیے گر اب آپ بھی زبان نہ کھولیں گا بلکہ ڈائر یک چاہتے ہیں کہ آپ کم از کم چپ تو ہوں اور اگر آپ خاموش نہیں ہوں کہ آپ کھی جگ کے امراس پر تھم شرک بدعت اور کا ایک کے اور اس پر تھم شرک بدعت اور مرابی لگ کی شف کا نداق اڑا کیں گے اور اس پر تھم شرک بدعت اور مرابی لگ کی سے کا فرائی اور نرابی آجائے گا اٹھے امر جمزہ صاحب ہمت فرما ہے پکڑ یے قلم وکا غذا اور لکھیکے فتو کی اور زبان بالکل وہی ہو جو ''نذابی و سیاس باوے'' شاہراو بہشت'' اور'' آسانی جنت اور درباری جہنم'' کی ہے''

نہ نخ الحے گا نہ تلوار ان سے یہ بازو میرے آزمائے ہوئے ہیں

## آپ کوسر کراؤن:

میں نے بھی تہیہ کرلیا ہے آپ کوآپ کا ہے فال و مبارک کی پوری سیر کرواؤں
گاتا کہ کم از کم آپ کواپنے گھر کا حکمل جائز ہ تو ہوجائے دوسروں کی طرف پھر پھیئنے
سے پہلے آپ اپنے گھر کی خبر لے لیس کہیں دوسرے کا پھر آپ کے گھر کوعنقا نہ کردے
اور سب خبر ہے لیجئے لگے ہاتھوں آپ کو آپ کے گھر کا ایک اور کمال و کھاؤں شاید
آپ خود بھی اس کو پڑھ کر ورطہ جیرے اس جتال ہو نگے لیجئے رکھیے اپنے دھڑ کے دل پر
ہاتھ اور سنھلیے فررا کہیں گرنہ جاسے گا میر حوالہ د کھے کر آپ کو چکر ضرور آئیں گے مگر جن
ہاتھ اور سنھلیے فررا کہیں گرنہ جاسے گا میر حوالہ د کھے کر آپ کو چکر ضرور آئیں گے مگر جن
ای کیفیت میں واضح ہوجائے گا۔

صاحب کرامات ابلحدیث نے قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کی کرامات میں و کرکیا ہے لکھتے ہیں:

ان لوگوں سے بچنا ہی آپ کے نزد کی کائن تحسین ہان لوگوں کی صحبت میں جانا ان کا ادب کرنا ان لوگوں ہے جہت کرنا تو سراسر غلط ہے نا ان سے تو دور بلکہ کوسوں دور بھا گنا جا ہے۔

### قاضى صاحب اور مجذوب:

آپ نے بیبھی جائزہ لے بی لیا ہوگا آپ کے اپنے مولانا صاحب میری مراد جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب سے ہاں کی بارگاہ میں کی نے عرض کیا ایک ننگ دھڑ نگ مستانہ فقیر نابھہ میں رہتا ہے تو آپ نے اس کی گت بنانے کی بجائے اس کی زیارت و ملاقات ہی کی شمان کی اور با قاعدہ بڑے ہی اعزاز واکرام کے ساتھ ان ننگ دھڑ نگ صاحب کی خدمت میں حاضر ہو گئے اگر ذہن سے اتر گیا ہوتو یا دتازہ فر ماسے خوب رہے گی خوب:

''ناہمہ میں ایک متانہ فقیرتھا، جو ہالکل ننگ دھڑ تگ رہتا تھا اور مجذوب تھا کسی نے قاضی صاحب سے اس کا ذکر کیا آپ نے اسے ملنے کا ارادہ کیا اور فر مایا، کل چلیں گے اور اس کے لئے کھانا بھی لے جا کیں گے' ۔ (کرامات الجحدیث م

# يرطولي ركعة بين:

اب ہم اس دور لگی کو کیا کہیں آپ کہتے ہیں کہ اس ہم کے لوگوں کو تریب بھی نہیں بھٹے دینا چا ہے اور آپ کے بڑے ملاقا تیں کرتے پھرتے ہیں فیصلہ گھر میں سیجیے آپ کامؤ قف درست ہے یا آپ کے بڑوں کا اگر آپ سیجے ہیں تو اٹھا ہے تلم اور اپنے بڑوں کا اگر آپ سیجے ہیں تو اٹھا ہے تلم اور اپنے بڑوں کے خلاف اب تو جہالت کیا آڑے آگی چونکہ آپ تو پڑھے لکھے آدی ہیں بڑوں کے خلاف اب تو جہالت کیا آڑے آگی چونکہ آپ تو پڑھے لکھے آدی ہیں آپ کو بھلا کوئی جابل کیے متاثر کرسکتا ہے۔

بات يبين تك نبيس ربى بلكه قاصى صاحب با قاعده قصد كرتے بيں ملا قات كا اورا گلے ون نابهدروانه ہوتے ہیں جاتے وقت خال ہاتھ جانا بھی اچھانہیں سجھتے بلکہ کھانا بھی ان متانہ فقیرنگ دھڑنگ کے لئے ساتھ لے کر جلتے ہیں۔ کدھر مکئیں آپ کی وہ پھبتیاں ،تحریری قلابازیاں ہلمی گوھرسازیاں آپ تواپے لوگوں کا نداق اڑانے میں پد طولى ركت بيل كحولي زبان مبارك، الحاية قلم اطهر اور لكه زبروست مضمون جناب قاضی صاحب کے خلاف تا کہ آپ کی حق گوئی و بے باک واضح ہو۔ وہی نعرہ حق بلند فرمائے اور صاف صاف اعلان میجئے زیارت وملاقات کا قصد وارا دہ کر کے نا بھے گئے اس لئے وہ بدعتی ہو گئے، گراہ ہو گئے، ارتکاب شرک کیا اور اب وہ ہماری جماعت کے اکابرین میں تو کیا اصاغریں میں شارنہیں رہے پھر تو مزہ آئے گا مگر اب جوآپ خاموش رہے تو ہم بھی اعلان کرتے ہیں آپ نے جو کچھ برھکیس اپنی کتابوں میں ماری ہیں وہ سب بے سرویا ہیں اگرآپ نے داکیں باکیں راستہ تلاش کرے نکلنے کی کوشش کی تو ہم آپ کے تمام راستوں کی نا کہ بندی کر کے پکڑ کیں گے بہر حال اب بھا گئے کا کوئی راستہ ہاتی نہیں رہا آپ نے جس طرح نو جوانوں کو گراہ کرنے کیلئے جال بچھایا تھا اور بڑے پرامید تھے کہ اب تولوگ دھڑ ادھڑ ہمارے ہم خیال بنتے چلے جائیں مح مرافسوں ایا ہوند کا۔ باع صرت بی ربی۔

### ول فرحال وشادال:

آپ ننگ دھڑ نگ لوگ ں کو جاہل ، گمراہ اور پتانہیں کیا کیا کہتے ہیں مگر آپ کے بزرگ ان کی ملاقات کو جاتے ہیں ان کیلئے بطور نذرانہ

کھانا بھی لے جاتے ہیں اور صرف کھانا ہی پیش نہیں کرتے ان کے ساتھ کھانا کھاتے
ہیں اور پھر خوب علم وسلوک کی باتیں کرتے ہیں لیجئے مطالعہ فرمائے تا کہ آپ کا ول
فرصال وشادال ہوادر آپ کو پچھ تو روصانیت میٹر آئے ہمارے ہاں ہے اگرای طرح
کی کوئی بات ہوجاتی تو آپ نے فورا نداق میں ٹال دینا تھا گراب تو آپ کے روبرو
آپ کے بزرگ آپ کے اپنے عالم ، مؤرخ ، محقق ، مصنف اور صاحب کرامت
بررگ ہیں مجعلااان کی آپ کیے ٹال سکتے ہیں۔ قاضی عبدالرحمٰن صاحب بیان کرتے

'' قاضی سلیمان منصور پوری صاحب ابھی اشیشن سے اتر ہے ہی تھے کہ اس (متنانہ فقیرنگ دھڑ تگ ) نے کہنا شروع کیا کپڑے لاؤ کپڑے لاؤ ایک بزرگ آر ہا ہے اور جھے اس سے حیا آتی ہے چنا نچہ قاضی جی کے پہنچنے سے پہلے ہی اس نے کپڑا اور دیر تک آپ سے علم وسلوک کی اوڑ ھالیا جب آپ بہنچ تو نہایت تکریم سے پیش آیا اور دیر تک آپ سے علم وسلوک کی باتیں بھی کرتا رہا کھانا بھی کھایا اور کہا کہ جوآج کھانے کا مزوآیا ہے عمر بحریس بھی نہیں باتیں بھی کرتا رہا کھانا بھی کھایا اور کہا کہ جوآج کھانے کا مزوآیا ہے عمر بحریس بھی نہیں آیا''۔ (کرامات الجوریث: ۲۰)

# تلاشٍ كمالات:

یس نے بھی مجبورا ہی آپ کے حالات کا مطالعہ کر کے ان کے کمالات کو تلاش کیا ہے اور جھے پورایقین ہے آپ کو ان تمام کمالات کا علم نہ تھا ور نہ آپ تلم پکڑ کر بھی بھی مجذوبوں کا نداق اڑانے کی ناکام کوشش نہ کرتے ۔ آپ تو بڑے پہنچے ہوئے لوگ ہیں قاضی صاحب ابھی اکٹیشن پر پہنچے ہی تھے کہ اس مجذوب نگ دھڑ نگ فقیر مستانہ کو ان حضرت کی آمد کا علم ہو گیا اور کہنا شروع کر دیا کپڑے لاؤ ، کیا خیال ہے اب ان لوگوں

کے بارے میں جوحضرات اولپاء کرام کی بابت سے عقیدہ رکھتے ہیں سے اللہ والے ایک دوسرے کو جانعے پیچانتے ہیں۔ کیوں جناب اب بھی فتویٰ لگا کیں گے اور وہ بھی شرک کا؟

#### انداز دليرانه:

قاضی صاحب نے نہ صرف ان نگ دھ رنگ سے ملاقات کی اور کھانا کھلایا بلک ان
سے دیر تک سلوک اور علم کی باتیں کرتے رہے آخر وہ کون ساعلم ہے اور وہ کون سا
سلوک ہے جو قاضی صاحب کو تو آتا ہے اور ان کے علاوہ تمام اولیاء عظام کیلئے اس کا
وجود شرک ہے قابل تر دید ہے اور لا اکن نفرت ہے آپ کے بال نہ متانہ فقیر قابل
نفرت نہ آسکی رفافت لا کتی الزام، نہ اس کی معتب میں کھانا تناول کرنا جرم اور نہ ہی
ان کے پاس بیٹھ کر دیر تک علم وسلوک کی باتیں کرنا شرک گر ہمارے لئے بیسب شرک
ان کے پاس بیٹھ کر دیر تک علم وسلوک کی باتیں کرنا شرک گر ہمارے لئے بیسب شرک
بڑی زبر دست تقیم ہے۔ نہ کورہ بالا اعمال اگر ہم غلامان مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم
بڑی زبر دست تقیم ہے۔ نہ کورہ بالا اعمال اگر ہم غلامان مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم
السدے مسلما نوں سے ہو جا کیں تو بغیر کی روک ٹوک شرک اور اگر یہی اعمال آپ
المسدے مسلما نوں سے ہو جا کیں تو بغیر کی روک ٹوک شرک اور اگر یہی اعمال آپ

#### :69163

آپ کوآپ کے بزرگ قاضی صاحب کی عزت و تکریم ان کے علم بیتنی کا ایک اور واقعہ بھی کا ایک اور واقعہ بھی سناؤں کرامات المحدیث ہی میں نہ کورہ ہے اس کوصاحب کرامات المحدیث ہی نے کرامت نمبر 17 کے شمن میں بیان کیا ہے لیجئے آپ کی نذر کرتا ہوں پڑھے اور لطف پائے۔

"جبآب ج كوجارب تضو فرمايا كرعبدالعزيز كم بال لاكابيدا موكا (يعنى اپنا

پوتا) اس کانام معزالدین حسن رکھنا چنانچے ایسانی ہوا'۔ (کرامات المحدیث ۲۳)

آپ کے ہزرگ عالم دین مولانا عبد المجید خادم سوہدروی صاحب جومولانا محمد ابراتیم صاحب میر سیالکوئی کے شاگر دیں۔ جناب قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب میر سیالکوئی کے شاگر دیں۔ جناب قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب کے بارے بیس رقم طراز ہیں وہ جج کو جارہ، تو فر مایا کہ عبدالعزیز کے ہاں لاکا پیدا ہوگا اس کا نام معز الدین حسن رکھنا چلویماں تک تو کسی حد تک بات مجھ میں لاکا پیدا ہوگا اس کا نام معز الدین حسن رکھنا چلویماں تک تو کسی حد تک بات مجھ میں آتی ہے اس کو دعا مان لیتے ہیں مگر الگا جملہ تو آپ کو ذہر قاتل ہوکر گے گا، ''چنا نچے ایسا

علم ما في الارحام:

ہمارے ہاں اگر کی بزرگ کے حوالے سے کہد دیا جائے کہ انہوں نے پیدائش سے پہلے کہد دیا تھالڑ کا ہوگا اور فرزند تولد ہوا تو آپ لھے لے کر پیچھے پڑھ جاتے ہیں اور ضربیں لگاتے وقت آپکو بیتک بھی یا دنہیں رہتا کہ آپ اپنے گھر میں ہیں وہاں موجود خمیں جہال لھارر ہے ہیں ۔ لھ برسانے کے بعد آپ کو ہوش آتا ہے اوخو بیوار تو اپنے اویر پڑھ گیا۔

بس بچھ میں صرف اننا ہی آتا ہے کہ آپ کے بزرگوں کوتو پتا ہوتا ہے کسی مادہ کے پیٹ جس کیا ہے جس پروتی ہے جس پروتی پروتی پیٹ جس کیا ہے جس پروتی ہے جس پروتی نازل ہوتی ہے ان کو خبر نہیں اور آپ کے قاضی صاحب کوسب بتا ہے کمال ہوتو ایسا ہو سوچۂ گا آپ نے کیا لکھ دیا ہے اور آپ کے گھر میں کیا ہوتا رہا ہے۔ قاضی صاحب کی فضیلت و کرامت کا بیان کرتے ہوئے کرامات الجحدیث میں لکھا ہے دل و د ماغ حاضر کرکے پڑھے گا۔ مزہ آئے گا:

"جب آپ تج پرتشریف لے گئے اور مدیند منورہ پنچ تو مسجد نبوی کے پیش امام آپ کی بہت مدارات کرنے گئے، ایک دن آپ جواشے، تو امام صاحب جو تیاں سیدھی کرنے گئے، آپ نے فرمایا یہ کیا؟ تو امام صاحب نے کہا کہ جھے خواب بیس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جم سلیمان جارامہمان ہے اس کی مدارات بیس فرق نہ کرنا"۔ (کرامات الجعدیہ: ۲۳)

# امام سجد نبوى عليه:

آپ نے غور سے اس عبارت کو پڑھا ہوگا، مجھے طنز کرتے ہوئے بھی شرم
آتی ہے اس لیے کہ بیس نے ان لوگوں سے تربیت پائی ہے جن کو اللہ تعالیٰ کے ہاں
حاضری کا پورایفین تھا اور اپ اعمال کی جوابد ہی پر بھی ایمان تھا یعنی ان کا بیعقیدہ تھا
کہ قیامت برخ ہے اور اس دن ہمیں اپنے خالق مالک کے روبر وضر ور کھڑے ہونا
ہے کچی بات ہے مجھے اولاً تو اس عبارت کو پڑھ کر بڑی بنی آئی کہ یا اللہ تیراشکر ہے تو
نے ہماری صدافت ہمارے مخالفین کے منہ سے ظاہر فر مائی۔ ذراغور سے ایک مرتبہ
پھر اس عبارت پر نظر ڈالیس معجد نبوی شریف کے پیش امام آپ کی بہت مدارات
کرنے گے ایک دن آپ جو المحے تو امام صاحب جو تیاں سیدھی کرنے گئے۔ آپ
نے فر مایا یہ کیا تو امام صاحب نے کہا کہ:

" مجھے خواب میں رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا ہے كہ محد سليمان جارا مہمان ہے اس كى مدارات ميں فرق نه كرنا" \_ (كرامات الحدیث ٢٣)

## حافظه دروغ كوراحافظ نباشد:

میں اللہ تعالیٰ کی وحداثیت کا واسطہ دیکر ہو چھنا عابتا ہوں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

وسلم نے قاضی سلیمان منصور پوری کو پہچان لیا کہ وہ میری مجد میں آیا ہوا ہے اور پھر
امام مجد نبوی شریف کو مدارات کو عم صادر فر بایا بیسب زندہ ہونے کی دلیل ہے یا
نہیں ؟ یقیناً زندہ ہونے کی دلیل بینہ ہے۔ اب آپ کا اپنا عقیدہ کدھر گیاا ڑگیا ہا لگ
گئا نار کڑھ گیا آسان پر تمہارے پائ قو ندر بااب کیا کریں گے آپ رو کیں خوب
رو کیں آنسو خشک ہوجا کیں تو میر ڈراپس (Tear Drops) آنکھوں ہیں ڈال لیں
در کیں آنسو خشک ہوجا کیں تو میر ڈراپس (Tear Drops) آنکھوں ہیں ڈال لیں
اگر میڈراپس میسر نہ ہوں تو پیاز کا ٹائر دع کردیں تا کہ کی پوری ہوجائے پچھآپ کا
تھ قائم رہے گران حربوں کے باوجود بھی آپ سے ثابت نہ ہو سکیں گے،۔
وروغ گورا حافظ با شد

### ج بتاؤل:

چونکہ آپ لوگوں نے اپنے بزرگ قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب کا کمال ٹابت کرنا تھااس لئے اس موقع پرآپ کواپنا عقیدہ یاد نہ آیا۔ بےخودی میں نامعلوم آپ نے کیا پچھ کھے دیاویہ بچ بٹاؤں پر کرامات بیان کرنے سے پہلے مولانا عبدالمجید صاحب کوآپ سے مشورہ ضرور کرنا چاہیے تھا بچھے یوں لگتا ہے جب بیرسب کھا جامہا تھااس وقت تو آپ دنیا میں تشریف ہی نہیں لائے تھے۔

کرامات اہلحدیث میں لکھو کی کے مولانا عبد الرحمٰن صاحب کی کرامات کا ذکر کرتے ہوئے مولانا عبد المجید خادم سر ہدردی صاحب لکھتے ہیں پیش خدمت ہے مطالعہ فرمائے:

# جلال دين عرف جُلو:

موضع لکھو کی سے پچھ فاصلہ پرایک جمیل نامی گاؤں تھا جہاں کا سروار جلال الدین

عرف جدّہ بڑا زمیندارادرکی گاؤں کا مالک تھا، جدّہ کے ہاں اولا دنہ ہوتی تھی ،اس نے کئی بیویاں کردگئی تھیں، گر پھر بھی وہ اولاد سے محروم تھا، پنجاب بیں بیرواج ہے کہ جب کئی بیویاں کردگئی تھیں، گر پھر بھی وہ اولاد سے محروم تھا، پنجاب بیں بیروان مست قلندر خال قا ہوں اور قبروں کی طرف رجوع کرتا ہے، اور ان سے اولا د چاہتا ہے، جدّہ بھی اس خال قا ہوں اور قبروں کی طرف رجوع کرتا ہے، اور ان سے اولا د چاہتا ہے، جدّہ بھی اس خیال کا آدی تھا، اور جہاں کی فقیر کا پیتہ چاتا تھا، و ہیں ابھہ دوڑتا تھا، ایک باراسے پتہ چلا کہ فیروز پورشر میں ایک مستانہ ہے، جونجذوب ہوا ، وہ ان الکل نگ دھو تگ رہتا ہے تو پہنہ وہ اس کے پاس گیا اور اس سے بیٹا ما نگا، مجذوب بولا، تالائق: اگر بیٹا لیٹا ہے تو کسے ، وہ اس کے پاس گیا اور اس سے بیٹا کسو کی جانی اور موالی ہیں ہملا وہاں سے بیٹا کسے کے علی عبدار ممن صاحب سے سارا کے جدو اس مستانہ کے ارشاد پر کھوکی پہنچا اور مولینا عبدار حمٰن صاحب سے سارا واقعہ بیان کردیا۔

#### فرزندموا:

''آپ نے دعافر مائی، خداکی قدرت اگلے ہی سال اس کے ہاں فرزند زیر نے تولد
ہوا، وہ دوڑادوڑا آیا،اورمولینا کو لے جانا چاہا گرآپ نہ گئے اور کہا کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ
عوام ہے بچھنے گئے کہ عبدالرحلٰ نے بیٹا دیا ہے، پھراس نے عرض کی، کہ حضور آپ اس کی
تر دید کردیں اور تو حید کا دعظ کہیں، تا کہ ہمارے گاؤں بھی پچھتو حید وسنت سے آشنا ہو
جا کیں، چنا نچاس پر آپ وہاں گئے اور کئی دن تک وہاں وعظ کئے اور سب کے سب
گاؤں اہلحدیث ہو گئے روائی پر سروار نے آپ کو بہت پچھودینا چاہا، گر آپ نے ایک
حبرتک قبول نہ کیا'۔ (کرامات المحدیث اللہ ا

# تالائق! بينالينا بية لكصوك جا:

لگتا ہے آپ نے جتنی نفرت مجذ و بول ، متا نول اور ننگ دھڑ نگہ ہم کے لوگوں

سے کی ہے اور اس کا ہار ہارا پنی کتابوں ، مذہبی و سیاسی ہادے'' '' آسانی جنت اور
در ہاری جہنم' اور شاہراو ، ہہشت' میں اظہار و بیان کیا آپ کے اکا ہر کواتنی ہی محبت ان
نگ دھڑ نگ لوگوں ہے تھی بچا کون ہے آپ یا آپ کے بڑے فیصلہ گھر میں ہیجئے گا۔
میں تو صرف اتنا عرض کروں گا کیا مولا نا عبد الرحمٰن صاحب کا کمال اس وقت تک پائی شہوت کونہیں پہنچتا جب تک جلال الدین عرف جلو کو پہلے نگ دھڑ نگ کے پائ نہ شہوت کونہیں پہنچتا جب تک جلال الدین عرف جلو کو پہلے نگ دھڑ نگ کے پائ نہ کے جاتا نے جاتا چنا نچہ پہلے جلوصا حب مجذ و ب کے پائ پہنچے پھر وہ لکھوکی گئے وہاں سے ان
کو بیٹا عطا ہوا۔ آپ غور سے اپنے مولا نا عبد المجید سوہدروی صاحب کی عبارت پڑھ
لیس تا کہ آپ کو یقین کی وادی تک رسائی حاصل ہو جائے خصوصاً ان جملوں پر خوب
لیس تا کہ آپ کو یقین کی وادی تک رسائی حاصل ہو جائے خصوصاً ان جملوں پر خوب
غور فر ما کیں:

''وہ (جلال الدین عرف جلو) اس (مجذوب ننگ دھر نگ) کے پاس گیا اور اس سے بیٹا ما نگا،مجذوب بولا، نالائق! اگر بیٹالینا ہے تو تکھوکی جاجلونے ول میں کہا کہ وہاں تو سب وہائی ہی وہائی ہیں بھلا وہاں بیٹا کیسے ملے گامجذوب نے کہا نالائق جاتا مہیں تجھے بیٹا یہاں سے نہیں بلکہ وہاں سے ہی ملے گا''۔ (کرامات الجمدیث اللہ 10)

## لاكني نفرت:

امیر حمزہ صاحب مبارک ہوآپ کو آپ نے جوراہ دوسروں کو دکھا اُن تھی وہ تو اس کے بالکل برطس تھی راز کی بات ہے کسی کونہیں بتا کیں گے مگر ہمیں تو ضرور بتا کیں بیان، ننگ دھڑ نگ آپ کے نزدیک بھی لائق صدعزت،صاحب کمال، ولایت کی پہچان،

کرامات کی جان اور صدانت کی آواز ہوتے ہیں اور بھی بالکل قابل نفرت آخر وقت وقت کی بات ہے آپ اتناہی بتا دیں وہ وقت کونسا ہوتا ہے جب بیلوگ لائق النفات ہوتے ہیں اور وہ کونسا وقت ہوتا ہے جب بیلوگ لائق نفرت بن جاتے ہیں۔ورنہ ہم آپکودور نگا کہیں گے اور پاہے نا دورنگ والا ہی منافق ہوتا ہے۔

#### منازل سلوك:

آپ نے جواولیاء اللہ کے کمالات کا نداق اڑایا ہے ان کو کمالات سے بالكل خالى بتايا بكد كمالات خدادادتك بهى مانے سے انكار كرديا۔ اب آپ كو جب اینے گھر کے بزرگوں کے بارے میں پتا چلے گا کہ وہ کیے کیے کمالات کے حامل تھے تو آپ سرد ھننےلگ جا کیں گے بلکہ آپ پر وجد طاری ہوگا عین ممکن ہے اس وجد آ فریں کیفیت میں آپ کے لطائف بھی جاری ہوجائیں اور سلوک کی منازل تو خیر آپ کو آب كے مولانا تاضى منصور بورى صاحب عى فطے كروائيں كاس لئے كدوه آپ ے اینے بزرگ ہیں اورسلوک انہوں نے نامعہ کے ایک صاحب کمال متاز ننگ وحرانگ سے سیکھا تھا۔آپ کو یاد ہوگا قاضی صاحب قصد وارادہ کر کے نابھہ گئے تھے۔ اظہار عقیدت کے طور پر مجذوب کیلئے کھانا بھی لے گئے تھے۔ای محبت و پیار نے تاضی کے ساتھ مجذ وب کوعلم وسلوک کی بانٹیں کرنے پر مجبور کردیا تھا واہ واہ وہ بھی کیسی مجی تجی محبت ہوگی جس نے ننگ دھڑ نگ متانہ فقیر کو بھی علم وسلوک کے راز افشال كرنے پر رضامند كر ديا اور يہ كو ہرناياب جناب قاضى صاحب نے كمال سليقه مندى ے سے اور پھر عمر بھریہ جو ہربے سال تقیم فرماتے رہے۔

مولاناعبرالرحل لكهوى صاحب كالتعارف:

میں بیہ بھی جاہوں گا گلے ہاتھوں مولانا عبد الرحمٰن صاحب تکھوی کا تعارف بھی کرواتا چلوں اگر بیں ان کے تعارفی کلمات لکھتا تو شاید آپ کو یقین ندآتا گر بیں آپ کے گھرے ان کا تعارف پیش کرتا ہوں تا کہ سندر ہے۔ آپ کا قلب مبارک راحت محموں کرے گا آپ کا د ماغ فرحال و شاداں ہوگا لیجے پیش خدمت ہے راحت محموں کرے گا آپ کا د ماغ فرحال و شاداں ہوگا لیجے پیش خدمت ہے کرامات المحدیث بی بیں کھاہے:

پیرطریقت کی تلاش: بہت خوب: مولانا عبد الرحمٰن لکھو ی برے ہی صاحب کمال تے ان جملہ کمالات

یں سے ایک کمال بیہ بھی تھا، طبیعت شروع ہی ہے تصوف کی طرف ماکل بھی اور کی پیر طریقت کی تلاش تھی ، اللہ تعالی بھی کہنا کارساز ہے وہ اپنے بندوں کی کیسی متحکم مدو فرما تا ہے ۔ آپ لوگ تو بیعت سلسلہ ہائے طریقت اور ان کے فیوض وبر کات کا صاف صاف الکار کرتے ہیں اور آپ کے ہزرگ ہیں کہ پیر طریقت کی تلاش ہیں رہتے ہیں اور جب موقعہ ملے اور کوئی پیر طریقت ال جائے تو وور در از سفر کر کے ان کے دست جی پرست پر بیعت کرنے بھی چلے جاتے ہیں اور بیعت کر بھی لیتے ہیں۔ مولا ناعبد الرحمٰن صاحب تکھوی کو بتا چلا کہ غزنی ہیں ایک پیر طریقت ہیں تو غزنی بھی کر جناب عبد اللہ غزنوی صاحب کی بیعت کی۔

الله كاكرناليوں ہواكہ جناب عبدالله غزنوى صاحب امرتسر تشريف لائے۔ پہلے تو فيض ذرامحدود تھا چونكه آپ ہندوستان سے دورغونى ميں رہائش پذر ستے اور جب آپ غزنى كو خير آباد كهه كر ہندوستان چلے آئے اور آپ كوسر زمين پنجاب بہت پسند آئى اور يہاں ہى رونق افروز ہو گئے۔ مولانا عبد الجيد سوہدروى شاگر دمولانا محمد ابراہيم ميرسيالكوفى نے كيا خوب نقل كيا ہے ايك بار پھرمطالعه فرما سے تاكہ ذہن ميں انزورے۔

'' حضرت عبدالله صاحب غزنوی کے پنجاب تشریف لانے اورامرتسر قیام فرمانے پر تو ہزار ہالوگوں نے فیض پایا مگر غزنی پنج کرالسابقون السابقون کا مرحبہ آپ ہی نے حاصل کیا''۔ (کرامات الجودیث ۸)

آپ بی کوزیب ہے:

میں نے ان خیالات کے اظہار کرنے پرآپ کے بزرگوں کو پہلے بھی خراج تحسین

پیش کیا ہے اور آئندہ بھی اس روش کو اپنائے رکھوں گا۔ کیا مجال جو ہیں آپ کی طرح
اپناؤں اور اپنے قلم کو مزاح کی وادی ہیں دکھیل ووں اور انٹ بنٹ، شند کروں وہ تو
آپ ہی کو زیب ہے۔ بہر حال آپ ہے اپنے بزرگوں کا فیض تو سنجالانہیں جاتا وہ تو
جامے سے چھن چھن کر ہا ہر اچھلتا پھر تا ہے اور دوسرے بزرگوں کو قطعاً فیضان سے
خال قرار دیتے ہیں خود ہی بتا ہے ہم آپ کو کیا کہیں آپ تو جناب عبد اللہ غرنوی
صاحب کی خدمت ہیں بی جھی کر السابقون السابقون کی منزل اور مقام مرتبہ بھی حاصل کر
لیتے ہیں میتمام مقامات آپ ہی کومہارک ہوں۔

#### اكثرالهام بواكرتے تھے:

اور تواور آپ نے بڑی شدت ہے بزرگوں کے روحانی کمالات کا نہ صرف انکار
کیا بلکہ تذکرہ کرکر کے مذاق اڑا یا ہے گراب آپ اپنے گھر کے بزرگوں کے ہاتھوں
ایسے بچنے ہیں کہ دامن چھڑا ناممکن نہ ہوگا۔اولیاءعظام ہیں ہے اگر بھی کمی کو بھی القا
ہوجائے تو آپ اس کیفیت کا رہ رہ کر مذاق اڑاتے ہیں کٹ چھٹیاں کرتے ہیں اس
وقت تو آپ یوں لگتے ہیں جیسے کمی شیجا کیٹر کے باقاعدہ تربیت یا فتہ ہیں۔
مولانا عبد الرحمٰن صاحب کی کرامات کا ذکر کرتے ہوئے کرامات الجحدیث ہیں

مولوی قائم الدین صاحب سکند چک ڈٹھیدالہ شلع لاسکپور کا بیان " ہے کہ جن دنوں میں مولینا عبدالرحن صاحب کے ہاں لکھو کی پڑھا کرتا تھا ،ان ایام کا واقعہ ہے"

"كەلىك بىنتىكى چرى فقيرآيا، جس كى داۋھى توصفا چيە بىقى اورموچچىس لمى لمبى تھيس،

ہاتھ میں چمنا، بدن پر کملی، شکل صورت خلاف شرع، گاتا تھا اور کہتا تھا کہ مولوی صاحب نشرہ و گاتا تھا اور کہتا تھا کہ مولوی صاحب نے ایک طالب علم ہے کہا کہ اس بیسہ دیدو، وہ بولا ایک بیسہ ہے کہا بنا ہے اگر دینا ہے تو پھی آپ دو، فقیر کاعمل اُو ٹا ہوا ہے، نہ بھنگ ملی نہ چرس مولینا نے ایک نظر اٹھا کر اس کی طرف دیکھا اور فر مایا جھ سے پھی لینا ہے جو نہی اس کی نظر سے نظر ملی وہ اُو کھڑا کر گرا اور ایسا گرا کہ بیبوش ہوگیا، طالب علم اُسے سنجا لئے کیلئے آ مے بوسے، مگر وہ ایسا ہے مس پڑا تھا جسے مردہ تین گھنٹے وہ بیبوش پڑار ہا، جب ہوش سمجھالا تو اٹھا، مولینا نے بوچھا کیوں بھائی کیا لینا ہے: وہ بولا جو لینا تھاوہ لے لیاوہ لیا، بس جھے مسلمان بنادیجے''۔ (کرامات الجمدیث ۱۹۰۸)

# اس ك نظر سے نظر لى:

امیر حمزہ صاحب آپ کواب یقین آگیا جس نظر ہے کارڈ کرنے کیلئے آپ نے
ایر حمزہ صاحب آپ کواب یقین آگیا جس نظر ہے کارڈ کرنے کیلئے آپ نے
ایر حمی چوٹی کازور صرف کردیاوہ سب پھی آپ کے اپنے گھرے برآ مدہورہا ہے، آپ
او قوت نظر کے مخالف ہیں، آپ نے تو اس فتم کے عقید ہے کی زبر دست مخالفت کی
ہے بلکہ مخالفت کرتے کرتے آپ کی زبان خشک ہوئی، گلاخراب ہوااورا بی آواز آپ
کوخور بھی سائی دینا بند ہوگی اب تو جناب والا کے اپنے گھر کے بزرگ بھی نظر ڈالے
بلکہ نظر ڈالکر کایا ہی بلی دیے نظر آتے ہیں اگر نہیں یقین آتا تو تازہ فرما ہے ان
جملوں کوتا کے تفہیم میں آسانی ہو:

### ايك نظرد يكها:

" مولینائے ایک نظر افغا کراس کی طرف و یکھا اور فر مایا بھی ہے کچھ لینا ہے جو بی اس کی نظر سے نظر علی وہ لا کھڑا کر کر گیا اور ایسا گرا کہے ہے میں ایس ایس کھٹے ہے ہوش دینے کے بعد جب اٹھا تو مولینا نے "جونبی اس کی نظر ہے نظر طی وہ لڑکھڑا کر گرگیااوراییا گرا کہ ہے ہوش ہوگیا" (کرامات الجدیث ۸۰۹)

# تظر ڈال کر بے ہوش کرویا:

نظری یا کوئی زورآ ور پہلوان جس نے فورا اپند مقابل کوگرا دیا اور فتح ونصرت حاصل کر لی صرف گرایا ہی نہیں بلکہ ایسی چپت ڈائی کہ ہے ہوئی ہی کر کے رکھ دیا اور ہے ہوئی بھی دو چار لیحوں کی نہیں تھی ایسی زبر دست تو ت نظری کھا ہے سامنے والے کو کھیک تین گھنٹوں تک ہوئی نہ آنے دیا آخر خدا خدا کر کے جب وہ ہے چارہ تین گھنٹوں کے بعد ہوئی ہیں آیا تو پھراس نظر کا دوسرا کمال ظاہر ہوا اولاً تو نظر کا کمال نہبر ایک تھا ہی جونظر میں نظر ملی اور سامنے والے کو ہے ہوئی کر دیا وہ بھی تین گھنٹے کہلئے اور جب ہوئی آئی تو فوراً دوسرے کمال کا اظہار ہوگیا ہے ہوئی سے ہوئی میں آنے والا جب مولا نا عبد الرحمٰن کھوی صاحب کے روبر و ہوا تو فوراً پھر نظر میں نظر ملی مولا نا محب الرحمٰن کھوی ہو تھے ہیں کیا لینا ہے؟ ذراا نہی کی زبانی سنیے:

" تمن محنے بے ہوش رہنے کے بعد جب وہ افعالو مولینا نے پر چھا کیوں بھائی کیالین بود پولا جولینا تھاوہ لے لیا جولینا تھاوہ لے لیا" ۔ ( کرایات الجمدیث ۹ ۸ م)

## وسعتِ نظرى:

کیوں جناب اب فر مائے نظر میں اثر ہوتا ہے یا نہیں، اورصاحب نظر ، نظر کے فریعے دوسرے کو کچھ عطا کرسکتا ہے یا نہیں، آپ کے بزرگ نظر ڈالیس تو ایسی عطا ہو کہ بیہوثی ہے ہوش میں آنے کے بعد پکار پکار کرسائل کہتا ہے جو لینا تھا وہ لے لیا جو لینا تھا وہ لے لیا آپ کے ہاں تو عنایات بذریعہ نظر بُتی ہیں اور دوسروں کیلئے تھے یو چھا کیوں بھائی کیالینا ہے وہ بولاجو لینا تھا وہ لے لیا جو لینا تھا وہ لے لیا ہی جھے سلّمان بنا ویجے "۔ ( کراہات الحدیث ۸۰۹)

اگر ہم کہیں فلا ل ہزرگ کی فلاں شخص پر نظر پر ٹی تو ان کی نظرنے اس کے ول کی کایا ہی بلٹ دی تو فوراً آپ چیخ پر تے ہیں نظر میں کوئی کمال نہیں ہوتا ہے سب وحونگ ہیں فلط ہے ہے اصل ہے اس کی کوئی حقیقت نہیں نظر سے پچھنیں ہوتا ہے ہی نہیں۔ مزارات پر حاضری دینے والوں نے بلنے سے گھڑ لیا ہے ور نہ ہوتا پچے بھی نہیں۔

#### اولياء الله:

بہت خوب حضرت علی بن عثان جوری کی نظر میں کوئی کمال نہیں ،حضرت غوث اعظم ﷺ سيرعبدالقا در جيلاني كي نظر مين كوني كمال نہيں ،حضرت خواجه معين الدين چشتي كى نظريين كوئى كمال نهيس، حضرت خواجه قطب الدين بختيار كاكى كى نظريس كوئى كمال نهيس، حضرت خواجه بإبا فريدالدين فنج شكر كي نظر مين كو كي كمال نهيس، حضرت خواجه نظام الدین اولیاء د ہلوی کی نظر میں کوئی کمال نہیں، حضرت شا دنصیرالدین چراغ وہلوی کی نظريس كوكى كمال نبيس، حضرت امام رباني مجدّ والف خاني كي نظريس كوئي كمال نبيس، حضرت امام احمد رضا قادري كي نظر مين كوئي كمال نهيس ، اور حضرت مولانا سيدمحد نعيم الدین مراد آباد کی نظر میں کوئی کمال نہیں ، رحمة اللہ محمد اجتعین لیکن آپ کے مولانا عبد الرحمٰ لکھوی صاحب کی نظر میں بہت کمال ہے اب خدالتی کہے گا کیا ان تمام بزرگان و بن سے مرتبہ میں مولانا عبد الرحمٰن لکھوی صاحب بوے ہیں جو یقیناً ان ندُ ورو منزات اولیاء کرام کی خاک یا بھی نہیں ان کی نظر تو بروی با کمال ہے کیجئے تازہ فر ماسيخ تا كدآب كعلم بن اضافه كاباعث مو:

نظری کیوں؟ جو وسعت ظرنی اور وسعت نظری اپنے گھر کے بزرگوں کیلئے ہے وہ ی
وسعت باقی علاء امت کیلئے بھی ہونی چاہیے ناں۔ دیکھ لیس میں نے آپ کے
بزرگوں کا قطعانداق نہیں اُڑایا گرا تنا تو عرض کرسکتا ہوں نامیہ کیا اوا کیں دکھاتے ہیں
آپ، میں یوں بھی تو کہ سکتا تھا کہ مید کیا حرکتیں کرتے ہیں آپ گر کیا مجال جو یوں
کھوں بلکہ یوں کہنے پراکتفا کیا ہے۔ میں ان بے اثر ممداؤں کے صدیے ، مولانا
غلام رسول صاحب قلعوی کی کرامات کے ذکر میں نہ کور ہے۔

### ميال چو:

میاں مجد چٹو لا ہور میں ایک مشہور سودا گرتھا بیان کرتا ہے کہ ہیں نے بہت سے گوڑے بخر ش فروخت کشمیر دوانہ کئے ، مگر تین مہینے گذر گئے کوئی گھوڑ افروخت شہوا،
میں مولینا کی خدمت میں حاضر ہوا کہ حضرت دعا ہے بین ، بہت نقصان ہور ہا ہے اور
مفت کا روز انہ خرج پڑر ہا ہے ، آپ نے فرمایا میاں! تیرے گھوڑے والے کشمیر نے
خرید لیے ہیں اور تین ہزار روپیمنافع ملا ہے میاں مجد جران ہوا، کہ ابھی انجی تو خط آیا
کہ یہاں کوئی خرید ارفیس اور آپ فرماتے ہیں کہ تین ہزار منافع ملا ہے ، میاں مجد کہتا
ہے ، کہ دوسرے دن خط آگیا کہ سب کے سب گھوڑے فروخت ہو گئے اور تین ہزار
منافع ہوا''۔ (کرمات الجدید نے ہیں)

# كشميرتك نظر كئ:

آپ کے گھر کے ہزرگ تو دور دراز بیٹھ کرکشمیرتک نظر ڈال لیتے ہیں دہاں پر جوسودا بور ہاہے دو بھی ایس کی مہار کے نظر میں ہوتا ہے گئے ول کی تعداد پر نظر ،ان کی قیت پنظر ،او سے کر کل منافع پر بھی نظر تھی تو ہڑے آ رام سے فریاتے ہیں:

"میاں تیرے گھوڑے والی کشمیرنے خرید لیے ہیں اور تین ہزاررو پہیمنافع ملاہے"۔ (کراہات الجحدیث ال

تو یہاں پر کہیں شرک فی العلم لازم نہیں آتا ، اپنی حدے کہیں آگے تو نہیں نکل گئے

آپ کے بزرگ اگر میسب درست ہیں تو پھر آپ کو اولیاء کرام کے کمالات پر کیا
اعتراض ہے کم از کم عدل تو قائم رکھنا چاہیے۔ اگر آپ کے بزگ وادی کشمیرتک نظر
وال لیتے ہیں تو حضرت علی بن عثان ہجویری کی نظر کا کیا عالم ہوگا، حضور غوث اعظم شخ سیر عبدالقادر جیلانی کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت خواجہ معین الدین چشتی کی نظر کا عالم
کیا ہوگا، حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کا کی کنظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت بابا فرید کیج شکر کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت خواجہ نظام الدین اولیاء کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت بابا فرید کیج امام ربانی مجد والف ٹانی کی نظر کا عالم کیا ہوگا، حضرت شاہ بہاؤ الدین زکریا ملائی کی
امام ربانی مجد والف ٹانی کی نظر کا عالم ملائی کی نظر کا عالم کیا ہوگا۔

ا پنے گھر کے ہزرگوں کو ان اولیاء اللہ کے مقابلہ میں رکھ کر ذراغور فرما ہے کہ کیا حیثیت بنتی ہے آپ کے اکابر کی۔ آپ کے بڑے تو بڑے تیز ہیں چند کھوں میں گھوڑوں کا حساب کتاب کر لیتے ہیں اور منافع پر بھی پوری پوری نظر، حساب تو ایسا پکا کہ ایک دورو پیہ کی بھی کی پیشی سامنے ہیں آتی میں بلے سے نہیں کہدر ہا، اگر ذہن مبارک سے اثر گیا ہوتو ایک مرتبہ پھرتاز وفر مالیجے:

''میاں محمد جیران ہوا کہ ابھی ابھی تو خط آیا کہ یہاں کوئی خریدار خیس اور آپ فرماتے ہیں تین ہزار منافع ملا ہے میاں محمد کہتا ہے کہ دوسرے دن خط آگیا کہ سب کے سب گھوڑے فروخت ہو گئے اور تین ہزار منافع ہوا''۔ (کرامات الجدیث)

#### ميال چۇرعنايت:

ایر حمزہ صاحب کیا سارے کمالات آپ کے گھر کے بزرگوں کیلئے ہی ہیں اور دورو دسرے بزرگ تو گویا بزرگ بھی نہیں۔ نہان کو کوئی کمال حاصل سب کمالات، دورو فرز یک کی سب خبر، حساب کتاب پر پوری نظریہ تو آپ کے بزرگوں کوزیباہے۔ جبی تو میاں مجمد صاحب کتاب کرنے کی بھی زحمت نہ دی بلکہ بیفرض بھی خود ہی ادا کر دیا اور نتیجہ میاں مجمد صاحب چئو کے سامنے رکھ دیا داہ بھی واد کمال ہوتو ایسا ہو، حساب ہوتو ایسا ہو، حساب ہوتو ایسی ہو، خبر ہوتو ایسی ہو، علم ہوتو ایسا ہو۔

آپ کے مولا نا غلام رسول صاحب قلعوی کی نظر سے وادی کشمیر پوشیدہ نہیں وہاں کے معاملات سب کے سب ان کی نظر میں ہیں وہاں کیا ہور ہا ہے وہ سب جانے ہیں جی کہ گھوڑوں کی منڈی تک ان کی مبارک نظر میں ہے گھوڑوں کی خرید وفروخت نیز فی گھوڑ امنافع کیا ہے وہ سب معلوم نیز جع کر کے کل منافع کتابناوہ بھی علم میں ہے اور جھٹ کر کے مالک کو بتاتے ہیں اتنا منافع ملا ہے۔ آپ کے بھی علم میں ہوتے ہیں بزرگ روحانی کمالات میں خاصے تاجر (Businessman) معلوم ہوتے ہیں بزرگ روحانی کمالات میں خاصے تاجر (Businessman) معلوم ہوتے ہیں گلائے آپ نے بھی ان سے فیض کا وافر حصہ یایا ہے۔

# ان شاء الله كامل شفاموكى:

امیر حمزہ صاحب اگر آپ آپ نظم کو اعتدال تک رکھے تو میں بھی آپ کی خاں ہ تلاشی لینے نہ لگٹا اور نہ یوں آپ کو میدان میں لا کھڑا کرتا اور نہ ہی یوں آپ کی اندرونی کاروائیاں طشت از ہام کرتا مگر میری مجبوری تھی میں آپ کو آپ کا آئینہ دکھا تا کہ آپ اپنی اصلی صورت خود بھی مشاہدہ فرما کیں تا کہ آپکوا حساس ہوجائے آئیندہ آپ کا قلم

ا تنا ہے لگام نہ دوڑے بلکہ اس کولگام پڑجائے جہاں آپ رو کنا چاہیں رکے اور جہاں آپ چلا نا چاہیں جائے ہیں آپ کو ا آپ چلا نا چاہیں چلے ہی ہی آپ کی ہی بہتری کے لئے ہے آئندہ زندگی ہیں آپ کو بہت فائندہ ہوگا میری اس تحریرے ان شاء اللہ آپ بقیہ زندگی مختاط قلم چلائیں گے۔
اور اپنا زور قلم بزرگوں کے خلاف صرف کرنے کی بجائے اس امت کی اصلاح پر صرف کریں گے نیز پھر دھرا دیتا ہوں اس امت کا مرض جو آپ لوگوں نے تشخیص کیا صرف کریں گے نیز پھر دھرا دیتا ہوں اس امت کا مرض جو آپ لوگوں نے تشخیص کیا ہے وہ غلط ہے اس امت کا مرض شرک ہر گر نہیں ہے امت کا مرض خود پر سی ہے خود ہوشی ہے اور ہوئی مال وزرہے اگر خدا تو فیق دے تو اس کا علاج سے جے ان شاء اللہ کا مال شغا ہوگی۔

کا مل شغا ہوگی۔

امت کومزید کمزور کرنا تو کوئی عقل مندی نہیں ہے دانائی توبیہ کہ اس اُمت کی گرتی ہوئی صورت حال کوسنجالا جائے اس کو تابئی سے بچایا جائے اس کو وحدت کا سبق پڑھایا جائے تا کہ میامت مضبوط ہو وستحکم اُمت بن جائے۔
سبق پڑھایا جائے تا کہ میامت مضبوط ہو وستحکم اُمت بن جائے۔
یوں تو سیر بھی ہو مرزا بھی ہو افغان بھی ہو

تم سجى چھ ہو بتاؤ تو مسلمان بھی ہو

مطالعه فرمايي ول روش موكا:

لیجئے بیں آپ کی خدمت عالیہ میں آپ کے بزرگ جناب تاضی سلیمان منصوری
پوری صاحب کی ایک اور کرامت پیش کرتا ہوں، کھلی آ تھوں سے دن کی روشی میں
مطالعہ فرما ہے دل روشن ہوگا۔مولا ناعبدالمجید خادم سوہدروی شاگر دمولا نامحمد ابراہیم
میرسیالکوٹی کرامات المحدیث میں رقسطراز ہیں:

"مراز محد حسين صاحب سكندرابول كابيان بكر ١٩٩٨ عين قاضى صاحب نے

نہیں کروں گاس لیے کہ آپ میرے نزدیک قابل رقم ہیں آپ کوعرض کروں گام بھی تنہائی میں اپنے بزرگوں کی کتابوں کا مطالعہ بھی فرمائے ہماری صدافت آپ پر بنین ہوجائے گی۔

### القاكاايك جمله برداشت نبين:

ہمارے بزرگوں کو بھی ایک جملہ''القا'' ہوجائے تو آپ آسان سر پراٹھا لیتے ہیں قیامت بر پاکرنے کی کوشش کرتے ہیں کہ دیکھوسم ہوگیا قرآن وحدیث کے ہوتے ہوئے القاکیا ہے، بیسب ڈھونگ ہے پلیے بٹورنے کا ذریعہ ہے نذرانے انکھے کرنے کا بہانہ ہے اور نجانے کیا کیا گئے چلے جاتے ہیں۔ ہمارا''القا'' کا ایک جملہ برواشت نہیں ہوتا اور اپنے گھر ہیں پی داکا پورارسالہ ہی القاہوجا تاہے۔

"دور كى چھوڑوے يك رنگ ہوجا"

اگر ذہن ہے اتر گیا ہوتو میں یا د کروا دیتا ہوں لیجئے کچرمطالعہ فرمائیے تا کہ دل و د ماغ فرحاں وشادل ہو:

> '' قاضی سلیمان منصور پوری صاحب نے مرزا قادیانی کے فلاف ایک رسالہ شائع کیا، توکسی نے آپ سے پوچھا کہ آپ نے بیدرسالہ کیوکر اکھا جوا بافر مایا کہ ایک روز نماز جمعہ کے بعد مجھے القا ہوا کہ مرزا تی کے متعلق ایک کتاب تکھوں چٹا نچے اس کا مضمون مجھی بچھے بتادیا گیا''۔ (کرامات الجحدیث ۴۴)

> > مرامر باطل:

امیر حمز وصاحب آپ کے ایک بزرگ نے مرزاجی کے خلاف رسالہ کھنے کا ارادہ کیا تو فور اُالقا ہو گیا اور نماز جعہ کے بعد وہ سارے کا سارامضمون بھی جناب قاضی سلیمان منصوری پوری صاحب کوعطا ہو گیا وہ بھی بذریعہ القا اگر آپ کوضرورت پڑ جب مرزا قادیانی کی تر دید میں رسالہ غائت المرام شائع کیا تو کسی نے آپ سے
پوچھا کہآپ نے کیونکر لکھا جوابافر مایا کہ ایک روز نماز جمعہ کے بعد ججھے القاہوا، کہ مرزا
جی کے متعلق ایک کتاب لکھوں، چنا نچہاں کا مضمون بھی ججھے بتا دیا گیا، اور یہ بھی کہا
گیا کہ اس کا جواب بھی نہیں دے سکے گا، اس کے بعد آپ نے یہ بھی فر مایا کہ لومیں
اب پھر تحری سے کہتا ہوں کہ مرزا قادیانی جے نہیں کر سکے گا، اور یہی اس کی بطالت کی
دلیل ہے' ۔ (کرامات الجدید سے)

#### گهوژول کی خریدوفروخت:

آ بے کے بزرگول کوالہام ہوتو بجا،القاہوتو درست، وہ دور دراز علاقے کی خبر دیں تو سیج وہ منڈیوں میں گھوڑوں کی خرید و فروخت کے معاملے اور شرح منافع کے بارے میں ارشاد فرما کیں تو بااشر بھینی، میں صرف اتنا بوچھنا جا ہوں گا بیشرک اوراس کے متعلقات کا سارا بوجھ ہمارے سر پر بی ڈ لتا ہے آپ کے بزرگوں براس متم کا کوئی وزن میں آیا یا تا وہ اس وزن سے بے نیاز ہیں وہ جو کریں سب درست اور ہم اگر بھی كهددين همار مے فلان بزرگ كوالقا مواقعا يا البهام مواقعا تو فوراً آپ لھے لے كر مهارے یجھے پڑ جاتے ہیں اور نامعلوم کیا آئیں بائیں ،شائیں سناتے ہیں میرا خیال ہے جب آپ حق صحافت ادا کرنے بیٹھتے ہیں تو اس وقت آپ کو وادی شمار کی سیرشروع موجاتی ہے اور آپ چونکہ وادی خمار میں موتے ہیں اس لئے تمام ترائداز بھی وہی موتا ہے۔ جواس وادی میں جانے والوں کا ہوتا ہے ایسے قابل رحم لوگوں پر کیاتھم چلاؤں اوران کو کیا قلم کی زوجیں لاؤں ای لیے ہیں نے الفاظ وجملوں کا زور کم رکھاہے ورنہ میں ایسی زبان استعال کرتا کہ آپ اور آ کی جماعت حشر تک یاد کرتی مگر میں ہرگز ایسا

جائے تو القابھی درست روحانیت بھی ثابت القاکے ذریعے رو تا دیانت پر دلائل بھی فراہم اوراگراییا کوئی کمال مسلمہ بزرگوں کے حوالے سے بیان کیاجائے تو آپ کو ہر گزیندہ میں کہ فلاں بزرگ نے آئندہ ہونے والے واقعات کی اطلاع دی اور ویسے بی ہوا جیسے انہوں نے فر مایا تو آپ کی مواجعے انہوں نے فر مایا تو آپ کی زبان ہے افتحار ہوجاتی ہے آپ کا قلم جیب سے نکل کر دوڑ پڑتا ہے سفات قرطاس پر زبان ہے افتحار ہوجاتی ہے آپ کا قلم جیب سے نکل کر دوڑ پڑتا ہے سفات قرطاس پر توں ارتقام ہوتا ہے جیسے آپ کے علاوہ باقی سب سراسر باطل ہیں بس آپ بی ایک حق نواز ہیں۔

### ایک بار پرمطالعه فرمای:

آ تنده جو موگاس كى اطلاع كيے يقيى طريق نے دى ہے:

"جو کتاب مرزاتی کے خلاف ککھناتھی اس کا پورامضموں بھی القابوا قاضی صاحب فرماتے ہیں چنانچیاس کا مضموں بھی جھے بتادیا گیا کہ اس کا جواب نہیں دے سکے گااور سیجی کہا گیا کہ اس کا جواب نہیں دے سکے گااور سیجی کہا گیا کہ اس کا بعد آپ نے یہ بھی فرمایا کہ لواب میں پھر تر کی ہے کہتا ہوں کہ مرزا قادیانی جج نہیں کر سکے گا اور یہی اس کی بطالت کی ولیل ہے چنانچہ غایت المرام میں بھی بیداعلان ہوا اوراس کے بعد مرزا قادیانی کئی سال تک زندہ رہا گرنداس رسالہ کا جواب کا صرکانہ جج کو جاسکا"۔ (کرامات المحدیث)

#### پرزوراعلان:

ہر عقل مند بخو بی مجھ سکتا ہے، قاضی صاحب نے اولاً تو نرم سے انداز میں فر مایا بیہ رسالہ جو میں نے لکھا ہے اس کا جواب کوئی نہیں وے سکتا پھر محسوس کیا کہ بیانداز دھیما

ہے ذراز ور دارا نداز میں اعلان ہونا جا ہے تا کماس کی کمن گرج چہار دانگ عالم میں ت کیلے اور خوب شہرت ہو، اتنا پر زور اعلان ، ایسا توی دعویٰ ، اتنی واضح برھان ، اللہ اللہ آپ تواسے ایے بررگ ہیں جوآ ئندہ ہونے والے تمام واقعات کی لیٹنی خرر کھتے ہیں برانہ مانیے گا اگر یہی انداز ہم اللہ تعالی کے جلیل القدر اولیاء کرام مثلا حضور سیدی وا تا سمنج بخش على بن عثمان ،حضرت غوث اعظم شيخ سيدعبد القادر جيلا في ،حضرت خواجه معين الدين چشتى اجميرى، حفرت خواجه قطب الدين بختيار كاكى، حضرت شاه بهاؤالدین زکر یا مای نی، حضرت امام ربانی مجدّ و الف ثانی رحمة الله علیهم اور دیگر بزرگوں کے بارے میں اپنا کیں کہ ان کوآنے والے حالات و وافقعات کاعلم ہوتا تھا تو آپ فورا بدعتی ، گراہ اور نجانے کیا کیا کہنا شروع کردیتے ہیں اب آپ کیوں خاموش ہیں اٹھا کیں قلم پکڑیں کا غذاور لکھیں وہی کلمات جولکھٹا آپ کی سرشت میں ہےوہی انداز جارحانہ اپنائے جوآپ نے ہم گدایان در اولیاء کے خلاف اپنایا تھا اپن مؤلفات "نه جي وسياسي باوے" " آساني جنت اور در باري جنم" اور" شاہراه بہشت"

دعا كيس التجائين:

اب تو آپ شاید جھی قلم نہ پکڑیں کے بلکہ لکھنا بھی بھول جا ئیں گے۔اندر تھس گھس کر دعا ئیں التجا ئیں کریں گے کہ یااللہ جو پکھییں نے لکھاوہ لکھا ہی رہ جائے ''خدا کرے پکھے نہ سمجھا کرے کوئی''

ا) جناب قاضی سلیمان منصور پوری صاحب نے بیاعلان غایت الرام میں فرمایا
 کیمیری اس کتاب کا جواب کوئی نہیں دے سکے گا۔

٢) مرزا قادياني في كونيس جاسك كار

اب آپ بغور مطالعہ فرمائیں مولانا عبد الجیدخادم سوہدروی شاگر دمولانا مجر ابراہیم بیرسیالکوٹی نے کرامات الجحدیث میں مرزامجر حسین صاحب کی زبانی لکھاہے: "اوراس کے بعد مرزا قادیانی کئی سال تک زندہ رہا گرنداس رسالہ کا جواب لکھ سکانہ جج کو جاسکا"۔ (کرامات الجحدیث ۲۳)

فكرونظر كاعلاج:

امیر حمزہ صاحب آپ کے گھر کے بزرگون کی معلومات تو بدی پکی ہیں جیسے کہدویا ویے ہوگیا کیا مجال جواس کے ذرا خلاف ہوجائے ،بس ان کے منہ سے نکلنے کی دیر ہے ہوتا وی ہے جو وہ فرما دیا کریں۔ویے آپ نے غور فرمایا ہے اگر اس طرح کوئی اور بزرگ كهددين تو آپ لال پيلے ، وجاتے بين \_آپ كى تو تھيلھى كھول جاتى ہے اوراس كيفيت يس آپ اپن اصل ماجيت بى كلودية بين آپكواكى حالت يس اس جہان انسانیت کی مخلوق بھی نظر نہیں آتی بلکہ کوئی اور مخلوق محسوس ہونے لگتی ہے یہ حالت آپ پر کیوں طاری ہوتی ہے اس کا تو مجھے پانہیں یہ جناب والاکسی ماہر ڈ اکٹر مصوره كرين توبتا يطيح كالمكريين توصرف اتناع ض كرون كاآب إني فكر ونظر كاعلاج کروا کیں تو ذائی وقلی کیفیت بالکل نارل (Normal) ہو جائے گی وگرنہ ذائی صورت حال مزید بگڑ سکتی ہے چلیں آپ ہمارے کسی بزرگ کے پاس فکر ونظر کا علاج كروانے نہ جاكيں مكر مولانا عبد الرحل لكھوى صاحب كے بال ضرور جاكيں وہاں آپ کی بگزی بن جائے گی اس لئے کہ وہ نظر میں نظر ڈ ال کرسب ٹھیک کر دیتے ہیں انہوں نے تو ایک چری کی نظر میں نظر ڈ ال کر معاملہ درست کر دیا تھا آپ کی حالت تو

اس قدرخطرناک مجی نہیں امید ہے آپ جلدہی صحت یاب ہوجا کیں گے۔

تمام كنامول سيقيد:

اب ہم قاضی سلیمان منصور پوری کی ایک اور کرامت کا ذکر کرتے ہیں تا کردل تن و باطل کے مابین فیصلہ کرنے بیں آسانی محسوس کرے۔ کرامات المحدیث بیں مولانا عبد المجید خادم سوہدروی شاگر دمولانا محمد ابراہیم میرسیا لکوٹی رقم طراز ہیں:

''عنایت حسین پٹیالوی آپ کے بہت اچھے دوست عقے انہوں نے اپنی بٹی کی شادی شخ فضل حق سکند سنام کے بیٹے سے کردی، وہ لڑکا نہایت ٹراب نکلا، شراب پیتا، جوا کھیلتا، بدکاروں کے ساتھ رہتا اور گھر والوں کو سخت تنگ کرتا، غرضیکہ پر لے در ہے کا بے دین نکلا، عنایت حسین کو خت صدمہ پہنچا'' نہ جائے ماندن نہ پائے رفتن'' قاضی صاحب سے التجا کی تو آپ نے فرمایا اُسے میرے پاس لے آؤوہ آیا تو آپ نے اس پر توجہ کی بیہوش ہوگیا، جب ہوش آیا تو استغفار پڑھنے لگا اور تمام گنا ہوں سے توبہ کرلی، بس ایک ہی صحبت میں اس کی حالت بدل گئی اور وہ نہایت نیک، صالح ویندار بن گیا''۔ (کرامات الجدیدے ۱۵۱۵)

اس پرتوجه كي توبهوش موكيا:

امیر حمزہ صاحب فور سے مطالعہ فرمالیا کرامات المحدیث کی اس عبارت کا کوئی
دیتی عبارت نہیں ہے باآ سانی سمجھ آ جاتی ہے۔عنایت حسین پٹیالوی صاحب نے
اپنی بٹی کی شادی جس لڑ کے سے کی وہ بڑا ہے عمل لکلا اس وجہ سے عنایت حسین
صاحب بڑے پریشان ہوئے آ خراس پریشانی کاحل تکالنے کیلئے وہ قاضی سلیمان
منصوری پوری کی خدمت میں حاضر ہوئے آورالتجا کی اس پرقاضی صاحب نے فرمایا:

اے ير عال كآؤ

"وہ آیا تو آپ نے اس پر توجہ کی بیوش ہوگیا، جب ہوش آیا تو استغفار پر منے لگاور تمام گنا ہوں سے تو ہر کی ایس ایک علامت ش اس کی حالت بدل کی اور وونہایت فیک، صالح و بدار بن گیا"۔ (کرامات الجمدیث کا، ۱۵)

آپ تھوڑی می توجہ فر مائیس تو میں عرض کروں گا، ایک بگڑا ہوالڑ کا جوشراب پیتا ہے، ایکھیلتا ہے، بدکاروں کے ساتھ رہتا ہے جس کی شکایت جناب مولانا قاضی سلیمان منصور پوری صاحب سے کی گئی تو دو فر ماتے ہیں اس کومیرے پاس لے آئر جب اس لڑکے کو قاضی صاحب کی صحبت ہیں لایا گیا تو کیا ہوا صرف۔

توجه کی ا

ذرااس توجد كى بركات ملاحظة فرما كير\_

- ملاقبى عودلاكا بيوش بوكيا-

٢- جب بوش آيا تواستغفار يز هي لكار

٣- تمام كنامول عقوبركى-

ایک بی صحبت میں حالت برل گئی۔

۵- وهنهایت نیک بوگیا۔

۲- وه صالح اور دیندارین کیا۔

توجهی یا بے ہوشی کا ٹیکہ (Injection)

امیر حمزہ صاحب میں نے جو پکھ تھا کیا ہے وہ کن وکن نہایت دیا نتراری سے نقل کیا ہے وہ کن نہایت دیا نتراری سے نقل کیا ہے آپ کی کتابوں سے جو جو حوالے میں نے پیش کیے ہیں وہ حرف بدحرف ہیں

یس نے اپنی طرف سے ان میں کہیں کوئی اضافہ نہیں کیا ہے سب آپے اپنے گھر کے بررگوں کے واقعات ہیں ہے ہیں یا جھوٹے ۔ بیرتو آپ کے بررگ ہی آپکو ہتا سکتے ہیں ۔ گر میں نے ابھی آپکی نظر سے گزار سے ہیں ۔ قاضی سلیمان صاحب منصور پوری نے عنایت حسین پٹیالوی کے داماد پرایک نظر ڈالی ، توجہ کی تو وہ وہیں ہے ہوش ہو گیا وہ توجہ کی تو وہ وہیں ہے ہوش ہو گیا وہ توجہ کی توجہ کی تو وہ وہیں ہے ہوش ہو گیا وہ توجہ کی اور اب تو ایسا کو ، بین تو اتنا ہی عرض کر سکتا ہوں دوسروں کی نظر کا غمال اڑاتے ہیں آپ ، برا سے جیدا و لیا، عظر کے گا کہ بھی بین کے لاکھ بی ندر ہے گا۔

میرا و لیا، عظام تک کا تذکرہ کر سے ہوئے آپ کا قلم تھر کر ان کیوں نہیں اور اب تو ایسا تھر کے گا کہ بھی بینے کے لاکھ بی ندر ہے گا۔

توجدا گرآپ کے برورگ کریں تو وہ بغیر کسی تا خیر کے اثر کرتی ہے اپنا پورارنگ دیکھاتی ہے۔ توجد کے کمال کاعالم بیہ ہوتا ہے کہ پڑتے ہی تو جواں کو بے ہوش کر کے رکھودیتی ہے۔ اٹھنے تک دل کی کا یا ہی پلٹ ویتی ہے اگر توجدا ژنہیں دکھاتی تو ،حضرت بلسے شاہ کی ،اگر توجدا ژنہیں رکھتی تو خصرت خواجہ فحم معصوم نقشہندی کی اگر توجدا ژنہیں دکھاتی تو حضرت شاہ بہاؤالدین زکر یا ملکائی کی اور دوسرے بڑے بڑے اولیاء کرام کی گرآپ کے گھرے بزرگ تو توجہ کا یا ور ہاؤی (Power House) ہیں۔

لازنا کگ (Loose Talking):

امیر حمزہ صاحب! آپ دوسروں کوطئز کرتے ہیں۔ بوے بوے بزرگوں کا لحاظ خبیں کرتے زبان کونہایت بے لگام رکھتے ہیں قلم کو بوی بےاحتیاطی سے چلاتے ہیں آخرت کی جواہدی آپ کو یا ڈبیس۔

اگر ہم بیان کریں کہ حضرت میاں شیر محد شرقیوری رحمتہ اللہ علیہ نے توجہ ڈال کر نظر ڈال کر فلاں نو جوان کی حالت بدل دی ، دل کی کا یا پلیٹ دی تو آپ کا تلم بے سو ہے پاس آیا تو نیک وصالح بن گیااس پر آ پکوتر دو بونے لگنا ہے آ پکواس پر یقین نہیں آتا بلکہ النا آپ نداق اٹرانے لگ جاتے ہیں۔ ہم کہیں کہ ایک انتہائی خراب نو جوان حضرت خواجہ نظام الدین اولیا وہاوی کی مجلس میں آیا تھا اور آ پکی توجہ سے بالکل ٹیک صالح بن گیا تھا۔ تو آپ ایسی واگون ہا تکئے لگ جاتے ہیں کہ پڑھ پڑھ کر ہنی آنے لگتی ہے۔

لیکن اگر ایک بگڑا ہوالڑکا ، آپ کے بزرگ محترم جناب قاضی سلیمان صاحب مصور پوری کی خدمت اقدس میں انکی بارگاہ عالی مرتبت میں لایا جائے تو۔

اؤلاً(۱) ایک بی توجہ میں ہے ہوش۔ ٹانیاً (۲) ہوش آنے پراستغفار کا ور دکرنے گئے۔ ٹاناً (۳) تمام گنا ہوں سے تو ہدکرے۔ رابعاً (۴) ایک بی صحبت میں حالت بدل جائے۔ خاساً (۵) ایک بی حاضری میں نہایت نیک ہوجائے۔

ساوساً (١) ایک بارک توجداورنظرے صافح اورو بیدارین جائے۔

#### مندوقجت:

آپ گھر کے بزرگوں کے لئے بیسب کمالات ٹابت،سند، جمت گرجلیل القدر اولیااللہ عشلاً ،حضرت دا تا گئج بخش علی بن عثان جوری ،حضرت غوث اعظم شخ ،سید عبدالقادر جیلانی ،حضرت خواجہ معین چشتی اجمیری،حضرت امام ربانی مجد دالف ٹانی رحمتہ اللہ علیہ ان حضرات کیلئے ایسے ہی کمالات کا اقرار واعتر اف بدعت ، گراہی اور شرک تک جا پہنچتا ہے آخر وہ کونسا کلیہ قاعدہ ہے۔جوآ کیے بزرگوں کوان اعمال کے کر 

# مدت كا بكرايل من فيك!

قاضی سلیمان صاحب منصور پوری نے جب عنایت حسین پیالوی کے داماد پر نظر کی تو وہ فوراً بے ہوش ہوگیا اور جو نہی ہوش میں آیا استغفار پڑھنے لگا مدتوں کا مجڑا ہوا، مدتوں کا خراب لڑکا، خراب بھی ہلکا پھلکا نہیں بلکہ انتہائی مجڑا ہوا مولانا عبد المجید سوہدروی کی زبانی سنئے۔

وہ لڑکا نہایت فراب نکلا، شراب پیا جوا کھیلا، بدکاروں کے ساتھ رہتا (کرابات الجدیث کا)

# خواجد نظام الدين اولياء رحمته الله عليه:

آپ غور فرمائیں جوالا کا اس قدر بگر اہوا ہواس کی حالت بدلنے میں پھے تو وقت لگتا ہے ناءا گرہم کہیں کہ فلال بگر اہوالو کا حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کا کی کے

بیان ہے کہ بچ بچ تھوڑے ہی دنوں میں بھیلس دودھ دیے لگی اور قریباً کمیارہ دفعداس کے بعد سوئی (بچردیا) اور مدت در از تک دودھ دیتی رہی۔ (کرامات المحدیث ۱۷)

# يوزهي تجمينس!

امیر حمز و صاحب بنظر خور و غائر مطالعہ فرما کیں اگر پڑھنے ہیں دفت محسوں ہوتی ہے تو اچھی کی نظر کی عینک لگالیں تا کہ پڑھتے پڑھتے ہی تفقیم ہوتی جائے۔ فضل الدین بیان کرتا ہے میر کی بھینس بہت بوڑھی ہو پھی تھی ایک مدّ ہے ہاں نے دودھ دیتا بیان کرتا ہے میر کی بھینس بہت بوڑھی ہو پھی تھی ایک مدّ ہے ہاں نے دودھ دیتا بینر کر دیا ہوا تھا دودھ تھی گھر والوں کومیسر نہ تھا اس وجہ سے کافی پریشانی ہورہی تھی اور پیلے بھی نہ تھے کہ ہم کوئی گائے بھینس خرید لیں۔ وہ جو بوڑھی بھینس تھی اس کی طرف ہے ہم بالکل مالیس تھے اس لئے کہ اب وہ گا بھی نہ ہوسکتی تھی پھر کیا ہوا اس کے بعد والی ساری بات جناب فضل الدین صاحب کی اپنی زبان سے سفتے بہت لطف آ کے گائے بینر آپ کے گھر کے بزرگ کا کمال بڑا واضح طور سے آپ کو بھھ ہیں آ جائے گا لیجئے ایک بار پھر تاز وفر ما کیں۔

میرے پاس کوئی گائے بھینس نہ تھی کہ گھر والوں کو دودھ تھی ٹل سکتا، پاس کوئی رقم بھی نہ تھی کہ گائے بھینس خریدی جاسکتی، ایک پوڑھی ہی بھینس تھی جس ہے ہم مایوس ہو چکے تھے کہ وہ اب گا بھی نہیں ہوسکتی کیونکہ بہت پوڑھی اور کمزور ہو چکی تھی۔ میں نے مولانا سے عرض کیا دعا کریں خدا کوئی دودھ تھی کا انتظام کردے مولانا صاحب کی دعاہے بھینس گا بھن ہوگئی!

# كيفيات للى:

بیتو وہ سارا منظر ہے جوفضل الدین نے بیان کیا ہے اور ان کیفیات قبلی کا اظہار

جانے پر بھی جن کو دوسروں کے حق میں بدعت، گمرای اور شرک قرار دیتے ہیں آپ پر
کوئی اثر بدنیں پڑتا غور فرما ہے گا ضرور جواب ملتا چاہے اور اگر جواب نیس آتا آئے
گا بھی نیس پپ کر کے شلیم کر لیجئے کہ میں (امیر تمزو) نے جو پچھا پٹی کتابوں'' نہ ہی و
سیاسی باوے''' آسانی جنت اور در باری جہنم'' شاہراہ بہشت میں لکھا ہے وہ سب ہو
سیاسی باوے ناطا ہے۔

و صاحب كرامات المحديث ومؤلانا عبد الجيد خادم مومددوى شاكر مولانا محرابراتيم میر نیالکوئی ، کرامات مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کے عنوان کے ماتحت رقم طراز میں۔ مؤلانا صاحب ۱۲۲۸ء میں کوف بھوائیدائی میں پیدا ہوئے ابتدائی تعلیم اپنے والدبرز رگوارمولاً نارچم بخش سے حاصل کی ،حدیث میاں نزیر حسین محدث و بلوی سے پڑھی۔روحانی فیفل سیدمیر صاحب سے حاصل کیا جومولینا سیداحمد صاحب بریلوی كريد تنصمولا ناعبدالله غرنوى صاحب يحى آپ كا كر العلق تفاائبي مولا ناغلام رسول قلعوی صاحب کی کرامت بیان کرتے ہوئے کرامات المحدیث میں لکھائے۔ ای فضل الدین زمیندارسکنه مان کابیان ہے کہ میرے پاس کوئی گائے بھینس نہتی كه گھر والوں كودود دھے كى ل سكتا، ياس رقم بھى نہتى كە گائے بھينس خريدى جاسكتى، ايك بورهی بیشن تھی جس سے ہم مایوں ہو چکے تھے کدو واب گا بھی نہیں ہوسکتی کیونکہ بہت بوڑھی اور کمزور ہو چک تھی میں نے مولاینا سے عرض کیا کہ، دعا کریں خدا کوئی دود سے کی کا انظام کردے آپ نے فرمایا کہ تمہاری وبی بھینس گا بھن ہو چکی ہے اور

عفقریب بچددینے والی ہے وہ مدت تک دودھ دیتی رہے گئم فکر ند کرو، فضل الدین کا

کرنے کے بعد فضل الدین نے بری ہی اکساری سے مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کی خدمت اقدس میں عرض کی۔ آپ دعا کریں اللہ تعالی دودھ تھی کا کوئی انتظام کر دے۔ اس بعد والی گفتگو کو ذراغور سے سننے اور اس پر علیاء المحدیث کوائی قبولیت دعا اور اپنے معتقد کو یقین کے ساتھ تملی دینے پر مبارک باد پیش فرمایئے۔ نیز بیمنظر بھی انکود کھا ہے۔

امیر حمزہ صاحب آپ کے گھر کے ہزرگ تو ہڑے ہی صاحب کمال واقع ہوئے جی ان کوتو آئندہ آنے والے حالات و واقعات کا تطعی یقینی علم ہوتا ہے۔ ان کو یہ بھی پیتہ ہوتا ہے کہ بوڑھی بھینس جس سے مالک مایوں ہو چکا ہے وہ بھی بچہد دے دے گ آ ہے اب آپ بھی ملاحظہ فرما کیں بیش خدمت ہے کرامات المحدیث ۔
آئے اب آپ بھی ملاحظہ فرما کیں بیش خدمت ہے کرامات المحدیث ۔
جب فضل الدین نے عرض کیا مولانا فلام رسول قلعوی صاحب کی بارگاہ میں تو مولانا جب نفضل الدین نے عرض کیا مولانا ہوں۔

#### بعينس كالمحن:

تمہاری وہی بھینس گا بھن ہو چکی ہے اور عنقریب بچددیے والی ہے وہ مدت تک دودھ دیتی رہے گی تم فکر نہ کروفضل الدین کا بیان ہے کہ تھوڑے ہی دنوں میں وہ بھینس دودھ دیئے گلی اور قریباً گیارہ دفعہ اس کے بعدسوئی (بچہ دیا) اور مدت وراز تک دودھ دیتی رہی۔ (کراہات المحدیث ہے)

آ کے بزرگ نے ایک بھینس کو دیکھا تو فورا فرما دیا تہاری بھینس گا بھن ہو چکی ہاور عنقریب بچہ دینے والی ہے وہ مدت تک دود دوری رہے گی ہم فکر نہ کرو فرمائے میہ آخر کونمی علم کی صنب مبارک آپ کے تو بزرگ ایسے صاحب کمال ہیں

جینس تک کے گا بھن ہونے سے پوری طرح آگاہ ہیں انکی نظر تو ہوی دور تک اثر کرتی ہے۔

### زبان وادب ك نقاض فراموش!

مولانا صاحب کا بہ کہنا تھا کہ تہماری اپنی بھینس گا بھن ہو پھی ہے بس بہ کہنا تھا
جینس گا بھن بھی ہوگئی تھوڑے دنوں میں بچہ بھی دے دیا، دودھ بھی دینے گئی، پھر
مزید کمال یہ کہ وہ بھینس جو پہلے کمزورتھی لاغرتھی، س یاس کو پھنے بھی تھی اب مولانا
غلام رسول صاحب قلعوی کی اتوجہ ہوئی تو الی جوانی بھینس پر آئی کہ ایک دومرتبہ کیا
قریباً گیارہ مرتبہ سوئی (بچہ دیا) واہ کمال ہوتو ایسا ہو۔ کمزور ولاغر بھینس صحت مند چند
ونوں بیس گا بھن ہوکر بچہ بھی دے اور پھرالی راس پڑے کہ بچے یہ بچہدی جائے اور

جارے جلیل القدر اولیاء کی دعاء سے اگرایک انسان کے ہاں بچہ ہوجائے تو آپ بڑے زور وشور سے تر دید پر کمر بستہ ہوجاتے ہیں، زبان و بیان تک اپنے مقام و مرتبے سے گرجاتا ہے۔ بوقت تر دید آپ زبان وادب کے تمام نقاضوں کو بالکل فراموش کردیتے ہیں۔

### زمین وآسان کے قلابے ملاویتا

امیر حمزہ صاحب آپ نے بزرگول کے مزارات، ایکے روحانی کرامات، انکی عنایات اور ایکی عنایات اور ایکی کرامات کے برگول کے مزارات، ایکی عنایات اور ایکی کراوت تقید فرمائی ہے۔ وہ انداز دیکھ کرتو بی انداز چاہتا تھا میں بھی آ کی بزرگول اور انکی کرامات پر بات کرتے ہوئے ویسا ہی انداز اختیار کرول مرکم میری طبیعت اس طرف کو جرگز مائل نہ ہوئی۔ ورنداگر میں آپ کی

طرز پراتر آتا توز بین و آسان کے قلابے ملا کے رکھ دیتا۔ فرش کوچھت اور جھت کوفرش کردکھا تا، نشیب کوفراز بنا دیتا۔ تحت کوفوق اور فوق کو تحت کر دکھا تا، مشرق کومغرب اور مغرب کومٹر ق بنا دیتا، شال کو جنوب اور جنوب کوشال بنا دکھا تا، جھے نہیں معلوم آپ نے ''نذہبی وسیاس باوے'''' آسانی جنت اور در باری جہنم''''شاہراہ بہشت'' جیسی کتابیں لکھ کر کوئی خدمت سرانجام دی ہے۔ اتنا البعة ضرور ہوا ہے۔ کہ اس سے اُمت بیں مزید بے چینی بھیلی ہے۔

منج کوخدا ناخن نہ دے دے گاعقل کے بخے ادعیر ب

#### لودشيدنك:

یں کھے بیٹا ہوں تو بار بار لائٹ آف ہوجاتی ہے آجکل لوڈشیڈنگ نے انتہائی تک کیا ہوا ہے۔ مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کی ایک اور کرامت ملاحظ فرما کیں دل باغ باغ ہوگا۔ یہ بھی صراحتہ واضح ہوجائے گاجب آپ لوگوں کوکوئی مسئلہ بے تو آپ دوڑے دوڑے اپنے بزرگوں کے پاس جاتے ہیں اس دفت آپکوا ہے وہ فتو ہے ہر گزیاد نہیں دہتے جو دوسروں کے خلاف صادر کیے ہوتے ہیں مولانا عبدالجید خادم سوہدردی شاگرمولانا محمد ابراہیم میرسیالکوئی رقطراز ہیں۔

فضل الدین نمبردارسکند مان ضلع گوجرانوالدکابیان ہے کہ پس نے ایک سا ہوکار سے بارہ سوروپیة قرض لیا تھا اور وہ مجھے بہت تنگ کررہاتھا چنانچہ ایک بارتواس نے مجھے نوٹس دے دیا اور قریب تھا کہ دعوی کر کے مجھے ذلیل کرتا میں مولایا کی خدمت میں حاضر ہوا اپنی غربت اور نا داری کا ذکر کیا، اور دعا کی فرمائش کی آپ نے فرمایا گھراؤٹہیں جاؤ، چارا دی ساتھ لے کراس سے حماب کرو، صرف باکیس روپیٹالیں

گے، وہ ادا کر دینا فضل الدین جران ہوا کہ بیں نے ابھی تک اسے دیالیا تو کچھ ہے نہیں! بھلا با کیس روپیہ کے وگر تکلیں گے، آپ نے فرمایا جاؤ تو با کیس روپیہ سے زیادہ خیس گلیں گے وہ چیں دوستوں کوساتھ لے کر گیا اور ساہو کارسے کہا کہ بھی کھا تہ لاؤ، اور میرا حساب صاف کرلو، ساہو کارنے بھی نکالی تو دیکھا کہ اس کے حساب میں کہیں تکھا ہے فلاں تاریخ کو اتنی گئرم لی، اتنا تم باکو وصول ہوا، اتنی کیاس آئی اعلیٰ بندا التیاس سارا حساب جولگایا، تو بقایا صرف ۲۲ روپیہ نظے ساہو کاربھی جیران تھا کہ یہ کیا ماجرا ہے، اور فضل الدین بھی جیران تھا گر بھی کھانتہ کے مطابق با کیس روپیہ دے کر حساب صاف کر دیا گیا۔ (کرمات الجدیث بیل)

#### مصائب میں کدھرکارخ کرنا جاہے!

غور فرمایا بخضل الدین نے قرض دینا تھا ساہوکار کا اور اسکی کل رقم تھی۔
(1200) بارہ سورو ہے آج سے تقریباً سوسال قبل سے بہت بڑی رقم تھی وہ ساہوکار
ان ضا حب کو بہت تھک کر دہاتھا قریب تھا کہوہ وعویٰ کر کے ذلیل بھی کرڈا لے۔
میں صرف اتنا عرض کرنا چاہوں گا۔ جب کمی بندے پر مصیبت پڑے، آفت
آ کے اور مصائب و آلام اس کو گھیرلیں تو ان حالات میں بندے کو کہاں کا رخ کرنا
چاہیے کدھر رجوع کرنا چاہیے کی طرف مائل ہونا چاہیے۔

#### وْرلاحى موا:

امیر حمز ہ صاب آپی تحریروں کی روثنی میں عرض کروں گااس وقت صرف اور صرف اللہ تعالیٰ کی طرف رخ کرتا جا ہے۔ اللہ تعالیٰ سے رجوع کرتا جا ہے اور اللہ تعالیٰ ہی کی طرف مائل ہوتا جا ہے۔ گرآپ کے جہیتے تو سیدھے اپنے بزرگ مولانا غلام

كاوراداكرويا"

آئندہ معاملات کی نہج پر جائیں گے آنے والے اوقات میں کیا ہوگا، حساب کتاب کا نتیجہ کیار ہے گا سب قبل از وقت ہی بتا دیا اور بتایا بھی اس یقین کے ساتھ وہے بہی کھاند خودلکھ آئے ہوں یا اس کو تبدیل کر آئے ہوں۔ آئے اگلے معاملات کا جائزہ لینے کیلئے ایک مرتبہ پھر آ پکو کرامات المحدیث کی عمارت سناؤں لیجئے ملاحظہ فرمائے۔

كذم كى كياس آئى:

فضل الدین جران ہوا کہ میں نے ابھی تک اے دیالیا تو پھے ہے نہیں بھلابا کیس روپے کے وہ نہیں بھلابا کیس روپے کے وہ نہیں تکلیں گے وہ چند دوستوں کو ساتھ لیکر گیا اور ساہو کا رہے کہا کہ بھی کھا تہ لا وُ اور میرا حساب صاف کر لوسا ہو کا رنے بھی نکالی تو دیکھا کہ اس کے حساب میں کہیں لکھا ہے فلال تاریخ کو اتنی گئرم لی ، اتنا تمبا کو وصول ہوا اتنی کہاس آئی علی بندا القیاس سارا حساب جو لگایا تو بقایا صرف ۲۲ روپیہ نظے ساہو کا ربھی جیران تھا کہ کیا ما جراہے اور فضل دین بھی جیران تھا کہ کیا ما جراہے اور فضل دین بھی جیران تھا کہ کیا ما جراہے اور فضل دین بھی جیران میں مگر بھی کھا تہ کے مطابق با کیس ۲۲ روپیہ وے کر حساب صاف کر دیا گیا۔ (کرامات

جومنه عے لكل كياسوموكيا!

امیر تمزه صاحب! غور فرمایا، آیکے گھر کے بزرگ کیے کیے کمال رکھتے ہیں۔ بہی کھاتے تک تبدیل کر کے رکھ دیتے ہیں وہ وہ چیزیں اس میں اندراج کرتے ہیں جو قابل درج ہی نہوں فضل دین نے بھی گندم نہ دی گر بھی میں لکھا تھا فلاں تاریخ کو رسول صاحب کی ہارگاہ میں جا پہنچ۔ جب بیڈرلاحق ہوا کہ وہ دعویٰ کر کے کہیں ذکیل نہ کرے تو فوراً دوڑے دوڑے اپنے بزرگ محترم کی طرف رجوع کیا لیجئے ان کے الفاظ میں سننئے۔

يل مولاناكى خدمت يس حاضر موا (كرامات المحديث ياء)

آپ پرمصیبت پڑے تو جہٹ اپنے ہزرگوں کے پاس ہم بھی اپنے ہزرگوں اللہ تعالیٰ کے اولیاء کی ہارگا ہوں میں حاضر ہوجا کی تو آ کی زبان قابو سے ہا ہر ہوجاتی ہے۔ نظم وآ گہی کا خیال نہ خدمت وین کا لحاظ نہ دعوت اسلامی کی پرواہ انکی سب خدمات جلیلہ یکدم فراموش قلم تمام حدودا دب سے آزاداورا پنی ہی را گئی سنائے جانے کی دھن یہ خیال بھی والمن گیر کہ میں نے خدمت دین کاحق اوا کر دیا ہے۔ لیجئے ایک مرتبہتاز وفرما سے اپنے مؤحدین کاعمل اورا پنے ہزرگوں کی عنایات نے قل کا حال۔ میں مولانا کی خدمت میں حاضر ہوا، اپنی غربت اور نا داری کا ذکر کیا اور دعا کی فرمائش کی آپ نے فرمایا گھراؤنہیں جاؤچارآ دمی ساتھ لیکراس سے حساب کروصرف ہائیس کی آپ نے فرمایا گھراؤنہیں جاؤچارآ دمی ساتھ لیکراس سے حساب کروصرف ہائیس کی آپ نے فرمایا گھراؤنہیں جاؤچارآ دمی ساتھ لیکراس سے حساب کروصرف ہائیس کی آپ نے فرمایا گھراؤنہیں جاؤچارآ دمی ساتھ لیکراس سے حساب کروصرف ہائیس کے وہ ادا کر دینا (کرامات الجدیث میں)

بى كھانة بى تبديل:

اس عہارت سے بیرتو واضح طور پر ثابت ہوا جو پھے سا ہو کار کے کھاتے ہیں درج تھا وہ سب مولانا کو حرف بہ حرف یا دخایا کھاتے کو بدل کراس طرح کر دیا جس طرح خود ارشاد فرمایا دونوں صور تیں فرق عادت ہی کہلا کیں گا گرآپ تو ان تمام چیزوں کا غما آ اڑاتے ہیں اسباب اسباب کی رہ لگاتے ہیں کس قدر یقین کے ساتھ آپ کے بزرگ نے کہا کہ چار آ دمی ساتھ لے کر جاؤاور حساب کرو' صرف ہا کیس روپے لکا پی باكيس رويے سے ايك دمڑى بھى او پرند موكى:

فضل دین بے جارہ انتہائی بریشانی کے عالم میں اپنے بزرگ محترم کی خدمت میں حاضر ہوا تھا۔ قرضہ چونکہ بہت زیادہ تھااوراسکا اتر نابظا ہرمکن نظر نہیں آتا تخااس لئے مولانا غلام رسول قلعوی صاحب کی خدمت عالیہ میں حاضری دی تا کہ مشکل آسان ہو جائے اور پھر واقعی مشکل عل ہوگئی ایس عل ہوئی کہ بھی کھاتے بھی تبدیل کرنے پڑے تو کر دیئے مگر کیا مجال جوقرض بائیس رویے سے ایک ومڑی بھی اویر گیا ہو۔ تھا بھی پورا بارہ سو۔ جوایک خطیر رقم تھی اس زمانے میں مگر جب حضرت صاحب نے کہدویا کہ باکیس روپی کلیں گے تو بارہ سوے ۲۲رو بے ہو گئے بیریسے ہوا بیتو صرف امیر حمز و صاحب ہی بتا سکیس گے۔ میں تو صرف ناقل ہوں ناقل اور میدد کھانا عا ہتا ہوں جوجرم ہمارے سرتھوپ کرہم پرگر جنے برسنے کا آغاز کیا تھاوہ ان کے اپنے . گھر تک جا پہنچا اگر صداقت نام کی کوئی شے ان کے ہاں ہوئی تو ضرور آئندہ تادم مرگ اپ مؤقف ہے رجوع کرلیں کے یا مجراپ تھر کے بزرگوں پر بھی شرک کا تھلم کھلافتوی صادر کر بحق جوائم دی اداکریں گے دیکھتے ہوتا ہے کیا۔

بدامت وحدت كالزى مين بروكى جائے۔

مجھے معلوم ہے اب دم خم کہاں رہے گا جواب کا ،اس لئے کہ ہم نے کوئی ہات لیے ہے نہیں کی بلکہ امیر حمزہ صاحب کے گھرے لے لے کرانہی کی خدمت میں پیش کیا ہے اگر حق اور صدافت نام ہے بھی وہ واقف ہوں گے تو ضرور اعلانا اپنی مؤلفات کے مندر جات ہے رجوع کریں گے اور کہیں گے بین نے اپنے گھر کے بزرگوں کا مطالعہ نہیں کیا تھا۔اس لئے جھے سے بیا فلطی سرزد ہوگئی ورنہ میں اس طرح تلم ہر گر نہ چلاتا بہر اتی گندم آئی بفضل دین نے بھی تمبا کوند دیا گربہی میں تکھا تھا فلاں تاریخ کوا تنا تمبا کو وصول ہوا ای طرح فضل دین نے بھی کہاں نددی گربہی کھاتے میں درج تھا فلاں تاریخ کواتی کہاں نددی گربہی کھاتے میں درج تھا فلاں تاریخ کواتی کہاں وصول ہوئی۔ آخر بیآ پ کے بزرگ جوہوئے وہ تو جو کریں سب فضیح جو کہیں سب درست ان کی تو کوئی ادا قابل نفرت ہوہی نہیں سکتی۔ تابل تر دید ہوئی ٹیس سکتی بس جومنہ سے فکل گیا سوہو گیا اور دوسری طرف صفور غوث اعظم شخ سید عبدالقا در جیلا آئے کی کھی تاریخ میں کہا سے حصرت داتا گئے بخش علی بن عثمان جوری کی کھی بھی عبدالقا در جیلا آئے کی کھی تاریخ میں کہا ہے جوسب کھی باذن اللیڈ کرنے پر قادرا فی تر دیداورا پ نہیں دے سکتے ۔ آخر میدکیا ہے جوسب کھی باذن اللیڈ کرنے پر قادرا فی تر دیداورا پ بررگول کی وہ تا تئید کہ ذین و آسان کے قلا ہے ملاد ہے۔

و يكفئ موتاب كيا!

ساہ وکار نے بہی کھا تہ کیا کھولا اس پر تو قیامت ٹوٹ پڑی، جہاں نظر پڑے بکھ نہ پھھ آیا ہوا نظر آئے کہیں گندم آئی، کہیں، کپاس آئی اور کہیں تمباکو آیا۔ حالانکہ دیا لیا پھھ آیا ہوا نظر آئے کہیں گندم آئی، کہیں، کپاس آئی اور کہیں تمباکو آیا۔ حالانکہ دیا لیا کہ خود یا لیا ہی نہ ہوا سکو بہی کھاتے ہیں درج کرنا کیسا عمل ہے؟ اپنے گھر کے ہزرگوں کے کمالات بیان کرنے کیلئے کھاتوں کے کھاتے تبدیل کردیئے جاتے ہیں۔ آخر کار جو نتیجہ لکلا وہ وہی بائیس ۲۲ روپیدی تھا اگر کھاتے تبدیل کردیئے جاتے ہیں۔ آخر کار جو نتیجہ لکلا وہ وہی بائیس ۲۲ روپیدی تھا اگر فراد دیتا ہوں

ليج مطالعة فرمائي-

علی ہذاالقیاس ساراحساب جولگایا تو بقایا صرف۳۲ روپید نظیر ساہوکا رہمی جیران تھا کہ بید کیا ما جراہے اور فضل دین جیران تھا مگر بھی کھانتہ کے مطابق ہا کیس روپیددے کر حساب صاف کر دیا گیا (کرامات الجمدیث بھا) آج ہمارے پیرومرشدمولوی عبدالجبارصاحب فرنوی بہشت میں جا پہنچاس کے کہ میں نے رات انکوبہشت میں دیکھا ہے اور بیشعر بھی سناہے۔

اوبیلی اللہ بیلی ساؤھے ہوئے چلانے

مولوی صاحب نے تو سیار شاوفر ماویا اور ساتھ ہی پنچابی کا ایک بہترین شعر بھی سنا دیا عیں مکن ہے کہ بیا کی خواب ہی ہوا ور حقیقت سے اس کا کوئی تعلق شہو مگر ایسانہیں مولوی صاحب نے جیے فرمایا ویسائی ہوالوگ بے چارے جیران سے کد آخر معالمہ کیا ہے۔ مولوی صاحب آج جی جی ہی کیا فرمار ہے ہیں۔ لیکن بعد میں موصول ہونے والی اطلاعات نے ثابت کر دیا جیے مولوی صاحب نے ارشا وفرمایا و سے ہی ہواا کیک بار پھر مولا تا سوم دوری کی زبانی سنے۔

چنا نچے بعد میں جواطلاعات آ کیں ان سے معلوم ہوا کہ ٹھیک اسی وقت اوراک دن امام صاحب کا انقال ہوا تھا، جس دن مولوی صاحب نے علی اصح ہم سے کہا تھا۔ (کرامات الجمدیث ۲۸)

# الجهام ياؤل ياركازلف درازين!

امیر حزو آ کے اپنے گریں ہیرومرشد کی ہیں ، مریدیں کی بختے ہیں سلسلہ کی جاری ہوتا ہے فیش ایس ملتا ہے بیعت می کی جاتی ہے اپنے ہر رگوں کی کرانات کا تذکرہ می ہوتا ہے۔ ہر پی فیش بلک و مروں کوان کی کرانات سناسٹا کرخوب باکل کی کیا جاتا ہے کہ الجمدیت ہوجاؤ کی ہوے ہر دگ ہیں اور دو مری جانب بیعت کا اٹکار، ہیرومرشد کا اٹکار مسلامل کا خماتی فیش کا تشخر آخر ہیا ہے؟ کم اذکم میری بھے سے تو بالا ہے اور اب میری اس تحریر و من کے بعد الل اسلام کو باور ہوجائے گا جھڑا کیا ہے وہ قو صرف "اتا" کا ہے اگر بیدومیان میں فیہ ہوتی سب فیک ہے ساری ملت ایک ہے ساری انت وصدت کی طلبگار ہے۔ آپ نے جو کروار اپنی سنا ہیں" آسانی جنت اور در باری جنم" " شاہراہ بہشت" ہے ہی وسیاسی باوے" کھی کر اوا کیا ہے میری ہے تو ہے۔ "البحا ہے باوی باری ازاف ، از میں الل علم ہو ہولیں کے تو پھر قو آ کی تحریروں کو جا د جا کیں۔ ایک میں گے۔ نوع میں ساری امت مسلمہ کوعرض کروں گامیں نے مجیورآبیر سب پھی کھا ہے۔ورنہ میں ایک منٹ بھی اپنی عمر عزیز کا ای طرح صرف کرنے کا قائل نہیں ہوں میں تو ون رات اس امت کی فلاح وصلاح کیلئے سرگرم عمل ہوں اور جب تک وم میں وم ہے سرگرم رہوں گا اللہ کرے میری زندگی میں بیدائت صحت مندائت بن جائے اور وصدت کی لڑی میں پروئی جائے (امین ٹم آمین)

المحدیث حضرات کے ایک اور بہت بڑے مولانا صاحب سے بھی کرامات کا صدور ہوا ان صاحب کا عبدالجبار بن صدور ہوا ان صاحب کا نام مولوی محمہ سلیمان روڑوی تھا، آپ مولانا عبدالشفر نوی کے مریدین میں سے تھے ان کی کرامات کا ذکر کرتے ہوئے مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگر دمولانا محمد ابراہیم میر سیالکوٹی صاحب کرامات المحمدیث میں رقم طراز ہیں۔

ایک روز علی السیح آپ فرمانے گئے کہ لو بھائی آج ہمارے بیردمرشد (مولوی عبدالہجارصاحب فرنوی) بہشت میں پہنچ گئے ہیں میں نے رات ان کو بہشت میں دیکھا ہادر پیشعربھی سنا ہے جومیری زبان پرجاری ہوگیا ہے گئے او بیلی اللہ بیلی مماڈ ھے ہوئے چلانے "بینی اے دوست خدا حافظ ہم تو جارہے ہیں سب جیران سنے معلوم ہوا کہ ٹھیک اسی سنے پر کیا ماجرا ہے چنا نچہ بعد میں جو اطلاعات آئیں ان سے معلوم ہوا کہ ٹھیک اسی وقت اورای دن امام صاحب کا انتقال ہوا تھا جس دن مولوی صاحب نے السیح ہم وقت اورای دن امام صاحب کا انتقال ہوا تھا جس دن مولوی صاحب نے السیح ہم سے کہا تھا (کرامات الجدیث ۸)

# خداحافظ ہم توجارے ہیں!

مولوی محرسلیمان روڑوی صاحب، ایک صح کواچا تک فرمانے لگتے ہیں لو بھائی

یم کی کون ی سم ا

امیر حمزه صاحب دونوں آئیس کھولیں دن کی واضح روثنی میں پڑھیں نظر کو ذراان الفاظ پرروک لیجئے تھیک ای وقت اورای دن اب اپنے پرخلوص عقیدہ تو حید کی روثنی میں بتا ہے آخر بیلم کی کونی تتم ہے دور دراز کسی کا انتقال ہور ہا ہواور دوسرا آ دمی بغیر اسباب طاہری کے تھیک ای وقت اورای دن اطلاع دے دے۔

میراخیال ہے اب تو آپ بھی اپنے ہزرگوں کے ہاتھوں بخت تنگ ہوں گے کہ سے بھی کیسی بزرگی ہے اب تو بہتی اپنے بزرگوں کے ہاتھوں بخت تنگ ہوں گے کہ سے بھی کیسی بزرگی ہے ایسی بزرگ ہے جذبات کسی فقر رکے حامل نہیں ہیں ان کوآپ اپنی زبان پر لا ہے اور پھر سپر وقر طاس فرما ہے تا کہ سند و تجت قرار پا کمیں۔ ہاں ہاں سیجیح ہمت فرما دہیج رقب بالنے کوئی پرواہ نہ کریں۔ لوگوں کی وہ کیا کہیں گے آپ چھوڑیں لوگوں کو خود حق دیا نت اوا کریں چھوڑیں لوگوں کو خود حق دیا نت اوا کریں چھوڑیں لوگوں کو خود حق دیا نت اوا کریں چھوڑیں لوگوں کو خود حق دیا نت اوا کریں جھوڑیں لوگوں کو خود حق دیا نت اوا کریں جھوڑیں لوگوں کو خود حق دیا نت اوا کریں جھوڑیں لوگوں کو خود حق دیا نت اوا کریں جھوڑیں لوگوں

آپ كرركوںكاكمنائىكيا إ!

تھے کھے کھے الفاظ میں اعلان سیجے نہ عبد اللہ غزنوی صاحب ہمارے ہزرگ ہیں نہ عمولوی محمد عبد البجار غزنوی ، نہ مولانا غلام رسول قلعوی ہمارے ہزرگ ہیں نہ ہی مولوی محمد سلیمان روڑوی ۔ تب تو ہم بھی کسی حد تک آ پکوصدافت کا پتلا مانیں جھے معلوم ہے آپ اپنے ان ہزرگوں کی تر دید بھی بھی نہ فرما کمیں گے چلونہ کریں تر دید اب اتنا تو مان کیس کہ بیس نے قلم چلاتے وقت تحقیق کا لحاظ نہیں رکھا ور نہ اس طرح ہرگزنہ کھتا۔ مان کیس کہ بیس نے الم چلاتے وقت تحقیق کا لحاظ نہیں رکھا ور نہ اس طرح ہرگزنہ کھتا۔ ویسے رازکی بات ہے آپ کے ہزرگ تو ہوئے پہنچ ہوئے ہیں وہ جسے کہددیں ویسے ہی ہوتا ہے گھیک وقت اور ٹھیک تاریخ دن ، ماہ وسال ہتاتے ہیں لگنا ہوں ہے انکو

چونکہ پہلے لوگول کے ساسنے تصویر کا ایک رخ ہوگا اور بیری اس تحریر کو پڑھنے کے بعد تصویر کے دونوں رخ ساسنے آ جا کی گے اور فیصلہ کرنا بھی آسان ہوجائے گا۔ چی کون اور باطل کون۔

تفرقة زبرقائل إ!

اگرہم کہددیں فلاں بزرگ نے فلاں معاملہ کی اطلاع دی اور جیسے انہوں نے فرمایا ایسے ہی ہوا تو آپ فوراً آخ پا ہو جاتے ہیں، بدعت، گراہی اور شرک کی لئے برسانے لگتے ہیں اور بیسب پچھآپ کے اپنے گھر ہیں ہوجائے تو نہ بدعت، نہ شرک برسانے لگتے ہیں اور بیسب پچھآپ کے اپنے گھر ہیں ہوجائے تو نہ بدعت، نہ شرک بلکہ سب فضیلت ہی فضیلت کچھتو خوف خدا ہیجئے اس قدرستم ظریفی بھی اچھی نہیں ہوتی اب موام بھی پڑھے ہیں انکو بھی جن و باطل ہیں فرق کرنا آگیا ہے وہ خوب محصے ہیں انکو بھی جن و باطل ہیں فرق کرنا آگیا ہے وہ خوب محصے ہیں جن کیا ہے اور باطل کیا۔

آپ نے تو شاید شیکہ لے رکھا ہے اپنے اور اپنے ہم خیالوں کے علاوہ ہاتی سب کو باخل قرار دے کر ہی رہنا ہے گر بھی بھی لینے کے دینے بھی پڑ جاتے ہیں جیسے آپکو، بس میری بیتح مریائل حق کی نظر میں آتو لینے دو پھر دیکھوکیا کمال ظاہر ہوتا ہے بپائی کا، دیانت وشرافت کا اور وحدت امّت کے جذبے کا میں چونکہ اس دور میں (خصوصا) تفرقہ کو زہر قاتل جھتا ہوں اور وحدت امّت کو وقت کی ضرورت جھتا ہوں البذا میری اس فکر سے انشاء اللہ ہرکلمہ کو انقاق کرےگا۔

کرامات المحدیث کی اس عبارت پر ذراایک بار پھر نظر ڈالیس امید ہے باطن کی آئسیس بھی روشن ہوجا کیس گی لیجئے مطالعہ فرمائے۔

ٹھیک ای وفت اور ای دن امام صاحب کا انتقال ہوا تھا جس دن مولوی صاحب نے علی اصبح ہمیں کہا تھا ( کراہات الجدیث ۲۸ )

#### سارامعالما عروان خاندا

کیوں جناب امیر جمزہ صاحب بغور پڑھلیاان مبارک جملوں کو جوآپ کے بیں۔
بزرگ مولانا سوہدوروی نے مولانا عبداللہ صاحب کے حوالے سے نقل کیے ہیں۔
بزرگوں کو ملنے کا خیال تو آپے اکا برکو بھی آیاتی کرتا تھا۔ ان کی خدمت میں چھودن تھم برنے کا ارادہ بھی وہ کیا کرتے تھے اور ان سے فیض حاصل کرنے کا لیتیں بھی ان کے حرل کی افتحاء کہرائیوں میں پہاں تھا۔ بیسارا کا ساراتھور آپ کے گھر کے بزرگول کا ہے۔ بیس نے اپ بلے سے پچھ بھی اس میں نہیں ملایا یہ بالکل خالص ہے اس میں کوئی ملاوٹ نہیں کی جات میں موالے۔

#### يراز تقاراز:

کی بزرگ کی خدمت اقد سیس حاضر ہوکر پچھددن اس کی بارگاہ میں قیام کر کے ،ان نے فیض حاصل کرنے کا ارادہ تو آپے مولوی عبداللہ صاحب نے کر لیا تھا مگر ابھی تک بیسارا معاملہ اندرون خال ہ تھا اظہارو بیان کی دنیا تک نہیں آیا تھا بیراز تھاراز! اور پنہاں تھا، پنہاں وہ بھی دل کی گہرائیوں میں آپ خود ان سوچے ارادہ ابھی دل ہی دل میں ہوکی سے اس کا اظہار تک نہ کیا گیا ہو۔ اس پر بھی مطلع ہونا یا مطلع رہنا آخر یہ کس کی شان ہے آیے میں آپی خدمت میں آپ ہی کے بزرگ کو چش کرتا ہوں ما حظ فر مائے۔

ابھی سیمیرے جی میں تھا اور میں نے کئی سے اسکا تذکرہ نہیں کیا تھا کہ مولوی صاحب سامنے سے آگئے اور آتے ہی فرمایا کہ ذرا سوچ سجھ کر جانا آج کل دکانداریاں زیادہ ہیں اللہ والے بہت کم ہیں چنانچہ بعد میں معلوم ہوا کہ واقعی وہ تمام داز ہائے باطن از بررہتے ہیں اگر پچھ معلوم نہیں ہوتا تو ہمارے ہزرگوں ہے آپ کے بزرگ تو ہرفن مولی ہیں مرنے کی خبر ہوتو اس ہیں پدطولی ، پیدائش کی خبر ہوتو اس میں مہارت تامة کسی کے آنے کی خبر ہوتو حبث بتا کیں گے کسی کے جانے کی خبر ہوتو فوراً وقت ، تاریخ ، حاضر میں کہتا ہوں آپ کے بزرگوں کا کہنا ہی کیا ہے۔

## آج كل دكا عداريال زياده ين:

ندکورہ موادی محدسلیمان روڑوی صاحب کے حوالے سے مولانا عبدالمجید خادم موہدردی شاگر مولانا محدابراہیم بیرسیالکوئی صاحب اپنی کتاب کرامات المحدیث میں ایک عظیم الشان کرامت کا ذکر فریاتے ہیں اس کرامت کو ضرور پڑھنا چاہیے۔ ظاہری آنکھوں کے ساتھ ساتھ باطن کی آنکھیں بھی کھل جا کیں گی اور ساتھ ہی ساتھ وہ تمام راز ہائے پوشید و بھی طشت ازبام ہو تھے جن کوآج تک چھپار کھاتھا لیجئے مطالعہ سے بھے۔

مواوی عبداللہ صاحب کا بیان ہے کہ ایک دن میرے دل بیں ایک برزرگ کے طنے کا خیال پیدا ہوا۔ اور چاہا بھی کہ پچھ دن ان کے پاس جا کر تھبروں اور فیض حاصل کروں ، ابھی بیرے بی بی بی بی بی تھا اور بیں نے کسی سے اس کا تذکرہ نہیں کیا تھا ہ کہ مواوی صاحب سامنے ہے آگئے اور آتے ہی فرمایا کہ زرا سوچ سمجھ کر جانا آج کل دکا نداریاں زیادہ بیں اللہ والے بہت کم بیں چنا نچہ بعد بیں معلوم ہوا کہ واقعی وہ دکا ندارہی

#### -: 6

اگر چہ کرامات اہلحدیث ضمن میں بہت ہے بزرگول کی کرامات میرے پاس جمع ہوگئ ہیں مگر فی الحال انہی پراکتفا کرتا ہوں خادم عفی عند (کرامات الحدیث ۲۸)

(かとかり)一一人(人)

### نوائے وقت بن کر پوچھنا جا ہتا ہوں۔

بہت خوب، آپے بزرگوں کی بھیرت کوسلام کرتے ہیں، ان کی عظمت کوخراج مخصین پیش کرتے ہیں، ان کی عظمت کوخراج مخصین پیش کرتے ہیں اس لئے کدان کودل کے راز بھی معلوم ہوتے ہیں اس کے لئے انکوکوئی جدد جہد نہیں کرنا پڑتی بلکہ اسکے لئے یہ معمول ہی ہوتا ہے ادھر نظر سے نظر ملی، ادھر دل کے تمام راز طشت از بام ادھر سامنے دل کی ہر بات پرآگائی ادھرآ مناسامنا ہواادھردل کی تہوں ہیں چھی ہوئی بات ان کی زبان پر۔

### آب جوفر مائين: :

مرافسوں بی بات اگرہم اللہ تعالی کے مقدی گروہ حضرات انبیاء کرام کیلئے کہہ یا لکھ دیں یا ہمارے بزرگ لکھ دیں۔ بی بات اگرہم جلیل القدرائمہ دین کیلئے کہہ یا لکھ دیں، بی بات اگرہم جلیل القدرائمہ دین کیلئے کہہ یا لکھ دیں، بی بات اگرہم اور ہمارے بزرگ اولیاء کاملین کیلئے کہد دیں تو فورا شرک جیسا خطرناک فتوی تیارہ وتا ہے اور بلاخوف وخطر ہمارے اکابرین پرواغ دیا جاتا ہے اب میں صدائے تن بن کرنوائے وقت بن کرصدائے عام بن کر بوچھناچا ہتا ہوں امیر جمزہ صاحب جوفتوی ہمارے اکابر کیلئے صاور کرتے ہوئے آپ ذرانہ شرمائے نہ پیکچائے صاحب بوفتوی ہمارے اکابر کیلئے صاور کرتے ہوئے آپ ذرانہ شرمائے نہ پیکچائے صاحب پر اور ساتھ ہی ساتھ وہی فتوی مولوی مجرسلیمان روڑ وی پر بھی چہاں کر صاحب پر اور ساتھ ہی ساتھ وہی فتوی مولوی محرسلیمان روڑ وی پر بھی چہاں کر ویجئے۔ تاکہ آپی جوانم دی خاہر و باہر ہو جائے اور آپ کو ہم پی قریب الصادقین جانیں۔ گرآپ ایسا کریں گرنیس اب تو خاموثی چھاجائے گی نہ ذبان کو ترک ہوگانہ جانیں۔ گلم حرکت میں آئے گانہ قرطاس پر قرطاس صرف ہوگا ہائے افسوس مولوی محرسلیمان قلم حرکت میں آئے گانہ قرطاس پر قرطاس صرف ہوگا ہائے افسوس مولوی محرسلیمان

روڑوی صاحب کو ول کے راز معلوم اور اس پر کوئی اعتر اض خہیں مولوی روڈوی صاحب جو فرمادیں وہ بالکل حرف بحرف درست جوائی زبان اطہر سے نکل جائے وہ ہر طرح قابل اعتماد ، لائق یقین بلکہ قابل نقل اور برائے اشاعت عین حق ، لیکن ایسانی عقیدہ اگر حضور سیدی غوث اعظم شخ سید عبدالقادر جیلانی کیلئے رکھا جائے ، ایسا ہی عقیدہ اگر حضرت واتا تینج بخش علی بن عثمان جوری کے متعلق رکھا جائے اور ایسا ہی عقیدہ اگر حصن الحق والدین حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری کے بارے میں رکھا جائے اور ایسا ہی رکھا جائے تو ورکی بات محقیدہ اگر معین الدین چشتی اجمیری کے بارے میں رکھا جائے تو شرک کاش عقل سیلم کو استعمال میں لاتے گر ندال کے عشق تو دور کی بات

#### يزرگ دات كوسط:

قاضی سلیمان منصور بوری صاحب کی ایک اور بزی ہی ولچسپ کرامت ملاحظہ فرما ئیں مولانا عبدالمجید خادم سوہدروی شاگر دمولانا محمد ابراہیم میرسیالکوٹی اپنی کتاب کرامات المحدیث میں رقم طراز ہیں۔

قاضی صاحب جب بھی لا ہورتشریف لاتے ، تو مال روڈ پرحیات برادری کے ہاں قیام فرمایا کرتے تھے میاں فضل کریم صاحب بن حاتی حیات محمد صاحب ما لک فرم کا بیان ہے کہ جس مکان پر آپ تھی ہرا کرتے تھے ، اس کے قریب بی ایک خال قاہ تھی جو اجڑی ہو گئی تھی ، ایک دن آپ نے بھے ہو چھا ، کہ کیا یہاں کوئی قبر ہے ۔ بیس نے عرض کیا جی ہاں آپ نے کہا آج رات بھیں وہ بزرگ ملے اور کہا کہ قاضی بی آپ اتن بار بھی نہیں ملے پھر فرمایا وہ بہت نیک اور صالح آدی ہیں ، فلاں جگہ کے رہنے والے تھے ، ادھرے گذر رہے تھے کہ انتقال ہو گیا ، میاں

ے یس بھی لاہور قطب ارشاد، بلد و معظمہ میں ہی مقیم ہوں۔ بیش بروی ہی بر کتوں کا حال ہے اللہ تعالی اس شہر کو ہمیشہ آبادر کھے اسکے بسنے والوں پر اپنا لطف و کرم دائی فرما تارہے۔ اس شہر کی ساری بر کنیں حضرت وا تا جمنج بخش علی بن عثمان جھوری کی وجہ سے بیں کہ بیدا تا کی گری کہلاتی ہے۔

## قاضى سليمان منصور بورى كى خانقاه كى طرف التفات!

قاضی صاحب لا ہور آتے تو مال روڈ پر حیات برادرس کے ہاں تیام کرتے۔جس مکان پرآپ شہراکرتے بھاس کے قریب بی ایک خان تا ہیں۔ اس کی طرف توجہ رہتی تھی اور اس کے بارے ہیں ہجت س تھے۔ بہتو ثابت ہوبی گیا۔ قبروں سے اسقد رنفرت تو آپ اکابر نہ کرتے تھے جس طرح آپ نے ان کے کھاتے ہیں ڈال رکھی ہے۔ بہر حال آپ پرکون پابندی لگا سکتا جو من ہیں آئے سو کھاتے ہیں ڈال رکھی ہے۔ بہر حال آپ پرکون پابندی لگا سکتا جو من ہیں آئے سو کھاتے ہیں ڈال رکھی ہے۔ بہر حال آپ پرکون پابندی لگا سکتا جو من ہیں آئے سو کیجئے گر اتنا خیال ضرور رکھے گا۔ آپ کے اکابر بھی آپ کے فتو وَں کی زوسے فی نہیں سے جس طرح ثبوری عقیدہ بھوری عقیدہ کی رے لگالگا کرآپ نے اسکو باطل قرار دیا اور شرک سے موسوم کیا ہے تو آپ کومبنگائی پڑے گا۔

ظاہر ہے یہ تو ایک فطری می بات ہے۔ جو دنیا بیس آیا اس نے ایک دن واپس بھی جانا ہی ہے اور ہرمسلمان کومر نے کے بعد قبر میں دفن کیا جاتا ہے یہی سنت ہے اور جب قبر بن جائے تو انسان کوقبر نے نفرت ہر گرنہیں کرنی چاہیے بلکہ قبر سے محبت کرنی چاہیے قبر والے کیلئے فاتحہ پڑھنی چاہیے اظہار ہمدردی کرنا چاہیے تا کہ کل جب ہم بھی قبروں میں چلے جا کیس تو بعد میں آنے والے لوگ ہمارے لئے بھی ایسال ثواب کریں فاتحہ پڑھیں دعا مائلیں اور ہماری آخرت بہتر ہو۔

میاں فضل کریم کہتے ہیں کداس کے بعد جب میں نے اس کی تحقیق کی تو وہ ہاتیں و لیمی سبی ثابت ہو کیں جو قاصنی صاحب نے بیان فرما کی تھیں، یہاں تک کدان کا نام اور پہت بھی قاصٰی جی نے بچھے بتادیا تھا۔ (کرامات الجدیث ۱۸۰۱۹)

"میال فضل کریم صاحب بن حاتی گرحیات صاحب مالک فرم نے جو پکھ بیان کیا ہاس سے درج ذیل ہاتمی بوی ق مانی سے بچھی آ جاتی ہیں"۔

ا- قاضى سليمان منصور بورى صاحب كى خال قاه كى طرف توجه

۲- خال قاہ میں کی قبر کے بارے استفسار۔

٣- صاحب قبرى قاضى سليمان منصور پورى صاحب علاقات-

سم- قاضی سلیمان صاحب کوصاحب قبر کی طرف سے دعوت۔

٥- صاحب قبرنيك اورصالح آدى بين قاضى صاحب في اسكى شهادت دى \_

٢- ده بزرگ جوقبر ميل وفن بين وه كهال كريخ والے تقام كي تحقيق \_

2- سزى مالت يى ادهر بكررد بي تفي كدانقال بوكيا-

٨- ميال فعل كريم صاحب كا تاكيرى بيان-

9 ۔ وہ باتیں ویسی ہی ثابت ہوئیں جوقاضی صاحب نے بیان فرمائی تھیں۔

ا- یبال تک کدان کانام اور پیدیمی قاضی صاحب نے مجھےدے دیا تھا۔

#### مال رود لا بور:

رب العالمين كالا كه لا كفتكر ب ال في المارى تائيدا مرحز وصاحب كم محر كروادى قاضى سليمان منسور پورى صاحب جب بهى لا مورتشريف لا تي تو مال روؤ پر حيات براورى كى بال قيام فرمايا كرتے تھے۔ عرصہ ارتميں 38 سال

امیر حمزہ صاحب آپ نے تو اپنی کتابوں میں ساراز در ہی قبروں کی مخالفت پر دکھا ہے بار باراہلِ قُنو رکا ذکر کر کر کے اٹلی ہے بسی کو یاد کر دایا ہے اور قُنو ری عقیدہ قبوری عقیدہ کہہ کہہ کراس کا بطلان ثابت کرنے کی بحر پورکوشش کی اوران گنت مرتبہ کیا ہے قُنو ری عقیدہ شرک ہے اور اب جب آ کچے اپنے بزرگ بھی قبر کی طرف متوجہ جیں کہااور اٹلو باخر بھی مانتے ہیں تو آپ کس کھاتے ہیں جا کمیں گے۔

## خانقاہ میں کی قبرے بارے استفسار!

قاضی صاحب کی توجہ جو ایک خال قاہ کی طرف ہوئی تو انہوں نے اپنے میزبان جناب فضل کریم صاحب سے پوچھا یہاں کوئی قبر ہے؟۔اس پر انہوں نے جواب دیا جی ہاں یہاں ایک قبر ہے آپ کے بزرگ قبروں کے بارے استضار کر کر کے معلومات حاصل کرتے ہیں گر آپ نے قبروں کے ددمیں وہ وہ ورنگ اختیار کیا ہے جیے بھی آپ نے نہ تو کوئی قبردیمی ہے اور نہ ہی خود مرکر قبر میں جانا ہے۔

خال قاہول کا رد، دربارول کا رد، مزارات کا رد، سلاسل ہائے طریقت کا رد، براکان دین کا ردادر روحانیت کا رد کرنا آپ نے اپنے اوپر لازم جانا ہے۔اگر خال قابی اور قبریں اتن ہی خطرناک چیزیں ہیں تو آپ کے بزرگ وہاں کیا لینے جاتے ہیں۔اگر آپ میں غیرت دینی ہے اور واقعی ہے تو بلا امتیاز فتوی شرک صادر فرمائے تاکہ پنتہ چلے کہ آپ غیرت دینی ہے مرشار ہیں اب جوفتوی شرک و بدعت جناب قاضی محمر سلیمان مضور پوری پر گے تو مزہ ہی آ جائے۔

## صاحب قبرسے جناب قاضی سلیمان منصور پوری کی ملاقات!

امير حزه صاحب! تحاييه دل كو، لكابكوه قيامت أو في آپ پرادرآپ كے خود

ساختہ عقیدہ پروہ بھی میں نے نہیں تو زاجو بھے ترس آئے بلکہ آپ پر کوہ قیامت آپ کے اپنے بنی گھر کے بزرگ کے ہاتھوں ٹو ٹاہے بس اب دوہی صور تیں ہیں یا تواپنے بیان کروہ عقائد ونظریات سے فورا تائب ہوکر اپنے بزرگوں والاعقیدہ اپنالیں اور سابقہ نظریات جو آپ نے اپنی کتابوں '' نہیں و سیاسی باو ہے'' '' آسانی بخت اور درباری جہنم'' '' شاہراہ بہشت' میں لکھے ہیں ان سے اعلان پریت کریں یا پھر دوسری صورت یہی ہے کہ اپنے ان اکابر پر بہتا ضاء دیا نت فتوی شرک صاور کردیں تاکہ آپ کی صدافت پر مہر تصدیق ٹھک کرے گئے جائے۔

#### دونى صورتين:

آپ کے سامنے صرف دو ہی صورتیں رہ گئی تھیں وہ دونوں آپکی خدمت میں پیش
کر دی ہیں ان دونوں میں سے جو آپ کا جی چاہے اختیار فرمائیں۔ انشاء اللہ ہر
صورت ہیں صدافت اولیاء اللہ سے محبت رکھنے والوں ہی کی ظاہر باہر ہوگی۔ اب اگر
و لی ہی بردھکیں ماریں جیسی اپنی تحریروں میں ماری ہیں تو ہم آپکومر دمیداں جا نیں مگر
بردھک تو در کناراب تو آپکے گئے ہے آواز تک صاف نہ فکلے گی۔

آ کے ہزرگ قبر کی طرف اور قبر والے کی طرف مائل ہوئے ہیں تو اب آپ کا نقطۂ نظر کیا ہوگا ہوئے ہیں تو اب آپ کا نقطۂ نظر کیا ہوگا ۔ اگر قبر کی طرف متوجہ اور قبر والے کی جانب ملتفت ہونا شرک ہوتو بلا تا اس علاقات بلا تا اس کی اور اس ملاقات کی اور اس ملاقات کی افضی صاحب پر فتو می شرک صادر فر مائے کیونکہ اہل قبور نے ان سے ملاقات کی اور اس ملاقات کا تفصیل حال ابھی آ کی نظر سے گزرا ہے۔

## قاضى سليمان صاحب كوصاحب قبركى طرف سے دعوت!

امير حمزه صاحب آپ تو فرماتے ہيں قبروں والے بالكل بے خبر ہيں الكو كھ خبر نيس

وہ تو مرگئے۔ آپ نے قبر والوں کی بے فبری پراتنا زور صرف کیا ہے کہ اگر آپ اتنا زور کی اور موضوع تخن پر صرف کرتے تو ضرور کوئی نہ کوئی نئی تحقیق سائے آجاتی گر آپ کی قسمت میں تحقیق کہاں وہ تو کسی نصیب والے کے جصے میں آتی ہے آپ کے مقدر میں تو امت مسلمہ پر تیر چلانا ہے تیر چلانا سوآپ چلاتے جار ہے ہیں ہم آپکو ہر گزندروکیس کے اور چلاکیس تیر خوب دل بحر کر چلاکیں اس قوم پر تیر و تفقی تاکہ آپکا نام مجاہدین فی سبیل اللہ میں درج ہوجائے اور اپنے اس جہاد پر اتر اتو سکیس میں نے آپی خدمت مقد سہ میں آپ ہی کے ہزرگ کو پیش کیا ہے لیجئے مطالعہ فرما ہے تاکہ آپ پر واضح ہوآپ کیا کہتے ہیں اور وہ کیا گہتے ہیں نیز آپکا عمل کیا ہے اور ا تکا ممل

میال فضل کریم صاحب بیان کرتے ہیں بھے ہے ،ایک دن آپ نے ہو چھا کد کیا یہاں کو کی قبرہے میں نے عرض کیا تی بال آپ نے کہا آج رات جمیں وہ ہزرگ نے اور کہا کہ قاضی ٹی آپ آئی باریبال آئے گر جمیں ایک بار بھی ٹیس لیے۔ ( کرامات المحدیث 19 م 10)

پورى پورى ى ، آئى ، ۋى!

قاضی صاحب کوقبر والے بر رگ خواب میں آکر دعوت دے رہے ہیں قاضی ہی آپ اتنی بار بھی نہیں سلے۔ رکھے ہاتھ اپنے ایک بار بھی نہیں سلے۔ رکھے ہاتھ اپنے دھڑکتے دل پر اور کلیجہ تھا م لیجئے تا کہ آپکو آپکے برزگ محترم کی عبارت کی تغییم میں آسانی ہو کیوں جناب قبر والے تو بہ خبر ہیں، وہ تو سن نہیں سکتے، وہ تو کسی کو ہرگر نہیں آب نہ نہا نے وہ تو کسی کو ہرگر نہیں کہنے وہ تو کسی کو ہرگر نہیں کہنے وہ تو کسی کو تیں اور کی ہوری ہوری ہیں، آئی، ڈی کسی پانے نے وہ تو کسی کو تیں اس گنتی کا بھی پوراپورا رکھتے ہیں انسی تنبی تو یوں فرماتے ہیں اس گنتی کا بھی پوراپورا احساس ہے تبی تو یوں فرماتے ہیں اس ساتھ ہیں احساس ہے تبی تو یوں فرماتے ہیں

قاضی جی آپ اتن باریهان آئے گر ہمیں ایک بار نہیں ملے (کرامت الجودیث ۱۹،۱۹)

گویا صاحب قبر نے آکر قاضی سلیمان منصور بوری صاحب کو با قاعدہ دعوت دی

کر آپ ہمارے مزار پر آکیں اور ہم سے ملاقات فرما کیں واہ بھٹی واہ خود کو صاحبان

قبور کی طرف سے دعوتیں آتی ہیں وہ ان کو بلاتے ہیں جانے ہیں پیچانے ہیں انکانا م

مبارک لے لے کر انکوا پنے ہاں آنے کی دعوت دیتے ہیں اب نہ مرنے والا معاملہ

یاد، نہ قبر کی بے خبری متحضر، نہ قبوری عقیدہ یاد، نہ اہل قبور کا بے خبر ہونا مسلم بلکہ اب تو

### ایک بارجی نهط:

آپ کے گھر کے بزرگوں سے اہل قبور کی ملا قات ہوتو بالکل صحیح وہ انکو پہچا نیں تو بالکل درست وہ انکا نام کیکر ان کو اپنی قبر پر اپنے مزار پر آنے کی وعوت دے دیں تو بالکل درست وصحیح اوران کی طرف سے اگر ذرا دیر ہموجائے تو بھی انکوخوب پید اوران سے شکوہ بھی کرتے ہیں آپ اتنی باریہاں آئے مگر ہمیں ایک بار بھی نہ ملے۔

اگراس طرح کی باتیں ہمارے بزرگوں سے ثابت ہوجا کیں تو آپ ایک طوفان بر پاکردیتے ہیں۔ جھیٹ جھیٹ کرحملہ آور ہوتے ہیں، چے وتاب کھا کھا کرآتے ہیں جیسے آپ نے کسی بڑے مجرم کوئین موقعہ پررنے ہاتھوں پکڑلیا ہواوراب اس کے جرم نا قابل معانی پر تھم مزالگانا ہو۔

## صاحب قبرنيك وصالح آدمي بين!

آپ کے بزرگ تو قبر والوں کوخوب جانتے پیچانتے ہیں ان کے حق میں بوی کھلی کھلی شہادتیں دیتے ہیں بوے بین انداز میں اہل قبور کی نیکی و پارسائی کا اعلان رابطه ایجے حالات واحوال ہے مکمل آگا ہی ایکے ہاں آنا جانا سب جائز ہی نہیں بلکہ قطعی بیتنی انداز میں گفتگو کرنا آخر ہم پر سیتم کیوں ہمیں کیوں روکتے ہیں مزارات پر جانے ہے جب خودان سے رابطہ میں ہیں۔

## صاحب قبری سری (History) بنادی!

قاضی صاحب کوتو اہل قبور سے ایسا پکاتعلق ہے کہ جس قبر پرنظر ڈال دیں صاحب قبر کی کمل ہٹری جان لیتے امیر حمزہ قبر کی کمل ہٹری جان لیتے ہیں آپ اپنے ایس حمزہ صاحب فرماتے ہیں وہ نیک صالح آ دمی ہیں ادھرسے گزر ر سے شخانقال ہوگیا۔

وہ نیک وصالح آدمی ہیں۔ کتنی بردی اور کچی شہادت ہے جو بغیر علم تطعی بیٹین کے ہر گزنہیں دی جاسکتی گرقاضی صاحب کوتو صاحب قبر کے حالات احوال مقامات سب یاد ہیں اور وہ بھی بیٹین طور پر اسی بیٹین کی بنا پر تو وہ صاحب قبر کو نیک وصالح قرار دے رہے اور ساتھ ہی ساتھ ریب بھی بتارہے ہیں کہ یہ سافر تھے اور حالت سفر ہیں یہاں سے گزررہے تھے کہ ان کا انتقال ہوگیا اور پہیں فن ہو گئے۔

تھوڑا ساغور فرمائیں وہ صاحب کب گزررہے تھے ماضی میں، وہ مسافر تھے، وہ غریب الوطن تھے اس حالت میں انکا انتقال ہواکیسی پکی اور مضبوط خبرہے وہ بھی ماضی کی امیر حمز ہ صاحب آپ نے کہاں بیٹھ کراپٹی تحریروں کوئیر وقرطاس فرمایا ہے لگٹا ہے آپ کی تحریریں کسی اور جہاں میں کھی گئی ہیں۔

واس مقطل:

مجھے بر عکیس مارنے کی عادت جیس ورندموقعہ بواز بروست تھا، اگر میں بر عکیس

کرتے ہیں انکی مدحت میں رطب اللمان ہوتے ہیں انکے قصیدے پڑھے ہیں۔
معلوم ہوتا ہے آپئے تو بڑے زبردست تعلقات ہیں اہل قبور ہے، ہمارے
تقلقات پر کیوں اعتراض ہے،خودتو ان سے راہ رسم رکھتے ہیں ان کے ہاں اپناتو آنا
جانا رہتا ہے ہا قاعدہ دعوتیں ہوتی ہیں دوسری جانب قبوری عقیدہ قبوری عقیدہ کی رب
نے سرکھا مارا ہے آخر بیسب دورخی کیا ہے۔اگر قبوری عقیدہ واقعی شرک ہے تو اٹھا یے
تلم اور لگا ہے فتوی شرک اپنے ہزرگ سلیمان منصور پوری پرتا کہتی ثابت ہو۔ مجھے
معلوم ہے اب تو قیامت قائم ہوجائے گر آپ کا قلم حق تو حیدادانہ کر سکے گا۔
معلوم ہے اب تو قیامت قائم ہوجائے گر آپ کا قلم حق تو حیدادانہ کر سکے گا۔
معلوم ہے اب تو قیامت قائم ہوجائے گر آپ کا قلم حق تو حیدادانہ کر سکے گا۔
معلوم ہے اب تو تیامت قائم ہوجائے گر آپ کا قلم حق تو حیدادانہ کر سکے گا۔

قاضی صاحب کو نہ صرف قبر والے سے ایک سرسری تعلق ہے بلکہ بیان کوخوب گہرائی تک جانتے ہیں قبلی تعلق ہے جسی تو یوں ارشا دفر ماتے ہیں لیجئے ایک بار پھر تازہ فر مائے۔

میاں فضل کریم کہتے ہیں جھے ہے قاضی صاحب نے پوچھا یہاں کوئی قبر ہے میں نے عرض کیا جی ہاں آپ نے کہا آج رات وہ بزرگ ہمیں ملے اور کہا کہ قاضی جی آپ اتنی باریہاں آئے گرہمیں ایک بار بھی نہیں ملے پھر فر مایا وہ بہت نیک وصالح آدمی ہیں۔ (کرامات المحدیث ۱۹،۸۱)

#### مضبوط تعلقات:

عقل ودانش کی دہلیز پرصدافت کا واسطہ و سے کر بھیک مانگنا چاہتا ہوں ، ذراا تنا تو بتاد وجن کے اپنے گھر کے بزرگوں کے اشخے مضبوط تفلقات اہل قبور سے ہوں کیاان کومزارات کی مخالفت کرنازیب دیتا ہے؟ کیا میسراسرزیا دتی نہیں کیا بیتن وصدافت کا خون کرنے کے متراوف نہیں؟ کیا میسب منافقت تو نہیں خود قبر والوں سے با قاعدہ و یسی ہی ثابت ہو کیں جو قاصنی صاحب نے بیان کیس تھیں۔ یہاں تک کدان کا نام اور پیتہ بھی قاصنی جی نے مجھے بتادیا تھا۔ (کرامات الجدیث ۱۹۸۸)

#### قبروحشر!

مندرجہ بالا بیان پڑھنے کے بعد بھلاکوئی گنجائش رہ جاتی ہے اس ہے اٹکار
کی کہ قاضی صاحب نہ صرف طاہری تاریخ کے ماہر ہیں، بلکہ وہ تو مردوں کے احوال
زندوں ہے بھی زیادہ جانتے ہیں گویا اس جہاں کی خبرتو رکھتے ہی ہیں اس ہے آگے
نگل کروہ جہاں برزخ وقبر وحشر کا بھی خوب معائد فرماتے رہتے ہیں اور جب
ضرورت پڑے فورا وہاں کے سب حالات بھی بیان کردیتے ہیں بلکہ، قبر والے
حضرات کا پورا تاریخی شجرہ بھی بیان کرنے ہیں کوئی کوتا ہی نہیں ہونے ویتے۔

#### ق وصدافت:

ان مصد قد حقائق کو پڑھ لینے کے بعد بھی کوئی صاحب عقل ہے بات کرسکتا ہے کہ قبر والے سنتے نہیں ، قبر والے و کیھتے نہیں ، قبر وں والے پہنچانے نہیں ، قبر وں والے علم نہیں رکھتے ، قبر وں والے مر وہ ہی پڑے ہوتے ہیں ، قبوری عقیدہ شرک ہے قبر والوں کوزندہ سمجھنا شرک ہے انکوآنے والوں سے باخبر ماننا شرک ہے۔

اگر واقعی تُبوری عقیدہ شرک ہے اور قبر والے پھے خرنہیں رکھتے تو قاضی علیمان منصور پوری صاحب جو المحدیث کے مسلمہ بزرگ ہیں ان کے بارے میں امیر حمز و صاحب آپ کی رائے کیا ہوگی؟ ذرا سوچ گا ضرور میں نے بالکل حق سی آپی ضدمت میں ڈیش کیا ہاں بڑھنے کے بعد آپ کا دل اس کو تبول کرتا ہے یا نہیں بیٹو میرے انڈ تعالی تی کو معلوم ہے ترجی مے اننا ضرور معلوم ہے تن وہی ہے جوہم نے بیان میرے انڈ تعالی تی کو معلوم ہے تکر مجھے اننا ضرور معلوم ہے تن وہی ہے جوہم نے بیان

مارنے پرآجا تا تو آپ کے حواس مقطل کر کے رکھ دیتا، آپی عقل کی بھنہری گھو ما دیتا، آپی دانش کوراہ صفا دکھا دیتا۔ آپ پر وہ سکتہ طاری کر دکھا تا کہ ہوش نام کی کوئی چیز آپی قریب بھی نہ پھنگ سکتی، گرکیا مجال جو میں شائنگی سے ذرادور چلا جاؤں اور مٹھی جیٹھی بھی کروں۔

قاضی سلیمان منصور پوری صاحب لا ہور میں مال روڈ پرایک قبراورصاحب قبر کی ساری ہسٹری بیان فرماتے ہیں باطن کی خوب خبر رکھتے ہیں ماضی میں ہونے والے واقعات کا توابیااوراک ہے جیسے سب ان کی آتھوں کے سامنے ہی ہورہے ہیں۔

### ستم ظريفي:

میں رب ذوالجلال کی جلالت کا واسطہ دے کر پوچھنا چاہوں گا آخر دیا نہ کی سے
کوئی تشم ہے کہ اپنے ہزرگوں کو ماضی حال واستقبال سب کی خبراور دو قطعی بقینی حتیٰ کہ
قبر میں دفن مردوں ہے با قاعدہ تعلقات ان سے گفتگو، ان کے ہاں آنا جانا انکی دعوت
قبول کرنا اور انکی لائف ہسٹری (Life History) چیٹم زدن میں بیان کر دینا سب
جائز ہی نہیں بلکہ کمالات میں شامل و داخل اور اگر ہم اس طرح کی کوئی بات کہد دیں تو
جائز ہی نہیں بلکہ کمالات میں شامل و داخل اور اگر ہم اس طرح کی کوئی بات کہد دیں تو
شرک کا گھڑا گھڑایا فتوی ہم پر فور آچہاں کچھ تو خوف خدا کیجئے۔ اس قدر ستم ظریفی
ہمی انچھی نہیں ہوتی۔

قاضی صاحب نے توجو بتانا تھا بتادیا گرمیاں فضل کریم صاحب کہتے ہیں ہیں نے بعد بیں با قاعدہ تحقیق کی تو پت چلا جیسے قاضی صاحب فرما گئے تھے ویسے ہی نکلا آپ بھی میاں صاحب کی زبانی سنے۔

میان فشل کریم کہتے ہیں کہ اس کے بعد جب میں نے اس کی تحقیق کی تووہ باتیں

کردیا ہے وللہ الحمد راز و نیاز کی ہا تیں:

مارے عقائد ونظریات پر ہارے اعمال پرآپ نے جس طرح بوھ بوھ کر جلے کے ہیں اور جوزبان استعال کی ہے وہ ایک متین فخص کی زبان نہیں ہے بہر حال میں نے اس طرح کی زبان میں جواب نہیں دیا بلکہ اچھی زبان میں جواب دیا ہے اپنی بات کودلیل سے پیش کیا ہے اور دلیل بھی انتہائی متانت سے سپر وقر طاس کی ہے آپ نے برے بڑے حضرات اولیاء کرام مثلاً حضرت خواجہ بہاؤالدین زکریا ملتانی، حضرت شاه ركن عالم ملتاني ، بابا فريدالدين عجم شكر ، حضرت امام رباني مجدوالف ثاني اور دیگر بزرگان دین پر بوے بھونڈے اور بے سرویا اعتراضات کئے ہیں، جنگی کوئی وقعت بی نہیں ہے آ بکو حیات انبیاء واولیاء پر بوے اعتراض ہیں مگر جب میں نے آ کے اپنے گھر کے بزرگوں کا جائز ہ لیا تو وہ تو اہل قبور کے ساتھ بڑے زبردست تعلقات کے حامل نکلے بلکہ اگر بھی آ کیے بزرگ کی قبر پرنہ بھی جا کیں تو قبروالےخود آ كردموت بيش كروية بين اور پجرراز و نيازكى بائتس موتى بين نام پية تك بحى ايك ووسرے کو بتاتے ہیں لیجئے ایک بار پھر کرامات المحدیث کی سیمبارت مطالعہ فرما کیں تا

میاں فضل کریم صاحب کا بیان ہے، ایک دن آپ (قاضی سلیمان منصور پوری) نے بھے سے پوچھا کہ کیا یہاں کوئی قبر ہے ہیں نے عرض کیا جی ہاں آپ نے کہا آج رات جمیں وہ بزرگ ملے اور کہا کہ قاضی جی آپ اتنی باریہاں آئے مگر جمیں ایک بار بھی نہیں ملے، پھر فرمایا وہ بہت نیک وصالح آ دمی ہیں فلال جگہ کے رہے

والے تھے ادھرے گزررہے تھے کہ انتقال ہو گیا میاں فضل کریم کہتے ہیں کہ اس کے بعد جب میں نے اسکی تحقیق کی تو وہ با تیں و یسے ہی ثابت ہو کیں جو قاضی صاحب نے بیان فرمائی تھیں، یہاں تک کہ ان کا نام اور پتہ بھی قاضی جی نے مجھے بتادیا تھا۔ (کرامات المحدیث ۱۹۰۱۸)

## فيصله قارئين پرموتوف:

امیر حمز ہ صاحب مندرجہ بالاعبارت کوڈالئے اپنے تراز ویش اور تو لیے عدل کے ساتھ اور تول میں خیانت کرنا ایما ندار کا ام نہیں ہے آپ کوتو معلوم ہی ہے تو م شعب علیہ السلام کومز ابھی ای جرم کی دی گئی تھی کہ وہ کم تو لئے تھے کم ماپنے تھے۔ آپ نے جوا صول وضع کر کر کے اپنی مؤلفات '' فرہی و سیاسی باوے''' آسانی جنت اور ور باری جہنم''' شاہراہ بہشت' میں بیان فرمائے ہیں انہی اصولوں پراس قبر والے ور باری جہنم'' شاہراہ بہشت' میں بیان فرمائے ہیں انہی اصولوں پراس قبر والے سے قاضی سلیمان منصور پوری صاحب جو آپے مسلمہ عالم اور محقق ہیں کی ملاقات کو پر کھیے اور پھر جو نتیجہ برآید ہواسے عین دیا نتراری کے ساتھ پر وقرطاس سے بی تا کہ حق بین ہوا ور باطل کا سرگوں ہوجائے۔

द्र हे गुरार्थ:

غور فرما کیں آپ نے جورٹ تُوری عقیدہ تُکوری عقیدہ کہہ کہہ کرلگائی تھی اوراس عقیدہ کو کھلے شرک کے ساتھ تعبیر کیا تھا اب وہی انداز اپنے قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کے لئے بھی اپنا کیں گے؟ ان کو بھی اسی لائن بیس کھڑا کریں گے جہاں ہم سید صے ساو صے سلمانوں کو کھڑا کیا ہے؟ ہم پر جو تتم کی چکی آپ نے تحض اس جرم کی یا داش میں چلائی ہے کہ ہم حضرت علی ہیں بڑے ۔ ویں ، وہ تا تی بخش کی قبر پر چلے

جاتے ہیں ان کے مزار پر انوار کی زیارت کرتے ہیں وہی چکی اپنے برزگ پر بھی چلا لیجئے تا کہ آپ کاحق نما ہونا واضح ہوجائے بلا تبعرہ اس بات کو میں فتم کر رہا ہوں۔ فیصلہ قار کین پر موقوف کرتا ہوں اور جھے امید ہے فیصلہ یہی ہوگا امیر حمزہ صاحب نے سخت ٹھوکر کھائی ہے۔

قاضی سلیمان منصور پوری صاحب کی کرامات کے ذکر میں ایک کرامت بڑی ہی دلجسپ اور دل کوموہ لینے والی ہے اللہ کرے امیر حمز ہ صاحب کو بھی اس کرامت کا اثر ہو جائے اور راہ ہدایت نصیب ہو۔ میں نہایت دیا نتداری کے ساتھ اسکوآپ کی خدمت میں پیش کرنے کی سعادت حاصل کررہا ہوں۔

مولانا عبدالجيد خادم سوہدروى شاگردمولانا محمد ابراہيم مير سيالكوفى اپنى كتاب كرامات المحديث بيس لكھتے ہيں۔

ظیفہ ہدایت اللہ صاحب نیجر رحمتہ اللعالمین کا بیان ہے، کہ میرے پاس برما، بنگال، بہاولپور وغیرہ سے کئی ایسے خطوط آئے ہیں جن ہیں بیمرقوم ہے کہ رحمتہ للعالمین بھیج دیجئے کیونکہ ہمیں خواب میں آنخضرت صلی الله علیہ آلہ وسلم نے ارشاد فرمایا ہے کہ آگر جھے سے محبت چاہتے ہوتو رحمتہ للعالمین جو قاضی محمد سلیمان نے لکھی ہرمایا ہے کہ آگر جھے سے محبت چاہتے ہوتو رحمتہ للعالمین جو قاضی محمد سلیمان نے لکھی ہے، پڑھا کرو۔ (کرایات الجدیث سے)

#### مالى نوائد:

قاضی سلیمان صاحب منصور بوری کی کتاب رحمته للعالمین میری نظرے گزری بهاور میرے مطالعہ بین ربی نظرے گزری بهاور میر مطالعہ بین ربی بہانے کی کتاب ہے۔ اس کتاب کو چھا ہے کی فرمہ داری جناب خلیفہ ہدایت اللہ صاحب نے کی، چنا نچہ انہوں نے اس

کتاب کو دور دراز علاقوں تک پیچایا۔ چونکہ ریے کتاب جہاں خدمت اسلام ہے وہاں مالی فوائد کی بھی حال ہے او حان و مال ہے اس لئے بھی اسکی شہرت اورا کی افا دیت لوگوں کے افر حان و قلوب میں رائخ کرنا ضروری تھا تا کہ مالی طور پرخوشحالی میسر آ جائے ابھی میہ کوششیں جاری ہی تھیں کہ اس کتاب کی مقبولیت کو کیسے عام کیا جائے کہ پچھ خطوط مختلف علاقوں اور ملکوں سے جناب ہدایت اللہ صاحب فیچر رحمتہ لاحالیمین کے نام آ نا شروع ہو گئے ان خطوط کے مضامین کیا تھے ہی آ ہے انہیں کی زبانی سنئے۔

خلیفہ ہدایت اللہ صاحب بیان کرتے ہیں۔ میرے پاس بر مابنگال بہا ولیور وغیرہ سے کئی ایسے خطوط آئے ہیں جن میں بیر مرقوم ہے کہ رحمتہ للعالمین بھیج دیجئے کیونکہ ہمیں خواب میں آنخضرت علیقے نے ارشا و فر مایا ہے کہ اگر جھے ہے مجت جا ہے ہوتو رحمتہ للعالمین جوقاضی محمسلیمان نے کھی ہے پڑھا کرو۔ (کرامات الجدیث ۱۲۳)

اس عبارت سے کم از کم مندرجہ ذیل امور تو بری آسانی کے ساتھ بچھ میں آتے

ا۔ رحتدللعالمین بری مقبول سیرت النبی البنائیے ہے۔

U

٢۔ آنخضرت الله كنظر مبارك بورى ونيا كے مما لك يرب-

س۔ نبی اکرم تا جدار عرب وجم اللہ کو پورے برصغیریاک و ہندیس کیا پوری دنیا بیں کھی جانے والی کتابوں کا بالاستعیاب علم ہے۔

سے رسول با شی اللہ کو میں کھی علم ہے کہ پوری دنیا میں کون کون سیزت پر کام کرر با

٥ حضور برنورسيدعالم المنتية رحمة للعالمين كتاب يجى إخريي-

### تريكارعب:

بات دراصل ہے ہے آپ نے تحقیق کے جہاں میں قدم رکھا اور ہادے سادے مسلمانوں پراپی تُو ت تحریر کارعب جمانے کی کوشش کی اگر چہاں طرح بھی نا کام بی رہے گرایک زعم سا آ پکو ہو گیا شاید میں نے کوئی بڑا میدان مارلیا ہے۔اور آ پکی خال ہ تلاثی کی گئی تو وہ سارا کا سارا سامان آپ کے ایخ گھرے برآمدہ و گیا جو دکھا دکھا کر آپ نے بڑھکیں ماری تحییں اور دوسروں کومتا ٹر کرنے کی بجر لپور کاوش کی مختل ہے۔

اگرآ کے برزرگوں کی کتاب کی شہیر کا معاملہ ہوتو رسول الشیکائے کیلئے علم غیب بھی است کل کا نتات پرآ کی نظر بھی ثابت، ہر ہر مصنف سیرت کو بھی آپ جا نیں اسکے نام سے واقف اسکے کام سے واقف بیجان اللہ اگر یہی عقیدہ ہم رکھیں تو فورا فتوی شرک تیاراور بڑے آرام سے کہ دیا جاتا جوفوت ہو گئے انہیں کسی کی کیا خبر ، لیں اب آپ نی خبر لیجئے گا اپنے عقیدے ونظر بے کوسنجا لئے گا کہیں ہاتھ سے چھوٹ نہ جائے۔
آپ اپنی خبر لیجئے گا اپنے عقیدے ونظر بے کوسنجا لئے گا کہیں ہاتھ سے چھوٹ نہ جائے۔
الٹی سمجھ کسی کو بھی الیسی خدا نہ دے
دے آدئی کو موت پر سے بد ادا نہ دے

#### كمال نظررسول الله علية:

سیدعالم النظافی نے بہت سارے لوگوں کی خواب میں تشریف لا کرفر مایا کہتم لوگ اگر جھے ہوتو تاضی محمہ سلیمان منصور پوری کی کتاب رحمۃ للعالمین پڑھا کرو، کیا مبارک نظر اللہ تعالی نے اپنے محبوب کریم ہونے کا کو بیک وقت و کھے رہے جی تمام انسانوں پر نظر ہے، انکے اعمال پر نظر ہے انکی خصوصیات وقت و کھے رہے جی تمام انسانوں پر نظر ہے، انکے اعمال پر نظر ہے انکی خصوصیات

## ٢- امام الانبياء حضرت محمد قاضي محرسليمان صاحب كوبهى جانتے ہيں۔ كتاب رحمة اللعالمين كى عظمت!

سجان الله! کیاعزت وشان ہے آپ کے بزرگوں کی اور اکلیکھی ہوئی کتابوں کی دار تحسین دینے کو جی جا ہتا ہے۔ گر آپکا عقیدہ مانع ہے آپ نے جب عقیدت پیش کرنے کو ول چاہتا ہے۔ گر آپکا عقیدہ مانع ہے آپ نے جب عقیدے پر بات کی تو وہ وہ گل کھلائے کہ عقل و وانش دھنگ رہ گئی گر جب ہم نے آپ کے بزرگوں کا جائز ہلیا آئی تصانیف کا مطالعہ کیا تو تب یدواضح ہوا کہ جو آپ لکھتے ہیں وہ صرف ہمارے گئے ہے جب آپ کے اپنے گھر کے بررگوں کی باری آتی ہے تو وہ سب جائز ہوجا تا ہے جو کچھ ہمارے تی ہی شرک تھا۔

#### المح ساعبت جائة او!

نی اکرم تا جدار عرب و جمه الجائے نے ، کتاب کا اور اس کے مضنف کا نام لیکر فر مایا ،

اگرتم لوگ جمھے ہے جب چاہتے ہوتو رحمتہ للعالمین کا مطالعہ کیا کرو۔ امیر حمز و صاحب
کہیے کیسی تجی بات ہے اور کتنی بڑی عظمت ہے آپ کے مولانا صاحب کی اللہ اللہ قاضی سلیمان منصور پوری کی عظمت، وشان کا معاملہ رہا تو ایک طرف انکی کتاب رحمتہ للعالمین کی رفعت کا ، رسول اللہ اللہ فی استری کا معاملہ رہا تو ایک طرف انکی کتاب رحمتہ کتاب کو پڑھو جو قاضی محمد سلیمان نے کصی ہے۔ آخر میں اس کو کیا کہوں۔ اگر میر اقلم میں آپ کی طرف پر چانا تو وہ بچھ کہتا کہ آپ کا سرچکرا کر رہ جا تا مگر میں نہیں چاہتا میری بھی آ کی طرف پر چارا نے وہ وہ کھی کہتا کہ آپ کا سرچکرا کر رہ جا تا مگر میں نہیں چاہتا میری بھی آ کہ کی طرف کی چھرا نے والے ،

تحریر پڑھ کر آپ کو چکرا نے لگیس اور آپ لا کھڑ اکر گر جا کیں اور آپ کو سنجا لئے والے ،

اللہ اکبراللہ اکبر کہہ کر آپ کو ہوش میں لانے کی کوشش کریں مگر یہاں معاملہ پجھاور ہے۔ اللہ اکبراللہ اکبر کہہ کر آپ کو ہوش میں لانے کی کوشش کریں مگر یہاں معاملہ پجھاور ہے۔

پرنظرے اور انکی لکھی ہوئی کتابوں پرنظرے جبی تو فرماتے ہیں کہ اگر جھے سے محبت چاہتے ہوتو رحمتہ للعالمین پڑھا کرو۔

جو پھے مولاناعبدالمجید سوہدروی شاگر دمولانا محدابرا ہیم میر سیالکوٹی نے لکھا ہے اگر سیسب سی ہے ہے تو عقیدہ انہی لوگوں کا سچا ٹابت ہوا جومزرات انبیاء اولیاء پر حاضری دیتے ہیں۔اکو بعداز وفات بھی باؤن اللہ زندہ ہی جھتے ہیں۔

## اقبال كبتة بين!

مرنے والے مرتے ہیں لیکن فا ہوتے نہیں 
ہے حقیقت ہیں کبھی ہم سے جدا ہوتے نہیں 
موت کو سمجھا ہے عافل اختام زندگی 
ہے ہیہ شام زندگی صح دوام زندگی

## دنیا جرے ممالک پرنظر مبارک ہے!

ونیا میں بہت سارے مما لک ہیں جب تک ان سب پر نظر ندہویہ کیے پہتہ چلے کہ قاضی سلیمان منصور پوری کہاں ہیں پہلے ملک ہندوستان پر نظر کامل اور یہاں کا سب حال معلوم دوسرے نمبر پر اس ملک کے تمام صوبہ جات پر نظر اور پھراس شہر پر نظر جہاں قاضی جی رہتے ہیں اور یہی نہیں تم پورے شہر کے ایک ایک فرد پر نظر شہی تو قاضی میر سلیمان منصور پوری کا نام لیکر فرمایا اس کی کتاب پڑھا کرو۔

### داغ صاف:

امیر حمزہ صاحب آپ کے گھر کے بررگوں کے کمالات بڑے مسلم ہیں۔ بلکہ آپکو بھی تھیں۔ بلکہ آپکو تھیں تامہ پری لگا کئیں گے میں نے صرف آپ کے گھرے آپکو جوابات دیے

الى كين اب عمر بحرصفائى بيش كرتے رہے گا مجھى آپكے والمن سے انہيں كے لگائے جوئے واغ صاف ند ہول گے۔ اگر چەصرف ايكسل (Excel) بى استعال كوں ندفر مائيں۔ اگر ذبمن سے از گيا ہوتو يا وكرواديتا ہوں ليج مطالعہ فرمائے:

## سُجًا موتى!

اب میں وہ بات کینے لگا ہوں جو شاید بہت کی تلخ ہوگی گر ہوگی سُجّا موتی ای مقتقت سے سرموبھی انحراف ممکن نہیں کہ آپ لوگوں نے اپنے آپ کیو بہت بڑے تو حید پرست ہجھ رکھا ہے اورای زعم میں نا معلوم کیسی کیسی الٹی سیدھی ہا تکتے رہتے ہیں۔ میں قسما کہ سکتا ہوں اگر آپ انصاف سے کام لیس تو ضرور آپ پر واضح ہوجائے کہ جن امور کو آپ ووسروں کیلئے نہ صرف ناجا کز بلکہ شرک تک قرار دیتے ہوئے ذرانہیں امر ماتے وہ اموراگر آپ کے اپنے گھر میں ہوں تو آپ نے بھی قلم نہیں اٹھایا نہ فتوی فر بان استعمال کی ہے بلکہ اپنے گھر کے بزرگوں کیلئے زبان کھلنا تو ور کنار بلکہ وہ تو گئے ہوجاتی ہو ہوگئی پرواہ گئے ہوجاتی ہے۔ آپ بہت آئی یا ہو نگے ۔ بیج و تاب کھا کیس کے جھے بھی کوئی پرواہ میں ہوتے رہیں تا پا کہ کو جاتی ہیں ہوئے وہ کہ دی اور میں ہوتے رہیں تا پا کھاتے رہیں بیج و تاب میں نے جو بات کہنی تھی وہ کہ دی اور میں نے اپنا فرض اوا کر دیا اوراس میں کوئی کوتا ہی نہیں گی۔

لكصوك يلي جادًا

مولاناعبدالرحمن لکھوی صاحب جوا المحدیث حفزات کے بوے بررگ تھے امیر حزہ صاحب کے اکابرین میں اٹکا شار بلندیا پیاورصاحب کرامت بزرگوں میں ہوتا ہے وہ تو ایسے صاحب کمال متھ کہ ننگ دھڑ تگ مست ملنگ تک اٹلی بزرگی کے نہ صرف قائل تن بلك جلال الدين عرف جلوجيسے باولا دصاحب جائيدادلوكوں كوانمي ك طرف بيجاكرتے تھے كہ جاؤاگر بيٹالينا ہے تولكھوكى چلے جاؤوہاں سے بيٹامل جائے گامولاناعبدالجيدخادم سوہدروي شادگرمولانا محدابرا ہيم ميرسالكوني لكھتے ہيں۔ مولینا عبدالرحمٰن صاحب جب سفر حج کے لئے روانہ ہوئ اور جمبی بھنے کر جہاز کا كك خريدليا، اورجهاز چلخ كوتها كهآب في فرمايا مين جهاز برنيس جانا جابتا چنانچ كك والبس كرديا كميا، بجرايك مفتدك بعددوسر بجهاز ناورى كالكث خريدا، جب وه تيار مواتو آپ نے پھر یہی فرمایا کداس جہاز پر بھی نہیں جانا جا ہے، ہمرای حیران تھے کہ مولینا کیا کر رہے ہیں جان ہو جھ کر روائل میں تا خیر کرتے ہیں، مگر بالآخر آپ کا کہنا مانا، اور وہ مکث بھی والپس كيا، پيرتيسرے جہاز پرسوار ہوئے جب جدہ پہنچ تو معلوم ہواكہ يہلے دونوں جہازوں میں بیاریاں کھیل می اور حکومت نے انہیں جالیس جالیس دن کے لئے کامران روک لیاہے بعنی اگروہ لوگ ان جہازوں میں سوار ہوتے تو مہرون بعد جدہ پہنچتے کسی نے مولئینا ہے ہوچھا کہآپ کو کیونکر ہند چلاتھاتو آپ نے فرمایا کہ الہام ہواتھا:۔

قو ف: آپ کے بہت سے البامات اور کرامات اور بھی بین گریبال صرف انیس پراکٹنا کیاجاتا ہے۔ ۔ فادم مفی عنہ (کرامات المحدیث ۱۲) مجھے تو یوں لگتا ہے آپ لوگوں کی روٹی ہی ہضم نہیں ہوتی جب تک آپ اولیاء کرام کے خلاف پچھے کو یوں گلتا ہے آپ اولیاء کرام کے خلاف پچھے کہ دنہ لیس یا لکھے نہ لیس یا در کھیں آپکوسود ابرا ام ہنگا پڑے گا، اپنی زبان اور اپنی قلم کو لگام و بیجئے ورنہ قدرت جب انتقام لینے پر آتی ہے تو پھر کوئی اے روک نہیں سکتا۔ اللہ کے دوستوں سے محبت کرنی چاہیاں سے دشمنی ہر گر نہیں کرنی چاہے۔

#### مديث قدى:

اک حدیث شریف کو پڑھ کر بھی اولیا واللہ کے کمالات کا اٹکار مجھ سے بالا ہے چلیں میرا کا م منوانا تو نہیں ہے صرف سنانا ہے سووہ میں نے سنادیا میں نے اپنا فرض الجمدللہ بطریق احسن اوا کیا ہے آ گے آپ جانمیں اور آپ کا کام میرے و سے جو تھا وہ میں نے نبھا دیا ہے گومیری بات خاصی تلخ ہوگئی ہوگی مگر ہے تو حق اور حق سُچا موتی ہوتا مخالفت بھلا كونكرى جاسكتى ہے۔ان كوتوبل بل كى خرب-

میں کیا عرض کروں آپ خود ہی غور فرما کیں بیطر زعمل کتا لا کق التفات ہے۔
ہزرگوں کی باتوں کورونہیں کیا کرتے نہ ہی ان کے سامنے کی بات کا افکار کیا کرتے
ہیں بلکہ جیسے وو بھم صاور فرما کیں ویسے ہی کرتے ہیں۔ باٹا کہ یہی اوب ہے مگر اپنے
گھر کے ہزرگوں کا اگر ایسا اوب ہم اپنے مسلمہ اولیاء کرام حضرت غوث اعظم شیخ سید
عبد القادر جیلانی رضی اللہ عنہ، حضرت علی بن عثان جو یری المعروف بدوا تا مجنج بخش
رحمتہ اللہ علیہ اور دیگر ہوئے ہزرگوں کیلئے روار کھیں تو فوراً مشرکا نہ عقا کد ونظریات کا
لیمیل لگ جاتا ہے پیٹیس کیا کیا ہمارے کھاتے ہیں ڈال دیا جاتا ہے۔

امر حمزہ صاحب اٹھائے قلم بکڑ ہے قرطاس اور کیجے حق دیانت اوا۔ تاکہ آپکی صدافت ظاہر باہر ہو۔ جڑ ہے وہی فتوی اپ مولانا عبدالرحمٰن لکھوی پر جوفتوی ہمارے لئے پسندفرمایا تھالگا ہے تھم کہے کہ رہی مشرک نی العلم کے قبیل سے ہی ہے۔

## تاوری تیارمولا نالکھوی کا پھرجانے سے اٹکار!

مولاناعبدالرحن کھوی صاحب جج کا ارادہ فرما کر گھرے نظے بہتی جا پہنچ وہاں جہاز جدہ جانے کے لئے تیارتھا ساتھیوں نے تکٹ فریدلیا گرمولنا نے اس جہاز پرسوار ہونے سے انکار کر دیا اور بعد والا تکٹ بھی واپس کر دیا۔ ایک ہفتہ بہتی کی بندرگاہ پر تیم رہ تو پھرا گلا جہاز تیار ہوا جبکا نام'' ناوری'' تھا اس کیلئے بھی تکٹ فریدلیا گیا گریین موقعہ پرمولانا صاحب نے پھر جانے سے انکار کر دیا اگر چہ ساتھی تتحیر بھی ہوئے گر کسی کو سرتا بی تھم کی تابیہ ہوئی ہوتی بھی کیونکر میدا ہے بزرگ ہیں انکو آنے والے حالات کا علم ہے اگر نہیں علم تو صرف انبیاء کرام کو صابہ عظام کوا ورجلیل القدر اولیاء الله حالات کا علم ہے اگر نہیں علم تو صرف انبیاء کرام کو صابہ عظام کوا ورجلیل القدر اولیاء الله

مولانا عبدالحجید خادم سوہدروی صاحب کی مندرجہ بالا عبارت سے چند باتیں تو بڑی ہی صراحت کے ساتھ اظہر ہوتی ہیں، میں انکوآ سان الفاظ میں رقم کرنے کی کوشش کرتا ہوں۔

- ا۔ جمبئی سے جج کیلئے جہاز چلنے ہی والا تھا لیکن فکٹ خریدنے کے باوجوداس جہاز پر جانے سے مولانا عبدالرحمٰن کلصوی صاحب نے انکار کردیا۔
- ۲۔ پہلائکٹ واپس کردیا، دوسراجہاز ایک ہفتہ بعد تیار ہوا جس کا نام ناوری تھا،
  اس کے لئے تکٹ خریدا، کیل مولینا صاحب نے اس پر بھی روانہ ہونے سے
  انکار کردیا ساتھی جیران ہوئے گر حسب تھم ٹکٹ واپس کردیا۔
  - ٣- تيرے جاز پر ساريد ي
- سم ۔ تیسراجہاز جب جدہ پہنچا تو معلوم ہوا پہلے دونوں جہاز وں میں بیاری پھیل گئ تھی اور حکومت نے انہیں چالیس چالیس چالیس جا
  - ۵- اگر پہلے جہازوں پرمولانا سوار ہوجاتے تو چالیس دن بعد جدہ پہنچتے۔
- ٢- كى نے يو چھاتو مولانانے بتايا بيرب كھے جھے بذر بعد البام معلوم ہوگيا تھا۔

## دن كى روشى ميس ستارون كاحساب!

کیسا کمال ہے دن کی روشنی ہیں ستاروں کا حساب، انگی نقل وحرکت پر نظر، آنے والے حالات و واقعات پر پوری پوری نظر، آج کو جانے کا پختہ ارادہ، جہاز تیار نگٹ خرید لیا اور عین موقعہ پر روانہ ہونے سے انکار فرمادیا۔ مولانا عبد الرحمٰن تکھوی صاحب کے اس عمل مبارک پر ساتھیوں کا تخیر گر انکار تھم کی کوئی جرائے نہیں ان کے تھم کی

علیهم السلام وافی الله عنهم کو گران کے اپنے گھر کے برزگوں کو کائل علم ہے لیجئے ای ضابطے کومعیار بنا کر پر کھیے ذرا۔

#### منظرعام پر:

ایک طرف اللہ تعالی کے عظیم الثان انبیاء کرام رُسُل عظام، صحابہ کرام، ائمہ
دین، بڑے بڑے جید مشائخ، بے مشل علاء حق اور مسلّمہ اولیاء اللہ جن بیں حضرت شاہ
بہاؤ الدین ذکریا ملیانی، حضرت شاہ رکن عالم ملیانی، حضرت خواجہ معین الدین چشتی
اجمیری حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کا کی، حضرت بابافرید اللہ بن سجنج شکر، حضرت
خواجہ نظام الدین اولیاء وہلوی، حضرت امام ربانی مجد والف فانی شخ احمد سر ہندی
اور دیگر اولیاء عظام رحمتہ اللہ السلام رضی اللہ عظم ان کو تو آئندہ کا کیجے پینہ نہیں اگر کوئی
بیعقیدہ رکھے کہ انہیں آئندہ آنے والے حالات کا علم ہے تو یہ سب شرک مگر مولانا
کا محصوی صاحب کو بل بل کی خبرہے میشرک نہیں۔

آپ بیشک تڑیے، بلکے، سسکینے، دُھائی و بیجے گرسنوائی نہ ہوگی اس لئے کہ حوالہ آپ کے گھرکا ہے آپ نے کہ حوالہ آپ کے گھرکا ہے آپ نے تو عامۃ اسلمین کوراوح سے دائیں ہائیں کرنے کی بودی کوشش کی ہے بوداز ورصرف کیا ہے گرہم نے جوآپ کے گھرکی تلاشی لیکرآپ کے اندرونی حالات دلائل قاطعہ کے ساتھ منظر عام پر لا دکھائے ہیں اب لوگ قطعاً آپی طرف مائل نہ ہونگے بلکہ وہ ان شاء اللہ اولیاء اللہ کی محبت میں غرقاب ہوں گے۔

#### تيراجهاز!

مولا ناتکھوی صاحب نے ایک جہازمسِ (Miss) کردیااس کے بعدد وسر ابھی جانے دیا تب کہیں جا کر تیسرے جہاز پرسوار ہوئے۔اب وہ جہاز بمبئی سے سوئے

جدہ چلا، اپنا سفر طے کر کے جدہ بندرگاہ پر جا پہنچا، جب میر (تنیسرا) جہاز اپنی منزلِ مقصود پر پہنچ گیا تو پھر جومولا ناصاحب کی بصیرت، روحانی قوت، آئندہ ہونے والے واقعات وحالات سے پردہ اٹھا تو ان کے وہ وہ کمالات باطنی سامنے آئے کہ دیکھنے والوں کی آٹھوں کو خیرہ کر کے رکھ دیا۔ ایساروحانی تقر ف ایسی تو ت مشاہدہ کہ اللہ اللہ آنے والے پل بل کی آگا ہی کھلی کھلی آیات ہوہو کے رہ گئیں۔

اگراس طرح کا کوئی کمال ہماری کتب میں منقول ہوجائے تو امیر حمز وصاحب شور
عیا مجا کر آسان سر پراٹھا لیتے ہیں حواس باختہ ہوجائے ہیں ،آگے پیچے دائیں بائیں کی
کچھ خبر نہیں رہتی میہ سب تو رہا در کنار انہیں تو اپنی بھی خبر نہیں رہتی وہ زمین پر ہیں یا
آسان پر ۔اگر یفین نہیں آتا تو ''نہ نہی وسیاس باوے'''' آسانی جنت اور درباری
جہنم'''' شاہراہ بہشت' کو ذرا ایک نظر پھر دکھے لیں میرے قول کی صدافت ظاہر ہو
جائے گی۔

#### نظر دوريين!

مولا نالکھوی صاحب نے ایک جہاز چھوڑا، دوسراترک کیا اور تیسرے ہیں سوار ہوئے۔ جب آخری جہاز اپنی منزلِ مقصود پر بخیریت پہنے گیا تو وہاں جا کرمعلوم ہوا پہلے چلنے والے دونوں جہازا بھی جدہ نہیں پہنچ بلکہ وہ تو مراہ میں ہی کہیں روک لیے گئے ہیں لیجئے ایک بار پھرمولا نا کی کرامت کا ذکر تازہ فر ماہیے تا کتفیم میں آسانی ہو۔

پیر تیسرے جہاز پرسوار ہوئے جب جدہ پہنچ تو معلوم ہوا کہ پہلے دونوں جہازوں میں بیاری پھیل کی تھی اور حکومت نے آئیں چاہیں والیس دن کے لئے کامران روک با کے در کرامات المحدیث بیاری پھیل کی تھی اور حکومت نے آئیں چاہیں والیس دن کے لئے کامران روک با

#### آئده موتے والے واقعات:

کونی اور اللہ کا بندہ ہونے والے واقعات کی کیسی کی اور یقینی خبر ہے ایسی خبراگر
کوئی اور اللہ کا بندہ رکھے اور بتا دے تو شرک کا وہ طوفان کھڑا ہوتا ہے کہ تھے کا نام نہیں
لیت ، امیر حمز ہ صاحب تو اپنی خاص فذکاری ہے اسے ایسا بگولا بناتے ہیں کہ وہ چکر
کا نے لگتا ہے اور اس بگولے کی زویش بڑے بڑے جیدعلاء اور اولیاء تک آجاتے
ہیں نے اور کوشش انکی ہیہ ہوتی ہے کہ اس زور دار بگولے کی لیسے میں سوائے اسکے اور
ہیں نے چینواؤں کے باقی سب کے سب آجا ئیں اور ہیہ بگولا ان کو اڑا کر کسی ایسی دور
دراز جگہ لے جائے جہاں سے ان کا واپس آنا حمکن ہی نہ رہے۔ اور اگر ایسی کوئی
کرامت ان کے اپنے گھر کے برزگوں سے صادر ہوجائے تو چپ چاپ نہ صرف
گرامت ان کے اپنے ہیں بلکہ اس کوعین حق مانے ہیں اس دور فی کو کیا کہا جائے۔

#### ال پرتاسف ہے:

کہنا کیا ہے جس قدراس پر ماہم کیا جائے کم ہے جس قدر بھی اس کا افسوس کیا جائے کم ہے جس قدراس پر تاسف کیا جائے کم ہے جس قدراس پر تاسف کیا جائے کم ہے اگر ہم کہیں کہ آئندہ ہونے والے واقعات کا تمارے بزرگوں کو باؤن اللہ پنتہ چل جاتا ہے تو اس قید کے باوجو و بھی انکار کردیا جاتا ہے بلکہ اس پر مناظرہ تک کرنے سے گریز نہیں کیا جاتا اور جب اپنے گھر کے بزرگوں کی باری آتی ہے تو ان کو پیشگی پنتہ چل جاتا ہے آئندہ کیا ہوگاس کو بلا چون و چراشلیم کرلیا جاتا۔

بيكياتم ظريفي إيك بى كمال اكر مار برركون مين موتوصاف الكاراوراكر

یمی کمال ان کے اپنے برزرگوں میں ہوتو لائقِ اقبال۔ آخر کیوں؟ آپ کے گھرکے برزرگوں میں ایسا کونسا وصف ہے جو ان کوتو صاحب کمال رکھے اور ہمارے برزرگوں میں ایسا کوئی نقص ہے جو آئوتما م تر کمالات سے محروم کردے اگر نہیں بیادر ہاتو میں ایک بار پھر یاد کروادیتا ہوں لیجے مطالعہ فرمائیے۔

> تیسرے جہاز پرسوارہ وئے جب جدہ پنچ تو معلوم ہوا کہ پہلے دونوں جہازوں میں بیاری پھیل کئی تنی (کرامات الجدیث ۱۲)

### ووجهازول كويش آنے والے حادثدى خبرا

مولا ناتھوی صاحب نے جی کیلئے روائلی کے موقعہ پر جہنی کی بندرگاہ پرایک جہاز
کی تکرے خریدی پھرواپس کر دی کہ میں اس پر نہیں جاؤں گا، دوسرے جہاز کے لئے
مکٹ خریدی وہ پھی واپس کروا دی کہ میں اس پر بھی روانہ نہیں ہو نگا۔ اس کے بعد
تیسرے جہاز پرروانہ ہوئے۔ ایک بارٹکٹ خرید کرواپس کرنا، پھردوسری بارٹکٹ خرید
کرواپس کردینا اور روانہ نہ ہونا یہ حکمت سے خالی نہیں تھا۔ مولانا آنے والے حالات
سے چونکہ پوری طرح با خریجے اس لئے یقین کے ساتھ جہازوں کی تکٹ خرید خرید کر واپس کرتے رہے اوراپنی روائل میں تاخیر کرتے رہے۔

کیوں نہ ہوآ خرا ہمحدیث ہی کے امام و پیشوا ہیں۔ ہملا ان کی ادائی فاط کیے ہو علی ہے فلطی کریں تو ہوے ہوئے انکہ ذین کریں اولیاء اللہ شل بہاؤالدین ملتانی اور شاہ رکن ملتانی رحمتہ اللہ علیہ جنکی ولایت میں کو کی شک نہیں گریدتو فلطی سے پاک ہیں انہیں تو آئندہ ہونے والے واقعات کی پوری پوری خبر ہے۔خبر نہیں رکھتے تو بہاؤالدین ذکریا ملتانی نہیں رکھتے خبر نہیں رکھتے تو شاہ رکن عالم ملتانی نہیں رکھتے ای

### مولا ناشاه احمد نورانی رحمته الله علیه کی شفقت!

جن کا دوسروں کے حق میں نہ صرف اٹکار کیا جاتا ہے بلکہ اس کو کھا شرک تک قرار ویے سے ذراگر پر نہیں کیا جاتا رہا معاملہ کرامات کا تو امیر حمز ہ صاحب جب جہاز پر سوار ہوتے میں تو اپنے ایک ساتھی ہے اسکی بلندنی پرواز کا تگ تذکر وکرتے ہوئے ان لوگوں کا نہ اق اڑاتے ہیں۔ جواولیا ،کرام کی کرامات کے قائل ہوتے ہیں۔

میں نہایت ہی متانت ہے عرض کروں گا ہم نے آپ کے گھر کے بزرگوں کی ایک نہیں کئی کرامات کا ذکر کیا ہے اب اگر دیانت زندہ ہے شرافت باتی ،صدافت کا چراغ گل نہیں ہوا تو کھو لیے زبان ،اٹھا ہے قلم ، پکڑ ہے کا غذاور وہی انداز وہی الفاظ وہی گفتار ہواورا ہے: ہزرگوں پرطنز ومزاح کی کھری کھری کسینے تا کہ حق بین ہو گرکیا ہجال ہے جواب ایک جملہ بھی منہ سے نظاور سپر وقرطاس ہو۔

## مولاناعبدالرشيدقادرى رحمته للدعليه كى تربيت:

اگریش چاہتا تو بہاں وہ وہ پھبتیاں کتا کہ آپ دیکھتے رہ جاتے ، وہ وہ طنز و
مزاح کرتا کہ آپ کی ہوائیاں اڑ جاتی مگریش نے جس ماحول بیس تربیت پائی بینی اولا اپنے
والدین کی آغوش بیس ٹانیا گورنمنٹ کالج لاہور (G.C Lahore) بیس اور ٹالٹ حضرت
قائد ملت مولا ناشاہ احمد نورانی رحمتہ اللہ علیہ ، شخ کریم مرشدی حضرت مولا نا ابومجہ عبد الرشید
القاوری رحمتہ اللہ علیہ کی شفقت و تربیت بیس وہاں مجھے اس طرح کی کوئی کا در وائی کرنا سکھایا
ہی نہیں گیا جا ہے ہمیشہ تن گوئی ہی کی تربیت کی گئی اس کی تھیجت کی گئی اورای پر قائم رہنے کی
سنتین فرمائی گئی میں اس پر قائم :وں میرا اللہ بھے مرتے دم تک اس پر قائم و دائم
ر کھے ۔ (آبین)

لئے تو اسکے نام پر چلائی گئی ٹرین بقول امیر حمزہ صاحب خسارے میں جارہی ہے مگر کیا مجال جومولا تالکھوی صاحب کے روپے بھی ضائع ہوجا کیں۔

### موازنه ميل كياكرون:

موازنہ بین کیا کرواؤں بلکہ آپ خود کرلیں کہاں حضرت شاہ بہاؤالدین ذکریا
ملکانی رحمتہ اللہ علیہ اور کہاں مولانا عبد الرحمٰن کھوی صاحب کہاں حضرت شاہ رکن عالم
ملکانی اور کہاں مولانا کھوی صاحب بات بڑی مزے کی ہے آنے والے کل کی رسول
علیہ کو بھی خبر نہیں ہوتی بقول وہا ہی گر ان کے رہنما کو ضرور خبر ہوتی ہے ذراغور
فرما کیں امیر حمزہ صاحب آپ نے کیا پچھ کھو دیا شاید ہوش تو آپکوآئی جائے گی گریہ
فرما کیں امیر حمزہ صاحب آپ نے کیا پچھ کھو دیا شاید ہوش تو آپکوآئی جائے گی گریہ

# "الجمام پاؤل ياركازلف درازيس"

## كى كوكا نول كان خرينه مو!

اگر مولا نالکھوی پہلے دونوں جہازوں میں سے کسی ایک پر سوار ہوجاتے تو بیاری کا شکار ہوجاتے ۔ انہوں نے صرف اپنی ذات کو بیاری سے بچالیا بلکہ اپنے ساتھیوں کو بھی مکمل حفاظت عطافر مائی وادواہ لیڈر ہوتو ایسا ہو جو آئندہ حالات پر پوری پوری نظر رکھتا ہوا درآئندہ ہونے والے حادثہ کی قبل از وقت پیش بندی کردے۔

اپنی اوراپنے چاہنے والوں کی ایسی رہنمائی کرے انگواس طرح حفاظت کے قلع میں محصور کر دے کہ کسی کو کا نوں کان خبر نہ ہو نے ور فر ما نیس قار نمین: اپنے گھر کے بزرگوں کیلئے ہمارے بزرگوں کے لئے جن کا کھلا کھلا ا تکار کیا جاتا ہے۔وہ وہ کمالات نابت کیے جاتے اوروہ وہ فرقی عادات شلیم کی جاتی ہیں۔

اللہ اللہ اللہ الركمی جليل القدرولی كامل كوآنے والے واقعہ كى اطلاع ہوجائے اوروہ اس كا ظہار فرمادي تو اولا اس كاسرے سے بى الكاركر دياجا تا ہے اوراس كے خلاف طرح طرح كے حليے بہائے تراشے جاتے ہيں يہ كينے مكن ہے وہ كيے مكن يہ كيے ہو گياوہ كيے ہوگيا، يہ كيے مان لياجائے، اس امر كی تقد يق كيے ہو، اس معاملہ كى جھان پينگ كيونكر ہو۔ اگر يہ سب پچھ اپنے گھر كے بزرگوں كے ہو، اس معاملہ كى جھان پينگ كيونكر ہو۔ اگر يہ سب پچھ اپنے گھر كے بزرگوں كے حوالے سے بيان ہوتو پجركوئى اعتراض نيس شكوئى مخالفت نہ جنت ، نہ بيان نہ كلام بلكہ خاموثى كى زبان سے جمايت اوراس كى تقد يق كا اعلان واظہار، بيں چا ہوں گا ايك فاري کے مردول الكھوى كى كرامت تازہ كردول ۔

## ليجة زيرنظرلا ياكى سان ليجة!

''جب جدہ پہنچ تو معلوم ہوا پہلے دونوں جہازوں بیں بیاری پھیل کئی تھی اور حکومت نے آئیس چالیس چالیس دن کیلئے کا مران روک لیا تھا لیمی اگر و دلوگ ان جہازوں بیں سوار ہوتے تو میمون بعد جدو قریختے کمی نے مولانا سے پوچھا، کہ آپ کو کیونکر پہند چلاتھا، تو آپ نے فرمایا'' الہام ہوا تھا'' (کرامات الجحدیث یا)

ماكل الى الحق!

قار کین خور فرما کیں ،اگرہم انبیاء کرام اور اولیاء عظام کیھم السلام رضی الدیھھم کے بارے میں الدیھھم کے بارے میں ایسا عقیدہ رکھیں تو شرک شرک کی وہ صلوا تیں سنائی جاتی ہیں کہ کان من من کر تھے جاتے ہیں شرک کی مشین گن کھول دی جاتی ہے اور اس زور سے فائرنگ کی جاتے ہیں ہوا جا تا ہے ایسے برڈ چڑھ کر حملے کیے جاتے ہیں جاتی جس طرح حق و باطل کا محافہ گرم ہوا جا تا ہے ایسے برڈ چڑھ کر حملے کیے جاتے ہیں جسے کا فروں اور ایمانداروں کے مابین جنگ چھڑگئی ہو۔ نے نے مطالعہ کرنے والے جسے کا فروں اور ایمانداروں کے مابین جنگ چھڑگئی ہو۔ نے نے مطالعہ کرنے والے اور ان ہوتے ہیں ادر جب کوئی جواب فوراً چھپا ہوا ہا تھ نہیں گذا اور نظر سے نہیں اور انہوں کے بیان جنگ جواب فوراً چھپا ہوا ہا تھ نہیں گذا اور نظر سے نہیں

گزرتا تو وہ بیچارے انہی کی می ہا نکنے لگتے ہیں گربیرسب پھے در پانہیں ہوتا جلد ہی ختم موجا تا ہے جیسے جواب آن غزل سامنے آتا ہے دل ود ماغ فورا ہی حق کی طرف لوٹ جاتے ہیں جیسے بیتر کر پر پڑھنے والے لوٹ رہے ہیں جو کوئی بھی بیر پڑھے گا۔

انشاء الله وه مائل الى الحق موگا- برقلب حق شناس اس كوحق جان كراى كى تا ئيد پر كربسة موگا برزبان حق گويدنعره مستانه بلندكر كى زنده با دا سے اولياء كاملين زنده باد، زنده با دائے غلامان محمد الله في زنده بادا سے مفتیان حق زنده بادا سے گدایان غلامان صحابه كرام زنده باد، زنده با دا سے مجان اہل بيت، زنده با دزنده با دا سے گدایان دراولیاء زنده باد، زنده با دا سے مسلمانان عالم زنده باو

آ یے اب آپ کوآپ ہی کے بزرگ، جناب نواب صدیق حسن خال مجویالی ک بارگاہ میں لے چلوں تا کہ آپ کوان کے نظریات پڑھنے کا موقعہ دیا جائے۔مطالعہ سیجئے۔

> از تو میخوا ہم رسول الله مراد خویش را چشم امیدم نے گردد بروئے غیر باز

یارسول اللہ میں اپنی مرادآپ کی ہارگاہ اقدی سے بوری کروائے کا خواہش مند ہوں مجھے بوری پوری امیر ہے۔ کہ کسی اور کے در پراپنی حاجت کیکر جائے کی ضرورت پیش ندآ کے گی۔

نواب صديق حسن خال بهويالي كى التجاء!

امیر حمزه صاحب میں صرف اتنی گزارش کرنا جا ہتا ہوں، اگر ہم رسول ا کرم اللہ ہے۔ تا جدار عرب وجم کی بارگاہ اقدیں میں اپنی کوئی امید کیکر حاضر ہوں اور عرض گزار ہوں۔ یار سول اللہ ہم پر رحم فرمائے نظر شفقت سیجئے تو آپ کا قلم فوراً بلاسو ہے سمجھے دوڑ پڑتا لگائے۔ کہدو بیجے کہ نواب صاحب نے کھلے شرک کا ارتکاب کیا ہے۔ اگر آپ نے ان پر بیتھ نہ ندلگایا تو ہم شکوہ کریں گے آپ دورخی پڑھل کرتے ہیں اور جمیں آپی بیہ دورخی (Dual Policy) قطعاً پندئیس اور اب ان شاء اللہ قار کین کرام خود فیصلہ کردیں گے حق پر وہی ہیں جو یارسول اللہ کا فیسے ہیں الحمد للہ حق بین ہوا یہ ہمارا مقصد تھا۔ آپ کے لئے تو صرف اللہ ہی کا فی ہے۔ ہمارے لئے اللہ اور اس کا رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وہلم۔

### میں اس عارفانہ تجابل کے صدیتے

#### مير عول كاصدا:

آپ کے بزرگوں کو اگر ضرورت پڑجائے تو وہ نوراً اپنی حاجت کیکر سید عالم اللہ اللہ کی جارگاہ میں حاضر ہوجاتے ہیں اور کمال یقین کے ساتھ گویا ہوتے ہیں اور کہتے ہیں ابہ ہمیں اپنی حاجت کیکر کی اور کے در پرجانے کی ضرورت نہیں رہی ہیں عقیدہ اگر ہم کریں تو آپ کے ہاں سے صلوا تیں سنائی دیے گئی ہم رکھیں ای نظریئے پڑمل اگر ہم کریں تو آپ کے ہاں سے صلوا تیں سنائی دیے گئی ہیں اوروہ اتنی زور دار ہوتی ہیں کہ درکنے کا نام نہیں لیتیں واہ واہ کیا کہنا آپ کا آپ کی آپ کی گئی انداز میں بڑی دلچیپ میں نے بھی پہلے تو ارادہ کیا تھا آپ کا جواب آپ ہی انداز میں دے دوں مگر میری طبیعت نے جھے اس جانب جانے نہ دیا اس لئے کہ میں اولڈراویں ہوں۔ جھے آپ والا انداز زیب نہیں دیتا اس لئے میں نے انتہائی شائنگی اولڈراویں ہوں۔ بھے آپ والا انداز زیب نہیں دیتا اس لئے میں نے انتہائی شائنگی کا مظاہرہ کیا ہے اور واللہ رہیمرے دل کی صدائتی اس پڑمل کر دکھایا ہے۔

#### ہمیں انظاررے گا!

امیر حمزه صاحب، اب بھی قبُوری تُوری کی صدا بلند ہونی چاہے اب بھی برعق ہونے کا نعرہ لگنا چاہے، اب بھی گراہی کالیبل (LABEL) لگ جانا چاہے اب ہاور بغیر تح کی کئے ہم غریبوں پر فتو کی شرک داغ دیتا ہے اگر آپ اپنے نظریے پر
کمل یقین رکھتے ہیں اور اپنے عقیدے کو برحق بچھتے ہیں تو اب تقاضاء دیا نت یہی
ہے کہ آپ اٹھائے تھے کے طاس اور لکھنے فتو کی شرک اور اس کا انتساب سیجئے جتاب
نواب صدیق حسن خال بجو پالی کی طرف تا کہ احقاق جق ہوں کریں اور جو پچھ کہیں ان پر
کوئی شرافت نہیں اپنے گھر کے بزرگ جو پچھ بھی کریں اور جو پچھ کہیں ان پر
کوئی گرفت نہیں ان پر کوئی الزام نہیں اور اگر ہم اپنے آتا تا مولی علیہ السلام کی بارگاہ
ہے کی بناہ میں کوئی التجاء کریں تو مشرک قرار پائیں اور اس پر دلیل بیتا تم کی جائے
کہ ہم نے اللہ تعالی کو بچھوڑ دیا ہے اب ذراایک مرتبہ پھر خورسے پڑھ لیس آپ کے
بررگ نواب صدیق حسن خال بھو پالی کس ڈمرے ہیں آتے ہیں وہ یوں کہتے ہیں۔
بررگ نواب صدیق حسن خال بھو پالی کس ڈمرے ہیں آتے ہیں وہ یوں کہتے ہیں۔

یارسول اللہ! مجھے پوری پوری امید ہے کہ کی اور کے در پراپی حاجت کی جانے کی ضرورت پیش ندآئے گی۔ ضرورت پیش ندآئے گی۔

#### يى مارامقصودتها:

اگر ہم اپنے پیارے نبی تالیق کی بارگاہ میں پھیموض کریں اور انکو خطاب کرلیں تو آپ کے ہاں شرک کا فتوی بالکل تیار ملتا ہے اور اگر آپ کے نواب صدیق حسن خاں بھویالی صدائیں کریں تو؟

دیانت نام کی کوئی چیز اگر آپ کے ہاں بھی ہے شرادنت اگر اس جہان فانی سے رخصت نہیں ہوئی صدافت کا اگر ابھی جناز ونہیں نکلاتو جو بھم ہم گدایان وراولیاء پر لگایا ہے وہی تھم آپنے رہبر و رہنما اپنے امام و پیشوا نواب صدیق حسن خُاں بھو پالی پر

#### کداپی حاجت لیکر کسی اور کے در پرنہیں جانا پڑےگا۔ مصدقہ اطلاع:

اگرمؤلف'' نرجی و سیاسی باوے'' '' آسانی جنت اور درباری جہنم' اور'' شاہراہ بہشت' اپنے گھر کا ریکارڈ دیکھ لیتے تو ہر گزوہ انداز اختیار ندکرتے جومندرجہ بالاکتب میں کمیا گیا ہے۔ میں کمی بھی محنت کر کے ان کے گھر کا ریکارڈ ان کی خدمت اقدی میں بیش ندکر تا اگر انہوں نے مسلمہ بزرگوں پر ہاتھ ڈالنے کی کوشش ندکی ہوتی۔

جھے پرلازم ہوگیا ہے ہیں ان کوان کے گھر کی مصدقہ اطلاع دوں اور یہ واضح کروں
کہ جس جرم کی بنا پرآپ نے ہمیں مغلظات دی ہیں، ہم پرنب وشتم کیا ہے ہدیہ وہ جرم
آپ کے اپنے گھر ہیں بھی ہوتارہا ہے لہذا اب آپ پر بھی لازم ہے آپ ان لوگوں کووہ ی
عظم خاکیں جو ہمیں سنایا ہے لیجئے ہمت کا مظاہرہ فرما ہے اور فتو کی شرک اپنے گھر کے
ہزرگ پرصادر فرما ہے آگر آپ نے اب بھی اپنے تلکم کوویی ہی حرک دی جیسے پہلے دی
مقی تو پھر کھی بچھے تن صدافت ادا ہوہ بی جائے گا اور آگر اب آپ چپ رہے تو ہم بہا تگ
د بل کہیں گے آپ ظاہر باطن میں ایک نہیں ہیں اور خود سوچے گا جس کا ظاہر باطن ایک
منہ ہووہ کون ہوتا ہے اسے کیا کہتے ہیں۔ آپ کی خدمت میں آپ ہی کے بزرگ نواب
صدیق حسن خاں بجو پالی کا ایک اور تحقہ پیش کرنے کی سعادت حاصل کرر ہا ہوں ذراغور
سے مطالعہ فرما ہے تا کہ دل دوشن ہو۔

یا رسول الله زائر را برائے نمس چه کار بر سراغیار زو سنگ ترازوئے شا

( فی اطیب تا از نواب مدیق صن خال مجو پالی ) یا رسول الله و عنایت آپ کے اس کوکسی سے کیا غرض وعنایت آپ کے مجی بلاخوف وخطر قبوری عقیدہ قبوری عقیدہ کا شور کچی ہی جانا چا ہے اب بھی نام لے کے کرکہنا چا ہے نواب صدیق حسن خاں بھو پال قبوری ہو گئے تھے۔ مشر کا نہ صدا کیں لگانے لگ گئے تھے اس لئے ان کو بھی ای ڈمرے میں شار فر ماہیے جس گروہ میں آپ نگانے لگ گئے تھے اس لئے ان کو بھی ای ڈمرے میں شار فر ماہیے جس گروہ میں آپ نظار رہ نے ہم گذایان درا نبیاء واولیاء میسم السلام ورضی اللہ معظم کوشار کیا ہے ہمیں انظار رہ گا آپ کے دیا شرارانہ فتو کی کا۔

میں اپنے تمیں سالہ تجربہ کی بنا پر قبل از وقت ہی کد دینا ہوں قیامت آجائے گی مگر آپ سے اس کا جواب نہ بن پائے گا۔ پس چارہ آخر کار یکی ہوگا کہ آپ نواب صدیق حسن خاں بھو پالی پرمشرک ہونے کا فتو کی صادر فرما کیں۔اوروہ آپ سے ہونہ سکے گا۔

#### بدعت كالجوت:

آپ کو بردی بے قراری تھی ، آپ کو امت کاغم کھائے جارہا تھا ، آپ رات دن اس ملت کے درد جس بچھنے جارہے ہیں آپ پرشرک و بدعت کا ایک بھوت سوار تھا محسوں یوں ہوتا ہے جیسے نیند کے عالم میں بھی آپ کو بہی غمستائے جارہا تھا کہ کی بھی قبر والے سے نداء کیوں کی جائے آپ سوتے جاگتے ایک ، ہی نغمہ الاپ رہے تھے کہ قبر والوں سے نداء کیوں کی جائے آپ سوتے جاگتے ایک ، ہی نغمہ الاپ رہے تھے کہ قبر والوں سے کوئی التجاء نہیں کر فی چا ہے اب جو ہم نے آپ کے بزرگ کو یہی کا رنا مہ سرانجام دیتے دکھایا ہے تو کیوں سرتھام کے روگئے ہیں ہمت فرما سے اور حق سنتے ، اگر ذبن سے اتر گیا ہوتو میں پھر تازہ و کرنے کو تیارہوں لیجئے مطالعہ فرما سے۔

از تو میخوا ہم رسول اللہ مراد خویش را پہنے مطالعہ فرما سے۔
پہنے امید م نے گردد بروئے غیر باز ارسول اللہ میں جھے پکی امید م

د شنوں کے سر پرآپ ہی کے عدل کا پھر برسادینا جا ہے۔ اظہار مافی الضمیر!

یارسول اللہ! زائر رابرائے کس چہکاریارسول اللہ صلی اللہ علیک وسلم زیارت کرنے. والے کو کسی سے کیاغرض وغایت ہے۔

اگرایساانداز بیان ہمارا ہوتو ہمیں شرک کی زدمیں لایا جاتا ہے اوراعلان کرکر کے کہاجاتا ہے غیراللہ کو پکارنے والے مشرک ہیں اور یارسول الشفائی کہنے والوں پروہ نفرت کے تیرچلائے جاتے ہیں کہان سے پچنا ناممکن ندہوتو مشکل ضرورہوتا ہے۔ مظلوم کی آو!

امیر حمزہ صاحب آپ نے پیچان لیا ہوگا۔ یہ آپ بی کے بزرگ ہیں، یہ آپ بی کے امام ہیں ہے برزگ ہیں، یہ آپ بی کے امام ہیں ہے الک ہیں ان سے غلطی کا امکان بی خید یارسول اللہ ہیں گئے کہہ کہہ کرد ہایاں دیتے ہیں اور ہم یارسول اللہ ہیں ہیں ہوئے کہہ کہہ کرد ہایاں دیتے ہیں اور ہم یارسول اللہ ہیں ہیں تو شرک کا فتوی ! آخر وہ کوئی چیز ہے جو آپ کو شرک ہونے سے بچالیتی

ہاورہمیں شرک کی وادی میں دھکیل دیتی ہے خوف خدا پھی تو ہوتا ،اس قدر ستم ظریفی مجھی اچھی نہیں مظلوم کی آ وعرش تک جاتی ہے۔

جس جرم کو ہمارے سرتھوپ کرہم پر پڑ ھائی کی تھی اور بے سو بے سمجھے قام کو جنبش وے دی تھی اب پتا چلے گا اس کی حقیقت کیا تھی۔ اس الزام کی حقیقت پھر بھی نہیں سوائے ہٹ دھری کے اور پھی نظر نہیں آتا۔ آپ خود سوچیں کیا دیا نت اس کا نام ہے خود جومرضی کرتے چلے جا کا اور دوسروں پر دھڑ ادھڑ الزام تر اشی کا بازار گرم کے جا کہ جھوٹ بولنے کی بھی کوئی انتہا ہوتی ہے آپ نے تو وہ تمام حدیں عبور کر دی ہیں۔ خوف خدا اور شرم نجی آئے ہے کہ یہ بھی نہیں وہ بھی نہیں

#### رّازوكاينه!

قار کین محر م اغور فرما کیں جمیں یارسول اللہ کہنے پرمشرک تک کہنے ہے گریز نہیں کیا جاتا۔ اورا پنے گھر کے ہزرگوں کا بیحال ہے کہ یارسول اللہ اللہ اللہ کا نے اورا گر ہوئے ہوئے تمنائے زیارت بھی کرتے ہیں اور پھر دوسروں کی پچھ پرواہ نہیں کرتے اورا گر کوئی ان پراعتراض کی کوشش کرنے قشر بعت مظہر کا زبردست بداس کو وے مارتے ہیں تاکہ کم از کم سرتو بھٹ جائے مخالفت کرنے والے کا برازو کا بدو ے مارتے ہیں مطلب ہیں ہو عدل کا پھر ایساز ورسے رسید کرتے ہیں کہ مخالفت کرنے والے کا مرازو کا بدو والے کا سر ان کی کوئی مخالفت کرنے ہیں مزہ ہوتا ان کی کوئی مخالفت کرنے ہیں سائس نہیں آنے والے کا سر ان کی کوئی مخالفت کرنے ہوسے والی دورہ کھنے ان کے محل سے انکی سرت سے دلائل لاتے تو تا معلوم ہی اگر ہم بڑے بزرگوں سے ان کے عمل سے انکی سرت سے دلائل لاتے تو تا معلوم ہی اگر ہم بڑے بزرگوں سے ان کے عمل سے انکی سرت سے دلائل لاتے تو تا معلوم ہی اگر ہم بڑے بزرگوں سے ان کے عمل سے انکی سرت سے دلائل لاتے تو تا معلوم ہی اگر ہم بڑے برائر بڑا ہم کیا کیا الزام عائد کرتے عمراب معاملہ اپنے گھر برائر بڑا ہے و پچھے اب

ایک ایک حرف، ایک ایک جملہ، ایک ایک پیرا گراف صرف اور صرف شرک، بدعت اور گمراہی کی منہ بولتی تصویر ہواور پھراسکوذ مہداری ہے چسپاں کردیجئے ٹواب صدیق حسن خاں بھو پالی صاحب پر اور ساتھ ہی کھلے لفظوں میں اعلان فر ہائے کہ نواب صدیق حسن خاں بھو پالی نے چونکہ

'' مدواے طالع صدیق حسن خاں مدوے'' کہا تھا اس لئے وہ ارتکاب شرک کر کے زمرۂ مشرکین میں واخل و شامل ہو گئے نہ

### بالكام كمورا!

میں بھی اگر چاہتا تو آپ بی کی طرح بلکہ آپ سے سوگنا زیادہ بخت، زیادہ کڑے
اور زیادہ بھیا تک الفاظ کا استعال کرسکتا تھا۔ میں بھی اگر اس وادی میں قدم رکھ دیتا
جس میں آپ ساکن ہیں تو آپی خوب گت بنا تا گر میں چونکہ ایسے باحول میں پڑھا
موں جہاں ہٹ دھری ، غیر بنجیدگ نام کی کوئی چیز نہیں ہوتی ، وہاں تو نفاست ، بشرافت، دیا نت ،صدافت اور تن گوئی و بے باکی کا پرچار ہوتا ہے میری مراد ہے تلم کو چانا نائی کمال نہیں ہوتا بلکہ قلم کو اپنا اختیار میں رکھنا کمال ہوتا ہے گلا یوں ہے آپ کا قلم آپ کے اپنا اختیار میں نہیں رہاوہ تو کسی اور بی کی بولی بولٹا ہے وہ تو کسی اور بی کی مولی ہوتا ہے کوئی مسلمان جتنا بھی خت ہوجائے وہ حدود کو کبھی پایال نہیں کرتا گر آپ نے تو اوب ، متانت ، شرافت ، دیا نت ، نفاست اور شجیدگی کی تمام حدوں کو پامال کر دیا ہے اور ایسے بے لگام ہوئے کہ ہاتھ نہیں آتے ، یہ یا در کھیلیجئے بے لگام گوڑ اجب گرتا ہے اور ایسے بے لگام ہوئے کہ ہاتھ نہیں آتے ، یہ یا در کھیلیجئے بے لگام گوڑ اجب گرتا ہے تو اس کی ہڈی پہلی نہیں بھتی ۔

بال بال امير حزه صاحب اب بهي تومضمون تكارى فرماية اب بهي توصحافت كي

مقام پرآ کھڑے ہوئے ہیں جہاں سے حق برداواضح اور بے ججاب نظر آتا ہے قار کمین عظام فیصلہ فرما ہے امیر حمزہ صاحب کے اپنے گھر کے بزرگ کس طرح اپنے بزرگوں سے مدد کے طالب ہوتے ہیں توجہ فرمائے۔

> ہوں مااست حدیث ازلب جانال مددے مدداے طالع صدیق حسن خال مددے

(خُخ اطیب عفان نواب مدیق صن خان بحو پال) اے قاضی شوکانی آپ جاری تمنا ہو، لہذا محبوبوں کی طرح گفتگو کر کے مدد فرمائے۔مدد!اےصدیق صن خان کے مقدریدد!

زُمرة مشركين اور بعويالي!

کمال دیانت ہے، اگر ہم یا رسول اللہ بدد! کہیں تو موردالزام اگر ہم یاعلی بدد!

کہیں تو لا کق طعن، اگر ہم یاغوث اعظم بدد کہیں تو مرتکب شرک، ہم پر بلاسو چئے سمجھے
جا رحیت مگر اپنے گھر سے اگر میرسب پچھ صادر ہواور اس پر سند اور تجت بھی قائم ہو
جائے تو نامعلوم کم بحکمت عملی کے ماتحت اس سب پچھ کے ہوتے ہوئے بھی نہ کوئی۔
شور نہ ہنگامہ، نہ کوئی زورداروعظ نہ کوئی زوردار تحریراً خرابیا کیوں ہے؟

## كط لفظول مين اعلان:

امیر تمزہ صاحب غور فرمائے نواب ہمو پالی صاحب کے طرز تخن پر،اگر آپ واقعی توحید پرست ہیں،اگر آپ واقعی حق شناس ہیں،اگر آپ واقعی اپنے عقیدے پرمتنقیم ہیں تواب وفت آیا ہے شہادت حق کا کھولیے ذہن دیجے تحرک زبان کو، ہلا ہے کبوں کو اورنیس کی عبارت بتا ہے ، کیجئے اسکو مجتم اور منتقع الفاظ کی ترتیب سے اس عبارت کا يا رسول الله مدد كهنے والے يا

اے قاضی شو کال مدد کہنے والے
اب اگر ذرہ برابر بھی حقانیت آپ کے ہال ہوگاتو آپ اپنے باطل نظریات سے
فوراً تو بہ کریں گے آئندہ تا دم مرگ اس عقیدہ ونظریہ پر قائم رہیں گے کہ یارسول اللہ
مدد کہنا شرک نہیں ہے بلکہ بیدا یمان کی علامات میں سے ایک کھلی علامت ہے۔
کتمان حق!

غور کیا قار نئین کرام امیر حمزہ صاحب جسکوشرک قرار دیکر ہمارے گلے کی مالا بنا رہے تھے وہ ان کے اپنے ہی گلے کا طوق بن گیا اب اس طوق شدید حدید ہے بھی چھٹکارہ ممکن نہیں۔ کمال درجے کی ہیرا پھیری کرکے عامۃ اسلمین کو ڈرا کرشرک کا خوف شدید دکھا کر۔

یارسول الله مددا سے روکنا چاہتے تھے گرجب ہم نے امیر جمزہ صاحب کے گھر کی تلاثی لی تو بردی آسانی سے افکا پول کھل گیا ان کے بردے تو اپنے اکا برکومشکل وقت میں لیکارتے ہیں ان سے مدوطلب کرتے ہیں اور ان کے ناموں کی وہایاں دیتے ہیں چی امیر جمزہ صاحب کے علم میں ہے گراس کے باوجودوہ کمال کتمانِ حق کرتے ہیں۔

اگر کتمانِ حق نہیں تو اس کی وضاحت کیے ہو پوری ملّت غور کرے اور اپنا فیصلہ صادر کرے اگر ہمارا''یا رسول اللّٰہ'' کہنا معاذ اللّٰدِ شرک ہے تو ان کا قاضی شوکانی ہے مدد طلب کرنا تو حید کی کونی قتم ہے۔ طرزاپنائے اب بھی تو دیانت داری کا مظاہرہ کیجئے ہی اب دوہی صورتیں ہیں۔

-- چپ چاپ نواب صدیق حن خاں بھو پالی کوشرک کا مرتکب مان لیجئے۔
-- یا پھران کے مندرجہ بالاعمل کوموافق اسلام مان لیجئے۔
تیسراراستہ تو آپ کے پاس ہے نہیں جسکوآپ افتیار کرلیں۔
تیسراراستہ تو آپ کے پاس ہے نہیں جسکوآپ افتیار کرلیں۔
تیسراراستہ تو حیداور جماراشرک!

قار نمین کرام! آپ کوئتم ہے رب العالمین کی جلالت کی آپ نے ڈنڈی نہیں مارنی بلکہ جو پھی تق ہوں کے جوئٹ ہوں کو اپناعقیدہ ومسلک بنالیجئے۔ ایک طرف امام الانبیاء معفرت محمولی کی ذات اقدس اور دوسری طرف قاضی شوکانی ایک جانب حضرت علی رضی اللہ عنہ اور دوسری طرف قاضی شوکانی ، ایک طرف حضرت غوث اعظم شیخ سید عبدالقادر جیلانی رضی اللہ عنہ اور دوسری طرف قاضی شوکانی۔

اب فیصلہ آپ پر چھوڑ رہا ہوں کون زیادہ عزت وعظمت کا مالک ہے اور کس پر الطاف رب العالمین زیادہ نظر آتے ہیں کون رب تعالیٰ کے زیادہ قریب ہے قوت و طافت کس میں باذن اللہ اقوئی نظر آتی ہے۔

امير حمزه صاحب قاضي شوكاني كويون خطاب كرنا\_

ہوں مااست حدیث از اب جانا ں بدد ہے بدد اے طالع صدیق حن خاں بدد ہے اے قاضی شوکانی آپ ہماری خواہش وتمنا ہو البذا محبوبوں کی طرح لبوں کوجنبش دیجئے اور فرما ہے۔ بددا ہے صدیق حسن خاں کے مقد رید دیہہے آپ کی تو حید! اور یا رسول اللہ بدد! (صلی اللہ علیک وسلم) ہیہ ہمارا شرک اب فیصلہ ملت اسلامیہ کرے کون حق پر ہے۔

#### عام لام بندى!

امیر مزوصاحب بینواب صدیق حسن خان بھوپائی آپ ہی کے ہزرگ ہیں ا نا، بی تو ہو ہے تو حید پرست ہیں ان کے دامن سے تو داغی شرک بھی ہیوستہ ہوئی نہیں سکتا۔ان اوگوں کو تو صرف اور صرف اللہ تعالی ہی یا در ہتا ہے بیتو قطعاً غیر اللہ کی طرف رجوع نہیں کرتے مگر اتنا تو بتا ہے قاضی شوکائی کو کیا بجھ کر مد طلب کی جارہی ہے۔
مارار دکر نے لکے تو آپ ہوئی آن بان سے تھے مگر میر نے تم نے آپ کی آن بان سے تھے مگر میر نے تم نے آپ کی آن بان کو بان وان کر کے رکھ دیا ہے آپ نے اپنی مؤلفات 'شاہراہ بہشت'' نہیں آن بان کو بان وان کر کے رکھ دیا ہے آپ نے اپنی مؤلفات' شاہراہ بہشت'' نہیں وسیاسی باوے'' آسانی جنت اور در باری جہنم'' میں ہمارے خلاف عام لام بندی میں ہمارے خلاف عام لام بندی باتھوں آپ کی عام لام بندی میں مال کے رہ گئی دیا تھا مگر میر کے باتھوں آپ کی عام لام بندی میں مال کے رہ گئی ہے۔

جب حالات دین کی موافقت کی بجائے مخالفت کی طرف بودھ گئے اور ادکامات قرآن وحدیث کی طرف اوگوں کی توجہ ندر ہی زمانہ مجب سرائیم تکی میں مبتلا ہوا تو چاہیے تھا اللہ تعالیٰ کی بارگاہ اقدی میں التجاء کی جاتی اس سے مدوطلب کی جاتی مگر آپ کے ہاں تو بالکل اس کے برعم ہے۔ نواب صدیق حسن خاں بھو پالی یا اللہ مدد کہنے کی بجائے یوں کہتے نظراً تے ہیں لیجئے ایک بار پھر مطالعہ فر مائے۔

منور سنت مدد نعرہ ایمان مددے

## آپ كومجامد مان ليس:

یہاں زمانے کو چپ لکنے کی توت قاضی شوکانی صاحب کو بعداز وفات دین کا ڈھنڈورا پیٹنے والا قرار دے کران ہے التجاء کی جارہی ہے۔ اے ہی تب ہی زبان

#### راه اعتدال:

اب وقت فیطے کا ہے سوچنے کا نہیں ، اگر یا رسول اللہ! کہنا معاذ اللہ شرک ہے تو قاضی شوکانی ہے المداد طلب کرنا کیے تو حید بن گیا معیار دو ہرا نہیں ہونا چا ہے اسکو اکارہ بی رہنا چاہے اس شرکے ہے۔ اس امرکوشلیم کرنا ہی ہوگا کہ سیجے سمت وہی ہے جوائل حق اہلسنت و جماعت کی ہے ہیراہ اعترال کی ہے اسی راہ پر چل کر کا مرانی فیصب ہو گئی ہے بیتینا ہرصا حب عقل ہیں جا نتا ہے کہ دوسرے پراعتراض کرنا آسان ہے ادراعتراض کا جواب دینا بہت ہی مشکل کام ہے بہرنوع ہم نے ہوے کھلے کھلے انداز میں اور ہوئے ہی بین طریق سے احقاق حق اور ابطال باطل کیا ہے۔ زبان کوشت رکھا ہے ، انداز میں اور ہوئے وی بین طریق سے احقاق حق اور ابطال باطل کیا ہے۔ زبان کوشت رکھا ہے ، انداز میں اور ہوئے دیا اور نہ ہی انداز میان نہایت مشین رکھا ہے ، طرزخن کوادب کی حدود میں پابند کیا ہے آزاد نہیں ہونے دیا اور نہ ہی انداز میں گفتگو کی ہے۔

میں صرف انناعرض کرنا جا ہوں گا اگر کوئی بندہ حق کی تلائش میں ہوتو وہ کیا کر ہے امیر حمزہ صاحب کے مؤلفات'' نہ ہی و سیاسی باوے'' '' شاہراہ بہشت'''' آسانی جنت اور درباری جہنم'' کا مطالعہ کرے یا نواب صدیق حسن خاں بھو پال کی نفح الطیب پڑھ لیجئے آپ بھی نواب صاحب کو پڑھیں۔

> اندری دور که بازارسنن خاموش است شور سنت مددے نعرد ایمان مددے

( نج اطیب عن زنواب صدیق حن خاں بھوپالی) میدوہ زمانہ ہے کہ جہان سنن نے چپ می سادھ لی ہے، اے سنت کا ڈیڈھورا پیٹنے والے، اے نعرۂ ایمان ہماری مد دفر ماہیئے۔ حسرت ركس براو بار مقلد باتى است نيت نم در مژه ام ديده كريال مددب (نج اطيب عن ازنواب مدين حن خال بحويال)

اس رونے دھونے پر حسرت میہ ہے کہ مقلّد کا ایک بوجھ سارہ گیا ہے روتے روتے میری آنکھوں کی پلکیس تک خشک ہوگئی ہیں للبڈ الددے۔

سلاب كاراستدروك ديا:

ساری دنیا کے مسلمانوں کی ایک اکثریت امام اعظم ابوطنیفہ رضی اللہ عنہ کی مقلد
ہے۔ غیر مقلدین کو برصغیر میں اپنے نظریے کی اشاعت کرنے میں شخت دشواری اس
وقت پیش آئی جب مقلدین نے ان کو دلائل کے جہاں میں مات کر کے رکھ دیا، ظاہر
ہے امام اعظم ابوطنیفہ رضی اللہ عنہ کے مقلدین یعنی احناف نے غیر مقلدیت کے
سیلاب کا راستہ روک دیا اس کی الیمی پیش ہندی کی کہ سیلاب آنے سے قبل ہی ایک
مضبوط بند باندھ دیا۔ دلائل اور براھین کے آگے چونکہ کی کی نہیں چلتی لہذا غیر
مقلدین پر میدام انتہائی شاق گزرا کہ ان کولوگ عزت کی نگاہ سے دیکھنے کی بجائے کم
قطرف اور علم وفن سے دور خیال کرنے گئے اور حقیقت بھی بہی تھی۔ ان حالات و
واقعات کو دیکھ کرنواب صدیق حسن خال بھویالی چیخ اسٹھ۔

صرت كربيراوبارمقلد باقى است

اس رونے دھونے پر صرت توبیہ ہمقلدیت نے ہماری کمر تو ژدی ہے نواب صاحب روتے ہوئے قاضی شوکاں کی بارگاہ میں فریادلیکر حاضر ہو گئے حالانکہ قاضی شوکانی کو قبر میں گئے ہوئے مدت گزرگئی تھی۔ اور انکی بزرخی زندگی سے نواب صاحب آگاہ بھی تھے۔ جب مصیبت پڑی تو نواب صاحب نے قاضی شوکاں کولیں آپ ہی بولیں تو دین کی اشاعت ممکن آپ اگر آپ اب مدد فرمائیں تو احکامات قرآن وصدیث کی طرف لوگوں کی توجیمکن ہے۔

امیر حمزہ صاحب اگر آپ کے ہاں رائی کے برابر بھی دیا نت موجود ہے تو بغیر کمی تا خیر کے اٹھا ہے قلم پکڑ ہے قرطاس اور لکھے فتوی انداز بھی وہی ہوجو'' نہ ہبی وسیاس باوے'' کا ہے انداز وہی ہوجو'' آسانی جنت اور در باری جہنم'' کا ہے انداز بالکل ویسا ہوجیہا'' شاہراہ بہشت'' کا ہے۔

اگراندازوہی ہوگا جوآ کی مؤلفات ذکری گئی ہیں تو فتوی ہی وہی ہوگا جو وہاں مرتب
کیا گیا ہے تُبوری تُبوری کہہ کر مزاح اڑانے کی کوشش کی گئی ہے اب خودا ہے قلم سے
نواب صدیق حسن خال بھو پالی کو تبوری کہیے اوران پر فتوی شرک واغ دیجے جب آپ
ان کومشرک قراردیں گے تو ہم آپ کو مجاہد مان لیس گے گر آپ سے ایسا ہونہ سے گا۔
ان کومشرک قراردیں گے تو ہم آپ کو مجاہد مان لیس گے گر آپ سے ایسا ہونہ سے گا۔
احساس فر مدداری سے سیکدوش کیوں

قاضی شوکانی کونعرہ ایمان قرار دے کران سے مدوطلب کرنا بیتو شرک نہیں ہے
اب آپ تنہائی میں اپنے بی گریبان میں مندڈ الیئے اور سوچئے آپ نے قالم کو چلاتے
وقت احساس ذمہ واری سے سبکہ وقی کیوں اختیار کی۔ آپ کے ہزرگ قاضی شوکانی
سے مدد ما نگ کر پکے موحدر ہیں اور ہم یار سول الشفائی مدد کہہ کرمشرک قرار پا کیں ستم
ظریفی کی بھی کوئی حدموتی ہے آپ نے تو تمام حدود کو پا مال کر کے رکھ دیا ہے۔
امیر حمزہ صاحب کا کہنا ہیہ جب بھی کوئی مشکل پیش آئے تو مدد صرف اللہ تعالی
سے مائلی چاہے مگر ان کے اپنے گھر کے ہزرگوں پر جب مصیبت پڑتی ہے تو وہ کیا
کرتے ہیں آ سے مطالعہ فرما ہے:

ہدوطلب کی۔

#### جمله پسيا:

امیر حمزہ صاحب آپ نے جس انداز سے بزرگوں سے مدوطلب کرنے والوں پر اعتراضات کیے اوران پر شقاوت کے تیر برسائے ،اس وقت شاید آپ کو بیہ بھول تھی کہ جمارااندر کا حال کونسا کسی پر افشاں ہوگا جو ہم پر بھی جوابی جملہ ہوجائے گا دوسروں پر حملہ کر کے ان کو پسپا کرنے کی کوشش کرنا اور خودکو ان کے حملے سے محفوظ بجھنا ہیہ بہت بری جہالت ہوتی ہے۔

ہم بھی آ پکو گئی کر سرے میدال لا کیں گے اور پھر آپ سے دریافت کریں گے پریشانی کے عالم بیں اگر کوئی کی بزرگ کو یا وکرے اس سے استعانت کرے اس سے مدد کا طالب ہوتو اس کے لئے شری تھم کیا ہوگا؟ آپ چونکہ بوے بہادر ہیں فورا اپنی مؤلفات '' تم آبی و سیاسی باوے''' شاہراو بہشت''' آسانی جنت اور درباری جہنم'' کی روشی میں جواب دیں گے شرک میدہ گریان مددے۔

ای وقت جب آپ کی فوت شده بزرگ کے مدد طلب کرنے کوشرک قراردیں کے ہم فوراً آپ کے سامنے آپ کے بزرگ آپ لیڈر (LEADER) آپ کے مصلح (REFORMER) نواب صدیق حسن خاں بھو پالی کو یہ کہتے ہوئے پیش کردیں

نیست نم درمشرہ ام دیدہ گریاں مدوے (نج الطیب عیفواب صدیق خاں مجو پال) روتے روتے میری آنکھوں کی ملکیس خشک ہو گئی ہیں للبذا قاضی شوکاں

> انس بارائے پرستال نتوانم ورزید وحشت ول طلهم چثم غزالال مدوے

(نَحُ الشيب ٤٥ إزنواب صديق خال بجويالي)

میں رائے پرستوں بعنی مقلّدین کی محبت ہر گز قبول نہیں کر پہکتا ، میں دل کی آ زادی کا طالب ہوں اے ہرن کی آتھوں والے مدوفر ماہیۓ۔

#### غيرمقلدين كاناطقه بند!

جب امام اعظم ابو حنیفہ نعمان بن ثابت بن ژوطی مر زبان رضی اللہ عنہ کے مقلّد بن لیے امام اعظم ابو حنیفہ نعمان بن ثابت بند کر دیا تو بے چارے غیر مقلّد بن کا ناطقہ بند کر دیا تو بے چارے غیر مقلّد بن دلائل سے تو پورے انز نہ سکے البتہ رونے دھونے پر آگئے اور روتے روتے انہیں اللہ تعالیٰ تو یاد نہ رہا اگر یاد آئی تو قاضی شوکانی کی وہ بھی اس لئے کہ شاید وہ اسکے مخالفین نے اللہ عنہ بن جا کیں گریہاں بھی النا لینے کے سے غیر مقلّدین کی جان چھڑانے کا باعث بن جا کیں گریہاں بھی النا لینے کے دیئے بڑے۔

پر صرف کر دیا۔ زبان بھی مشتگی ہے بہت دور نکل گئی، ان حالات و واقعات نے احناف کومجور کر دیا کہ وہ اپناد فاع کریں اور ظاہر ہے جب احتاف نے زبان وتلم کو اپنے دفاع میں استعمال کیا تو پھر کون ایکے دلائل و براھین کی تاب لا تا۔

امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ کے مقلّدین کے ولائل نے عوام کا تاثریہ بنادیا کہ تمام مسلّمانوں کو مقلّدین کا احترام کرنا چاہے امام ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ کی تقلید کرنے والوں کوعزت کی نگاہ ہے ویکھنا چاہے اور ان لوگوں سے محبت کرنا چاہے جو امام صاحب کے مقلّد میں اس عوامی جمایت نے برصغیر میں غیر مقلّدین کی ترقی کا راستہ صاحب کے مقلّد میں اس عوامی جمایت نے برصغیر میں غیر مقلّدین کی ترقی کا راستہ تقریباً بند کردیا اس پرنواب صدیق حسن خاں بھو پالی بردا تلملائے اور پھریوں اپنے اتر با بند کردیا اس پرنواب صدیق حسن خاں بھو پالی بردا تلملائے اور پھریوں اپنے ارمانوں کو پروقرطاس کیا۔ لیجے انہی کے الفاظ ملاحظ فرما ہے۔

میں رائے پرستوں بعنی مقلدین کی محبت ہر گز قبول نہیں کرسکتا ول کی آزادی کا طالب ہوں اے ہرن کی آئکھوں والے ( قاضی شوکانی ) مدوفر ماہیۓ

جب دل تنگ ہور ہا ہودم گھنے لگے ، کا گفین پوری آب تاب سے حملہ آور ہوجا کیں تو اس ونت کس بارگاہ سے مدوطلب کی جائے بیے عقید ہ بھی جناب نواب صدیق حن خال بھو پالی سے حل کروالیجئے آ کچی مدد کرتا ہوں فتح الطیب مطالعہ کیجئے۔

دل ما از قفی رائے بہ تک آمدہ است

ہاں فضائے چمن سنت ماہاں مدوے

(خُ الطیب عِفازنواب صدیق حن خاں بھوپالی) ہمارا دل اس رائے بعنی اجتہاد سے ننگ آچکا ہے، اسے چمن کی می بہار، سنت کی چمک دھمک میس کئی چاندوں جیسے مدوفر ہائے۔ لبیک یارسول اللہ (صلی اللہ علیک وسلم)

### قاضى شوكال مدويرقادرين:

امیر حمزه صاحب اب سناہے کیسی رہی اب بتائے قاضی شوکاں مدد کرنے پرقادر ہیں؟ کیا قاضی شوکال کامرتبدان بزرگوں سے براہے جن کواہل ایمان مدد کیلئے یاد کرتے ہیں۔ آخراس مقام پر کیا تاویل کریں گے، کس طرح آب اینے آپکواور ائے لیڈر (LEADER)این رہبر،این چیشواکو بیا کیں گے۔ کیا آپ بیٹابت كرسيس كے كەقاضى شوكال مقام مرتبے ميں كى طرح ان بزرگوں سے اعلى ہيں برتر ہونا تو در کنارا کے برابر آنا تو محال، ان بزرگوں کے پاؤں میں آنے والی جوتی کے برابر بھی ٹیس اگران بزرگوں ہے جنکے یاؤں کی دھول برابر بھی قاضی شوکاں ٹیس مدد ما نگنا شرک ہے تو ان قاضی شوکاں سے ہرن کی آتھوں والے سے مدد ما نگنا آخر کوئی نص سے ثابت ہوگا۔ لبذااب نقاضاء دیانت یمی ہے اگر ایمان نام کی کوئی شے آپ ك بال بحى يائى جاتى ب، اگردين نام كى كوئى چيز آيك بال موتى ب، اگرشرافت نام كاكوئى كمال آ كے ياس بھى ب، اگرصدافت جيسى دولت كاكوئى جزوجى آ كے بان تا حال باتى إن عنو بورا يجيئ ان كا تقاضا اللهائية قلم، ليجيّ كاغذاور كلصة فتوى اورفتوى كى زبال وبي موجوآب نے اپن كتابول ميں استعال كى ہم دميدال بنيئ اور تريكي فتوی شرک نواب صدیق حسن خال بھویالی کے نام اور اپنے پرائے کا لحاظ رکھے بغیر فتوی صادر کرتے ہیں۔

## نواب بھویالی براتلملاتے!

اجتباد کے خلاف جب زباں کھولی تو دائیں بائیں پھی نظرنہ آیا آگے پیچھے پچھے نہ دیکھا حقائق کس طرف جارہے ہیں اس کی کوئی پرواہ نہ کی اور پورا زوررڈ اجتہاد وتقلید

#### مارادل اس رائے یعنی اجتہادے تک آچکا ہے۔ طاہر کھاور باطن کھا!

کیوں جناب امیر حمزہ صاحب آپ نے تو رف لگار کھی تھی۔ قبر والے مر گئے ہیں معاملہ ختم ہوا وہ نہیں سنتے وہ نہیں دکھتے، وہ نہیں مدد کرتے ہیں اور اگر کوئی قبر والے سے مدد کا طالب ہوتو اسے قبوری قبوری کہدکر آپ طعنہ دیتے ہیں مزاح کرتے ہیں اور پھراس پر برس پڑتے ہیں۔اولاً بدعت کا تیم چلاتے ہیں ٹانیا گراہی کا نیمزہ تاک مارتے ہیں ٹالٹا شرک کاراکٹ واغ دیتے ہیں۔

#### لب كشائى فرماية!

اب تو آپ سے مرتے دم تک جواب نہ بن پائے گا۔ اگر ہے ہمت تو ضروراب کشائی فرما ہے اب بھی تو وہی جارحا نہ انداز ہونا چاہے وہی زبان تضرف میں لا یے وہی صلوا تین سنا ہے جو یا رسول اللہ تاہیے مدوا یا علی رضی اللہ عنہ مدواور یا غوث اعظم رضی اللہ عنہ مدد کہنے والوں کوسنائی تھیں۔

اب تو آپ پر لازم ہے یا تو یہ مان کیجے کہ برزرگوں سے مدد طلب کرنا اور انکو باؤن اللہ امداد کرنے پر قادر ماننا شرک نہیں بلکہ جائز ہے اور اگر میہ بدعت، گرائی اور شرک ہے تو پھر کھے الفاظ میں نواب صدیق حسن خال بھو پالی کو مشرک قرار دیجئے اور داد مخسین وصول فرما ہے بصورت دیگر آپکواہل دانش ان کی صف میں کھڑا کرنے پر مجبور ہوتئے جن لوگوں کا ظاہر باطن ایک نہیں ہوتا یہ کون نہیں جانتا جو بندہ ظاہر پھے ہواور باطن تی جی سے بھی کسی جماعت کو یہ محسوس ہونے گئے کہ وہ تنزل باطن پچھ اسکومنافت کہتے ہیں۔ جب بھی کسی جماعت کو یہ محسوس ہونے گئے کہ وہ تنزل کی طرف کھنے کہتے ہیں۔ جب بھی کسی جماعت کو یہ محسوس ہونے گئے کہ وہ تنزل کی طرف کھنے کہتے ہیں۔ جب بھی کسی جماعت کو یہ محسوس ہونے گئے کہ کہ وہ تنزل کی طرف گئے کہتے کیں۔

### امام اعظم الوحنيف رضى الله عنه:

قرآن وحدیث کو تھے کیلئے ہوے ہوے ائمہ کرام کی علمی خدمات سے استفادہ کرنا ہر مستمان کو ہزار ہا منافع عطا کرتا ہے۔ ہزاروں مشکلات کو دور کرتا ہے اور ہزارول آ مانیاں پیدا کرتا ہے۔ سرز مین یاک و ہندیراللہ تعالی کے فضل وکرم سے امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ کے مقلد مین کا غلبہ تھا، غلبہ ہے اور انشاء اللہ غلبہ رہے گا۔ میں نے چونکہ اس كتاب كواس طريق ہے ہك كرتم يركيا جوعوماً اختيار كيا جاتا ہے ميں نے داؤنقل پر نقل ے کام لیا ہے اور ندای حوالے پر حوالدویا ہے البتہ میں نے جس طرح متانت کے ساتھ امیر حمزہ صاحب کو پکڑا ہے اور ان کے دلائل کا رد کیا ہے وہ ان کو بہت ہی راس آئے گاندزبان میں تخی نقلم میں ترشی ندعبارات میں طوالت، جو پڑھے میں وشواری کا سبب ہوں بلکہ نہایت ساوہ آسان اور عام فہم انداز اپنایا ہے تا کہ ہر ذی شعور پڑھ کر ہے فیصلہ کرنے میں آسانی محسوس کرے کدحق کس طرف ہے راجے والے بقیدیا تقدیق كريں مے كہ حق لبيك يا رسول الله صلى الله عليك وسلم كہنے والوں كے ساتھ ہے۔ غير مقلدین نے احناف یعنی امام اعظم ابوصنیفدرضی الله عند کے مقلدین کاروکرنے کی کوشش تو بجر پورک مگراس میں کا میا بی قطعانصیب نه ہوئی بلکہ کا مرانی دور بھاگ کھڑی ہوئی اس كيفيت كود كيه كر مندوستان ميس وبابيه كے مرخيل جناب نواب صديق حسن خال بھويالى كا وم گھنے لگا اور اس بیقراری کے عالم میں انہیں زندوں میں تو اپنا کوئی مدو گا رنظر ندآیا چنانچہ تاضی شوکانی مدتوں پہلے مر کر قبر میں تشریف لے جانیکے تقے وویاد آئے اور انہی کی بارگاہ ين فرياد كرتے گے۔

دل ما از قفسِ رائے بہ تنگ آبدہ است (تَح اطیب عے انواب مدیق حن خاں بھو پالی)

### شيخ سنت مددا قاضى شوكال مدداا

ہدآپ کا وہ عقیدہ ہے جو تو حید کے عین مطالق ہے۔اسکوآپ تو حید کہتے ہیں اور اگر ہم یوں عرض کریں۔

یارسول الله بدد یا نبی الله بدد (سلی الله علی وسلم)

تو آپ بلا تامل فتوی شرک لگاتے ہیں اب آپ ہی بتا کیں تمہاری تو حید کو واد
شیمین دیں یا تمہارے تجویز کردہ شرک' یارسول اللهٰ 'کو سینے ہے لگا کیں ہمیں تو کوئی
ایک لاکھ دو پید نفتر دے کر کے کہ قاضی شوکانی ہے بدد ما گوتو ہم بھی بھی تیار نہ ہو تگے
گرآپ تو بڑے حوصلہ مندوا قع ہیں جنکا کلمہ پڑھا ہاں سے بدد ما تگنے کوشرک کہتے
ہیں اورایک عام اُمتی قاضی شوکانی جیسی شخصیت سے بدد ما تگنے کو نہ صرف جا کر کہتے
ہیں بلکہ انکوا پنانصب اُحین (MOTTO) قراردیتے ہیں۔

#### رادت جال!

امرحمزہ صاحب آپ کواللہ تعالیٰ کی جلالت اوراسکے پیارے محبوب (جلا وعلاصلی
اللہ علیہ وسلم) کی رسالت کا واسطہ دیکر پوچھنا چاہوں گا آخر ہماراوہ کونسا جرم ہے جو
آپ کواس قدر نا لپند آیا کہ آپ نے اپنی مؤلفات میں سارازور ہمارے برزرگوں
بلکہ پوری امّت مسلمہ کے مسلّمہ برزگوں کے خلاف صرف کر دیا اور بار بارعبارتوں کا
ہیر پھیر کر کے قبوری قبوری کہہ کہہ کراوگوں کوہم سے ہتنظر کرنے کی کوشش کی مگر وہ تمام
ہیر پھیر کر کے قبوری قبوری کہ کہہ کہ کراوگوں کوہم سے ہتنظر کرنے کی کوشش کی مگر وہ تمام
الزامات جو آپ نے ہم پرلگائے تھے آپ پر بھی بعنیہ ٹابت ہو گئے تو پھر آپ نے
الزامات جو آپ نے ہم پرلگائے تھے آپ پر بھی بعنیہ ٹابت ہو گئے تو پھر آپ نے
الزامات جو آپ میں مورک قرار کیوں نہ دیا جنہوں نے اللہ ورسول اللہ جات و علا وسلی علیہ
وآلہ وسلم کوچھوڑ کر قاضی شوکانی سے مدو ما تگی اگر ذہن سے اثر گیا ہوتو میں از سر تو تاز و

استعانت کی جائے کمی کولائل مدد مانا جائے بقول امیر حمزہ مدد صرف اللہ تعالیٰ سے مانگی جائے آئے اب ان کے امام اور مقتذاء جناب نواب صدیق حسن خال بھو پالی کو دیکھیں کیا کرتے ہیں لیجئے مطالعہ فرمائے۔

زمرهٔ رائے در افتاد بار باب سنن شخ سنت مددے قاضی شوکان مددے

(تح اطیب عدادنواب مدیق حسن خاں بھو پال) جماعت مقلّدین سے باب سن لیتنی اہلحدیث کو پالا پڑھ گیا ہے لہذا شیخ سنت مدد! قاضی شوکا ل مدد!

#### فحالت الفانايرى!

امیر حمزہ صاحب رکھنے اپ دھڑ کے دل پر ہاتھ کیجے حق ساعت کرنے کی تیاری
وہ نواب صدیق حسن اور کے کوکا نے کیلئے تیار ہوجا کیں۔ بینواب صدیق حسن خال بھو پالی آپ ہی کے بڑارگ ہیں نا، بیتو برٹ ہی متنی ہیں ان کی تو کوئی اداخلاف قر آن وحدیث نہیں ہو سکتی ان کا تو ایک ایک عمل عین قر آن کی مند بولتی تصویر ہے۔ اصلاً جب مقلّدین نے انکوستایا اور بیان سے مقابلہ نہ کر سکے اور برٹ کی خجالت اٹھانا پڑی تو بے چارے نواب صاحب کوکوئی اور راستہ تو نظر نہ آیا جرف اور صرف ایک ہی مرف اور موف ایک ہی اور خوب التجا کیں کا دو وہ ان کی مدد کریں اور انکواحتاف کی جماعت کے سامنے اور خوب التجا کیں کیں تا کہ ووان کی مدد کریں اور انکواحتاف کی جماعت کے سامنے مغلوب ہوئے ہے بچا کیں۔ بین ایک ہار پھر تا زہ فر ہا کیں۔

شیخ سنت مددے قاضی شوکاں مددے (نح الطیب عداز نواب مدیق حن خال بحو پال)

کروادیتا ہوں لیجئے مطالعہ فرما ہے تا کہ راحت جاں کا باعث ہے۔ شخ سنت مددے قاضی شوکاں مددے

(خُ اطیب عین زنواب مدین حن خال مجوپال)

قار کمین محترم ایک طرف ' یا رسول الله مد و' اسکوامیر حمز و اینڈ پارٹی شرک قرار

دیتی ہے۔ اور دوسری طرف ' قاضی شوکال مدد ہے' اسکونہ صرف جائز رکھا بلکہ نواب
صدیق حسن خال بجو پالی نے اس طرح دہایاں دیں قاضی شوکال مدد!!اس کوتو حید
کے عین مطالق قرار دیا۔ فیصلہ آپ کریں حق پر کون ہیں' یا رسول اللہ' 'مدد والے یا
قاضی شوکال مددوالے دل حق شناس کا مؤقف یہی ہوگایارسول اللہ مدد کہنے والے ہی
بی ہوگایارسول اللہ مدد کہنے والے ہی

امیر حزه صاحب کا کہنا ہے جب پھے طلب کرنا ہوتو صرف اور صرف رب تعالیٰ کی بارگاہ اقدس سے طلب کرنا ہوتو صرف اور صرف کیا کرتے ہیں بارگاہ اقدس سے طلب کرنا چاہیے اب کے ایک کے الطیب کوذر انظر سے گزاریں لیجئے مطالہ فریا ہے۔

ارحم فقيراً جاء بابك راجياً انت القَمِينُ بحرمة الفقراء

(خُجُ الطيب الارزواب مديق صن خال مجو پالی) آپ کے دروازے پرمختاج حاضر ہے، اميرليکرآيا ہے آپ رحم فرمايئے آپ تک فقراء کی عزت کواستحقاق بخشنے والے ہیں۔ کھلے لفظوں میں طعی!

امير حمز و صاحب كھوليے آئكھيں اور پڑھے دن كے اجالے ميں اور اگر دن كى

روشی میں بھی نظر نہیں آتا تو عیک لگا لیجئے تا کہ واضح اور صاف نظر آنے گئے پڑھنے
میں آسانی ہو نور فریا ہے نواب صاحب کے اس شعر پر کیا خوب انداز بیان ہے۔
اگر ہم بھی اپنے آتا اپنے مولی حضرت مجھ تھی کی بارگاہ اقد س میں یوں عرض کریں تو
مشرک قرار پائیں اور ہمارے لئے کوئی زم گوشہ نہ رہے بلکہ ظلم وستم کی انتہا کر دی
جائے اور ہمیں کھلے فظوں میں طعن کیا جائے اور پھر یہاں تک بھی چین نصیب نہ ہوتو

ہم یارسول اللہ اللہ اللہ کہنے والوں کو مشرک تک قرار دیا جائے۔ اتنی نہ بڑھا پاک دامال کی حکایت دامن کو ذرا دیکھ ذرا بند قبا دیکھ دررسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا مثلیا!

اپنی باری آئی تو فقیر بھی بن گئے ، در مصطفی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر حاضر بھی ہو گئے ، امید بھی بندھ گئی یہ بھی یقین ہو گیا کہ آپ فقراء کے قدر دان ہیں اور یہ بھی متنایم کرلیا کہ نبی پاکستانی رحم بھی فریاتے ہیں۔ وادواہ کیا حسن عمل ہے نواب صدیق حسن خاں بھو پالی صاحب اگر یوں عرض کریں کہ:

یارسول اللہ: سلی اللہ عایہ وآلہ وسلم بیجتاج، بیرمنگتا آپی خدمت عالیہ ہیں،
آپ کے دروازے پرآپی دراقدس پرایک مختاج کی حیثیت سے حاضر ہے اورامید
لیکر آیا ہے کہ آپ مجھ پررقم فرمائیں گے اس لئے کہ آپ فقیروں مختاجوں کی پناہ گاہ
ہیں اس لئے مجھ فقیر (نواب صدیق حسن خاں بھو پالی پر) پر بھی رقم فرمائے ۔اگرؤ ہمن
ہیں اس لئے مجھ فقیر (نواب صدیق حسن خاں بھو پالی پر) پر بھی رقم فرمائے ۔اگرؤ ہمن
ہے از گیا ہے تو بھرتازہ فرمائے۔

ارحم فقيراً جاء بابك راجياً انت القمين بحرمة الفقراء

#### لغات عرب:

میں نے اس عربی شعر کا ترجمہ کرنے کیلئے عربی لفات ویکھی ہیں۔ کائی
محنت کر کے بیشعر ترتیب دیا گیا ہے الفاظ کوچن چن کر لایا گیا اوران کو خاصی مشقت
الٹا کر جوڑ اگیا اور کا فیہ ورد بف کا بھی کافی حد تک خیال رکھا گیا۔ سب سے بڑی خوبی اس شعر کی ہیے کہ اس بین نہایت عاجز اند طور سے اپنے آپکو بارگاہ رسالتِ آب سلی
التہ عابیہ وآلہ وسلم میں پیش کیا گیا ہے یوں محسوس ہوتا ہے گز ارشات کرنے والا دل کی
افتہ اللہ عابیہ وآلہ وسلم میں پیش کیا گیا ہے یوں محسوس ہوتا ہے گز ارشات کرنے والا دل کی
افتہ اللہ عاب ہے بیارے نجی لیا ہے جو اللہ واد کی کوزندہ یقین کرتا ہے اور فریاد
سننے پر پوری طرح قادر مانتا ہے اور پھر سننے تک ہی بات نہیں رہتی وہ من کر مدوفر مانے
کی پوری طاقت کے ہونے پر بھی یقین رکھتا ہے اس کو یقین کا بل ہے ہیں جس کی
بارگاہ میں ہجتی ہوں وہ جھ سے اور میر کی حالت زار سے بے جرنہیں ہے بلکہ پوری اطرح
بارگاہ میں ہجتی ہوں وہ جھ سے اور میر کی حالت زار سے بے جرنہیں ہے بلکہ پوری اطرح

فریاد جو کرے امتی حال زار میں ممکن نہیں کہ خیر بشر کو خبر نہ ہو

ندواويلاندد بانى!

امیر جمز وصاحب آپ تو قبر والول سے سوال کوشرک قر اردیتے ہیں آپ تو اہل قبور سے استعانت کرنے والول کو قبوری قبوری کہد کہد کر طعنے دیتے ہیں اور اسطر ح کے نظر یہ کوشرک کہتے ہیں اب بھی تو آپکو خاموش نہیں رہنا چاہیے جب جرم ایک ہے تو مرا ابھی ایک ہی ہوئی چاہیے یہ تو کوئی انصاف نہیں ہم یہ جرم کریں تو سز ابر ملا۔ اور اگر یہی جرم آپکے اینے بردگ آپکے اپنے نواب صاحب کریں نہ تو تقریر نہ سزانہ واویلا نہ جرم آپکے اپنے بردگ آپکے اپنے نواب صاحب کریں نہ تو تقریر نہ سزانہ واویلا نہ

( نُ الطیب عرفی اب مدیق صن خاں بھو پال) یا رسول اللہ مید منگنا آ کچے دروازے پر امید کیکر حاضر ہے رحم فر ماسیے کہ آپ ہی محتاجوں کی پناہ گاہ ہیں۔ رحم کی جھیک!

امیر حمز ہ صاحب اب آپ کا قلم ضرور حرکت میں آنا جا ہے وہی کھری کھری ( بزعم خویش ) نواب صدیق حن خاں بحویالی کو بھی سنا دیجئے جو ہم فقیروں کو سائی ہیں اور پورے زورے حق دیانت ادا کرتے ہوئے نواب صدیق حسن خال بحوپالى پرفتوى شرك لكائي اگرىم يارسول الله الله كېيى، اگرىم مد دكيلي ا ہے پیارے رسول الشفیائی کو پکاریں اگر ہم انکی بارگاہ اقدس میں منگتے بن کر حاضر ہوں تو آپ کی سانس ا کھڑی جاتی ہے آپکود مہ کی بیاری لاحق ہو جاتی ہے اور برد براتے ہوئے انداز میں بولنے کی کوشش کرتے ہیں اور شرک شرک کی گردان شروع کر دیتے ہیں اور اب جوآپ کے اپنے بزرگ بالکل ای طرح بلکداس سے بھی دو ہاتھ آ کے بڑھ کرمدد مانگ رہے ہیں التجا کیں کررہے ہیں اميدين لگارے بين اور رحم كى بحيك طلب كررے اور رسول اكرم الله كوتمام مخاجوں کی پناہ گاہ قرار دے رہے ہیں اب کیوں فتو کی شرک پٹاری سے برآ مد نہیں ہوتا آخر وہ کوئی حکمت و دانا کی کی صنب نا زک ہے کہ ہم یا رسول اللہ کہیں تو مشرک قراریا کیں اور آ کے نواب صاحب کہیں تو پکتے موحد رہیں۔ آخر بیفر ق کیوں ہمیں بھی سمجھا دیں۔ورنہ ہم سے جھنے کی کوشش کیجئے ہم آپکووضا حت ہے مجھائے دیے ہیں۔

وُ بِا كَى نَـشرك كَا فَوْ كَا نِهُ قَا بَلِ نَفرت آخر كيون؟ بمين بمي توسجه آني جا بيا - اكر بم كهين يار سول التُعَلِينية كرم يجيح توشرك اورآب كنواب صاحب كهين إرُ حَسمُ رسول الله رحم فرمائي توعين توحير

لگنا ہے آپ نے صحافی بننے کے شوق میں اپنے گھر کے بزرگوں تک کا مطالعہ میں کیا اور قلم پکڑ کر کاغذ پر دوڑ پڑے ورنہ آپ بھی بھی اس طرح کی مالا یعنی حرکت نہ كرتے۔اگرآپ كو با موتا كرآپ كنواب صاحب،آ بكيمولانا صاحب آ بكي مفنف صاحب، آ بك محقق صاحب آ بكي شاعرصاحب اورآ بكي اپ نواب صديق حسن خاں بھو پالی صاحب بے نبی کریم رؤف ورجیم حضرت محدرسول الله صلی الله علیه وآلہ وسلم کی بارگاہ اقدس میں یوں التجائیں کرتے ہیں یوں استعانت کرتے ہیں اور یوں عدا کی کرتے ہیں اور صدا کیں لگالگا کراہے سائل پیش کرتے ہیں اور یوں بر ملا

ارحم فقيرا جاء بابك راجياً انت القمين بحرمة الفقراء

( مح اطيب عدازنواب مديق حسن خال محويال) یار سول اللہ! بیمختاج امیدلیکرآپ کے دروازے پر حاضر ہے کہ آپ ہی فقراء کی عزت كينكبان بين-

معامله طشت ازبام!

الله تعالی کالا کھالا کھ شکر ہاس نے میری دعمیری فرمائی کہ آپ کے اپنے گھرے ماری تائد ونفرت میں براھیں میسرآئے ورندآپ کی ک زبان استعال کرنا مارے

لئے خاصا مشکل کام ہوجاتا۔ بہرنوع میں نے آپ والا انداز اپنانے کی بجائے صاف تقراا نداز اپنایا اورائتال دیانت داری سے آپ کے مبارک خال و کی تلاثی لیکر ووسب سامان آ کی خدمت میں پیش کرویا جس کی بناپرآپ نے ہمیں مشرک تک قرار دینے ہے گریز نہیں کیا تھا اور ساتھ ہی ساتھ بیکوشش بھی پورے زورے کی تھی کہ جونیا بندہ جونو جوان اس تحریر کو پڑھے فورا و ویقین کرے کہ جو پچھا میر حمزہ صاحب لکھتے ہیں وہ سب درست وسی ہے مگر افسوں ایسا ہوندسکا کہ ہم نے برونت آ یکی خرالیکر معاملہ طشت ازبام كرديا-

امر حمزہ صاحب آئے میں آ پکوآپ ہی کے بزرگ، جناب نواب صدیق حس خاں بھو یالی صاحب کی خدمتِ عالیہ میں لے چلوں اور دکھاؤں کہ وہ نبی کریم صلی اللہ عليه وآله وسلم كي بارگاه اقدى مين كن طرح عرض گزار بين ليجيئے آپ بھي مطالعه فرمائين اور مخطوط مول-

> احسن السي عبد بحبك لائل اوى البك مسخسافة الاعداء

( تح الطيب الاازنواب صديق صن خال بحويالي) آپ اپنی محبت کے سبب بندہ پراحسان فرمائے وشمنوں کے ڈرے آ کی حفاظت و پناه میں آیا ہوں بچا کیجئے۔ وولت لازوال:

کیا نداز کیمیاگر ہے۔ کیافکراعلی ارفع ہے۔ کیا اظہار عقیدت ہے کیا اظہار محبت ہے، کیاا ظہارصدافت ہاور کیااظہارزاہدہ۔اس شعرکو پڑھنے کے بعدول میں ہی احساس بوری آب وتاب سے رہنے بنے لگتا ہے کدرمول اکرم تاجدار عرب وعجم صلی

الله عليه وآله وسلم كى محبت ايك اليى دولت ب جولاز وال باس كوسينے ميں بسار كھنا سعادت مندى ب اوراس سے محروى نہايت برقتمتى ب مولاناحس رضا رحمت الله عليه نے بھى اپنے جذبات واحساسات كا اظہار كيا خوب انداز ميں فرمايا ب آپ بھى پڑھيے۔

> موت آ جائے گر آئے نہ ول کو آرام دم نکل جائے گر لکلے نہ الفت تیری (دوق افت)

#### اظهارعقيرت:

امیر حمزہ صاحب اگر آپ کے بزرگ جناب نواب صدیق خال بحویالی صاحب
اپنی عقیدت کا ظہار کریں تو دوبالکل درست ہے اگر وہ اس طرح گویا ہوں کہ یارسول
الشعافی بین آپ کی محبت بین بے تاب ہوں آپ اپنی محبت ہی کے سب سے مجھ پر
احسان فرما ہے بین دشمنوں ہے نزنے بین پھنس چکا ہوں اس مشکل ترین گوئی بین
میری مدد فرما ہے بھے اپنی حفاظت کے قلعہ بین لے بہتے بین آپی بناہ حاصل کرنے
میری مدد فرما ہے بچھے اپنی حفاظت کے قلعہ بین تو حید کے مطابق شرک کی آلائش تک
آیا ہوں مجھے دشمنوں سے بچا لیجے ، تو یہ سب عین تو حید کے مطابق شرک کی آلائش تک

شراقهالک بی کهون گاکه ومالک کے صبیب یعن مجوب و محب میں نہیں میرا تیرا زبان وادب کے ضابطے معطل:

تو آپ کوا بے حواس پر قابور کھنامشکل ہوجاتا ہے۔عقل کے تمام تقاضے بالاے

طاق ہوجاتے ہیں۔اپخ تلم پر ہرگز کنٹر ول نہیں رہتاوہ بے لگام دوڑا جاتا ہے تھا کُق کی پر واہ تک نہیں رہتی زبان وادب کے تمام ضا بطے معطَّل ہو کے رہ جاتے ہیں۔آپ اس طرح کی عبارات لکھتے ہیں جو دوسروں کو کیا مجھآ کئیں گی خود آ پکو بھی وہ مجھ نہیں آتی ہوں گ۔

چند الفاظ تو آ کے پہندیدہ ہیں۔ بدعت، گراہی اور شرک انکا استعال تو کو بڑھال ہیں کرنا ہوتا ہے۔ موقعہ بے نہ بے آپ نے ان الفاظ کوضر وراستعال کرنا ہوتا ہے۔ شایدان کے استعال ہے آ کچو فاصاسکوں میسر آتا ہے ہم بھی اس کے کاناف نہیں ضرور ان الفاظ کو استعال ہیں لایے ہیں گریہ صرف ہمارے لئے اور مارے اگا ہونے ہی نہوں بلکہ ان سب کے لئے ہونے چاہیے جو ان کا مضداق ہیں آپ کا نظریہ ہیہ ہے کہ مدد کیلئے صرف اللہ تعالی ہی کو پکارنا چاہیے اور اگر مضداق ہیں آپ کا نظریہ ہیہ ہے کہ مدد کیلئے صرف اللہ تعالی ہی کو پکارنا چاہیے اور اگر مشرک کہنے ہے ہی گر ہوں ہوئے ہے، گراہی ہاور یہناں تک کہ آپ مشرک کہنے ہے بھی گر ہواں نہیں ہوتے تو اب آپ نواب صدیق حسن خال بھو پالی کو مشرک کہنے ہے بھی گر ہواں نہیں ہوتے تو اب آپ نواب صدیق حسن خال بھو پالی کو مشرک کہنے ہے بھی گر ہواں نیک ہو ہم غریبوں پراگایا تھا۔ اگر ذہن ہو ہا کی ۔ ہاں ہاں لگائے وہ فتو کی جو ہم غریبوں پراگایا تھا۔ اگر ذہن ہے ۔ نواب ہے تو میں ایک بار پھر ذہرا ویتا ہوں تا کہتا تو ہوجائے۔ لیجئے مطالعہ فر ہائے ۔ نواب صاحب یوں عرض کرتے ہیں۔

## طال ول سائي:

'' آپ اپنی محبت کے سبب بندہ پراحسان فر ہائے دشمنوں کے ڈرے آپکی حفاظت و پناہ حاصل کرنے آیا ہوں الہذابچا لیجئے''۔

( في الديب الدارنواب صديق صن خال بمويالي )

حضرت محمدرسول النُمالِيَّةِ بن بين جنگ دم قدم سے مصائب وآلام ختم ہو سکتے ہیں جنگی یا دسکون قلب کا باعث بن سکتی ہے، جنگی محبت تمام مصیبتوں کا مقابلہ کرنے کی جرأت پیدا کرسکتی ہے۔

اب نواب صاحب نے قلم اٹھایا اورا پے قلبی جذبات واحساسات کا اظہار کیا۔ آپ بھی اس کامطالعہ فرما کیں۔

''یا رسول الله ﷺ آپ ہی ، پریشان حالوں، بلوی زدوں، رخج و الم کی تختی برداشت کرنے والوں کی ڈھال ہیں''۔

(فقح الطيب الاازنواب صديق حسن خال بجويال)

مصيب كسى رجى آكتى ب:

مجھے کہنا صرف یہ ہے۔ کیا مصیبت صرف اہلحدیث حضرات پر ہی آتی ہے کی
اور پرنہیں آتی ۔ کیا مصائب وآلام کا بازارا ہلحدیث ہی کیلئے گرم ہوتا ہے کی اور کیلئے
گرم نہیں ہوتا ۔ کیا مشکل صرف انہی پرآتی ہے کسی اور پروارڈپیس ہوتی ۔ کیا کا مصرف
المحدیث ہی کے بگڑتے ہیں کسی اور کے کا منہیں بگڑتے ۔ اس کا جواب درکار ہے اور
جواب بیقینا ہی ہے کہ کیوں نہیں مصیبت کسی پر بھی آسکتی ہے،مصائب وآلام کا بازار
کسی کیلئے بھی گرم ہوسکتا ہے ۔ مشکل کسی پر بھی پڑسکتا

اگر مصیبت کا آنا، کام کا بگزنا، مشکل پڑنا بدرسول کریم آنگی کو پکارنے کی دلیل ہے جبیبا کہ مصائب کے وقت نواب صدیق حسن خال بھو پالی نے پکارا ہے تو جب سے نعرہ انکے لئے شرک نہیں تو دوسرول کے حق میں شرک کیوں ہوگا کیوں جناب نواب صاحب نے کوئی خاص تتم کالباس زیب تن کیا ہوا تھا جو وہ شرک پروف (SHIRK قارئین محترم! آپ نے مطالعہ فرمالیا ہمارا نقط نظر کیا ہے اور امیر حمزہ صاحب کا نقط نظر کیا۔ ایک ہی بات، ایک ہی نظریہ، ایک ہی عقیدہ، ایک ہی اظہار بیان محرفتویٰ میں تضاد، اگر ہم کہتیں یارسول النہ قائے ہے گی بارگاہ میں گھیرائے ہوئے آئے ہیں دشمن چیچا کررہے ہیں ۔ آپ شحفظ عطا فرمائے تو بیٹرک اور اگر یہی بات المحدیث کے بررگ امام نوا بیٹے صدیق حسن خال بھو پال کہیں تو تو حید فیصلہ آپ فرمائے۔

بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں مس طرح عرضِ حال پیش کی جاتی ہے۔ حال دل مناف کے کیلیے ولی جذبات مس طرح کی ہونے چاہیں۔ آ ہے جناب نواب صدیق حسن خاس بھو پالی صاحب کا ایک انداز آ کچی خدمت میں پیش کردوں مطالعہ فرمایے ول باغ ہاغ ہوگا۔

كن انت مخرون جارجَنَّة من هذا البلواي وذي الاواع

(خی اطیب الا اد نواب صدیق حسن خاں مجو پالی) یارسول اللغ اللی کی تختی ورخ والم یارسول اللغ اللیک آپ ہی پریشاں حالوں کے محافظ ہیں اس ہلوی کی تختی ورخ والم ں۔

مصائب وآلام كاعلاج!

جب نواب صدیق حسن خاں بھو پالی پر مصیبت ٹوٹی ،مصائب وآلام نے ان کی طرف رخ کیا تو آب ہو شکانے آئے اور یقین آگیا کہ اب کوئی اور مدوثیں کرسکتا، اب مال ومنال بھی نفع نہیں و سے سکتا اب اگر کوئی مددگار ثابت ہو سکتا ہے اور اب اگر کوئی مصائب وآلام کی شدت کوشم کرسکتا ہے اب اگر کوئی مصائب وآلام کی شدت کوشم کرسکتا ہے اب اگر کوئی مصائب وآلام کی شدت کوشم کرسکتا ہے اب اگر کوئی جمزی بنا سکتا ہے تو وہ فقط امام الانہیاء اب اگر کوئی جمزی بنا سکتا ہے تو وہ فقط امام الانہیاء

صدیق حسن خاں بھو پالی صاحب کا ایک اورانداز دکھاؤں مطالعہ فرمایئے ول راحت یائے گا۔

> يا ايهاالشمس الرفيع مكانه ضاءً ت بنورك ساحة الرياءِ

( تُح اطیب الا نواب صدیق حن خال بجوپالی) اے بہت ہی بلند و بالا مقام والے آفتاب آپ ہی کے نور سے زمین و آسان کی وسعتیں روشن و تا بال ہیں۔ بناو فی گرج:

اگرہم اور ہمارے بزرگ اپ آقا مولی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے لئے ایسے جذبات واخساسات کا اظہار کریں تو امیر محزہ صاحب لٹے لیکر ہمارے پیچھے پر جاتے ہیں اور ہوڑتے ہوئے وہ ہا ہے لگ جاتے ہیں تی وتاب کھا کہ ہم پر گرجتے ہیں اور اپنی بناوٹی گرج سے ہمیں ڈرانے وحمکانے کی مجر پورکوشش کرتے ہیں۔ اپنی بناوٹی گرج سے ہمیں ڈرانے وحمکانے کی مجر پورکوشش کرتے ہیں۔ (ووایک جگہاں قدر برہم نظراًتے ہیں گویا عمل ووائش سے پیدل ہی ہوگے ہوں)

هكستِ فاش:

اگر چہ وہ اس کوشش میں قطعاً ناکام ہی رہتے ہیں گر پورا زور صرف کر کے وہ دوسروں کو اپنی طرف ماکل کرنا چاہتے ہیں گر جارے وائل کے سامنے اٹکی چلتی نظر خوبروں کو اپنی طرف ماکل کرنا چاہتے ہیں گر جارے وائال کے سامنے اٹکی چلتی نظر خہیں آئی میرے رہ نے چاہاتو اٹکواس میدان میں ایسی شکست فاش ہوگی کہ دوبارہ مجھی ان ہزرگوں، حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری، حضرت خواجہ قطب الدین بخشی ان ہزرگوں، حضرت خواجہ قطب الدین بخشی بن عثمان جو بری المعروف بدواتا بخشیارکاکی، حضرت بابا فرالدین گئے شکر، حضرت علی بن عثمان جو بری المعروف بدواتا

ائے لئے شرک نہیں تو دوسروں کے حق میں شرک کیوں ہوگا کیوں جناب نواب PROOF) ہوگئے ہے۔ ایار سول اللہ عقاب کہنا تقاضا جا کیان ہے۔

جواب در کارے امیر تمزہ صاحب ہے، جھے انظار رہےگا۔ جس اپنے تمیں سالہ تجرب کی بناپر قبل از وقت کے دیتا ہوں۔ اب قیامت تک جواب نہیں آئے گا کیونکہ جو شرک ہمارے کھاتے ہیں ڈال کر اپنے تا کیں کا مرانی کا دروازہ کھ تکایا تھا اور ہمارے فلا فلا نے پوری طرح عام الام بندی کرنے کی کوشش کی تھی شرک کی جو بالا ہمارے گلے ہیں فلا فلا فی کوشش کی تھی شرک کی جو بالا ہمارے گلے ہیں ڈالنے کی کوشش کی تھی شرک کی جو بالا ہمارے گلے ہیں ڈالنے کی کوشش کی تھی شرک کی جو بالا ہمارے گلے ہیں مالنے کی کوشش کی تھی امیر تمزہ وصاحب کے اپنے تی گلے کا طوق بن گئی اب آزادی کا صرف ایک بی داستہ ہے یا تو نواب صدیق حسن خال بھو پالی صاحب پرشرک کا فتو کی انگا کر انگوا پی صفول ہیں ہے خارج کر کر اور کی اورخو دو دونوں ہاتھ کھڑے کر کے اعلان کی میں ہو یالی کو اپنے نواب صدیق حسن خال کریں ہمارا ایسے نواب سے جو شرک کرتا ہو کوئی تعلق نہیں لابذا ہم نواب صدیق حسن خال میں بھو یالی کواپنے زمرہ الجاحد بیٹ سے خارج قرارد سے ہیں۔

دوسری صورت پیر صرف میہ ہے کہ کھالفظوں میں امیر حمزہ صاحب تسلیم کریں ادراس مسلّمہ حقیقت کا اعلان کریں کہ مجھ سے غلطی ہوئی ہے میں تو بہ کرتا ہوں ادر عقیدہ و نظر بیدوہ ہی درست ہے جونواب صدیق حسن خاں بھو پالی کا ہے اور ہم اعلان کرتے ہیں کہ اپنے آتا اپنے مولی امام الا نبیاء حضرت محمد لیا ہے کہ یارسول اللہ کہہ کریاد کرنا اور بوقت مصیبت رسول اللہ سے مدد طلب کرنا شرک نہیں بلکے عین تقاضاء ایمان ہے۔

مین سول اکرم نا جدار عرب وعجم صلی الله علیه وآله وسلم کی شان رفعت کوئس طرح بیان کرتے ہیں اور آ کچی بارگاہ میں کن جذبات واحساسات کا اظہار کرتے ہیں تا کہ آپ کی توجہ کی برکات حاصل کی جا سکیس وامیر حمز ہ صاحب آیئے آ پکوآ پکے نواب

#### ولائل كى قوت:

امیر حمزہ کھوتو خوف خدادا اس گیر ہونا چاہیے اس قدر ستم ظریفی بھی اچھی نہیں ہوتی اگر آپ واقعی سے بیل قرائد سا دیا ہو پالی الشمس " کہنے پر نواب صدیق حسن خال بھو پالی پر شرک کا فتو کی صاد کریں اور حق تو حید ادا کریں اور اگر آپ کے نواب صاحب "یا" کے صیغ ہے رسول اکر مہلی کے ویکارنے سے یاد کرنے سے شرک نہیں ہوا تو ہم غریبوں پر بھی رحم فرما ہے اور اپنی توپ کا دہانہ کی اور جانب موڑ لیجے ورند آپ کی توپ کا دہانہ کی اور جانب موڑ لیجے ورند آپ کی توپ کا دہانہ کی اور جانب موڑ لیجے ورند آپ کی توپ کا دہانہ ہم دلائل کی توت سے نہ صرف موڑ دیں گے بلکہ توڑ کے رکھ دیں گے۔ لیجے سے بھوا، وہ ہوا، ہوا۔

#### انداز محبت:

ا ہے آ قاومونی حضرت محدرسول الله صلی الله علیه وآله وسلم کو کس انداز محبت وعشق سے پکارا جائے کہ آ بکی شفاعت کبریٰ سے حصہ وافر پایا جا سکے آ ہے نواب صدیق حسن خاں بھو پالی ہی کو دیکھیں وہ کیا انداز اختیار کرتے ہیں امیر حمزہ صاحب لیجئے ۔ اپنے قائدکو پڑھے اور حسن قلم پر داد کر دیجئے۔

ولك الشفاعة والمكانة وفي غدٍ ولاتت أكرم معشر الشفعاء

(نج اطیب الانواب صدیق حسن خاں بھوپال) کل قیامت کے دن (مقام محمود) پر شفاعت آپ ہی کوزیبا ہو گی۔شفاعت کرنے والی ساری جماعت کی امامت کی عزت وعظمت بھی آپ ہی کو حاصل ہو گی۔۔ حمنج بخش، حضرت شیخ سیدعبدالقادر جیلانی غوث اعظم ،حضرت خواجه نظام الدین اولیاء دہلوی، حضرت شاہ بہاوالدین فرکریا ملتانی ،حضرت شاہ رکن عالم ملتانی ،حضرت خواجه رضی الدین محمد باقی بااللہ، حضرت امام ربانی مجدوالف ثانی ،حضرت بابا بھلے شاہ اور حضرت شہباز قلندررضی اللہ محصم کے خلاف لکھنے اور ان پر تنقید کرنے کی جراکت شہو گی۔

ثداء بارسول الله صلى الله عليه وآله وسلم! نواب صديق صن خال بحو پالى اگرانيا" كے صيفے سے عداء كريں تو بالكل درست ده اگر يوں عرض كريں -

ياايهاالشمس الرفيع مكانه ضاء ت بنورك ساحة الرياء (فح اطب الاازنواب مدين صن خال مجويال)

ر جیاب کے دور ہے ہی ترمین و اے بلند و بالا مقام کے حامل اے آفتاب آپ کے نور سے ہی زمین و آسان کی وسعتیں روشن و تا بال ہیں۔

اس پرکوئی اعتراض نہیں اور اگر ہم'' یا رسول اللہ اللہ علیہ ایوں عرض گزار ہوں اور معروضات بارگاہ رسالت مآب سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں پیش کریں تو ہم پر پوری آب و تا ب ہے چڑھائی کر دی جاتی ہے۔ اعتراضات کی بارش کر دی جاتی ہے اور سانس تک لینے کی فرصت مفقو و ہوئی جاتی ہے۔ اگر رسول اکرم تا جدار عرب و بھم حضرت محمد رسول اللہ علیہ وآلہ وسلم کو یا رسول اللہ کہہ کر پکار نا شرک ہے اور ''یا'' کے صیغے ہے شرک لازم آ جاتا ہے تو نواب صاحب نے کوئی خاص متم کا میک اپ کیا ہوا تھا جوان پرشرک لازم آ جاتا ہے تو نواب صاحب نے کوئی خاص متم کا میک اپ کیا ہوا تھا جوان پرشرک لازم آ جاتا ہے۔

### (Rocket of Arguments): ولاكل راكف

نواب صدیق حسن خال مجمویالی نے جس طرح رسول اکرم اللی کے مقام شفاعت، مقام محمود،علومر شبت، روز قیامت آپکی شان بے مثال، آپکی برزرگی، آپکی شان جماعت انبیاء میں، اور آپکی عظمت ورفعت شفاعت کرنے والوں کی صف میں، کابیان کیا ہے ووواقعی قابل داد ہے۔

## رْ كَشْ تُوتْ كُنّى:

امیر حمزہ صاحب اگر آپ تھوڑی کی فرصت اپنے مصروف ترین اوقات ہیں ہے تکال کراپنے بزرگ، اپنے لیڈر، اپنے رہبر، اپنے امام اور اپنے نواب صاحب کی تحریروں کا مطالعہ فرمالیتے تو کم از کم آپ کووہ ہزیمت تو نہ اٹھانا پڑتی جواب ہمارے ہاتھوں اٹھانی پڑر ہی ہے۔

اب کیا کیا جاسکتا ہے، ہم بھی بھی یوں ولائل کے راکٹ آپ کی جانب نہ برساتے اگر آپ نے جلیل القدر اولیا کرام ، محدثین عظام ، مصنفین ذی اختشام اور عاشقان رسول القیق کو مورد الزام نہ تھم زایا ہوتا۔ مجھے معلوم ہے اب آپ کو بہت پہیٹانی ہوگی کہ بیس نے کیا کیا لکھ ڈالا ہے کاش بیس اس طرح نہ لکھتا مگراب وقت گزر چکا ہے تیر کمان سے نقل چکا ہے اب اس کورش بیں واپس ہر گر نہیں لایا جاسکتا۔ جس طرح اعمال اعمال کی رہ لگا لگا کر عام مسلما نوں کو سے باور کروانے کی کوشش کی تھی کہ طرح اعمال بی سے ہوگا اب جب لوگ، نواب صدیق حسن خال بھو پالی کے اشعار پڑھیں گے تو ان پر بین ہو جائے گا کہ المحدیث غیر مقلد میں کہتے کچھ ہیں اور اشعار پڑھیں سے تو ان پر بین ہو جائے گا کہ المحدیث غیر مقلد میں کہتے کچھ ہیں اور اشعار پڑھیں سے اوگوں پر بید حقیقت اظہر من اشمس ہو جائے گی کہ جب

مصیبت پڑتی ہے تو سب غیر مقلد اپنی مشکل کو دور کروائے کیلیے محبوب رب غنور دانا کے کل غیوب حضرت محمد رسول الڈیلیٹے ہی کی بارگاہ اقدی میں بالتی ہوتے ہیں۔ انہی کی بارگاہ میں التجا کیس کرتے ہیں انہی کو اچنا شافع نافع تشلیم کرتے ہیں ہیا لگ بات ہے جب دوسروں پر تنقید کا بازار گرم کرنا مطلوب ہوتو پھر سارے ضا بطے بھول جاتے ہیں انکو پھے یا ذہیں رہتا ہے کھی شخصر نہیں رہتا کہ ان کے اپنے بزرگ کیا پچھ لکھے گئیں۔

اگران کواپنے گھر کے بزرگوں کا مطالعہ ہوتا اور انکو بیدیا و ہوتا کہ انہوں نے اللہ تعالیٰ کے بحوب سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ عالیہ میں کس کس انداز سے معروضات پیش کی ہوئی ہیں تو مجھی بھی اہلسنت کے خلاف بوں زبان نہ کھولتے اور بول قلم کو تحرّک نہ دیتے۔

#### عاجت مند:

امیر جمزہ صاحب رسول اکر میں گئے گی بارگاہ اقدی میں اپنے آپکوای طرح پیش کرنا جیسے ایک نہایت مجبور ہے کس اور حاجت مند کو کیا جاتا ہے۔ بیر آپ بی کے بزرگوں کو زیب ویتا ہے۔ اس لئے کہ وہ تو اللہ والے بیں، وہ تو کسی غیر کی طرف رجوع کرتے ہی نہیں بس اتن بات ضرور ہے اگر کوئی سی مسلمان اتکی بارگاہ عالیہ میں عرض گزار ہووہ التجاء کرے وہ ان کو مدد کیلئے پکارے تو شرک شرک کا وہ طوفان آتا ہے کہ تھے نے کا نام نہیں لیتا اور اگر آپ کے اپنے بزرگ بیرسب پچھ کریں تو ندشرک نہ برعت نہ گر ابی اور نہ ہی مورد الزام کیا شائل ہے کام کرنے کا کیا طریق کا رہے بیٹے وین کا۔ کے خلاف اور وہ فتو کی وہی ہونا چاہیے جسکے صادر کرنے کے آپ عادی ہیں آپکی عاوت ہے کہ ذرای بات خلاف مزاح ہوئی تو فورآشرک شرک کی رٹ لگا دی اب بھی سرعت ہے آگے برجیے اور بلا ٹائل شرک شرک شرک کی اولاً حب عادت گردان فرما ہے اور پھرا بھی گروان کی گرج تھے بھی نہ پائے تو عجلت سے نواب صاحب پر شرک کا فتو کی داغ و بچے ٹا کہ حق تو حیرا دا ہوا ورہم بھی آپکو دائے حین دیں۔

میتو کوئی انصاف نہیں آپ کے ہزرگ نواب صدیق حسن خال بھو پالی اپنے آپ کوعبدرسول آلی عبدالنبی اورعبد مصطفے کہیں تو عین تو حیدا گرامام احمد رضا خال قا دری محدث ہریلوی نو راللہ مرقدہ اپنے آپ کوعبد مصطفے کہیں کھلا شرک کیا منافقت اس کوتو خہیں کہتے اگر ذبین سے اثر گیا ہوتو ہیں بھریا دولا دیتا ہوں۔

جاء عبدك من جنابك سيلى

(نُحُ اطیب این دُنواب مدیقِ من خان بھوپالی) سیدی آپکا بند و آپ کی جناب میں امید کیکر حاضر ہے کیا کہنا آپکا اور آپ کے اکا ہر کا۔امام احمد رضاً لکھتے ہیں

خوف نہ رکھ رضا ذرا تو تو ہے عبد مصطفے تیرے لئے امان ہے تیرے لئے امان ہے (حدائق بخش)

شرك كى دادى:

امیر حمزہ صاحب بھا گئے کا کوئی راستہ ہے تو نکال لیجئے اور ساراز وردگا کر بھاگیے تا کہ آپ اس خطرناک وادی ہے نکل جا کیں حکر آخر تکلیس کے کدھر ہم نے تو الحمد للد آپکی اگرامام الانبیاء حضرت محمد رسول الله تلاقی کی بارگاہ مطتبر سے ہم سوال کریں ہیک مانگیں تو اعتراضات کی مجر مار کر دی جاتی ہے اگر اپنے برزرگ بیمل کریں تو ان کی فضیلت بیان کی جاتی ہے انکی مدحت کا ایسا تر اندالا پا جاتا ہے کہ جس کی دھن بھی بالکل نٹی اویلی ہوتی ہے اس جدید دھن پر امیر حمز ہ صاحب نے اپنا تر اندگایا ہے مگر ہم نے پکڑلیا ہے۔

سے کیا ایک امتی این آپ کورسول اکر مخطی تا جدار عرب وجم اللی کا بندہ کہ سکتا ہے؟ اگر کہ سکتا ہے تو کوئی دلیل ،امیر حمزہ صاحب آیئے آپکے نواب صدیق حسن مجو پالی صاحب کی شخ الطیب کی سیر کرواؤں تا کہ آپکوئن آسانی سے نظر آنے لگے۔

> ورجاء عبدك من جنابك سيدى نيل الشفاعة زبادة الا لا ع

(خُ الليب النازنواب صديق صن خان مجوپال) سيدى آپ كابنده آپى جناب ميں اميدليكر حاضر ہے ختيوں كى نہايت كے عالم ميں آپ بى شفاعت كامر كز جيں -عيد مصطفے (صلى الله عليه وآلہ وسلم):

امیر حمزہ صاحب و پکھاا نداز بیان اپنے بزرگ محتر م کا، اندازہ لگا ہے ان جذبات واحساسات کا جن میں اللہ تعالی کے پیارے رسول امام اولین و آخرین کو پکا را جا رہا ہے طرز تکلّم بتارہا ہے بات کرنے والا ول وجان سے بیعقیدہ رکھتا ہے کہ میں ''عبر مصطفے'' ہوں یہی وہ مبارک نبعت ہے جس کوآپ شرک تک قر اردینے سے ذراگریز نہیں کرتے اب میں بھی نبایت سادگی ہے عرض کروں گا۔

جناب من الماسية قلم يكزية كاغذاور لكهة فتوى نواب صديق حسن خال مجو پالى

میرے وسلہ ہیں؟ اگر کہا جا سکتا تو دلیل لائے ؟ جناب امیر حمزہ صاحب آپکواس مسئلہ میں بھی جناب نواب صدیق حسن خال بھو پالی ہی کی خدمت میں لئے چاتا ہوں ان شاءاللہ حق قریب نے نظر آنے گئے گا لیجئے مطالعہ سیجئے۔

وعظیم رجوی ان تکون وسیلتی فی عیفو زلاتی بیوم جز ائی

( فَعُ الطيب النَّارُ نُواب صديق صن خال بحو پالی ) مجھے ( نواب حسن خال کو ) کچی اميد ہے آپ ميرے وسيلہ ہونگے يوم جز ا کومير ک کوتا ہيوں کی معافی کيلئے۔ **بانسری ٹوٹ گئی!** 

امیر حمزہ صاحب آپ نے جو زبان وسیلہ پکڑنے کے خلاف چلائی ہے، اہل قبور سے کسی طرح کی بھی امداد جائز رکھنے والوں پر جوطئزیں کی ہیں قبوری قبوری کہہ کر جو اپنی کا مرانی کا جینڈا لہرانے کی کوشش کی ہے وہ آپ کے نواب صدیق حسن خال مجبو پالی نے تار تار کر ویا ہے اب آپ کا حجنڈ الہرانا تو در کاراس کے چیتھڑ ہے بھی اس لاکت نہیں رہے کہ وہ ہوا ہیں حرکت کرسکیس۔

جس بانسری پرآپ نے اپنا پرانا راگ نئی دھن بنا کر الاپنا چاہا وہ بانسری ہی انوث گئی للبذا اب دھن نئی راگ پرانا ہو یا راگ نیا ہو دھن پرائی دونوں ہی نہیں گائے جا سکتے۔ وہ بانسریاں جن پرآپ نے اپنے راگ الاپنے تھے وہ سب ہی انوٹ گئی ہیں اور واللہ ضربیں ہم نے نہیں لگا کیں بلکہ ضربیں بھی آپ کے اپنے ہی ہاتھوں گئی ہیں بس سے اللہ نتوالی کی قدرت ہے اس نے آئی بانسری آپ کے اپنے ہی ہاتھوں ترو وادی ورنہ ہم زیر عزاب آئے۔ عام لام بندی کردی ہے۔ جدهررخ کریں محے دلائل کی آڈ اور فصیل قائم ہوگی آپ کو

تکلنے نددی گی اب صرف دوہی رائے ہیں یا تو نواب صدیق حسن خال بھو پالی پرای
طرح اعتر اضات کا بینہ برسائے اور آخر کاران کوشرک کی وادی میں دھکیل دیجے یا پھر
اس بات کا تھلم کھلا اعتر اف کر لیجئے کہ ہیں نے اپنی مؤلفات '' شاہراہ
بہشت'''' آسانی جنت اور درباری جہنم''اور'' نذہبی وسیاسی باوے' ہیں جو پچے لکھا
ہوو میراسہو ہے بھے نے فلطی ہوئی ہے جو ہیں نے اظہاراد بی کیلئے عبارات لکھ ڈالی
ہیں دراصل وہ حقائق سے دور ہیں۔

قطعأزيب نيس ويتاا

امیر حمزہ صاحب آپ کو قطعا زیب نہ دیتا تھا کہ آپ اپ قلم کو اس قدر بے احتیاطی سے چلا کیں کہ دوسروں پرآ کے قلم سے نکلے ہوئے الفاظ اور جملے تیر بن بن کر لگیں آپ کا انداز بیان انتہائی لور (LOWER) درجے کا ہے مگریس نے باوجود اسکے کہ آپ کا جواب اس لب و لیجے پس آنا چاہیے تھا نہ دیا اور نہایت متین انداز میں آپ کا جواب لکھا ور نہیں الفاظ اور جملوں کی وہ مجر مارکرتا کہ آپکوایے حواس قائم رکھنا مشکل ہوجاتے۔اب فیصلہ قار کین خود کرلیس سے حق کیا ہے اور باطل کیا؟ میری میتر کریائل حق پر بڑنے والے سارے غبار کو ہٹا دے گی اور مطلع بالکل صاف کردے گی اور حل کی اور مطلع بالکل صاف کردے گی اور حل کی داور جن کی داور جن کی مرسافر راہ حق کو مزل مقصود تک پہنچنا اور حق کی راہ بہت واضح اور بین نظر آنے گئے گی ہر مسافر راہ حق کو مزل مقصود تک پہنچنا آسان ہوجائے گا۔

#### وسيله:

كيارمول أكرم حفزت محدرمول الله الله كالله ك بارے بدكها جاسكا بكرآپ

#### :15,0

آپ اب بوی مضبوطی سے قابوآئے ہیں نکل کر تو دکھا ہے گا اگر آپ کے نواب صاحب کی التجاء جوانہوں نے بارگاہ رسالت مآب سلی الله علیہ وآلہ وسلم میں کی ہے۔ زبن سے اتر گئی ہوتو میں دوبارہ یا دکروادیتا ہوں کیجئے تازہ فرما ہے۔

یارسول اللہ! مجھے، نواب صدیق حن خال بھو پالی کو کی امید ہے کہ آپ میرے لئے وسیلہ ہو تھے۔ قیامت کے دن آپ ای کے سبب میری نافر مانیوں سے در گذر ہوگا۔

( الله النه الله الله علی الله علی الله الله الله الله علیه و آله و الله الله علیه و آله و الله و ا

وسواك مالى في القيامة شافع انت المخلص لي من الباساءِ

( گھی الطیب الن از نواب صدیق حسن خال مجوبال اللہ الن از نواب صدیق حسن خال مجوبال قیامت کے دن آپ کی علاوہ میرے لئے کوئی شافع نہ ہوگا ، بس آپ بی مصیبتوں میں میری خلاصی کا باعث ہول گے۔

## آپ ک خواہش کے برعس ہوا:

ویے آپ نے راگ تو پورے زور پر الا پاہے اور دھن بھی زبر دست بنانے کی
کوشش کی ہے چاہتے آپ یہ بتے دود وہاتھوں سے لوگوں کواپنے قریب کیا جائے ۔ کسی
کودھن سنا کرقا ہو کیا جائے اور کسی کوراگ الاپ کر مگر جوابالکل اس کے برعکس نہ تو کوئی
آپی دھن سے متاثر ہوا اور نہ بی کسی کوآپ کا راگ راس آیا۔ جمع تو بنانہیں الہذا اپنی
ڈگڈگی بجا کرخود بی کھیانے ہوکر چپ چاپ بیٹھ گئے۔

### زبان ہے اکرائے کی موٹر سائکل (Rent A Bike):

اگر عام مسلمان رسول اکرم نبی محتشم حضرت محمصطفے صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کوا پنا وسیلہ بنا کمیں اگری وساطت سے رب تعالی کے حضور دعا کمیں ما تکیں الکوشافع نافع مانیں تو آپ کی زبان اپنے اختیار میں بی نہیں رہتی وہ اس طرح چلتی ہے جیسے لڑ کے کرائے کی موٹر سائمیل کیکر چلاتے ہیں بلکہ اس سے مجمی دوقدم آگے بی نکل جاتی ہے ، یوں محسوس ہوتا جسے جب سے آپ نے بولنا شروع کیا تھا اس وفت سے کیکر آج تک کوئی اور بولی آپ کوسکھائی بی مہیں گئی سوائے اس کے فلاں کام بدعت ، فلاں کام گراہی اور فلاں عمل شرک ، بیرو والفاظ ہیں جنگے آپ پکے حافظ ہیں اور ان کوتر کیبیں بدل بدل شرک ، بیرو والفاظ ہیں جنگے آپ پکے حافظ ہیں اور ان کوتر کیبیں بدل بدل خربی کیوں شہوں ۔

الی سجھ کی کو بھی ایکی خدانہ دے دے دے آدی کو موت پر بید بدادانہ دے

## آج لے اتکی یناہ!

امام احمد رضاخان قاوری محدث بربلوی نورالله مرفده ، اپنی مشهور زمانه نعت ، نعتیں بائٹا جس ست وه ذیشان گیاساتھ ہی مثنی رحمت کا قلمدان گیا ، میں ایک شعراس طرح ہے کھا ہے۔

> آج لے ان کی پٹاہ آج ہدد مانگ ان سے پھر نہ مانیں کے قیامت میں اگر مان گیا (حدائق بخش)

امر حزه صاحب امام احمد رضار حمته الله عليه كے كلام يرآپ نے اعتراضات كيے ہیں اب دیانت داری ہے مولانا شاہ احمد رضا قادری کا اردو کا شعراور نواب صدیق خال بھو پالی صاحب اپنے لیڈر، اپنے بزرگ کا عربی شعرا منے سامنے رکھ لیس اور موازنه کریں کیا دونوں جگہ فکر ایک جیسی نہیں کیا دونوں کا مرکزی خیال ایک نہیں کیا دونوں میں رنگ الفت ایک نوعیت کانہیں کیا دونوں میں قیامت کے دن شفاعت کی طلب كاجذبه ايك سانبيس اكرب اوريقينا بي تو پراعتراض كيا- اكرآب اورآب ك بزرگ اندر بيشكرامام الانبياء كى شفاعت ك قائل بين الكى مدوكو برحق بي تي تو آخراس کا اعلان کرنے میں کیا حرج ہے دوسری طرف مولانا احدرضا خال قادری رحمته الله عليه بين وہ اندر بيشہ كررسول الله علي كا كمال اور آ كى امداد باذن اللہ كے تاکل ہیں تو منظرعام پر بھی اس کا اعلان واظہار کرتے ہیں تکرآپ کا حال ہے ہے اندر بیٹ کروہ سب پھی سلیم بھی کرتے ہیں اورانبی کیفیات کوقلم بند بھی کرتے ہیں مگر جب اعلان واظبار كا وفت آئے تو آپ لوگوں كوسانپ موظمہ جاتا ہے نامعلوم اس ميں راز كيا

## نفرت كى مالا!

ہم بھی بھی یوں آپ کی خال ہ تلاقی نہ لیتے اور نہ بی آپ کا اندرونی حال طشت ازبام کرتے مگر آپ کے مضابین بیں پھھالیں تندھی آگئی تھی جو حدودا خلاق کو پا مال کر رہی تھی اس بیس مشتلی نام کی کوئی چیز نہ رہی تھی بلکہ یوں لگتا تھا جیسے آپ نے ہمارے برزگوں کے خلاف کھے کو جموف ہولئے بیس اول انعام کہیں سے جیتنا ہے بیتو جھے معلوم نہیں انعام آپ نے جیتا یا نہ جیتا اتنا ضرور معلوم ہے کہ نفرت کی ایک لمبی مالا آپ کے گلے بیس ضرور آن پڑی اور اس کو سنجا لیتے سنجالیے آپی گردن بیس وہ فم آپ کے گلے بیس ضرور آن پڑی اور اس کو سنجالیے سنجالیے آپی گردن بیس وہ فم آپ کے ایک دوبارہ سیدھی نہ ہوگی۔

### تشفى قلب نصيب مو!

لحاظ نام کی کوئی چیزآپ نے مروت کے طور پر بھی پاس ندر کھی ظاہرہے جب آپ نے اس طرح کا طرز عمل اپنایا تو اب آپ کو جواب آن غز ل تو دینا ہی ہوگا تو سننے ک ہمت پیدا کیجئے۔

امیر حمز ہ صاحب آپ نے تو اولیا و کرام صوفیا وعظام کے خلاف زبان وقلم چلانے کا ضیکہ لے رکھا ہے الل ایمان کو مشرک بناتے بناتے آپ خود بے حیت ہوگئے ہیں تو اب کیا کیا جائے آ ہے میں آ پکوآ کے گھر کا حال سناؤں تا کہ شفی قلب نصیب ہو۔ آپ ہزرگوں کے کمالات کا تو انکار کرتے ہیں مسلّما نوں کو مشرک بنانا اوران پرشرک کے فتوے صاور کرنا آپکا دل پندم شغلہ ہے دوسری طرف آپ لوگ مشرکوں کی تعریف وقوصیف ہیں خوب خوب رطب اللمان ہیں رکھے دل پر ہاتھ گھبرانہ جائے گا ہمت و جرات کر سے حق سنے گا۔ آپ کے بڑے تو محاتما گا ندھی جیسے مشرک جلی کے لئے جرات کر سے حق سنے گا۔ آپ کے بڑے تو محاتما گا ندھی جیسے مشرک جلی کے لئے

زبان کا فلسفہ تو آپ بی جانے ہیں ہم تو اس کی ابجد ہے بھی آگاہ نہیں ہیں۔شرک کا رد کرنے میں جو آپ کا ظا ہر نظر آتا ہے وہ باطن نہ تھا ظاہر میں روشرک اور باطن میں مشرکوں سے دوستیاں انکو تھے لینے دینے کی رسم اور اسکا اظہارانداز عاشقی اگر بھول گیا ہوتو میں یا دولا تا ہوں لیجئے مطالعہ فرمائے اور تا زوم ہوجائے۔ سسالاھ المسنیال ہا کہ السنیال ساخلالدی

سلام النيل باغاندي وهذاالزهر من عندي

(القراةالاعدادية برافي ٢٠٠٥)

یا گاندھی جی دریائے نیل سلام پیش کرتا ہے اور میسلام میری جانب سے پھول کی طرح تخذہ ہے۔

قارئین محترم! فیصله آپ فرما ہے ایک مشرک بت پرست کیلے جو جذبات
ان حضرات کے ہیں کیا وہ کسی تو حید پرست کے ہو سکتے ہیں اہل ایمان کی قبروں
پر پجول ڈالنا، وہاں حاضری دینا قصد کر کے جانا سب فاط اور ایک بت پرست
گائے کی پوجا پاٹ کرنے والے کو پجولوں کا تخذواہ کیا صدافت ہے، مسلمان کی
قبر پر حاضری شرک، وہاں سے تبرک حاصل کرنا شرک اور ایک مشرک کی تعریف
جائز اس سے دوئی نہ صرف جائز بلکہ اسکو تحذ لینا دینا بالکل درست اور اظہار
محبت کا ذریعہ، معاملہ یہاں تک بی ٹیس رہا بلکہ اس سے آگے نکل گیا دیکھے
مطالعہ سیجے۔

نبے مشل کو نفیشو سن او من ذلک العهد

(القراةالاعداديههم)

برے نیک جذبات رکھے ہیں مطالعہ فرمائے۔ سلام النیل یاغاندی و ہذا الز ہر من عندی

(القراةالاعدادية على وسم)

یا گاند سی دریا نیل کی طرف سے بھی سلام ہواور میری طرف سے سے پھول قبول رمائیں۔

## صحافت کی ڈگری!

امیر حمزہ صاحب کیوں دم گھنے لگا ہے، سائس کا تسلسل کیوں اکھڑا جاتا ہے جب
آپ کی پر حملہ کریں گے تو کیا وہ آ بگو پھولوں کا تحفہ پیش کرے گا چا ہے تو یہ تھا آپ
بزرگوں کے خلاف تھم نہ چلاتے گر آپ نے مزے لے لے کر بڑے بڑے اکا بر
اولیا واللہ کے خلاف جھوٹی با تیں بنابنا کر نداق اڑانے کی کوشش کی ہے تو جواب بھی
سنے تا کہ آئندہ آ پکوھیے تہ وجائے اور آپ بزرگوں کے خلاف ایک جملہ بھی لکھنے
سنے تا کہ آئندہ آ پکوھیے کہ جو جائے اور آپ بزرگوں کے خلاف ایک جملہ بھی لکھنے
سنے پہلے سوبار سوچیں پھر کہیں جاکراہ سپر دقر طاس کریں بی آ پی بھول تھی کہ میں جو
مرضی لکھ دوں میرے مخالفوں کو کونسا لکھنا آتا ہے جو جواب آل غزل ہوگا آپ کو بھی
صحافی بننے کا شوق اس میدان ناشنا سامیں لے آیا اور آپ نے صحافت کی ڈگری لینے
کے چکر میں ، اپنے مضامین لکھ ڈالے گر صحافت کی ڈگری ملنا تو در کنار الٹا آپ کے
گلے میں احت کا میڈل لئگ گیا۔

## پیولوں کے تھے:

گاندهی جیسے جلی مشرک کوسلام، مجواول کے تھنے اور اولیاء اللہ کے خلاف تخت

## موحد کبیں باشرک نواز!

ایک مشرک کو، ایک بت پرست کو، ایک مشرالله ورسول جل وعلان کی نبی تک کہنے سے گریز نہیں کیا اب میں کیا کہوں قار کین ذی شعور فیصلہ آپ پر چھور تا ہوں آپ فرمائے ان لوگوں کو ہم موحد کہیں یا مشرک نواز؟ اگر ذہن سے اتر گیا ہے تو میں پھریاد کروادیتا ہوں لیجئے تاز ومطالعہ فرمائے۔

مسٹر گاندھی تو کونفیشوس یاای کی مثل اس زیانے کا نبی ہے۔

(القراة الاعدادية/٢٢٣)

عقل ماؤف!

مجھی گاندھی کو دریائے ٹیل کا سلام ارسال کرتے ہیں، بھی اس کو پھولوں کا تحنہ پیٹن کرتے ہیں بھی اس کو نبی تک قرار دینے سے ذرائبیں پچکیاتے ،عقل ماؤف ہو چک ہے، د ماغ چل گیا ہے۔ سوچنے بجھنے کی تمام صلاحیتیں معطل ہو پچکی ہیں جن لوگوں کی تو حید کا بیرحال ہوان کا اللہ ہی حافظ ہے۔

بیں اللہ تعالیٰ کی جلالت کا واسط دے کرعرض کرنا جا ہوں گا کیا اللہ تعالیٰ کے اولیاء کی حیثیت معاذ اللہ گا ندھی جی سے بھی گرگئی ہے۔ گاندھی کوسلام، پھول بطور تحفہ اولیاء اللہ کے مقامات خداواد کا صاف افکار، انکی عزت وعظمت سے بالکل انح اف بیس فے آپ کی بیاندرونی صورت حال صرف اس لئے لوگوں کے سامنے رکھی ہے تا کہ اکلو یہ نے آپ کی بیاندرونی صورت حال صرف اس لئے لوگوں کے سامنے رکھی ہے تا کہ اکلو بیا فیملہ کرنے بیس آسانی ہوجی پرست کون اور باطل سے گلوط کون۔

قار کین کرام! میں اب ایک اور تحذیبیش کرنے لگا ہوں اس تحفے کو بغور ملاحظہ فرمایے گا ان شاء اللہ ول گواہی دے گا شرک کارد کرنے والے اور تو حید کے دعوے

#### مٹرگاندھی کوفیٹوس (چین والوں کابنی) یااس کی مثل اس زمانے کا نبی ہے۔ صاف صاف الکار!

امیر حمزه صاحب آپ لوگوں کی قبولیت اور رد کا معیار بچھنے سے میں قاصر ہوں ایک طرف تو آپ کوشرک کا ہینہ ہوار ہتا ہے اگر ذرا طبیعت سنجل جائے تو بدعت کی بد ہضمی ہوجاتی ہے آپ نہ مائیں تو بزے بڑے ائمہ دین کونہ مائیں انکی بزرگی کا صاف صاف انکارحتیٰ کہ امام عظم ابوحنیفہ رضی اللہ عند کی فقاہت کا اٹکار اینکے اجتہا د سے راہ فرارامام ما لک بن انس رضی الله عنه کی قوت اجتها دیراعتر اضات، حضرت امام شافعی محمد بن ادريس رضي الله عنه كي علمي وفني حيثيت يرجرح اورامام احمد بن طنبل رضي الله عنه جيسى جليل القدر بستى پرعدم اعتاد حضرت على بن عثان انجوري دا تا سخنج بخش، حضرت شخ سيدعبدالقادر جيلاني غوث اعظم ،حفرت سيدالطا كفه جنيد بغدادي ،حفرت خواجه معين الدين چشتى اجميرى،حفزت خواجه قطب الدين بختيار كاكى،حفزت با بافريدالدين عجنج شكر، حضرت خواجه نظام الدين اولياء وہلوي، حضرت شاہ نصير الدين محمود چراغ د بلوى، حضرت خواجه بهاؤالدين ذكريا ملتاني ،حضرت خواجه شاه ركن عالم ملتاني ،حضرت خواجه رضى الدين محمد باتى باالله، حضرت مولانا سيد حافظ محمرعثان مروندي المعروف شهباز قلندر، حضرت امام ربانی مجد دالف ثانی اورامام احدرضا قادری رحمته الله میم کی خدمات کا افکار۔اوراگرمانے پرآ جا کیں تو صرح مشرک مہاتما گاندھی جیسے مخص کی نہ صرف خدمات کا اعترافات بلکه اس مشرک جلی کو ان القابات سے نواز تے ہیں کہ انسان چرت زده مو کره جاتا ہے۔ الی یول بھی موتا ہے۔ شبيسة السرسل فيى الدود عسن السحق وفسى السزهد

(القراة الاصادية ٢٣٠٠)

گاندھی جی اپنے اعمال واظہار حق زہدو تقوی میں رسولوں سے مشابہت رکھتے

كاشمث جائے برطرز قكر!

ہائے ستم بالائے ستم ، ہائے ظلم پر ظلم، ہائے بدعت، وائے گراہی، تائے بے بضاعتی جھے کو پچھ بچھ تیس آ رہا ہیں کلمات دروکو کس کس انداز میں استعال کروں میں کیا کیا ضبط کروں اور کیا کیا اظہار کروں۔

قار کین کرام! میرا حوصله میراساتھ جھوڑ رہا ہے۔ میری ہمت جواب دے رہی .
ہے میرے اعصاب قوت برداشت سے کوسوں دور ہورہ ہیں میں ان کوکس طرح
اپنے امور کی انجام دہی پر بحال رکھوں کیا کروں کدھر جاؤں میں ان نام نہا دتو حید
پرستوں پرکن الفاظ سے تبحرہ کروں ، کیا عبارات لکھوں ، کیا انداز تحریر اپناؤں تم ہے
رب ذوالجلال کی میں تو پچھ لکھنے کی ہمت ، بی نہیں پار ہا بس اب تو صرف آپ کویہ
دکھانا ہے جن لوگوں کے نزدیک گاندھی جے مشرک کے اعمال رسولوں کے اعمال سے
مشابہت اختیار کرجا کمیں ان کے اپنے نظریات کس نوعیت کے ہوئے۔
ہائے! کاش مے جائے پہطرز آگر!

واع الفاموجاع يطرز تحرياا

تائے!!!عنقاموسائدازاستدلال!!!

فیصلہ ہو گیا، گاندھی کی تعریف کرنے والے اور اسکورسولوں سے مشابہت دینے

داروں کی اپی پوزیش (Position) کیا ہے۔ مطالعہ فرمایے قسریب القول و الفعل من المنتظر المهدی

(التراةالاعداوية١٣٢

كاندى ياميدى منتظر:

ایر حزوصاحب کیا نظر ہے کیا اعتراف حقیقت ہے، کیا خوب طریق استدلال ہے۔ کیا عمرہ انداز بیان ہے کیا ہی اعلیٰ طرز تخن ہے اظہار محبت میں گاندھی جی جو کہ قطعی مشرک ہیں آئی مدحت اور مدحت بھی اس انداز سے کہ جوصرف آپ لوگوں کو زیبا ہے۔ ایک طرف رق شرک ، رق مقامات اولیاء اللہ اور دوسری طرف گاندھی جی کی جانعرہ چلوا گریہاں تک ہی رہتا کہ گاندھی جی کی ہے تو بھی شاید معافی کی کوئی راہ فکل آتی گر آپ لوگوں نے تو گاندھی جی جیے انجٹ کوامام مہدی موعود علیہ السلام کی شبیہ قرار دیکر ساری ملت اسلام ہے کوخت رغ چہنچایا ہے بلکہ شبیہ تی کیا یوں کہدویا

قريب القول والفعل من المنتظر المهدى

قول و فعل میں قریب قریب مہدی منتظری ہیں۔ جن اوگوں کو گا ندھی جیسی شخصیت مہدی منتظر نظر آنے گے ان کی نظر کیمیا گر کو داد تحسین دینی چاہیے۔ میں بھی یہی محسوس کر رہا ہوں اس پر جھے زیادہ تبمرہ کرنے کی ضرورت نہیں پڑھنے والے خود ہی سمجھ جا کیں گے جن لوگوں کے نزدیک گا ندھی جی کی ایسی تعظیم ہوان کے نزدیک اولیاء اللہ کا کیا مقام ہوسکتا ہے۔ مزید مطالعہ فرما ہے۔

## عالم ما كان وما يكون:

ظاہر ہے اب تو دل د ماغ دونوں نے ہی فیصلہ صادر کردیا ہے جن پر وہی لوگ ہیں جو اولیاء کرام کے ماننے والے ہیں ، جو اہل دین کی قدر کرتے ہیں۔اللہ تعالی کے محبوب واٹائے کل غیوب عالم ماکان و ما یکون حضرت محمد رسول اللہ اللہ اللہ علیہ کے سے پکے غلام ہیں اور محبت وعقیدت کے ساتھ ، دل و جان سے کہتے ہیں لبیک یا رصول اللہ علیہ ہے۔

#### امیر جزه صاحب کے گھرسے گواہی!

میں چاہتا تو نہیں تھا گر مجورا مجھے آپ کی خدمت میں آ بکے گھرے ایک الیمی شہادت بھی پیش کرناپڑی جوائبہائی وردناک ہے۔

امیر حمزہ کی اپنی جماعت''المحدیث' کے ایک معروف عالم قاری عبدالحفیظ صاحب کا''الدعوۃ والارشاؤ' کے مرکز طیبہ کے خلاف احتجاج ، ماہنامہ صراط السنقیم سے قاری عبدالحفیظ صاحب کے انٹرویو کا ایک اقتباس پیش خدمت ہے لیجئے آپ بھی مطالعہ فرما ہے۔

سوال: - قاری عبدالحفیظ صاحب! آپ عوامی اجتهاعات میں بخت اور نا مناسب الفاظ میں بنت اور نا مناسب الفاظ میں میں ضیاء الحفیظ شہید کے قبل کا ذمہ دار مرکز الدعوۃ اور اسکی قیادت کو تھم راتے رہے ہیں۔ آپ کے پاس کیا شوت ہے؟

جواب: - بین پوری ذمہ داری ادر اعتماد کے ساتھ اس سوال کا جواب دے رہا ہوں۔ آپ اگر شائع کر دیں گے تو میں مجھوں گا آپ میرے دکھ بین شریک ہیں ادر میں آپ کے اس دعوے پر یقین بھی کروں گا کہ آپ المحدیث جماعت والے قطعاً باطل ہیں اور الجمد لللہ '' یارسول اللہ '' صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کہنے والے ہی تق پر ہیں خدا ان نعر وَ رُسالت \_ (یارسول اللہ اللہ ہے کہنے ) لگانے والوں کوسلامت رکھے ان کے اعمال اور معاملہ میں بر کتیں عطافر مائے ان کی اولا دوں میں بر کت دے ، ان کے رزق میں اضافہ فر مائے ان کی عزت کو چار چا ندلگائے اور ان کو دنیا وآخرت دونوں جہانوں میں سرخروکی نصیب کرے \_ (آمین ثم آمین)

#### مشركون كي تعريف وتوصيف!

آپی مؤلفات'' آسانی جنت اور درباری جہنم''' ندجی وسیاسی باوسے'''شاہراہ بہشت' کو پڑھ کر میں مجبور ہوگیا تھا اس لئے آپی وہ خصوصیات جو آپئے ریکارڈیس مخصی انکو تلاش کر کے منظر عام پر لایا ہوں۔آپ کو جو در دب نام کے دورے پڑر ہے مخصی انکو تلاش کر کے منظر عام پر لایا ہوں۔آپ کو جو در دب نام کے دورے پڑر ہے مخصی انکو تلاج بھی تو کرنا تھا اس لئے میں نے آپی مشرکین نوازیاں ولائل کے ساتھ آپی خدمت میں پیش کردی ہیں۔

قارئین محترم! فیصله آپ کریں ، کیا تو حید پرستوں کے انداز یکی ہوتے ہیں؟ کیا اہل حق کا کروارای نوعیت کا ہوتا ہے؟ کیا اہل وین کے نظریات اور عمل اسی طرز کا ہوا کرتا ہے۔ کلمہ پڑھنے والوں کے خلاف وہ وہ طنزیں ، مزاح اور گھٹیا در ہے کے الفاظ وہ جملے اور بت پرستوں ، مشرکوں اور کا فروں کیلئے نہایت عمدہ الفاظ پر جملے اور عبارات ان کو خراج تحسین الکی تعریف و تو صیف مجھی اکو پھولوں کے شخے بھی دریائے ٹیل کا سلام اور اولیاء اللہ کے لئے انتہائی ملکے درجے کے الفاظ اور ساتھ بھی ساتھ ان کا خرائ کھا اور اللہ اللہ کے لئے انتہائی ملکے درجے کے الفاظ اور ساتھ بھی ساتھ ان کا خرائی کھا کے درجے کے الفاظ اور ساتھ بھی ساتھ ان کا خرائی کھا ہوں ۔

کے خلاف ہونے والی ہرسازش کو بے نقاب کریں گے۔ سوال: - قاری صاحب! آپ جواب دیں۔ ہماری کوشش ہوگی کہ ہم من وعن شائع کریں؟

جواب: - اصل واقعد بيب كه ٢٥ اگست ١٩٩١ ء كوان لوگوں نے ميرے بيٹے ضياء الحفيظ کولل کیا۔جس جگدان لوگوں نے اپنامعسکر بنایا ہے اور جہاں بدلوگ رہ رہے ہیں، وہاں کی مخالف سے دو بدو جھڑ ہے کا کوئی خدشہ نہیں وعوکا ہے دھوکا عوام کی آنکھوں ہیں دھول جھوٹکی جارتی ہے۔کاروباری مقاصد کے لئے کی جانے والی جدو جہد کو جہاد کا نام دیا جا رہا ہے۔ ناول نگاری اور افسانہ نگاری کی طرز پر جھوٹی ٹیبل سٹوریاں اپنے رسالہ میں شاکع کرتے ہیں۔قطعا کوئی دشمن کی گولی لگ کرشہید نہیں ہوتا، بید هوکا دیتے ہیں۔ عطااللہ نامی لڑ کے کو دریا میں اٹھا کرلے گئے اور پی منجد هار میں لے جاکر چھوڑ دیا کہ تقریباً شہید ہوا۔مولانا عبدالرشید راشد کے بچے عبدالرؤف جا نباز کواس طرح مارا کہ وہ کتاب پڑھتے ہوئے جار ہاتھا۔ان کی اپنی ایک چھوٹی ی توپ ہے، اس میں سے چھوٹا سا گولہ تکاتا ہے اس کے لگتے ہی وہ دریامیں گرجاتا ہے ای طرح مولاناعبد الرفیق سلفی کے بیج اور دیگر بچوں کو

سیمارتے رہے ہیں۔ سوال:- اگرآپ کی بات سیح بھی مان لیس تو بچوں کے تل سے ان کو کیا فائدہ کافٹی رہا ہے؟

جواب: - بیدوسائل گاڑیاں ، ائر کنڈیش دفاتر دولت بیسب انہی شہداء کے قبل کی قیت ہی تو ہے جو انہوں نے عربوں اور پاکتان کے سادہ لوح

''اہلحدیثوں'' سے وصول کی ہے، یہی فائدہ ہے۔ بچوں کے قبل کا مسقط بحرین کویت اور دیگر ہیرون مما لک ان کے بینک بیلنس موجود ہیں حقیقت بیتھی کدا حد مسعود نامی انہی کے ایک لڑکے کی فائز نگ سے میر اپچیشہید ہوا۔ اس نے دوفائز کیے آپ بھی سجھتے ہیں کداگر ایک فائز ہوتو اسے قبل خطا کہا جا تا ہے۔ لیکن دوفائز سے تو قبل خطا کہا جا تا ہے۔ لیکن دوفائز سے تو قبل خطا والی بات نہیں رہی۔

موال: - آپ کوکس ذریعے سے پہنہ چلا کہ آپ کا بیٹا احمد مسعود نا می لڑ کے کی فائزنگ سے ہلاک ہواہے؟

جواب: - بعد میں 'الدعوۃ'' کے بی پھھافرادان کے بڑے لیڈروں کے کرتوت وکھھ كران سے عليحدہ ہو گئے تھے۔ان ميں معسكر طيبہ كے امير ياسين اثرى اور معسكر اقصىٰ كامير محداثتياق اوراك دواور افرادشامل متے انہوں نے مجھے حقیقت حال ہے آگاہ کیا بدلوگ وہیں ہوتے تھے جہاں میر ابیٹا شہید موا ہے۔ بیرساری صورت حال سے واقف تھے۔لیکن جب مجھے حقیقت حال کاعلم ہوا تو میرے ول کوشدید دھیکا لگا۔ میں نے پروفیسر سعید صاحب (سربراه پروفیسرم کرطیبه-مریدے) سے پوچھا کہ بیکیا ہے کہنے لگے قاری صاحب وہ بچر برانیک ہے جس کے ہاتھ سے سموا فائر ہوگیا جو ضیاء الحفیظ کولگ گیا۔ وہ کہتا ہے جھے نیس پید کس طرح جھے نا از ہو گیا۔ سوال:- حافظ سعيد صاحب في آپ ك سائ ال بات كا اعتراف كيا كه ضياء الحفظ كيونسك كى كولى سے نہيں مركز الدعوة ي كى كى لاكے كے فائر سے شہید ہوا جو لطی ہے چل گیا تھا؟

جواب: بال بالكل! پروفيسرسعيدصاحب في اس بات كا اقرار كيا اورجس الرك

جواب: ایسی شرعی عدالت جس کے بچے مفتی عبدالرحمٰن صاحب سے جوان کے اپنے

آدمی سے جن کو میں قبل میں ملوث کہتا ہوں ان کا کھا کر ان کا فی کر ان سے

تخو اہ لے کر ان کے اے سی کمروں میں بیٹے کر فیصلہ کریں ہم مقتولوں گا،

کہاں کا افصاف ہے؟ مفتی عبدالرحمٰن صاحب نے راولپنڈی میں ہے چھوٹ

بول کہ میں نے قاری عبدالحفیظ کو پانچ لاکھ یا غالبًا دس لاکھ کہا تھا، دس لاکھ

روپے دیے ہیں۔ ای طرح مرکز الدعوۃ کے ہی آدمی عبدالغفار اعوان
صاحب نے میرے داماد کو کہا کہ اگر ہم نے اسے مارا ہے تواس کی قیمت بھی

اداکر دی ہے۔

موال: شرعی اصطلاح میں لفظ جہاد کن معنوں میں استعال ہوتا ہے۔ جواب: جدوجهد كمعنول مين كوشش كمعنى مين، باتھ سے تكوار سے، زبان سے تلم سے کی جانے والی بروہ کوشش جس کا مقصد اللہ کے دین کی سربلندی ہو جہاد کے مفہوم کوایک خاص مقصد کے تحت محدود کیا جارہا ہے۔ وہ خاص مقصد دولت اکھٹی کرنا ہے۔ مرکز الدعوۃ اور اس کے لیڈرخود اچھی طرح سجھتے ہیں کہ جو پچھ بیررہے ہیں جہاد و ہادئیں بلکہ بیدان کا کاروبارہے۔ اگريد جہاد شميركوواقعى جہاد بجھتے توان ميں كى كا بچدو مال شہير مواموتا۔ كوئى ندكوئى زخى مواموتاليكن اين بچول كوبچا كرر كھتے ہيں دوسرول كے بچوں کومرواتے ہیں۔اس کا مطلب سے کدوہ خوداس کام بیل خلص نہیں ہیں۔عوام المحدیث بوی سادہ لوح ہے۔انہوں نے گرائی میں جا کرنہیں دیکھا کہ کیا ہور ہاہے۔کوئی لمبی داڑھی رکھ لے اورشلوار مختول سے اوپر کر لے بس اس پر اعماد کر لیس گے۔ باتی خواہ وہ لڑکیاں بیچیا رہے یا پوری

ے کولی گلی اس کا نام بتایا۔ براہ مہر بانی آپ ای طرح تکھیں جس طرح میں کہدر ہا ہوں۔ اگر قوم کا ایک بچہ بھی ظلم و بربریت سے نی جاتا ہے تو آپ کا بہت بزااحمان ہوگا۔

سوال: - کیا ابتداء میں مرکز میں الدعوۃ والوں کو بھی واقعہ کا سی علم نہیں تھا جس کی وجہ سے انہوں نے مجلّہ الدعوۃ میں حقیقت کے برعکس رپورٹ شائع کی؟۔

جواب: - پنة كيول نيس تھا جناب سب پنة تھا مجلّه الدعوۃ بيں جان ہو جھ كر جھوٹى
د پورٹ بوری مہارت سے بنا كر چھائي گئی۔ بيرمجلّه الدعوۃ والوں كى عادت
ہے۔ وہ عوام كوكيش كرائے كے لئے جھوٹے اور من گھڑت شہادتوں كے
واقعات بالكل افسانو كى انداز بيں لكھ كر چھا پتا ہے۔ يہاں آپ مجلّه الدعوۃ
ميں چھينے والى رپورٹوں كى صحت كا اندازہ كر سكتے ہيں۔ جب وہ ايك عالم
د ين كے بينے سے متعلق جھوٹى اور من گھڑت رپورٹ شائع كر سكتے ہيں تو
عام المحدیث خال دائ كيا حیثیت رکھتے ہیں۔

موال: - اس بات میں کہاں تک صدافت ہے کہ مرکز الدعوۃ نے آپ کو بطور ویت پھے رقم اداکروی ہے؟

جواب: - یہ جھوٹ ہے۔ انتہا کر دی ہے چالبازی کی۔ انہوں نے ۴۴ ہزار روپے کا ڈرافٹ چھوا کر ہزاروں کی تعداد میں پنجاب اور کراچی میں بھی تقسیم کے ہیں۔ جھے بتا کیں ایسا دنیا میں کون سابینک ہے جو جھے پیے دیدے اور چیک ان کے حوالے کر دے۔ کتنا بڑا غداق ہے اس شخص کے ساتھ جش کا کیجہ چھیدا گیا ہے۔ ضیاء الحقیظ کی والدہ اس غم میں پاگل ہوگئ ہے۔ سوال: الدعوۃ والوں کی شرعی عدالت میں بھی اس مسئلے کوا ٹھایا گیا؟

#### ایک الله کی بارگاه ش محده ریز!

امیر حمزہ صاحب آپ اگراولیاء کرام مشائخ عظام اور اس وقت کے عظیم سپوتوں کے خلاف تلم نہ چلاتے انکوٹراج تحسین پیش کرنے کی بجائے ان پراعتراضات نہ کرتے تو ہم بھی آپ کو یوں سرعام طشت ازبام نہ کرتے گرکیا کرتے ہماری تو مجبوری بن گئی تھی۔ آپ نے تلم کو اس طرح چلایا تھا کہ تمام حدوداخلاق کو پامال کر کے رکھ دیا تھا پھر بیت کبھی نہ سوچا کہ بیں جن نفوی قد سیہ کے خلاف زبان وقلم چلا رہا ہوں ان کے اس امت پر بڑے احسان بیں انہوں نے اپنے وطنوں کو چھوڑا، اپنے اعزہ و اقارب سے جدائی برداشت کی اور تب کہیں جا کروین کی تبلیغ کرنے میں کا میاب ہوئے ہم ان کوراہ راست پرلانے ہوئے ہم سے تو اپنے مسلمان کلمہ گؤئیں سنجالے جاتے ہم ان کوراہ راست پرلانے میں تقریباً ناکام رہے ہیں اور انہوں نے کا فروں ، مشرکوں کو کلمہ پڑھا پڑھا کردا خل

معارى!

و گیر کمالات تو رہے ایک طرف ان حضرات کا بیراحسان کیا کم ہے کہ انہوں نے ہمیں اللہ تعالیٰ کی توحید سے روشناس کر وایا۔اور محمد اللہ کے اخلاق کا درس دیا۔

محمد کی غلامی ہے سند آزاد ہونے کی خدا کے دائن توحید میں آباد ہونے کی

اس میں کوئی شک ٹیس، اگر کوئی بندہ راہ حق پراستقامت اختیار کرتا ہے تو وہ لاکق صداحترام ہے۔ جاننا تو یہ چاہیے حق کے کہتے ہیں حق کیا ہوتا ہے، حق کی پہچان کیا ہے، تو سن کیجئے حق کا ایک ہی روپ ہوتا ہے وہ دو ہرے روپ کا مالک ٹیس ہوتا جق جماعت کونے کرکھاجائے۔اس کو پھنیں کہیں گے۔ سوال: قرآن ہمیں کی کی مخالفت میں حدیۃ آئے نکلنے ہے منع کرتا ہے۔آپ عوامی اجتماعات میں ان کے خلاف بودی سخت زبان استعمال کرتے ہیں۔ ایسا کیوں کرتے ہیں؟

جواب: میرے ساتھ ظلم ہوا ہے میرائ ہے کہ جن لوگوں نے جھے پرظلم کیا ہے ان کے خلاف آواز بلند کروں بیر میراوہ تق ہے جوقر آن نے جھے دیا ہے، ترجمہ: ''اللہ اس بات کو پسند نہیں کرتا کہ کوئی کسی کو اعلانیہ برا کہے گروہ جومظلوم ہوا''۔ اگر میں عوای اجتماعات میں اعلانے پخالفت کرتا ہوں تو میرائی کم قرآن کے عین مطابق ہے۔ ان لوگوں نے اپنی شلوار پٹر لیوں تک لوگوں کو دکھانے کے لئے کی ہیں ان کے

زدیک بس ساراتفوی ای ش ہے۔(ابنام مراط استیم والجدیث اکوبر ۱۹۹۳ء کراچی) اندرون خاند کیا حال ہے!

آپ نے پوراانٹرویو پڑھ لیا ہوگا،آپ پریہ بات روز روش کی طرح عیاں ہوگئ ہوگ کہ ان لوگوں کا اندرونِ خاں ہ کیا حال ہے کس قدر متقی ہیں یہ لوگ اور کس قدر پر ہیزگار ہیں یہ موحدین ،ان کا ظاہر کیا ہے؟ اوران کا باطن کیا ہے؟ ان کے دعاوی کیا ہیں اوران کا عمل کیا ہے اٹکی ظاہری وضع قطع کیا ہے اورائی باطنی صورت حال کیا ہے، اگر اس طرح کی کوئی بات ہیں سپر دقر طاس کر دیتا تو شایدان لوگوں کو ایک لیے چین نہ آتا اور ہم پر قلم وکا غذ لیکر تا بو تو تو ٹر تملہ کر دیتے ہیں نہ صرف مشکل ہوگی بلکہ جواب دینا تا مکن ہی ہوگا۔

اور دو ہرار دپ میہ دونوں چیزیں بھی یجانہیں ہوتیں حق اگر چار دیواری کے اندر ہوتو آیک ہی روپ میں ہوتا ہے، اگر برسرے بازار آ جائے تو بھی روپ وہی، اگر کسی جابر سلطان کے سامنے چلا جائے تو روپ واحد، اگر بھی میدانِ کارزار میں نکل پڑے تو بھی روپ میں کوئی تغیر نہیں آتا۔

آپ کا معیار حق ساری ملّت سے جداگاندگلنا ہے جو پھھ آپ کو پہند آئے وہ حق جو پھھ آپ کو پہند آئے وہ حق جو پھھ آپ کو پہند آئے وہ حق جو پھھ آپ کو پہند نہ مووہ حق بہانا آجائے اگر آپ حق کو پہچان نا آجائے اگر آپ حق کو پہچان نا گر آپ حق کو پہچان نا گر آپ حق کو پہچان نا گر آپ حق شناس بھی ہموجا کیں گے اگر حق کی پہچان نا گر تھ کے اگر حق کی پہچان نا گر تھ کی کھی بھی ممکن نہیں۔

الطه مارا نداز تبلغ!

امیر حمزہ صاحب میں آپکومشورہ دوں گا۔ ہمارے اکابری کتابیں بیشک نہ پڑھیں مگراپنے بڑوں کی کتب ضرور پڑھ لیں تا کہ آپکو کم از کم بیرتو پتا چل جائے آپ کے بزرگوں کا طرز عمل کس طرح کارہا ہے اتکی سوچ ان کا انداز تحریر، انکا انداز تبلیغ کیارہا ہے وہ اپنے گھر کے بزرگوں کے بارے میں کس طرح کے جذبات واحباسات رکھتے ہیں بیہ جو آپ نے لٹھ پکڑی ہوئی ہے اور اس کی وساطت سے تبلیغ کررہیں یعنی لٹھ مارتبلیغ اس طرح کی تبلیغ نہ تو بھی ماضی میں کامیاب رہی ہے اور نہ ہی اب کامیاب ہے اور آئیدہ بھی بھی کامیاب نہ ہوگی۔

رہ گیا بیدمعاملہ کہ آپ جہاد کی طرف بلاتے ہیں دعوت جہاد دیتے ہیں تو اسکا سارا طریق کا را در آپکا طرز عمل آپ کے قاری عبدالحفیظ صاحب کے انٹر ویوے فاہر باہر ہوگیا اب جھے آپکے اس منہری نعرے سے کو کی خوف خمیس امت کو پیتہ چل چکاہے جہاد صرف آپ کا ایک نعرہ ہی ہے اس کے آگے اس کی کوئی حقیقت خمیس۔ آپ جو بظا ہر نظر

آتے ہیں وہ اندر سے ہر گرخییں ہیں آپ کا ظاہراور ہے اور باطن اور ، ہر ذی شعور میرے ان صفحات کا مطالعہ کرنے کے بعد ریہ فیصلہ کرنے میں جن بجانب ہوگا۔ امیر حز ہصا حب بڑھک ہاز میں ، ان کوصرف بڑھکیں مارنی آتی ہیں حقائق سے ان کو دور کا بھی تعلق نہیں ہا و کر کے دکھاتے تھے بھی تعلق نہیں ہے اور ہز رگان دین بڑھکیں نہیں مارتے تھے بلکہ کام کر کے دکھاتے تھے غیر مسلموں کو کلمہ پڑھا کر مسلمان بناتے تھے مشرک کو دولت ایمان سے سر فراز فرائے تھے اور آپ ہیں کہ مسلمانوں کو مشرک بنائے چلے ہیں۔

## فيصله کی گھڑی:

قار کین محتر م! اب فیصله کی گھڑی آن پنجی ہے آپ خود فیصل بن جائے اور کمال دیا نت داری ہے اس قضیه کا فیصله سیجئے که ایک طرف حضرت دا تا سیج بخش علی بن عثبان ہجوری ، حضرت غوث اعظم شیخ سیدعبدالقا در جیلانی ، حضرت معین الدین محمد باقی بالله الجمیری ، حضرت خواجه قطب الدین بختیار کا کی ، حضرت خواجه رضی الدین محمد باقی بالله حضرت بابا فریدالدین سیج شکر ، حضرت خواجه قطام الدین اولیاء دالوی حضرت شاہ بہاؤ الدین ذکر یا ملتانی حضرت شاہ رکن عالم ملتانی ، حضرت امام ربانی مجد دالف ثانی اور جید اولیاء کرام رحمت علیم ما جمعین ہوں اور دوسری طرف ایک غیر معروف مولوی صاحب ہوں تو کس کی بات سند و جحت ہوگی یقینا مندرجہ بالا اولیاء عظام ہی کی بات سند ہوگی۔

ا نہی حضرت کا عمل باعث بر کت اور لائق النقات ہوگا۔ بیرونی لوگ ہیں جنہوں نے دن رات ایک کر کے دین اسلام کی تبلیغ فرمائی اور لوگوں کوظلمتوں سے نکال کر تور

ک طرف مائل کیا اور کلم جن کی تلقین کی بس کے ان سے باطن روش ہو گئے اور انکوا یمان کا نور میسر آیا اللہ تعالی ان اولیاء کرام صوفیا عظام کو جزاء خیر عطافر مائے۔ آمین

امیر جمزہ صاحب آپ نے دوسروں پر تو بڑھ پڑھ کراعتر اضات کے ہیں اگر چہوہ سب صدافت سے کوسوں دور ہیں۔ آپ کوبھی پیر خوش فہنی ہوئی جاتی تھی کہ ہیں ایک اچھا مضمون نگار ہوں گرحقیقت اس کے بالکل برعس ہے آپکواپنی بات کرنا بھی نہیں آئی اس کا انداز وای سے لگالیس آپ نے کس قدرز وردار طریقے سے اولیاء کرام مشائخ عظام اور اہل طریقت کے خلاف آپ اندر کا جنوں اگلا ہے۔ گروہ سب ہوا ہیں ہوا، ہوار ہا ہے کہ اور اہل طریقت کے خلاف آپ اندر کا جنوں اگلا ہے۔ گروہ سب ہوا ہیں ہوا، ہوار ہا ہے کہ آپ لوگ بڑے گرے کی بجائے آپ لوگ بڑے خدا ترس جن گو، جن شناس ہیں تو اس دعویٰ کو ہیں چینے کرنے کی بجائے آپ کو گھرے بارے ہیں گھر والوں کی گوائی آپ وہ معتبر ہوتی ہے۔

آپ کے اپ عنت روز ہ اہلحدیث ۲۱ اکتوبر ۱۹۹۲ء میں مرقوم ہے۔ لیجئے آپ بھی مطالعہ فر مائیں

مرکز "الدعوة" وہشت گردی کی علامت بن کر انجررہا ہے

كاروائي

المحدیث جائباز فورس کے ترجمان نے تفصیلات بتاتے ہوئے کہا کہ ۱۱۸ کتو بر۹۴ء کی شب خالد جاوید علوی کی تکرانی میں ایک ٹیم لا ہور گوجرانوالہ تی ٹی روڈ ماہنامہ صراط المستنقیم

ادرا المحدیث جانباز فورس کی چیکنگ کررہی تھی کہ مرکز الدعوۃ والا رشاد کی دوگا ٹریاں ان کے قریب آکر رکیس اوران میں سے برآ مدہونے والے افراد خالد دجاوید علوی اور جانباز کارکنان پرٹوٹ پڑے اور آئیس زبردتی اغواء کرے مرکز طیبہ شکل ساہداں مریدے میں واقع ٹارچ سیل لے گئے جہال آئیس بدترین تشدد کا نشانہ بنایا گیا۔

ا بلحدیث جانباز فورس کے ترجمان کے مطابق ماہ اکتوبر کے صراط متعقیم ہیں مولانا اختر مجرکی جہاد پالیسی منظر عام پرآنے کے بعداس پالیسی کوجس طرح علاء المحدیث ادرعوام المحدیث ہیں زبروست پذیرائی حاصل ہوئی ہے۔ اس سے مرکز الدعوۃ الارشاد بو کھلا ہٹ کا شکار ہے کیونکہ ان کے پاس اپنی جہاد پالیسی کے دفاع کا کوئی مدلل اورموثر جواب نہیں ہے۔

المحدیث جانباز فورس کے ترجمان کے مطابق ہد ہات بھی کوئی غیرمعمولی نہیں کہ جب کی کے پاس اپنے موقف کے وفاع کے لئے دلائل نہ ہوں تو پھر وہ تشدد کے ذریعے اپنی ہات کرنے کی کوشش کرتا ہے چنا نچے مرکز الدعوۃ اللارشاد بھی اس وقت ای کیفیت کا شکار ہے کیونکہ المحدیث جانباز فورس کی جہاد پالیسی کے آئینے بیں انہیں اپنے پلڑے بیس سوائے وسائل اور تو ان نئوں کے ضیاع کے اور پھی نظر نہیں آرہا۔
المحدیث جانباز فورس کے ترجمان کے مطابق خالد جاوید علوی کوعرصہ در از نے تل کی دھمکیاں دی جاری تھیں۔ خالد جاوید علوی کا بیجرم تھا کہ وہ مرکز الدعوۃ کے متعدد مرکز دورہ ہماؤں کو فوق اس خالد جاوید علوی کا بیجرم تھا کہ وہ مرکز الدعوۃ کے متعدد مرکز دورہ ہماؤں کو فوق اس نے بھی وائل کے میدان بیس فلست کے بعد تشد دکاراستہ اپنایا گیا یہاں تک کہ انہیں واجب القتل قرار دیا گیا، چند ماہ پہلے مرکز الدعوۃ کے ہیڈ کوارٹر بیس فالدعلوی کے ساتھ انتہائی نا مناسب دیا گیا، چند ماہ پہلے مرکز الدعوۃ کے ہیڈ کوارٹر بیس فالدعلوی کے ساتھ انتہائی نا مناسب دیا بیا یا اور اب انواء جیسی شرمناک

حرکت کا ارتکاب کیا۔ مبینہ طور پر تشد دکرنے ولوں میں ابونصر جاوید ہشمیر احمد، ابو شعیب، عبد الرحمٰن نمایاں شخے تشد د کے بعد زخمی حالت میں خالد علوی کومیوہ پنتال کے ایمرجنسی وارڈ میں داخل کر دیا گیا۔

المحدیث جانباز فورس کے ترجمان کے مطابق مرکز الدعوۃ والارشاد کی جانب سے المحواء اورتشدد کی کارروائی کا ایک افسوس ناک پہلویہ بھی ہے کہ بیکا رروائی مرکز الدعوۃ والارشاد کے امیر پروفیسر حافظ محرسعید صاحب کی ہدایت پر ہموئی۔ مرکز طیبہ بیس موجود اسٹال والے کے بقول حافظ سعید صاحب نے پندرہ بیس کارکنان کا قافلہ بذات خودروانہ کیا ۔۔۔۔ ''کہ انہیں ایک مرتبہ پکڑ کر یہاں لے آو''۔

#### ندمت:

دریں اثناء جماعت المحدیث پاکستان کے سر پرست حافظ عبدالقادر رو پڑی نے
اپنے اخباری بیان بیس خالد جاوید علوی اور المحدیث جا نباز فورس لا ہور کے چار
کارکنان کے اغواء اور تشدد کی شدید ندمت کی ہے اور آئیس انتہائی شرم ناک قرار دیا۔
علاوہ ازیں متحدہ جعیت المحدیث پاکستان کے امیر حافظ یکی عزیز محمد صاحب
جماعت الل حدیث پاکستان کے امیر حافظ زیبراحم ظہیر صاحب، جمعیت علاء المحدیث
کے سر براہ قاضی عبدالقادر خاموش صاحب، مرکزی جمعیت المحدیث کے پاکستان کے
رہنما قاری عبدالحفیظ فیصل آبادی سمیت متعدد علاء کرام اور اہم جماعتی شخصیات نے
اغواء اور تشدد کی اس کارروائی کی شدید ندمت کی ہے اور کہا ہے کہ جماعتی اختلافات میں
تشدد کار جمان المحدیث جماعت کے لئے خطرناک ثابت ہوسکتا ہے۔
تشدد کار جمان المحدیث جماعت کے لئے خطرناک ثابت ہوسکتا ہے۔

انفاق سے المحدیث یوتھوفورس کے ایک کارکن کے ہاتھ میں موجود ماہنا مہ''صراط مستقیم'' رہتی اجتماع میں مخفت روز والمحدیث'' مفت تقتیم کررہے تھے کہ الدعوۃ کے

منتظمین نے نہ صرف ان سے وہ شار ہے چین لئے بلکہ انہیں زووکوب بھی کیا۔
ماہنا مہ صراط متنقیم مرکز الدعوۃ والارشاد کے ذمہ داران کو انتہائی مخلصانہ مشورہ دیتا
ہے کہ خدارا آپ اہلحدیث عوام اور اہلحدیث جماعتوں کے لئے اپنائی گئی اپنی
پالیسیوں پر نظر ثانی کریں۔ ہر کسی کو اصولی اختلاف کاحق دیں اپنی دعوت کا سچائی اور
دلائل کے ذریعے لوگوں کے دل وہ ماغ کو سخر کرنے کی جدو جہد کرنا ہرایک کاحق ہے
دلائل کے ذریعے لوگوں کے دل وہ ماغ کو سخر کرنے کی جدو جہد کرنا ہرایک کاحق ہے
اسے استعمال کرنا چاہے لیکن تشدد کے ذریعے اہلحدیث جماعت یا اہلحدیث عوام پر
تسلط قائم کرنے کی کوشش کرنا کسی بھی طرح مناسب نہیں ہے۔

۸ استمبر کولا ہور میں متاز عالم دین قاری عبد الحفیظ فیصل آبادی پر قاتلانہ تملہ، جامع محبد الحکیظ فیصل آبادی پر قاتلانہ تملہ، جامع محبد المحدیث کورٹ روڈ کراچی میں ایک المحدیث نوجوان کوتشد دکر کے قتل اور اب المحدیث جانباز فورس کے کارکنان کے اغواء اور تشد دسے مرکز الدعوۃ المحدیثوں میں دہشت گردی کی علامت بن کرا بجرر ہاہے۔

ماہنامہ صراط متنقیم کومرکز الدعوۃ والارشاد کے خلاف بہت سے خطوط اورتج ریس موصول ہوتی رہی ہیں جن میں ہے بعض کے ساتھ اپنے موقف کو بھی ٹابت کرنے کیلئے دستاویز شبوت بھی تھے لیکن تا حال قارئین جانتے ہیں کہ ایسی کوئی تحریر شاکع نہیں کی گئے۔ (ماہنامہ صراط متنقم الجحدیث نومر ۱۴ کراچی)

# رسالہ اہلحدیث بنام دعوت وارشادم بدکے

مرید کے میں وعوت وارشاد کے ساتویں سالانہ اجتماع کے موقع پر جمعیت "المجدیث" لا ہور نے لکھا ہے کہ اب جبکہ اجتماع کے نام پر ایک اور موقع پیدا کیا گیا ہے جماعت میں انتظام کو مشحکم کرنے کا اور

اپنی سوچ کا دھارا سیج ست کو جانے ویں گے ہر گزنہیں ایسی تو کوئی امید ہی نہیں گر میرے اس کا م سے کم از کم بردھکوں کا درواز ہ یقنیناً بند ہوجائے گا۔ آئندہ امیر حمزہ صاحب کو قلم پکڑتے اور اسکو چلاتے وقت اس بات کا احساس ضرور رہے گا کہ اہل حق اپنا دفاع کرنا جائے ہیں۔ اللہ تعالی میری اس کا وش کو پاین

> "وصلى الله تعالى على محمد وعلى اله واصحابه اجمعين.وما علينا البلاغ المبين "\_

بارگاہ اقدی میں تبول فرمائے۔ (آمین)

محمد ارشد القادري 113 كتر 2008ء الثوال المكترم ومعنظ موحدین کو کافر ومشرک بنانے کا۔ جہاد کے نام پر المحدیث عوام کو ورفلانے کا اور کشمیری مجاہدین کے خلاف الزانے کا صرف یہی نہیں بلکہ مدیر' الدعوۃ''امیر حمزہ صاحب جن کے بیان شہید زندہ گھروں کو آ جاتے ہیں نے ' 'عربستان ٹورستان تک'' اس میں شیخ جمیل الرحل کے متعلق کھھا۔

"سلفيت كروپ يسسلفيت كابهيا تكوشن

سوال یہ ہے کہ حافظ میر محری صاحب سے وہ کیا'' کفر بواح'' ہوا ہے کہ حافظ سعید اینڈ کمپنی نے ان کی''شرگی امارات'' چھوڑ دی ہے اور خود کو امیر لکھنے گئے ہیں۔ میر محمد اب بھی امیر ہیں۔ پھر حضرت حافظ سعید بنلا ئیں گئے کہ ایک امیر کے ہوتے ہوئے امیر بننے والے کیلئے شرعی تھم کیا ہے؟ کیا امیر کے ہوتے ہوئے دوسرا امیر بننے والا امیر واجب القتل نہیں؟ (ہفت روزہ المحدیث ۲۱ کتوبر ۹۴ء)

قارئین ذی عزت! آپ نے خت روزہ المحدیث کے اقتباسات کا مطالعہ فرمالیا ہوگااور آپکویفین ہوگیا ہوگا کہ امیر حمزہ صاحب نے جو پکھے ہمارے خلاف لکھا ہے اس کی صدافت کیا ہے اورا نکا اپنا کردار کیا ہے۔ انکی اپنی جماعت کے علاء انکے بارے میں کیا رائے رکھتے ہیں اور انکے کام کرنے کے طریق کار کو کیسا سجھتے ہیں۔ اگر ہم اپنے لیے سے پکھے لکھتے تو امیر حمزہ صاحب نے تو ویسے لٹھا ٹھالینا تھی۔

آ کے بلند ہا تگ دعوؤں کا جو جنازہ آپ کے اپنے ہی لوگوں کے ہاتھوں لکا ہے وہ بہت خوب رہا ہے ہرصا حب عقل بیا ندازہ کرنے میں بڑی آسانی محسوں کرے گا کہ جن لوگوں کا کر داراس طرح کا ہواور جواپنے ہی لوگوں کے بارے میں اس تتم کا روبیدر کھتے ہوں ایکے بازے میں کیا بیہوچا بھی جاسکتا ہے۔ وہ ہمارے بارے میں

من عوام المست كروسة موك اصرار ك بيش نظر كتاب كى طباعت کوجلدیقینی بنانے کیلئے فائنل پروف ریڈنگ کے مرحلہ میں فہرست ،عنوانات ك نام اورصفحات نمبرز 1 تا25 يرنظر فاني كي من اوراس سلسله بين جن افراد سے مشاورت کی گئے۔ اُن میں نمایاں نام مولانا محد صدیق خان قادری عضر جميد قادري، غفنف قادري، حامد رضا قادري، ميان احمد (عبدالشكور) سہیل احمد (اے ایس کمپیوٹر سنٹر)، مدنی گرافتحس اور وسیم احمد قاوری ہیں م ناس كتاب كى طباعت انتبائى احتياط بروائى ب- تا بم غلطى کی گنجائش رہتی ہے۔ قارئین سے گزارش ہے کہ اپنی آراء سے ہمیں مستفیض فرمائیں ۔ تاکہ آئندہ ایڈیشن کو بہترے بہتر بنایا جاسکے۔ الله الله المارك المحارك المحوى كيا-اين تا رات تحريك جامعداسلاميدرضوبيم كزتعليم وتزبيت اسلامي نز دگورنمنث و گري كالج برائے خواتین فیروز والا رچنا ٹاؤن شاہدرہ لا ہور روانہ فرمائیں انشاء الله! تا رات پرمشمل رساله بھی جاری کیا جائے گا۔

صاحبزاده محمرعا كف رضا قادري

سريرست: مكتبه تعليم وتربيت اسلامي پاكستان سيدمحدراشدعلى رضا كيلاني خادم جامعه اسلاميه رضوبيه

مصنف کې دیگرتصانیف

ا۔ شرح تنی (زیرطع)

۲۔ عیدمیلا دالنبی علیقہ کی شرعی حیثیت

٣\_ حقيقت ميلاد فيوض وبركات كى برسات

س تغظیم مصطفٰی م<del>قالف</del>ے قرآن کی روشنی میں

۵۔ عمراء بارسول الشرعصة كاجواز

٢- غلامي رسول الشعطية اوراس كاقتاض

٤ شان صديق اكبررضي الشعنه

۸۔ جنت کاراستہ

9- امام اعظم الوحنيف رحمته الله عليه

۱۰ مولانامحر بخش مسلم رحمته الشعليه ي سوسال

اا۔ میان کر حیات اُنتجندی مجددی رحت الشعلیہ پرایک آخر

١٢ يغام باجور حسّ الله عليه

۱۳ ۋاكىرمىعودىۋانى كى خرافات كانلىي محاسبە

۱۳ اسباب عروج وزوال

۱۵\_ تمازے کس ایمان

١٦ وراى بات يامعركة ق وباطل

ساری دعوت قکر

۱۸ فراایک نظرادهر بھی



مجد الماليان المالي المالي

جامعه اسلاميه رضويه عزيز ٹاؤن نز دگورنمنٹ ڈگری کالج برا۔ مِنْحَواتین فیروز والدرچنا ٹاؤن شاہررہ لاہور فون: 7962152-042